लक्ष्मीप्रसादपाठक

# ज्योतिर्विवेक रत्नाकर

गायत्री संस्कृत कालेज प्रधान ज्योतिष-शास्त्राध्यापक
ज्योतिर्विवेक रत्नाकर, विक्रम-विजय-पंचांग तथा भविष्य-विचार-कर्ता
ज्योतिष-रत्न पं० श्रीलक्ष्मीप्रसाद पाठक, विद्या-भूषण

कर्मवीर प्रेस, जबलपुर।

# ज्योतिर्विवेक-रत्नाकर

## [ प्रथम-भाग ]

कलितललितलीलः श्रीलशीलः सुनीलः,
अचलखलबलारिर्लालितोऽलं बलेन।
कलिकलुषकलंकोल्लासहृल्लोकपालो,
वहलयतु दयालुः केशवो मंगलन्नः ॥

### (१)—द्रव्यमापक परिभाषा।

वराटकानां दशकद्वयं यत् सा काकिणी ताश्च पणश्चतस्रः।
ते षोड़शद्रम्म इहावगम्यो द्रम्मैस्तथा षोडशभिश्च निष्कः॥
(लीलावती)

अन्वयः

वराटकानां यत् दशकद्वयं सा काकिणी ताः च चतस्रः पणः ते षोड़श इह द्रम्मः अवगम्यः तथा षोड़शभिः द्रम्मैः निष्कः भवेत्

भाषा—२० कौड़ी की १ काकिणी, ४ काकिणी का १ पण, १६ पण का १ द्रम्म, और १६ द्रम्म का १ निष्क होता है।

### (२)—तौलमान परिभाषा।

तुल्या यवाभ्यां कथिताऽत्र गुञ्जा वल्लस्त्रिगुञ्जो धरणं च तेऽष्टौ।
गद्याणकस्तद्द्वयमिन्द्रतुल्यैर्वल्लैस्तथैको घटकः प्रदिष्टः॥

अन्वयः

यवाभ्यां तुल्या अत्र गुञ्जा कथिता त्रिगुञ्जः वल्लः ते अष्टौ धरणम् तत् द्वयम् गद्याणकः तथा इन्द्रतुल्यैः वल्लैः एकः घटकः प्रदिष्टः

भाषा—२ यवकी १ गुञ्जा, ३ गुञ्जा का १ वल्ल, ८ वल्ल का १ धरण, २ धरण का १ गद्याणक और १४ वल्ल का १ घटक होता है।

दशार्द्धगुञ्जं प्रवदन्ति माषं माषाह्वयैः षोड़शभिश्च कर्षम्।
कर्षैश्चतुर्भिश्च पलं तुलाज्ञाः कर्षं सुवर्णस्य सुवर्णसंज्ञम्॥

अन्वयः

दशार्धगुञ्जं माषं षोड़शभिः माषाह्वयैः कर्षम् चतुर्भिः कर्षैः पलं तुलाज्ञाः प्रवदन्ति सुवर्णस्य कर्षं सुवर्णसंज्ञं (भवति)

भाषा—५ गुञ्जाओं का १ माषा, १६ मासे का १ कर्ष, ४ कर्ष का १ पल होता है। कर्ष भर सोने की सुवर्ण संज्ञा होती है।

## (३)—मार्गमान परिभाषा।

यवोदरैरङ्गुलमष्टसंख्यैर्हस्तोऽङ्गुलैः षड्गुणितैश्चतुर्भिः।
हस्तैश्चतुर्भिर्भवतीह दण्डः क्रोशः सहस्रद्वितयेन तेषाम्॥

अन्वयः

अष्टसंख्यैः यवोदरैः अङ्गुलम्, षड्गुणितैः चतुर्भिः अङ्गुलैः हस्तः, चतुर्भिःहस्तैः इह दण्डःभवति, तेषां सहस्रद्वितयेन क्रोशः(भवेत्)

भाषा—८ यवोदरों का १ अङ्गुल, २४ अङ्गुल का १ हाथ, ४ हाथ का १ दण्ड, २००० दण्ड का १ कोस होता है।

स्याद्योजनं क्रोशचतुष्टयेन तथा कराणां दशकेन वंशः।
निवर्तनं विंशतिवंशसंख्यैः क्षेत्रं चतुर्भिश्च भुजैर्निबद्धम्॥

अन्वयः

क्रोशचतुष्टयेन योजनं स्यात् तथा कराणां दशकेन वंशः भवति विंशतिवंशसंख्यैः चतुर्भिः भुजैः निबद्धं निवर्तनं क्षेत्रं स्यात्

भाषा—४ कोस का १ योजन, १० हाथ का १ बाँस, २० बाँस का समचतुर्भुज को निवर्तन याने वीघा कहते हैं यथा—
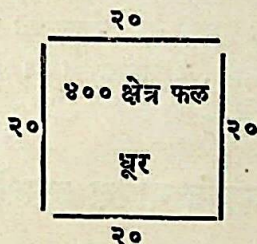
## (४)—धान्यादिमापक परिभाषा ।

हस्तोन्मितैर्विस्तृतिदैर्घ्यपिण्डैर्यद्द्वादशास्रं घनहस्तसंज्ञम् ।
धान्यादिके यद् घनहस्तमानं शास्त्रोदिता मागधखारिका सा ॥

अन्वयः

हस्तोन्मितैः विस्तृतिदैर्घ्यपिण्डैः यद् द्वादशास्रं तद् घनहस्तसंज्ञं धान्यादिके घनहस्तमानं यत् सा शास्त्रोदिता मागधखारिका

भाषा—१ हाथ चौड़ा १ हाथ लम्बा और १ हाथ ( पिण्ड ) मोटा इस प्रकार १२ कोने का जो पिण्ड होता है उसको घनहस्त कहते हैं—धान्यादिक तौलने में जो घनहस्त होता है उसे मागध देश की खारी कहते हैं ।

द्रोणस्तु खार्याः खलु षोड़शांशः स्यादाढ़को द्रोणचतुर्थभागः ।
प्रस्थश्चतुर्थांश इहाढ़कस्य प्रस्थांघ्रिराद्यैः कुडवः प्रदिष्टः ॥

अन्वयः

खार्याः षोड़शांशः खलु द्रोणः द्रोणस्य चतुर्थभागः आढ़कः आढ़कस्य चतुर्थांशः इह प्रस्थः स्यात् प्रस्थांघ्रिः आद्यैः कुडवः प्रदिष्टः ।

भाषा—१ खारी का षोड़शांश द्रोण होता है। द्रोण का चतुर्थांश आढ़क होता है आढ़क का चौथा भाग प्रस्थ कहलाता है प्रस्थ का चतुर्थांश कुडव होता हैं—तात्पर्य यह कि ४ कुडव का १ प्रस्थ, ४ प्रस्थ का १ आढ़क, ४ आढ़क का १ द्रोण और १६ द्रोण की १ खारी होती है—

## (५)——धान्यादि मापक दूसरी परिभाषा।

पादोनगद्याणकतुल्यटंकैर्द्विसप्ततुल्यैः कथितोऽत्र शेरः।
मणाभिधानं खयुगैश्च शेरैर्धान्यादिमानेषु तुरुष्कसंज्ञा॥

अन्वयः

पादोनगद्याणकतुल्यटंकैर्द्विसप्ततुल्यैः अत्र शेरः कथितः खयुगैः शेरैः मणाभिधानं स्यात् धान्यादिमानेषु एषा तुरुष्कसंज्ञाः

भाषा—$\frac{3}{4}$ गद्याणक अर्थात् पौन गद्याणक का १ टंक, ७२ टंक का १ सेर, ४० सेर का १ मन यह संज्ञा तुर्क देशीय है।

द्व्यङ्केन्दुसंख्यैर्धटकैस्तु शेरस्तैः पञ्चभिः स्याद्धटिका च ताभिः।
मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाहकृतात्रसंज्ञा निजराज्यपूर्षु॥

अन्वयः—द्व्यङ्केन्दु १९२ संख्यैः धटकैः शेरः भवति: तैः पञ्चभिः
शेरैः धटिका स्यात् ताभिः अष्टभिः मणः
स्यात् इति निजराज्यपूर्षु आलमगीरशाहकृता संज्ञा।

भाषा—आलमगीरशाह के राज्य काल में १९२ धटक का १ सेर और ५ सेर की १ धटिका, ८ धटिका का १ मन होता था।

## (६)——कालमापक परिभाषा

लघ्वक्षरसमा मात्रा निमेषः परिकीर्तितः ।
द्वौ निमेषौ त्रुटिर्ज्ञेया प्राणो दशत्रुटिः स्मृतः ॥
विनाडिका तु षट् प्राणास्तत् षष्ट्या नाड़िका स्मृता ।
अहोरात्रं तु तत्षष्ट्या नित्यमेव प्रकीर्तितम् ॥
( जयसिंहकल्पद्रुम )

भाषा——एक लघु अक्षर के उच्चारण के समय को मात्रा या निमेष कहते हैं-इस पर से कालमान निम्नलिखित है :—

२ निमेष = १ त्रुटि
१० त्रुटि = १ प्राण
६ प्राण = १ पल
६० पल = १ घटी
६० घटी = अहोरात्र ( दिन रात )

## (७) त्रुटिसंज्ञा में कल्पनाभेद

सूच्याभिन्नेपद्मपत्रे त्रुटिरित्यभिधीयते—

कमलपत्र को सुई से छेदने में जो काल लगे उसे त्रुटि कहते हैं (सू. सि. टी.)

योऽक्ष्णोर्निमेषस्य खरामभागः स तत्परस्तच्छतभाग उक्ता।
त्रुटिर्निमेषैर्धृतिभिश्च काष्टा तत् त्रिंशतासद्गुणकैः कलोक्ता ॥
( सिद्धान्तशि० )

भाषा——नेत्रों के पलकों को एक बार गिरने में जो काल लगता है उसे निमेष कहते हैं उसका तीसवाँ हिस्सा तत्पर और तत्पर का सौवाँ भाग त्रुटि होता है। अठारह बार पलक गिरने में जितना काल लगता है उसको काष्टा कहते हैं और तीस काष्टा की एक कला होती है।

## (८) राश्यंशादिपरिभाषा

विकलानां कला षष्ट्या तत् षष्ट्या भाग उच्यते ।
तत् त्रिंशता भवेद्राशिर्भगणो द्वादशैव ते ॥

भाषा—६० विकला = १ कला
६० कला = १ अंश
३० अंश = १ राशि
१२ राशि = १ भगण

## (९) दिनमासादिपरिभाषा

'गुर्वक्षरैः खेन्दुमितैरसुस्तैः'

(सि. शि.)

१० गुरु अक्षर उच्चारण करने में जो समय लगता है उसे असु (प्राण) कहते हैं, ६ असुओं का १ पल या २४ सेकेण्ड होता है, ६० पल का १ दण्ड या २४ मिनट होता है, ६० घटी या २४ घन्टे का १ दिन रात होता है, अढ़ाई घटी का १ घंटा होता है, ३० दिन का १ महीना और १२ महीने का १ वर्ष होता है ।

दिन चार प्रकार का होता है सौर, सावन, चान्द्र और नाक्षत्र चान्द्र, सौर

ऐन्दवस्तिथिभिस्तद्वत् संक्रान्त्या सौर उच्यते ।
मासैर्द्वादशभिर्वर्षं दिव्यं तदह उच्यते ॥

(सू. सि.)

भाषा—३० तिथियों का एक चान्द्रमास होता है अर्थात् अमान्त से अमान्त पर्य्यन्त † चान्द्रमास और संक्रान्ति से संक्रान्ति पर्य्यन्त

---

† पूर्णिमा से पूर्णिमा पर्यंत को भी चान्द्रमास कहते हैं

काल सौरमास होता हैं—१२ महीने का जो १ वर्ष होता है यही दिव्य दिन अर्थात् देवताओं का १ दिन होता है—

सावन-नाक्षत्र

इनोदयद्वयान्तरं तदर्कसावनं दिनम्।
तदेव मेदिनीदिनं भवासरस्तु भभ्रमः॥

(सि. शि.)

भाषा—प्रथम दिन के सूर्योदय से द्वितीय दिन के सूर्योदय तक को सावन दिन और नक्षत्रोदय से नक्षत्रोदय पर्यन्त को नाक्षत्र दिन कहते हैं—( अर्थात् नक्षत्रों का भचक्र भ्रमणकाल ) ३६० सौर दिनों का १ वर्ष होता है उसमें इस प्रकार दिन होते हैं ('पञ्चाङ्गरामास्तिथयः खरामाः सार्द्धद्विदस्राः कुदिनाद्यमब्दे' यथा (३६५।१५।३०।२२ + $\frac{१}{२}$) होते हैं—

(सि. शि.)

## (१०) गणितोपयोगी संकेत वर्णन—

| | | | |
|---|---|---|---|
| + | जोड़ | ० | अंश या घटी |
| − | घटाव (बाकी) | । | कला या पल |
| × | गुणन | ॥ | विकला या विपल |
| ÷ | भाग | ।॥ | प्रतिविकला या प्रतिविपल |
| 2 | वर्ग | | |
| $\sqrt{\ }$ | वर्गमूल | | |
| 3 | घन | | |
| = | बराबर | | |
| ∽ | अन्तर | | |

उपरि लिखित संकेतों से तत्तद्विषय स्पष्ट होता है

यथाः—(क + ख) यह (क) संख्या में (ख) को जोड़ने का संकेत है

एवं:—(ग – घ) इससे (ग) संख्या में (घ) को घटाने का बोध होता है
,, (च × छ) यह (च) और (छ) का गुणन है
,, (त ÷ थ) यह (त) को (थ) से भाग लेने का चिह्न है
,, पं यह प संख्या का वर्ग बोधक संकेत होता है
,, √ पं इससे प संख्या का वर्ग मूल का बोध होता है
,, नं यह न संख्या का घन बोधक चिह्न है
,, स = ह इससे स संख्या ह संख्या का बराबर बोध होता है
,, ल ∽ ह यह ल और ह संख्याओं का अन्तर बताता है

अर्थात् इन दोनों संख्याओं में जिसमें जो घटे उसे घटाने का बोध कराता है—

(१) योज्य योजक:—जिसमें जोड़ा जाता है वह योज्य और जो जोड़ा जाता है वह योजक है

(२) वियोज्य वियोजक:—जिसमें घटाया जाता है वह वियोज्य और जो घटता है वह वियोजक है

(३) गुण्य गुणक:—जिसको गुणा किया जाता है वह गुण्य और जिससे गुणन होता वह गुणक है

(४) भाज्य भाजक:—जिसमें भाग दिया जाता है वह भाज्य और जिससे भाग दिया जाता वह भाजक है

## (११) संख्यापरिगणनम्

एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोटयः क्रमशः ।
अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्कवस्तस्मात् ॥
जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्द्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः ।

( लीलावती )

१ एक

१० दश

१०० शत (सौ)

१००० सहस्र (हज़ार)

१०००० अयुत (दशहज़ार)

१००००० लक्ष (लाख)

१०००००० प्रयुत (दशलाख)

१००००००० कोटि (करोड़)

१०००००००० अर्बुद (दश करोड़)

१००००००००० अब्ज (अरब)

१०००००००००० खर्व (दश अरब)

१००००००००००० निखर्व (खरब)

१०००००००००००० महापद्म (दश खरब)

१००००००००००००० शंकु (नील)

१०००००००००००००० जलधि (दशनील)

१००००००००००००००० अन्त्य (पद्म)

१०००००००००००००००० मध्य (दशपद्म)

१००००००००००००००००० परार्ध (शंख)

## (१२) योगान्तर सूत्र

**कार्यः क्रमादुत्क्रमतोऽथवाङ्कयोगो यथा स्थानकमन्तरं वा।**

(लीलावती)

भाषा—यथा स्थानीय अङ्कों का योग वा अन्तर क्रम या उत्क्रम से होता है यथा स्थानीय का तात्पर्य यह कि इकाई के नीचे इकाई दहाई के नीचे दहाई आदि क्रमशः लिखकर योग वा अन्तर करो।

यथा उदाहरणम्

योग—

२७५
+३७
२
———
३१४

अन्तर—

४२५
−३१२
———
११३

अथवा—

३०४७५
+१५१८
३२५
४३४२८
———
७५७४६

अथवा—

३४७५८११
− ८७२०
———
३४६७०९१

## (१३)—गुणनसूत्र

**गुण्यान्त्यमङ्कं गुणकेन हन्यादुत्सारिते नैवमुपान्तिमादीन् ।**

भाषा—गुण्य के अन्तिम अङ्क को गुणक से गुणकर फिर उसके समीप वाले अङ्क को एवं आदि अङ्क पर्यन्त गुणन करने से गुणनफल होता है । लीलावती में ६ प्रकार का गुणन बताया गया है। यहाँ लाघवार्थ एक ही उदाहरण दिया जाता है ।

प्राचीन पद्धति

अं. आ.

उदाहरण—गुण्य: १२०५८११ × ६
१ ३ ४
६२००८६६
———
७२३४८६६ = गुणनफल

नवीन पद्धति

१२०५८११ × ६
७२३४८६६

## (१४)—भागहरणसूत्र

**भाज्याद्धरःशुध्द्यति यद्गुणः स्यादन्त्यात्फलं तत्खलु भागहारे।**

अन्वयः—अन्त्यात् भाज्यात् हरः यद्गुणः सन् शुध्द्यति तत् खलु भागहारे फलं स्यात्—

भाषा—भाज्य के अन्तिम अङ्क में हर को जितने से गुणन करने पर घट जावे वही भागफल का प्रथमाङ्क समझो। इसी प्रकार उपान्तिम से आद्यङ्क पर्यन्त क्रिया करने पर भागफल होगा और अन्त में जो शुद्ध नहीं होगा वही शेष होगा—

उदाहरण— भाज्यः

```
भाजकः ४ ) ३७५८०२ ( ९३९५० भागफलम्
           ३६
           ---
            १५
            १२
            ---
             ३८
             ३६
             ---
              २०
              २०
              ---
              ०२ शे०
```

भाज्यः ३२१ लब्धिः १६० शेष १ यहाँ भाजक क्या होगा ?

| | |
|---|---|
| उत्तर— ∵ ह × ल + शे = भा | भाजक × लब्धि + शेष = भाज्य |
| ∴ ह × ल = भा – शे | भाजक × लब्धि = भाज्य – शेष |
| ∴ ह = $\frac{\text{भा – शे}}{\text{ल}}$ | भाजक = भाज्य – शेष ÷ लब्धि |

नोट—भाज्य में शेष को घटाकर लब्धि से भाग देने पर भाजक होगा।

यथा— ३२१–१ ÷ १६० = २

(२) इसी प्रकार भाज्य में शेष घटाकर हर से भाग देने पर लब्धि होगी।
यथा— ३२१−१ ÷ २ = १६०

(३) हर लब्धि का गुणनफल में शेष जोड़ देने से भाज्य होगा।
यथा— १६० × २ + १ = ३२१

## (१५) वर्गकरण सूत्र

### 'समद्विघातः कृतिरुच्यते'

भाषा—समान दो अङ्कों के गुणनफल को वर्ग कहते हैं।
यथा उदाहरण—१३५ का वर्ग करना है तो पूर्वोक्तरीति से
१३५ × १३५ = १८२२५ वर्ग हुआ

## (१६)—वर्गमूल सूत्र

त्यक्त्वान्त्याद्विषमात् कृतिं द्विगुणयेन्मूलं समे तद्धृते,
त्यक्त्वा लब्धकृतिं तदाद्यविषमाल् लब्धं द्विनिघ्नं न्यसेत्।
पंक्त्यां पंक्तिहृते समेऽन्यविषमात् त्यक्त्वाप्तवर्गं फलं,
पंक्त्यां तद्द्विगुणं न्यसेदिति मुहुः पंक्तेर्दलं स्यात् पदम्॥

अन्वयः—अन्त्यात् विषमात् कृतिं त्यक्त्वा मूलं द्विगुणयेत्
समे तद्धृते तेन, मूलेन भक्ते, लब्धकृतिं तदाद्यं
विषमात् त्यक्त्वा लब्धं द्विनिघ्नं, पंक्त्यां न्यसेत्,
पंक्तिहृते,समे आप्तवर्गं अन्यविषमात् त्यक्त्वा फलं यत्
तद्द्विगुणं पंक्त्यां न्यसेत् इति एवं मुहुः क्रिया कार्या
तदा पंक्तेः दलं पदं मूलं स्यात्॥

भाषा—अन्तिम विषम संख्या में जिस अङ्क का वर्ग घटे उसे घटा दो
मूल को द्विगुण करो. उससे सम संख्या में भाग दो. लब्धि
का वर्ग आगे की विषम संख्या में घटाओ—पूर्वागत लब्धि

को द्विगुण करके पंक्ति में न्यास करो अब इस पंक्ति से आगे का सम में भाग देने पर जो लब्धि हो उसका वर्ग आगे के विषम में घटा दो और लब्धि को फिर द्विगुणित करके पंक्ति में स्थापित करो इस प्रकार वर्गाङ्क के अन्त्य तक क्रिया करो अन्त में पंक्ति जो स्थापित हैं उसका आधा मूल रहेगा.

उदाहरण—८८२०९ इस वर्ग का मूल क्या होगा। पूर्व कथितानुसार गणित करने पर पंक्ति का आधा (२९७) मूल हुआ. ।—

```
      ।—।—।
      ८ ८ २ ० ९ (२९७
 २²… ४
   ४) ४८
      ३६
     १२२
 ९²… ८१
 ५८) ४१०
     ४०६
       १
      ४९
 ७²… ४९
पं. ५९४) ०
```

```
        पंक्ति
ल. २ × २ = ४
 ,, ९ × २ = १८
            ५८
 ,, ७ × २ = १४
          ५९४ ÷ २
        = २९७ मूल हुआ
```

## (१७) घन करणसूत्र

### 'समत्रिघातश्च घनः प्रदिष्टः'

भाषा—समान तीन संख्याओं का परस्पर गुणनफल को घन कहते हैं—

उदाहरण—जैसे १२५ का घन करना है तो १२५ × १२५ × १२५ = १९५३१२५ यह घन हुआ।

## (१८) घन बनाने का दूसरा सूत्र

**'खण्डाभ्यां वा हतो राशिस्त्रिघ्नः खण्डघनैक्ययुक्'**

भाषा—जिस अंक का घन करना हो उसे दो खण्ड करो, उन दोनों खण्डों से संख्या को गुणन करो फिर तीन से गुनो–प्रत्येक खण्ड का घन उस त्रिगुणित संख्या में जोड़ दो घन हो जायगा।

उदाहरण—जैसे २७ का घन निकालना है। २७ का दो खण्ड २०+७ २७×२०=५४० । पुनः ५४०×७=३७८० पुनः ३७८०×३= ११३४० । प्रथम खण्ड का २० घन यथा २०×२०×२०=८००० हुआ द्वितीय खण्ड ७ का घन यथा ७×७×७=३४३ हुआ खण्ड घनैक्य ८३४३ इसे त्रिगुणित में जोड़ दिया ११३४०+८३४३=१९६८३ यह २७ का घन हुआ।

## (१९) वर्गात्मक संख्या का घन निकालने का नियम

**'वर्गमूलघनः स्वघ्नो वर्गराशेर्घनो भवेत्'**

भाषा—वर्ग का मूल लेकर घन करो फिर उसको उसी से गुणन करने पर घन हो जायगा।

उदाहरण—९ का घन करना है।

$\sqrt{९} = ३ । ३\times३=९ । ९\times३=२७$

$२७^{२} = ७२९$ यही ९ का घन हुआ

## (२०) घनमूल निकालने का सूत्र

**आद्यं घनस्थानमथाघने द्वे पुनस्तथाऽन्त्याद् घनतो विशोध्य।**
**घनं पृथकस्थं पदमस्य कृत्या त्रिघ्ना तदाद्यं विभजेत् फलन्तु॥**

पंक्त्यां न्यसेत्तत्कृतिमन्त्यनिघ्नीं त्रिघ्नीं त्यजेत्तत्प्रथमात्फलस्य।
घनं तदाद्याद् घनमूलमेवं पंक्तिर्भवेदेवमतः पुनश्च ॥

अन्वय

आद्यं घनस्थानं लेख्यं अथ द्वे अघने लेख्ये अथ पुनः अन्त्यात् घनतः घनं विशोध्य पदं पृथक्स्थं कार्यम्-अस्य कृत्या त्रिघ्न्या तदाद्यं विभजेत् फलन्तु पंक्तयां न्यसेत् तत्कृति अन्त्यनिघ्नीं त्रिघ्नीं तत् प्रथमात् त्यजेत् फलस्य घनं तदाद्यात् त्यजेत् एवं घनमूलं स्यात्। एवं पंक्तिः भवेत् अतः अस्यादग्रे पुनः क्रियाकार्या

भाषा—घन संख्या के प्रथम अंक पर (।) इस तरह का घन (सम) चिन्ह और उसके बाद (—) इस तरह अघन (बिषम) चिन्ह दो अंकों पर लिखो, इस प्रकार प्रत्येक अंक के ऊपर चिन्ह लिखने के बाद अन्तिम घन संख्या में जिस अंक का घन घटे, उसे घटा दो, यह घन मूल का प्रथमांक होगा, फिर शेष पर आगे का अंक उतारो, प्रथमागत मूल का वर्ग त्रिगुणित करके उतारे हुये अंकों को भाग दो, लब्धि को पंक्ति में स्थापित करो यह घन मूल का दूसरा अंक होगा, फिर शेष पर आगे का अंक उतारो, द्वितीय मूलांक के वर्ग को प्रथम मूलांक और तीन से गुणा कर आगे के अंक में घटाओ, फिर द्वितीय मूलांक का घन उतारे हुये अंकों में घटाओ इस प्रकार जो पंक्ति होगी वही घन मूल होगा इसके आगे भी अंक हो तो इसी प्रकार करते जाओ—
निम्नलिखित उदाहरण देखो—

उदाहरण—४९१३ इसका घन मूल क्या होगा ?

```
       ।––।
       ४९१३( १७ यह घन मूल हुआ–इस गणित को
       १     ( देखने से उपरोक्त बातें स्पष्ट हो जांय
 २     ३९
१×३=३) २१
       ———
        १८१
 २     –१४७
       ————|
७×१×३)   ३४३
=१४७    –३४३
        ————
 ३        ×
७=३४३)
```

## (२१)—भिन्न गणित का नियम

जिस अङ्क के नीचे भाग हार लगा होता है उसे भिन्न कहते हैं
भिन्न संख्याओं का समच्छेद करने का सूत्र

**अन्योन्यहाराभिहतौ हरांशौ राश्योः समच्छेदविधानमेवम्।**
**मिथो हराभ्यामपवर्तिताभ्यां यद्वा हरांशौ सुधियात्र गुण्यौ ॥**

(लीलावती)

अन्वयः—हरांशौ अन्योन्यहाराभिहतौ एवं राश्योः समच्छेद विधानं यद्वा सुधिया अत्र अपवर्तिताभ्यां हराभ्यां हरांशौ मिथः गुण्यौ।

भाषा—दो भिन्न संख्याओं का हर और अंश को परस्पर हर से गुणन करने पर उन दोनों का समान हर हो जाता है. अथवा किसी तीसरी संख्या से दोनों के हरों को अपवर्तित (लघु) करके उपरोक्त क्रिया करने से समच्छेद होता है।

उदाहरण— जैसे $\frac{१}{५}$ और $\frac{१}{३}$ इन दोनों का समच्छेद करना है तो प्रथम हर ५ से द्वितीय हर और अंश का गुणा किया। एवं द्वितीय हर ३ से प्रथम हर, अंश का गुणा किया तो समच्छेद इस प्रकार हुआः— $\frac{३}{१५}+\frac{५}{१५}$ दोनों का योग किया तो $\frac{८}{१५}$ हुआ। इसी तरह समच्छेद कर लेने पर अन्तर भी करनाः—

उदाहरणः— $\frac{१}{६३} - \frac{१}{१४}$ इन दोनों का अन्तर क्या होगा ?

यहाँ पर ६३ और १४ इन दोनों हरों को ७ से अपवर्तन किया तो ९ और २ हुये, इन दोनों हरों का पूर्वोक्त रीति से समच्छेद यह हुआ $\frac{२}{१२६} - \frac{९}{१२६}$ अन्तर किया

तो $\frac{७}{१२६}$ हुआ।

इसी नियम से अनेक भिन्न संख्याओं का समच्छेद होता है।

## (२२) भिन्न का सङ्कलन (जोड़) और व्यवकलन (बाकी) का सूत्र

'योगान्तरं तुल्यहरांशकानां कल्प्यो हरो रूपमहारराशेः'

अन्वयः—तुल्यहरांशकानां योगः कार्यः अन्तरं वा कार्यम्, अहारराशेः रूपं हरः कल्प्यः।

भाषाः—जिन २ अंशो का हर तुल्य हो उन्हीं सबों का योग और अन्तर करना चाहिये। अहार राशि याने जिसके नीचे हर नहीं है; वहाँ १ हर कल्पना कर लेना चाहिये।

यथाः-पञ्चांशपादत्रिलवार्द्धषष्ठानेकीकृतान् ब्रूहि सखे ममैतान्।
एभिश्च भागैरथ वर्जितानां किं स्यात् त्रयाणां कथयाशु शेषम्॥

भाषाः—पञ्चांश $\frac{१}{५}$ पाद $\frac{१}{४}$ त्रिलव $\frac{१}{३}$ अर्द्ध $\frac{१}{२}$ षष्ठांश $\frac{१}{६}$ इन सब भिन्नों का योग क्या होगा?

तुल्य हार हो जाने परही योग वा अन्तर होगा। अतः समच्छेद करने के लिये पहले प्रथम हर ५ से पहिले को छोड़ कर अन्य अंश और हरों का गुणन किया:—

तो $\frac{१}{५}$, $\frac{५}{२०}$, $\frac{५}{१५}$, $\frac{५}{१०}$, $\frac{५}{३०}$ दूसरे हर ४ से गुणा किया

तो $\frac{४}{२०}$, $\frac{५}{२०}$, $\frac{२०}{६०}$, $\frac{२०}{४०}$, $\frac{२०}{१२०}$ तीसरा हर ३ से गुणा किया

तो $\frac{१२}{६०}$, $\frac{१५}{६०}$, $\frac{२०}{६०}$, $\frac{६०}{१२०}$, $\frac{६०}{३६०}$ चौथे हर २ से गुणा किया

तो $\frac{२४}{१२०}$, $\frac{३०}{१२०}$, $\frac{४०}{१२०}$, $\frac{६०}{१२०}$, $\frac{१२०}{७२०}$ पञ्चम हर ६ से गुणा किया

तो $\frac{१४४}{७२०}$, $\frac{१८०}{७२०}$, $\frac{२४०}{७२०}$, $\frac{३६०}{७२०}$, $\frac{१२०}{७२०}$ समच्छेद हुआ योग करने पर $\frac{१०४४}{७२०}$ हुआ। यहां हर भाज्य को ३६ से अपवर्तन दिया तो $\frac{२९}{२०}$ यह उदाहरणोक्त का योग हुआ। अब $\frac{२९}{२०}$ इसको तीन में घटाने से क्या शेष होगा?

$३ - \frac{२९}{२०}$ यहां ३ के नीचे हर नहीं है अतः १ मान लिया।

तब $\frac{३}{१} - \frac{२९}{२०}$ दोनों का समच्छेद किया $\frac{६०}{२०} - \frac{२९}{२०}$ घटाने पर $\frac{३१}{२०}$ हुआ।

## (२३)— भिन्नगुणन सूत्र

**अंशाहतिश्छेदवधेन भक्ता लब्धं विभिन्ने गुणने फलं स्यात् ।**

(लीलावती)

भाषा—अंशों के गुणनफल में हरों के गुणनफल का भाग देने पर जो भागफल होगा, वही भिन्न गुणन में गुणनफल होगा ।

यथा:—सत्र्यंशरूपद्वितयेन निघ्नं ससप्तमांशं द्वितयं भवेत् किम् ।
अर्द्धं त्रिभागेन हतञ्च विद्धि दक्षोऽसि भिन्ने गुणना विधौ चेत् ॥

भाषा—$२ + \frac{१}{७}$ इसको $२ + \frac{१}{३}$ से गुणा करने पर गुणन फल क्या होगा ?

यहाँ "छेदघ्नरूपेषु लवाधनर्णमेकस्य भागा अधिकोनकाश्चेत्" इस सूत्र के अनुसार सवर्णन करने पर $\frac{१५}{७}$, $\frac{७}{३}$ ऐसा हुआ । 'अंशाहतिश्छेदवधेन' इत्यादि नियम से $\frac{१५ \times ७}{७ \times ३} = \frac{१०५}{२१}$ हुआ । अब १०५ ÷ २१ = ५ गुणन फल हुआ ।

## (२४)—भिन्नभागहरण-सूत्र

**छेदं लवञ्च परिवर्त्य हरस्य शेषः,**
**कार्योऽथ भागहरणे गुणना विधिश्च ।**

भाषा—भिन्न भागहरण में हर को अंश और अंश को हर करो अर्थात् परिवर्तन (उलटा) करो । फिर शेष क्रिया गुणन विधि को करने पर भाग फल होता है ।

यथा :—सत्र्यंशरूपद्वितयेन पञ्च त्र्यंशेन षष्ठं वद मे विभज्य ।

भाषा—५ को $२ + \frac{१}{३}$ से तथा ६ को $\frac{१}{३}$ से भाग देने पर क्या लब्धि होगी ?

अब यहाँ $२ + \frac{१}{३}$ का सवर्णन किया तो $\frac{७}{३}$ हुआ, यहाँ ५ के नीचे हर नहीं है, अतः १ हर मान लिया। तो $\frac{५}{१} \div \frac{३}{७}$ करना है, तो $\frac{३}{७}$ के अंश हरों को परिवर्तन करने से $\frac{३}{७}$ हुआ; अब $\frac{५}{१} \times \frac{३}{७} = \frac{१५}{७}$ भाग फल हुआ। इसी का रूपान्तर $२ + \frac{१}{७}$ होगा। इसी तरह $\frac{६}{१} \div \frac{१}{३}$ को परिवर्तन करके गुणा किया, तो $\frac{६}{१} \times \frac{३}{१} = \frac{१८}{१}$ हुआ।

## (२५)—भिन्न वर्गादि-सूत्र ।

वर्गे कृती घनविधौ तु घनौ विधेयौ,
हारांशयोरथ पदे च पदप्रसिद्ध्यै ।

भाषा—भिन्न अङ्कों का वर्ग करना हो, तो हर और अंश दोनों का वर्ग करो। घन के लिये दोनों का घन एवं वर्ग मूल या घन मूल के लिये दोनों का मूल ले लो।

यथा:—सार्द्धत्रयाणां कथयाशु वर्गं वर्गात्ततो वर्गपदं च मित्र।
घनञ्च मूलञ्च घनात्ततोऽपि जानासि चेद्वर्गघनौ विभिन्नौ॥

भाषा—$३ + \frac{१}{२}$ का वर्ग क्या होगा ?

$३ + \frac{१}{२}$ का पहले सवर्णन करने से $\frac{७}{२}$ हुआ। इसका वर्ग किया तो $\frac{४९}{४}$ यह वर्ग हुआ।

$\sqrt{\frac{४९}{४}} = \frac{७}{२}$ यह वर्ग मूल हुआ।

एवं $\left(\frac{७}{२}\right)^3 = \frac{७}{२} \times \frac{७}{२} \times \frac{७}{२} = \frac{३४३}{८}$ घन हुआ एवं $\frac{३४३}{८}$

" आद्यं घनस्थानम् " इत्यादि नियम से $\frac{७}{२}$ घन मूल हुआ।

## (२६) इष्टकर्मगणित-सूत्र

उद्देशकालापवदिष्टराशिः क्षुण्णो हृतोंऽशै रहितो युतो वा।
इष्टाहतं दृष्टमनेन भक्तं राशिर्भवेत् प्रोक्तमितीष्टकर्म॥

भाषा—पहले इष्ट संख्या कल्पना करके फिर उदाहरण में कहे हुये नियम से उसमें गुणन, भाग, जोड़, बाकी कर देने पर निष्पन्नाङ्क होगा फिर उदाहरण में कहे हुये दृष्ट (व्यक्त) राशि को इष्ट संख्या से गुणन और पूर्वागत निष्पन्नाङ्क से भाग देने पर असली संख्या निकलेगी।

(१) यथा :—पञ्चघ्नः स्वत्रिभागोनो दशभक्तः समन्वितः।
राशित्र्यंशार्द्धपादैः स्यात् को राशिर्द्व्यूनसप्ततिः॥

भाषा—कौन ऐसी संख्या है जिसको ५ से गुणा कर उसी संख्या का त्रिभाग (तिहाई) घटा कर १० से भाग देकर जो लब्धि आती है। उसमें राशि का तिहाई, आधा और चौथाई जोड़ने पर ६८ होता है।

सूत्रानुसार पहले इष्ट ३ मान लिया। फिर उदाहरण रीति से गणित ३×५=१५ इसका तिहाई ५ घटाया तो १० हुआ। फिर १५ में १० से भाग देने पर लब्धि १ हुई। इसमें कल्पित

राशि ३ का $\frac{३}{३}$ $\frac{३}{२}$ $\frac{३}{४}$ जोड़ दिया। $\frac{१}{१}+\frac{३}{३}+\frac{३}{२}+\frac{३}{४}$

$=\frac{१७}{४}$ निष्पन्नाङ्क हुआ। अत्र दृष्टराशि ६८ को कल्पित राशि ३ से गुणा किया और निष्पन्नाङ्क से भाग दिया तो $\frac{६८\times३}{\frac{१७}{४}}$

$\frac{६८\times३\times४}{१७}=४८$ यही संख्या हुई।

यथा:—कामिन्या हारवत्या: सुरतकलहतो मौक्तिकानां
भूमौ यातस्त्रिभाग: शयनतलगत: पञ्चमांशोऽस्य दृष्ट:।
प्राप्त: षष्ठ: सुकेश्या गणक ! दशमक: संगृहीत: प्रियेण,
दृष्टं षट्कञ्च सूत्रे कथय कतिपयैर्मौक्तिकैरेष हार: ॥

भाषा :—$\frac{१}{३}$ $\frac{१}{५}$ $\frac{१}{६}$ $\frac{१}{१०}$ दृष्ट $=$ ६

यहाँ १ इष्टमान कर पूर्वोक्त नियम से मुक्त प्रमाण $=$ ३०

## ( २७ ) संक्रमणगणित-सूत्र

**योगान्तरेणोनयुतोर्द्धितस्तौ राशी स्मृतं संक्रमणाख्यमेतत् ।**

भाषा—किसी दो संख्याओं का योग और अन्तर जान कर उन दोनों के जानने का नियम यह है। कि योग को २ जगह रख कर पहिले स्थान में अन्तर को घटा देने और दूसरे जगह जोड़ देने पर और दोनों को आधा कर देने पर दोनों संख्या निकल आयंगी।

उदाहरण—ययोर्योग: शतं सैकं वियोग: पञ्चविंशति: ।
तौ राशी वद मे वत्स वेत्सि संक्रमणं यदि ॥

भाषा—दो संख्याओं का योग १०१ और अन्तर २५ है। तो दोनों संख्या क्या होंगी ?

गणित—
```
  १०१              १०१
 —२५              +२५
२)७६(३८          २)१२६(६३
```

अतः ३८, ६३ यही दोनों राशि हैं।

ययोर्योगः शतं सैकं तत्रैकः पञ्चविंशतिः ।
अपरं ब्रूहि मे वत्स दक्षोऽसि गणिते यदि ॥

यहाँ दोनों के योग १०१ में दूसरा २५ घटाया, तो ७६ दूसरी राशि हुई।

## (२८) वर्गान्तर और अन्तर जानकर राशि निकालने का सूत्र

**वर्गान्तरं राशिवियोगभक्तं योगस्ततः पूर्ववदेव राशी ।**

भाषा—वर्गान्तर को राश्यन्तर से भाग देने पर योग निकलेगा। फिर योग और अन्तर से संक्रमण गणित द्वारा राशि निकलेगी।

उदाहरण—राश्योर्ययोर्वियोगोऽष्टौ तत् कृत्योश्च चतुः शती ।
विवरं वद तौ राशी शीघ्रं गणित कोविद ॥

भाषा—दो राशियों का अन्तर ८ और वर्गान्तर ४०० है तो दोनों राशियों का प्रमाण क्या है ?

यहां सूत्रानुसार $\frac{४००}{८} = ५०$ यही योग है

```
  ५०              ५०
 —८              +८
२)४२(२१        २)५८(२९
```

२१, २९ यही दोनों राशि हैं।

## (२९) घनान्तर और राश्यन्तर जानकर राशि निकालने का सूत्र

घनान्तरं राशिवियोगभक्तं वियोगवर्गेण विहीनितं तत् ।
चतुर्गुणं रामकृतं वियोगं कृत्या युतं मूलमतो हि राशिः ॥

भाषा—घनान्तर को राश्यन्तर से भाग देकर लब्धि में राश्यन्तर का वर्ग घटा कर ४ से गुणा और ३ से भाग देकर लब्धि में राश्यन्तर का वर्ग जोड़ कर मूल लेने से योग निकल आयगा फिर अन्तर और योग पर से संक्रमण रीति से राशि प्रमाण निकल आयगा ।

उदाहरण—घनान्तरं ययोः सप्त त्वन्तरं रूपसंज्ञितम् ।
तौ राशी वद मे वत्स पाटीगणितरीतितः ॥

भाषा—घनान्तर ७ अन्तर १ सूत्रानुसार से

$\frac{७}{१} = ७$ ल. । ७—१ = ६

$\frac{६ \times ४}{३} = ८$ । ८+१ = ९

$\sqrt{९} = ३$ योग

| ३ | ३ |
|---|---|
| − १ | +१ |
| २ | ४ |

आधा करने पर १ । २ संख्या हुईं ।

## (३०) त्रैराशिक-गणित-सूत्र

प्रमाणमिच्छा च समानजाती आद्यन्तयोस्तत्फलमन्यजाति ।
मध्ये तदिच्छा हतमाद्यहृत्स्यादिच्छाफलं व्यस्तविधिर्विलोमे ॥

भाषा—त्रैराशिक में प्रमाण इच्छा और फल इस प्रकार तीन राशि होती हैं-- जिसमें प्रमाण और इच्छा एक जाति का और फल अन्य जाति का होता हैं। जैसे—१ रुपया में २५ आम्र मिलते हैं तो ३० रुपया में कितने मिलेंगे ? यहां आदि अन्त में प्रमाण इच्छा सजातीय और बीच में 'फल' आम्र दूसरी जाति का है फल को इच्छा से गुणकर प्रमाण धन से भाग देने पर इच्छा फल होता है।

जैसे $\frac{२५ \times ३०}{१} = ७५०$ यह इच्छा फल हुआ।

त्रैराशिक स्पष्ट है अतः एक ही उदाहरण दिया गया है।

## (३१) व्यस्तत्रैराशिक—सूत्र

इच्छावृद्धौ फलेऽह्रासो ह्रासे वृद्धिश्च जायते।
व्यस्तं त्रैराशिकं तत्र ज्ञेयं गणितकोविदैः॥

भाषाः—जहाँ पर इच्छा की वृद्धि और फल में ह्रास; इच्छा का ह्रास और फलकी वृद्धि हो, वहाँ व्यस्त त्रैराशिक होता है।

निम्नलिखित जगहों में व्यस्त त्रैराशिक होता हैः—

जीवानां वयसो मूल्ये तौल्ये वर्णस्य हेमनि।
भागहारे च राशीनां व्यस्तं त्रैराशिकम्भवेत्॥

भाषाः—प्राणियों की अवस्था के मूल्य में, सोने की तौलमें और राशियों के भाग हार में व्यस्त (उलटा) त्रैराशिक होता है—

यथा :—प्राप्नोति चेत् षोड़शवत्सरा स्त्री,
द्वात्रिंशतं विंशतिवत्सरा किम्।
द्विधूर्वहो निष्कचतुष्कमुक्षाः,
प्राप्नोति धूः षट्कवहस्तदा किम्॥

भाषाः—सोलह वर्ष की अवस्था वाली स्त्री का मूल्य अगर ३२ है। तो २० वयस्का स्त्री का मूल्य क्या होगा ? एवं २ धूर वहने वाला बैल का मूल्य ४ निष्क होता है तो ६ धूर वहने वाले का मूल्य क्या होगा ?

यहाँ दोनों जगह व्यस्त त्रैराशिक होने से इच्छा को प्रमाण धन से गुणा और प्रमाण फल से भाग देने पर फल आयगा—

१६ । ३२ । २० $\frac{३२ \times १६}{२०} = \frac{८ \times १६}{५} = \frac{१२८}{५} = २५ + \frac{३}{५}$

यह २० वयस्का स्त्री का मूल्य हुआ।

एवं २।४।६ $\frac{४ \times २}{६} = \frac{८}{६} = १ + \frac{२}{६} = १ + \frac{१}{३}$ यह ६ धूर वाले का मूल्य हुआ।

यथाः—दशवर्णं सुवर्णं चेत् गद्याणकमवाप्यते ।
निष्केण तिथिवर्णन्तु तदा वद कियन्मितम् ॥

भाषा—यदि दशवर्ण (१० वार तपाया हुआ) सुवर्ण का मूल्य १ गद्याणक है। तो एक निष्क में १५ वर्ण सुवर्ण कितना मिलेगा ? यहां सुवर्ण की स्वच्छता तपाने पर ही अधिक है अतः व्यस्त त्रैराशिक होगा। ∴ १०।१।१५ $\frac{१० \times १}{१५} = \frac{१०}{१५} = \frac{२}{३}$ भाग १५ वर्ण का सुवर्ण १ निष्क में मिलेगा।

## (३२) दशमलव गणित का नियम.

राश्योर्मध्यस्थितो बिन्दुर्दशांशाह्वयपद्धतेः ।
चिह्नं तयोर्यः प्रथमः पूर्णानङ्कान् व्यनक्ति सः ।
द्वितीयांशान् व्यनक्त्यस्मिन् याङ्कसंख्या च तन्मित ।
दशघातो भवेच्छेदो ह्यतो गणितलाघवम् ।
(ज्योतिर्गणित)

भाषाः—दशमलव गणित में दो संख्याओं के मध्य में जो विन्दु होता है। वह दशमांश का बोधक होता है। उन दोनों राशियों में पहला पूर्णाङ्क और दूसरे में जितनी संख्यायें होंगी। उतना दशांश का बोधक होगा। अर्थात् दूसरी संख्या के प्रथमांक से दशांश, दूसरे से शतांश, तीसरे से सहस्रांश इत्यादि का बोध होता है। दशमलव के योगान्तर में जिस तरह पूर्णाङ्क का योग होगा। उसी तरह अंशो का भी यथास्थान योगान्तर होगा।

(१) उदाहरणम्:—

पञ्चाग्निशून्यरसविन्दुषडष्टतुल्या,
संख्यां दशांशसरणौ च विलिख्य तस्याः।
अग्रे प्रदर्शयत तत्समभिन्नराशिं,
येनोभयोर्गणितयोः समता प्रसिध्येत्॥

भाषा—उदाहरणोक्त ८६· ६०७५ संख्या में दोनों राशियों के बीच में जो चिन्ह है वह दशमलव का चिन्ह है। यहां ८६ पूर्णाङ्क है और ६०७५ अंश है। यहां अंश चार है और पांचवाँ बिन्दु है, इस लिये अंश के नीचे (१००००) हर रहेगा।

(१) $८६\cdot ६०७५ = ८६ \frac{६०७५}{१००००}$ यहां अंश स्थान में २५ का अपवर्तन देने से $८६ + \frac{२४३}{४००}$ ऐसा भी लिख सकते हैं।

(२) एवं $८०\cdot००७५१ = ८० \frac{७५१}{१०००००}$

(३) एवं $०\cdot००००२५ = \frac{२५}{१००००००} = \frac{१}{४००००}$

अथवा अंशों को इस तरह भी लिख सकते हैं।

$$\frac{६}{१०} + \frac{०}{१००} + \frac{७}{१०००} + \frac{५}{१००००} = \frac{६०९५}{१००००}$$

## (३३) दशमलव के योगान्तर सूत्र

उर्ध्वा धरायां रेखायां यथास्युर्बिन्दवस्तथा ।
उद्दिष्टराशीन् विन्यस्य योगायोगौ सखे कुरु ॥
(ज्यो. ग.)

भाषा—अङ्कों का दशमलव चिन्ह (·) जिस तरह सामने पड़ें उस तरह संख्याओं को लिखकर पूर्णाङ्क के सदृशयोग और अन्तर करो।

यथा:—पञ्चाद्रिशून्यरसबिन्दुषड़ष्टसूर्य्याः,
सप्ताष्टचिन्हतुरगा रसशून्यरामाः ।
पञ्चाङ्कशून्यखखबिन्दत्र इत्यमीषां,
योगद्वयोर्वद वियोगमपि क्रमेण ॥

भाषा—उपरोक्त सूत्रानुसार १२८६·६०७५ और ७·८७००० और ३०६·००००० और ०·०००६५ का योग और दो दो राशियों का वियोग क्या होगा ?

योग

```
१२८६· ६०७५०
   ७· ८७०००
 ३०६· ०००००
   ०· ०००६५
─────────────
१६००· ४७८१५
```

वियोगः

```
(१) १२८६· ६०७५
       ७· ८७००
────────────────
    १२७८· ७३७५

(२) ३०६· ०००००
      ०· ०००६५
────────────────
    ३०५· ९९९३५
```

## (३४) दशमलव का गुणन और भजन सूत्र

भाज्यभाजकयोर्गुण्यगुणयोरुक्तपद्धतेः ।
चिन्हं नास्तीति संकल्प्य गुणनं भजनं कुरु ॥

गुण्यगुण्यांशांकसंख्यायोगेन तुलिते स्थले।
गुणकारस्यान्तिमाङ्काद्वामतः कुरु लक्षणम् ॥
भाज्यस्यांशांकसंख्यातो भाजकस्य विशोधयेत्।
शेषे स्वे तन्मिते स्थाने लब्ध्यन्तात् कुरु लक्षणम्॥
अन्यथा सव्यतः शेषमितशून्यानि योजयेत्।
शून्यप्रयुक्ता लब्धिस्तु सदा पूर्णेति बुध्यताम् ॥

भाषा—भाज्य भाजक और गुण्य गुणक इन सबों में दशमलव के चिन्ह होते हुये भी उसे छोड़कर पूर्णांकवत् गुणन भजन करो। अनन्तर गुणफल में या भागफल में कहां पर चिन्ह करें जिसमें पूर्णाङ्क और दशमांश का बोध हो। इसके लिये गुण्य और गुणक दोनों के अंशों को जोड़कर जो संख्या उत्पन्न हो तत्तुल्य गुणन फल में बाये तरफ चिन्ह करो, जहाँ पर गुणन फल की अङ्क संख्या गुण्य गुणक अंशों के योग संख्या से न्यून हो वहाँ न्यून संख्या तुल्य गुणन फल के बायें तरफ शून्य रखकर स्थान पूरा करके दशमलव का चिन्ह लगाओ। भागहरण में भाज्य के अंश की अंक संख्या में भाजक की अंशांक संख्या घटा कर जो शेष बचे तत्तुल्य लब्धि में वाम भागीय क्रमशः गिनकर चिन्ह करो। ऋण शेष में लब्धि के अन्तिमांक से दाहिने तरफ चिन्ह लगाओ। शून्य युक्त लब्धि को पूर्णाङ्क समझो। भाज्य भाजक की अंश संख्याओं के समान होने पर भी लब्धि को पूर्णांक समझो।

यथाः—षड्बिन्दुद्वादशान् षड्भिः षष्ट्या षट्शून्य बिन्दुभिः।
षट्शत्या सप्तषष्ट्या च हत्वा भक्त्वा फलं वद ॥

भाषा—१२·६ को ६, ६०, ·०६, ६००, ६७ इन अङ्कों से गुणन और भाग देने पर क्या फल होगा ?

| गुणन | भागहरण |
|---|---|
| १२˙६ × ६ = ७५˙६ | १२˙६ ÷ ६ = २˙१ |
| १२˙६ × ६० = ७५६˙० | १२˙६ ÷ ६० = ˙२१ |
| १२˙६ × ˙०६ = ०˙७५६ | १२˙६ ÷ ˙०६ = २१०˙ |
| १२˙६ × ६०० = ७५६०˙० | १२˙६ ÷ ६०० = ˙०२१ |
| १२˙६ × ६७ = ८४४˙२ | १२˙६ ÷ ६७ = ˙१८८०५९५५२२३ |

इन उदाहरणों में उपरि दर्शित नियमों का अनुसन्धान करने से स्पष्ट होगा। भाग हार में विशेषता यह है कि जितने शून्य बढ़ेंगे, उतने भाज्य के अंश शेष में जोड़ कर जो संख्या होगी, उतने पर दशमलव चिन्ह होगा।

अर्थात् भाजक को दशमलव की संख्या से भाज्य की दशमलव के अंक संख्या जितनी अधिक होगी। लब्धि में उतने ही अंक दाहिनी ओर छोड़कर दशमलव का चिन्ह रखा जायगा। इसी तरह गुण्य गुणक का अनुसन्धान कर गुणनफल में दशमलव का चिन्ह रखे।

यथाः—भाज्यः २१६˙०७३०७६८ भाजकः ५४˙३५९

५४˙२५७)२१६˙०७३०७६८(३९८२४<br>
१६२ ६७१<br>
५३३०२०<br>
४८८३१३<br>
४४७०७७<br>
४३४०५६<br>
१३०२१६<br>
१०८५१४<br>
२१७०२८<br>
२१७०२८<br>
×

भाजक के दशमलव की अंक संख्या से भाज्य के दशमलव की अंक संख्या ४ अधिक है। अतः लब्धि में दाहिनी ओर के ४ अंक छोड़कर दशमलव का चिन्ह रखा। तब लब्धि = ३˙९८२४ हुई।

## ( ३५ ) भागहरण में विशेष सूत्र

भाजकेन यदा भाज्यं निःशेषं न हृतं तदा ।
यतमस्थानपर्यन्तं सूक्ष्मता स्यादभीप्सिता ॥
तावत् स्थानावधौ भाज्ये दत्वा शून्यानि चाहरेत् ।
( ज्यो० ग० )

भाषा—दशमलव के भागहार में भाज्य को भाजक से भाग देने पर अगर निःशेष न होता हो; तो जहाँ तक सूक्ष्मता की आवश्यकता हो; वहाँ तक शून्य बढ़ा कर भाग लेना चाहिये।

जैसेः—भाज्य = ५९२'७ । भाजक = १४'३ तो लब्धि बताओ ?

```
१४'३)५९२'७(४१'४
     ५७२
     ────
      २०७
      १४३
      ────
       ६४०
       ५७२
       ────
१४'३)६८०(४७५५२४
     ५७२
     ────
     १०८०
     १००१
     ────
      ७९०
      ७१५
      ────
      ७५०
      ७१५
      ────
      ३५०
      २८६
      ────
      ६४०
      ५७२
      ────
       ६८    शेष
```

उक्त उदाहरण में प्रथम ६८ शेष आया था उसमें शून्य रखा तो ६८० हुए। पुनः भाग दिया, शेष में शून्य रखते गये। अन्ततः पुनः ६८ शेष में आगया। तब लब्धि ४१·४४७५५२४ हुई। अब यदि फिर भी शून्य रखकर भाग दिया जाय तो ४७५५२४ ही अंक संख्या पुनः पुनः आयेगी।

अब दशमलव के वर्ग व घन करने में साधारण 'समद्विघातः कृतिः' रीति से वर्ग व 'समत्रिघातश्च घनः' रीति से घन करे। विशेष बात यह है कि वर्ग करने में दशमलव की अंक संख्या के द्विगुणित अंक संख्या दाहिनी ओर छोड़कर वर्गफल में दशमलव का चिन्ह रखे। और घन करने में त्रिगुणित संख्या दाहिनी ओर छोड़कर चिन्ह रखना चाहिये।

यथाः—

९३·५८२ का वर्ग व घन बताओ ?

```
     ९३५८२ × ९३५८२
     --------------
            १८७१६४
           ७४८६५६
          ४६७९१०
         २८०७४६
        ८४२२३८
     --------------
     ८७५७५९०७२४ ...... ९३·५८२ का वर्ग हुआ
```

इसमें दशमलव से ('५८२) तीन अंक की संख्या है अतः ३ × २ = ६ अंक वामभागीय क्रमशः गिनकर दशमलव का चिन्ह रखा तो $९३·५८२^{२}$ = ८७५७·५९०७२४ हुआ। अब उक्त संख्या का घन भी करना है तोः—

```
वर्ग की हुई संख्या ८७५७५९०७२४ × ९३५८२
                   -----------------
                  १७५१५१८१४४८
                 ७००६०७२५७९२
                ४३७८७९५३६२०
               ३६२७२७७२१४२
              ७८८१८३१६५१६
             ------------------
             ८१९५५२८५५१०३३६८
```

इसमें दशमलव की अंक संख्या ('५८२) तीन है तो घन करने में त्रिगुणित ३ × ३ =ः ९ अंक संख्या बाम भागीय क्रमशः गिनकर दशमलव का चिन्ह रखा तो १३'५८२ुे=८१९५५२' ८५५१०३३६८ हुआ।

गुणनफल के शोधन का नियम बताया जाता है।

गुण्य × गुणक=गुणनफल

गुण्य के अंकों को जोड़कर ९ का भाग दे शेष गुणा का चिन्ह बनाकर (×) वांये ओर रखे। गुणक के अंकों को जोड़कर ९ का भाग देकर शेष दाहिनी ओर रखे। गुणनफल के अंकों को जोड़कर नव का भाग देकर शेष ऊपर रखे। गुण्य, गुणक के शेष अंकों को गुणाकर ९ का भाग देकर शेष नीचे रखे। तब यदि गुणनफल का ही अंक आजाय तो शुद्ध जानना, अन्यथा गुणनफल अशुद्ध जानना।

यथा—

१८६ × ४७ = ८७४२ गुणनफल

१ + ८ + ६ = १५ ÷ ९ = शेष ६ ३

४ + ७ = ११ ÷ ९ = शेष २ गुण्य ६ × २ गुणन

८ + ७ + ४ + २ = २१ ÷ ९ शेष ३ ३

६ × २ = १२ ÷ ९ = शेष ३ गुणनफल का समांक

अब भाग के शोधन का नियम बताया जाता है।

भाज्य भाजक, लब्धि, शेष के अंकों को गुणा शोधन प्रकार की तरह जोड़कर ९ का भाग देकर शेष पृथक् २ रखे। फिर लब्धि और भाजक के शेष अंकों का गुणनकर ९ का भाग दे तो यदि शेष भाज्य के शेष के समान अंक हो तो भाग शुद्ध जानना चाहिये।

F.—3

यथा—

भाज्य

भाजक१८६)८७४२(४७ लब्धि
७४४
१३०२
१३०२
० शेष

भाज्य ८+७+४+२=२१÷९=शेष ३
भाजक १+८+६=१५÷९=शेष ६
लब्धि ४+७=११÷९=शेष २
शेष ०=०÷९=शेष ०

भाज्य
भाजक ६) ३ (२लब्धि
० शेष

शेष भाजक × लब्धि शेष
३ × २ =१२÷९= शेष ३ यह भाज्य शेष के समान अंक हैं। अतः लब्धि और शेष शुद्ध हैं।

## लघुतम

भिन्न पद्धति में अपवर्तन करने के लिये लघुतम का ज्ञान आवश्यक है। जिन संख्याओं का अपवर्तन करना हो, उन संख्याओं में छोटे अंक से भाग दे। ध्यान रहे कि २ संख्या में या अधिक में भाग जावे। ऐसा हो जाने पर परस्पर गुणन करें तो लघुतम हो जायगा।

यथाः—

२) १५, १६, १८, २०, २४, २५, २७, ३०
२) १५, ८, ९, १०, १२ २५, २७, १५
२) १५, ४, ९, ५, ६, २५, २७, १५
३) १५, २, ९, ५, ३, २५, २७, १५
३) ५, २, ३, ५, १, २५, ९, ५
५) ५, २, १, ५, १, २५, ३, ५
१, २, १, १, १, ५, ३, १

=२×२×२×३×३×५×२×५×३=१०८०० यही उक्त संख्याओं का लघुतम अर्थात् छोटी संख्या हुई।

इति गणितविवेकः

# कुण्डली-विवेक

जन्म कुण्डली के बनाने में प्रथम सूक्ष्म इष्ट काल और स्पष्ट ग्रहों का दृक् तुल्य साधन करना अत्यावश्यक होता है॥ कुण्डली में महर्षियों ने १२ भावों की कल्पना की है। जिसमें लग्न प्रधान है। लग्न का अर्थ है (लगतीति लग्नम्) अर्थात् लगा हुआ चिन्ह; तत्व यह है कि इष्ट समय में क्रान्ति वृत्त का जो प्रदेश पूर्व क्षितिज में लगा होता है उसी को लग्न कहते हैं॥ लग्न का साधन सायन सूर्य और इष्ट काल पर से होता है, जिसे सोदाहरण आगे लिखेगे। इष्ट काल और ग्रहों के सूक्ष्म साधन के लिये केशवाचार्य ने लिखा है कि (यन्त्रैः स्पष्टतरोऽत्र जन्मसमयो वेद्योऽथ खेटाः स्फुटा, यत् पक्षे हि घटन्त उद्गगम इहास्तर्क्षं सपड्भः स च) अर्थात् जन्म का इष्ट यंत्रादि साधनों से सूक्ष्मातिसूक्ष्म जानना चाहिये। आज कल भारतवर्ष में घड़ी से (स्टेण्डर्ड टाइम द्वारा) इष्ट काल ज्ञान का प्रचार हो गया है। इसको उपयोग में लेने की एक विशेष विधि है जिसे आगे लिखेंगे।

१२ अंगुल शंकुछाया पर से इष्ट काल साधन के लिये वराहमिहिरा चार्य ने लिखा है कि—

दिनं खरामैरधिकं यदल्पं रसेन पंक्त्या निहतं शराप्तम्।
हीनं धनं देशपलप्रभायां छाया च सा स्यात् दिनमध्यभागे॥
छाया निजेष्टा दिनमध्यभागच्छायोनिता दिक् सहिता तयाप्ता।
दिने शरघ्ने गतगम्यनाड़ी श्रीमान् वराहो वदति स्वयुक्त्या॥
(जन्मपत्रिका विधान)

अन्वयः—दिनं दिनमानं खरामैः ३० त्रिंशद्भिः यत् (यावन्मितं) अधिकं वा यत् अल्पं तत् क्रमेण रसेन (षड्भिः) पंक्त्या (दशभिः) निहतं (गुणितं) शराप्तम्,

पञ्चभिर्भक्तं, फलं यत्, तत् देशपलप्रभायां (स्वदेशीय-पलभायां) हीनं धनंवा कार्यम्। अधिकश्चेद्धीनम्, अल्पं चेद्धनं कार्यम्, सा दिनमध्यभागे दिनार्द्धकाले छाया स्यात्, निजा स्वदेशीया इष्टा अभीष्टा छाया दिनमध्यभागच्छायया ऊनिता रहिता कार्या, तया शरघ्ने पञ्चगुणिते दिने आप्ता क्रमेण गतगम्यनाड़ी स्युरिति श्रीमान् वराहः स्वयुक्त्या वदति।

भाषा—दिनमान ३० से अधिक हो तो उस अधिक को ६ से और ३० से जितना अल्प हो उसको १० से गुणा करो। ५ का भाग दो। लब्धि को स्वदेशीय पलभा में हीन वा धन करो (अगर दिनमान ३० से अधिक हो तो घटा दो अल्प हो तो जोड़ दो) वह मध्याह्न (१२) बजे की छाया होगी। अब इष्ट कालिक (१२ बजे से पूर्व या पश्चात्) छाया में स्वदेशीय मध्याह्न कालिक छाया को घटा दो। १० जोड़ दो। उससे पञ्च गुणित दिनमान में भाग देने से जो लब्धि होगी, वह क्रम से गत और गम्य नाड़ी होगी। १२ बजे के पूर्व गत नाड़ो अर्थात् सूर्योदय से इष्ट काल होगा। १२ बजे के पश्चात् गम्य नाड़ी अर्थात् दिन शेष रहेगा उसको दिनमान में घटाने पर सूर्योदय से इष्ट काल होगा।

उदाहरण(१)—सं० १९९४ ज्ये. कृ. १२ रविवार को १२ बजे के पूर्व किसी समय द्वादशाङ्गुलशङ्कु की छाया १५ अं १० व्य. है। तो इष्ट काल क्या होगा? उस दिन का दिनमान ३३।२१ है। यह तीस से ३।२१ अधिक है। अतः ६ से गुणा करने पर (१८।१२६)=२०।६ हुआ। ५ से भाग दिया। तो ४।१ लब्धि हुई; इसको जबलपुर की पलभा ५।८ में से घटाया। तो १।७ मध्याह्नकालिक छाया हुई। इसको इष्टच्छाया (१५।१०) में घटाया। तो १४।३ शेष बचा

१० जोड़ दिया तो २४।३ हुआ। इससे पञ्च गुणित दिनमान में भाग दिया। ( ३३।२१ )×५÷( २४।३ ) =१।२३ लब्धि हुई। यही सूर्योदय से इष्ट काल हुआ। यही गणित मध्याह्न के पश्चात् का हो तो लब्धि को दिनमान में घटाने से इष्ट काल होगा—
३३।२१–१।२३=३१।५८।

उदाहरण (२)—सं० १९९४ माघ कृ. १ चन्द्रवार को दिनमान २७।० है। पूर्वाह्णकालिक छाया १८।२५ है। यहाँ इष्ट काल के लिये गणित इस प्रकार होगा।

३०—२७=३
३×१०=३०
३०÷५=६
५।८+६।०=११।८
मध्याह्न छाया १८।२५ – ११।८ =७।१७
७।१७+१० = १७।१७
दिनमान २७×५=१३५
१३५÷१७।१७

$$=\frac{१३५\times ६०}{१७+\frac{१७}{६०}}=\frac{८१००}{१०३७}$$ = ७।४९ हुआ। यही सूर्योदय से इष्टकाल हुआ

प्रचलित स्टेण्डर्ड टाइम द्वारा इष्ट संशोधन—

सार्वजनिक कार्यों में सरलता के लिए जिस प्रकार आज कल ६० घटी या २४ घंटे की अहोरात्र व्यवस्था है। उसी प्रकार आजकल पोष्ट आफिस या रेलवे आदि में सरलता के लिए स्टेण्डर्ड टाइम का प्रयोग किया जाता है। परन्तु

सूर्य कृत्रिम नियम द्वारा वद्ध नहीं। क्योंकि अहोरात्र प्रायः ६० घटी या २४घंटे से अधिक या कम होता है। तत्व यह कि स्टैंडर्ड टाइम सब जगह का एकही होता है ये प्रचलित अंग्रेजी घड़ियां सारे हिन्दुस्थान में एकही साथ मिलाई जातीं है, इनमें प्रत्येक जगह एकही साथ १२ बजते हैं, एक ही साथ चार। पर धूप घड़ी का समय प्रत्येक स्थान का भिन्न भिन्न होता है कलकत्ता में जिस समय १२ बजता है वंबई में उस समय १० बजकर ५७ मिनट ही होता है। इस भेद को दूर करने के लिए गणितज्ञों ने दो संस्कारों को व्यवस्था की है। एक तो वेलान्तर; दूसरा देशान्तर। क्योंकि जब स्थानीय धूप घड़ी में १२ बजता है। तब मध्याह्न काल में सूर्य वास्तविक ठीक शिर के ऊपर नहीं रहेगा या तो पूर्व होगा या पश्चिम। वर्ष में केवल चार वार ही सूर्य घड़ी (धूप घड़ी) में जव १२ बजता है तभी सूर्य भी ठीक शिर पर रहता है। परन्तु वर्ष के शेष दिनों में मध्यम मध्याह्न से स्पष्ट मध्याह्न का भेद जानने के लिये वेलान्तर संस्कार की व्यवस्था की गई है। और इसी को काल-समीकरण भी कहते हैं। स्टेण्डर्ड टाइम से लोकल टाइम (स्थानीय समय) का भेद जानने के लिए देशान्तर संस्कार की योजना की गई है। स्टेण्डर्ड टाइम अपने भारतवर्ष में ८२।३० देशान्तर का है। इससे अधिक देशान्तर में एक अंश में ४ मिनट के हिसाब से धन संस्कार स्टेण्डर्ड टाइम में करने से स्थानीय टाइम बन जाता है। इससे कम देशान्तर में १ अंश में ४ मिनट के हिसाब से स्टेण्डर्ड टाइम में ऋण संस्कार करने से स्थानीय टाइम बन जाता है। अतएव इन दोनों संस्कारों के कर देने से अभीष्ट समय का स्टेण्डर्ड टाइम से स्पष्ट स्थानीय समय बन जाता है।।

दो तीन नवेम्बर को यह स्पष्ट मध्याह्न और मध्यम मध्याह्न का अंतर ४२ पल १६ मिनट के आस पास पहुंच जाता है। अब मान लीजिये कि दो तीन नवम्बर को ही इष्ट काल बनाना है। तब यदि यह विचार न किया गया होगा तो १६ मिनट की चूक तो एक यही हुई, दूसरी बात यह देखिये कि यह विचार हम किस शहर के लिए कर रहे हैं। उसके अनुसार संस्कार की और भी आवश्यकता मालूम होगी यदि जबलपुर ही के लिये हमें विचार करना है, तब देखिये स्टेण्डर्ड टाइम ८२॥ रेखांश मूलक है, और जबलपुर ८० रेखांश पर बसा है अतः२॥ अंश में=१०मिनट होंगे अब दोनों को जोड़ दीजिये, तब यह निष्कर्ष निकला कि यदि हमने २ नवम्बर को ये संस्कार नहीं किये तो २६ मिनट बाद का इष्टकाल बनाकर समाज के साथ हमने कितना बड़ा अहित कर डाला। कहते हैं कि योरोप में एक ज्योतिषी को प्राण दंड इसी अपराध पर दिया गया था, कि उसने ग्रहण का समय अशुद्ध निकाला था, विचार कीजिये, कि एक इसी बात के विचार न करने से भारतवर्ष में फी सदी ९८ जन्मपत्री अशुद्ध बनेगी, कि नहीं जहां ज्योतिष फलादेश का मूल इष्ट इस प्रकार भ्रष्ट हो, वहां शुद्ध नवमांश,त्रिशांश,सप्तमांश, द्वादशांश बनाना कोरा ढकोसला नहीं तो और क्या है। फिर फल मिलने की आशा ही क्या तत्व यह कि इन संस्कारों को करके ही इष्ट काल बनाना चाहिये घड़ी के ही टाइम पर नहीं।

# वेलान्तर-सारणी

## मध्यम मध्याह्न और स्पष्ट मध्याह्न का अन्तर

| तारीख | ज. | फ. | मार्च | ए. | मई | जून | जु. | अ. | सि. | अ. | न. | दि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | सि. | सि. | मि. | मि. |
| १ | —४ | —१४ | —१२ | —४ | +३ | +२ | —४ | —६ | +० | +१० | +१६ | +११ |
| २ | —४ | —१४ | —१२ | ४ | +३ | +२ | —४ | —६ | +० | +११ | +१६ | +१० |
| ३ | —५ | —१४ | —१२ | —३ | +३ | +२ | —४ | —६ | +१ | +११ | +१६ | +१० |
| ४ | —५ | —१४ | —१२ | —३ | +३ | +२ | —४ | —६ | +१ | +११ | +१६ | +१० |
| ५ | —६ | —१४ | —१२ | —३ | +३ | +२ | —४ | —६ | +१ | +१२ | +१६ | +९ |
| ६ | —६ | —१४ | —११ | —२ | +४ | +२ | —४ | —६ | +२ | +१२ | +१६ | +९ |
| ७ | —७ | —१४ | —११ | —२ | +४ | +१ | —५ | —६ | +२ | +१२ | +१६ | +८ |
| ८ | —७ | —१४ | —११ | —२ | +४ | +१ | —५ | —५ | +२ | +१२ | +१६ | +८ |
| ९ | —७ | —१४ | —११ | —२ | +४ | +१ | —५ | —५ | +३ | +१३ | +१६ | +७ |
| १० | —८ | —१४ | —१० | —१ | +४ | +१ | —५ | —५ | +३ | +१३ | +१६ | +७ |
| ११ | —८ | —१४ | —१० | —१ | +४ | +१ | —५ | —५ | +३ | +१३ | +१६ | +६ |
| १२ | —९ | —१४ | —१० | —१ | +४ | +० | —५ | —५ | +४ | +१४ | +१६ | +६ |
| १३ | —९ | —१४ | —१० | —० | +४ | +० | —५ | —५ | +४ | +१४ | +१६ | +६ |
| १४ | —९ | —१४ | —९ | —० | +४ | —० | —६ | —४ | +५ | +१४ | +१५ | +५ |
| १५ | —१० | —१४ | —९ | +० | +४ | —० | —६ | —४ | +५ | +१४ | +१५ | +५ |
| १६ | —१० | १४ | —९ | +० | +४ | —० | —६ | —४ | +५ | +१४ | +१५ | +४ |
| १७ | —१० | —१४ | —८ | +१ | +४ | —१ | —६ | —४ | +६ | +१५ | +१५ | +४ |
| १८ | —११ | —१४ | —८ | +१ | +४ | —१ | —६ | —४ | +६ | +१५ | +१५ | +३ |
| १९ | —११ | —१४ | —८ | +१ | +४ | —१ | —६ | —३ | +६ | +११ | +१४ | +३ |
| २० | —११ | —१४ | —८ | +१ | +४ | —१ | —६ | —३ | +७ | +१५ | +१४ | +२ |
| २१ | —१२ | —१४ | —७ | +१ | +४ | —२ | —६ | —३ | +७ | +१५ | +१४ | +२ |
| २२ | —१२ | —१४ | —७ | +२ | +४ | —२ | —६ | —३ | +७ | +११ | +१४ | +१ |
| २३ | —१२ | —१४ | —७ | +२ | +३ | —२ | —६ | —२ | +८ | +१६ | +१३ | +१ |
| २४ | —१२ | —१३ | —६ | +२ | +३ | —२ | —६ | —२ | +८ | +१६ | +१३ | +० |
| २५ | —१३ | —१३ | —६ | +२ | +३ | —२ | —६ | —२ | +८ | +१६ | +१३ | —० |
| २६ | —१३ | —१३ | —६ | +२ | +३ | —३ | —६ | —२ | +९ | +१६ | +१२ | —१ |
| २७ | —१३ | —१३ | —५ | +२ | +३ | —३ | —६ | —१ | +९ | +१६ | +१२ | —१ |
| २८ | —१३ | —१३ | ५ | +३ | +३ | —३ | —६ | —१ | +९ | +१६ | +१२ | —२ |
| २९ | —१३ | —१२ | —५ | +३ | +३ | —३ | —६ | —१ | +१० | +१६ | +११ | —२ |
| ३० | —१४ | ❀ | —४ | +३ | +३ | —३ | —६ | —० | +१० | +१६ | +११ | —३ |
| ३१ | —१४ | ❀ | —४ | ❀ | +३ | ❀ | —६ | —० | ❀ | +१६ | ❀ | —३ |

उदाहरण (१)—संवत् १९९० आषाढ़ शुक्ल १३ बुधवार ता० ५ जुलाई सन् १९३३ ई० को स्टेण्डर्ड घड़ी (पोष्ट या रेलवे) का टाइम प्रातः काल ८ बजकर ३३ मिनट पर स्थानीय ( जबलपुर ) धूप घड़ी में क्या टाइम होगा ?

जबलपुर का देशान्तर ८०° है, यह स्टेण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२।३० से २ अंश ३० कला कम है; तो १ अंश में ४ मिनट के हिसाब से २½ अंश में १० मिनट स्टेण्डर्ड टाइम देशान्तरांशादि ८२।३० से स्थानीय (जबलपुर) देशान्तरांशादि ८०°।० कम होने के कारण ऋण संस्कार होगा। तो स्टेण्डर्ड टाइम ८।३३ – १० मिनट =८।२३ स्थानीय मध्यम समय हुआ। अब ५ जुलाई को बेलान्तर सारणी में ४ मिनट ऋण लिखे हैं। अतः स्थानीय मध्यम समय ८।२३ – ४ मिनट =८।१९ स्पष्ट स्थानीय (जबलपुर) समय हुआ। अब जबलपुर के अन्य कतिपय नगरों में किस तरह सरलता पूर्वक स्थानीय स्पष्ट समय जाना जाय इसके लिये एक 'स्थानीय (जबलपुर) समय सारणी' तथा एक 'जबलपुर से देशान्तर सारणी' का उल्लेख किया जाता है। साथ ही साथ यह भी ध्यान रखा गया है। कि यह दोनों सारणियाँ देशान्तर सारणी लिखित नगरों में सर्वदा काम में लायी जा सकें।

उदाहरण—(२) संवत् १९९४ वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार ता. २१ मई सन् १९३७ को रात्रि में ३ बजकर २० मिनट पर कानपुरमें किसी का जन्म हुआ। तो स्थानीय शुद्ध इष्टकाल क्या होगा? कानपुर का देशान्तर ८०°।१५′ है। तो यह स्टेण्डर्ड टाइम देशान्तर ८२°।३०′ से २ अंश १५ कला कम है। तो १ अंश में ४ मिनट होता है। अतः २ अंश १५ कला में ९ मिन ८ हुआ। अभीष्ट नगर के देशान्तरांश न्यून होने के कारण स्टेण्डर्ड टाइम ३।२०–९ मिनट = ३।११ स्थानीय कानपुर मध्यम काल हुआ। अब ता. २१ मई को वेलान्तर सारणी में ४ मिनट धन लिखा है। अतः ३।११ + ४ मिनट=३।१५ स्थानीय स्पष्टकाल हुआ।

## स्थानीयसमयसारणी

### स्टेण्डर्ड टाइम से स्थानीय (जब्बलपुरीय) समय जानने की सारणी

१ जनवरी से १ अक्टूबर तक ऋण २ अक्टूबर से ४ दिसम्बर तक धन ५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक ऋण करना चाहिये।

| तारीख | ज. | फ. | मा. | ए. | मई. | जून | जु. | अ. | से. | अ. | न. | दि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. | मि. |
| १ | १४ | २४ | २२ | १४ | ७ | ८ | १४ | १६ | १० | −० | ६ | १ |
| २ | १४ | २४ | २२ | १४ | ७ | ८ | १४ | १६ | १० | +१ | ६ | ० |
| ३ | १५ | २४ | २२ | १३ | ७ | ८ | १४ | १६ | ९ | १ | ६ | ० |
| ४ | १५ | २४ | २२ | १३ | ७ | ८ | १४ | १६ | ९ | १ | ६ | +० |
| ५ | १६ | २४ | २२ | १३ | ७ | ८ | १४ | १६ | ९ | २ | ६ | −१ |
| ६ | १६ | २४ | २१ | १२ | ६ | ८ | १४ | १६ | ८ | २ | ६ | १ |
| ७ | १७ | २४ | २१ | १२ | ६ | ९ | १५ | १६ | ८ | २ | ६ | २ |
| ८ | १७ | २४ | २१ | १२ | ६ | ९ | १५ | १५ | ८ | २ | ६ | २ |
| ९ | १७ | २४ | २१ | १२ | ६ | ९ | १५ | १५ | ७ | ३ | ६ | ३ |
| १० | १८ | २४ | २० | ११ | ६ | ९ | १५ | १५ | ७ | ३ | ६ | ३ |
| ११ | १८ | २४ | २० | ११ | ६ | ९ | १५ | १५ | ७ | ३ | ६ | ४ |
| १२ | १९ | २४ | २० | ११ | ६ | १० | १५ | १५ | ६ | ४ | ६ | ४ |
| १३ | १९ | २४ | २० | १० | ६ | १० | १५ | १५ | ६ | ४ | ६ | ४ |
| १४ | १९ | २४ | १९ | १० | ६ | १० | १६ | १४ | ५ | ४ | ५ | ५ |
| १५ | २० | २४ | १९ | १० | ६ | १० | १६ | १४ | ५ | ४ | ५ | ५ |
| १६ | २० | २४ | १९ | १० | ६ | १० | १६ | १४ | ५ | ४ | ५ | ६ |
| १७ | २० | २४ | १८ | ९ | ६ | ११ | १६ | १४ | ४ | ५ | ५ | ६ |
| १८ | २१ | २४ | १८ | ९ | ६ | ११ | १६ | १४ | ४ | ५ | ५ | ७ |
| १९ | २१ | २४ | १८ | ९ | ६ | ११ | १६ | १३ | ४ | ५ | ४ | ७ |
| २० | २१ | २४ | १८ | ९ | ६ | ११ | १६ | १३ | ३ | ५ | ४ | ८ |
| २१ | २२ | २४ | १७ | ९ | ६ | १२ | १६ | १३ | ३ | ५ | ४ | ८ |
| २२ | २२ | २४ | १७ | ८ | ६ | १२ | १६ | १३ | ३ | ५ | ४ | ९ |
| २३ | २२ | २४ | १७ | ८ | ७ | १२ | १६ | १२ | २ | ६ | ३ | ९ |
| २४ | २२ | २३ | १६ | ८ | ७ | १२ | १६ | १२ | २ | ६ | ३ | १० |
| २५ | २३ | २३ | १६ | ८ | ७ | १२ | १६ | १२ | २ | ६ | ३ | १० |
| २६ | २३ | २३ | १६ | ८ | ७ | १३ | १६ | १२ | १ | ६ | २ | ११ |
| २७ | २३ | २३ | १५ | ८ | ७ | १३ | १६ | ११ | १ | ६ | २ | ११ |
| २८ | २३ | २३ | १५ | ७ | ७ | १३ | १६ | ११ | १ | ६ | २ | १२ |
| २९ | २३ | २२ | १५ | ७ | ७ | १३ | १६ | ११ | ० | ६ | १ | १२ |
| ३० | २४ | | १४ | ७ | ७ | १३ | १६ | १० | ० | ६ | १ | १३ |
| ३१ | २४ | | १४ | | ७ | | १६ | १० | | ६ | | १३ |

## जबलपुर से देशान्तर

| स्थानों के नाम | अक्षांशः | | देशा मि० | स्थानों के नाम | अक्षांशः | | देशा० मि० | स्थानों के नाम | अक्षांशः | | देशा मि० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अयोध्या | २६ | ४८ | +९ | खंडवा. | २१ | ५० | −१४ | नरसिंहगढ़ | २३ | ४ | −१२ |
| अजमेर | २६ | २७ | −२१ | गया | २४ | ४९ | +२० | नासिक | १९ | ५८ | −२५ |
| अमरावती | २० | ५२ | −१० | ग्वालियर | २६ | १२ | −७ | नीमच | २४ | २७ | −२० |
| अमेठी | २६ | ७ | +८ | चित्रकूट | २५ | १२ | +४ | नैनीताल | २९ | २३ | −२ |
| अमृतसर | ३१ | ३७ | −२० | चरखारी | २५ | २४ | −१ | पटना | २५ | ३६ | +२४ |
| अलवर | २७ | ३४ | −१३ | छतरपुर | २४ | ५४ | −२ | पन्ना | २४ | ३० | −२ |
| अलीगढ़ | २७ | ५० | −७ | छिंदवाड़ा | २२ | ३ | −४ | पटियाला | ३० | २० | −११ |
| अहमदाबाद | २३ | २ | −२९ | जैसलमेर | २६ | ४६ | −३५ | प्रतापगढ | २४ | २४ | −२१ |
| अहमदनगर | १९ | ६ | −२० | जयपुर | २६ | ५० | −१७ | प्रयाग | २५ | २८ | +९ |
| आगरा | २७ | १२ | −७ | जबलपुर | २३ | १० | ० | पीलीभीत | २८ | ४० | −१ |
| अकोला | २० | ४२ | −११ | जगन्नाथपुरी | १९ | ५० | +२४ | पूना | १८ | २२ | −२४ |
| इन्दौर | २२ | २२ | −१६ | जोधपुर | २६ | २५ | −२७ | बनारस | २५ | १८ | +१२ |
| इटावा | २६ | ५२ | −४ | झांसी | २५ | ३० | −६ | बड़ौदा | २२ | ३० | −१७ |
| उदैपुर | २४ | ३६ | −२४ | टीकमगढ़ | २४ | ५० | −४ | बरेली | २८ | १८ | −२ |
| उज्जैन. | २३ | ९ | −१६ | डुमरांव | २५ | ३२ | +१७ | बंबई | १८ | ५३ | −२९ |
| कलकत्ता | २२ | ३४ | +३३ | दरभंगा | २६ | ६ | +२४ | बांदा | २५ | १८ | +१ |
| कानपुर | २६ | ३० | +१ | देवास | २२ | ५८ | −१५ | बीकानेर | २८ | २ | −२६ |
| किसनगढ़ | २६ | ३५ | −२० | दिल्ली | २८ | ४० | −११ | बिहार | २५ | १५ | +२१ |
| कुरुक्षेत्र | ३० | ० | −१५ | दमोह | २३ | ५० | −२ | बिलासपुर | २२ | ५ | +९ |
| कोटा | २५ | १८ | −१७ | धार | २२ | ३४ | −१९ | बुरहानपुर | २१ | २७ | −१५ |
| कटनी | २३ | ४५ | +२ | धौलपुर | २६ | ४२ | −८ | बून्दी | २५ | २५ | −१७ |
| कामठी | २१ | १४ | −३ | नाथद्वारा | २४ | ५२ | −२४ | बांसवाड़ा | २३ | ३० | −२० |
| कांकेर | २० | १५ | +६ | नागोद | २४ | ३० | +२ | भरतपुर | २७ | २० | −१ |
| कवर्धा | २२ | ० | +५ | नरसिंहपुर | २३ | ० | −४ | भावनगर | २१ | ४६ | −३० |
| खैरागढ़ | २१ | २६ | +४ | नागपुर | २१ | १० | −४ | भागलपुर | २५ | १४ | +२८ |

| स्थानों के नाम | अक्षांश: | | देशा० मि० | स्थानों के नाम | अक्षांश: | | देशा० मि० | स्थानों के नाम | अक्षांश: | | देशा० मि० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भोपाल | २३ | १३ | −१ | रामेश्वर | ९ | १८ | −३ | शिमला | ३१ | ३० | −११ |
| मद्रास | १३ | ४ | +१ | रायपुर | २१ | १५ | +७ | शक्ति | २२ | १ | +१२ |
| मथुरा | २७ | ३२ | −९ | रावलपिंडी | ३३ | ३७ | −२८ | सोलापुर | १७ | ४० | −१६ |
| मिरजापूर | २५ | ९ | +११ | राजनांदगां | २१ | ५ | +४ | सिवनी | २२ | ६ | −२ |
| मैसूर | १२ | १८ | −१३ | रायगढ़ | २१ | ५४ | +१४ | सूरत | २१ | १२ | −२८ |
| महोबा | २५ | १८ | −१ | लखनऊ | २६ | ५५ | +४ | सागर | २३ | ५० | −५ |
| मंडला | २२ | ४३ | +२ | लन्दन | ५१ | ३० | −३२० | हैदराबाद | १७ | २३ | −७ |
| रंगून | १६ | ५५ | +६५ | लाहौर | ३१ | २७ | −२२ | हरदा | २२ | २१ | −११ |
| रीवां | २४ | ३१ | +५ | वर्धा | २० | ४५ | −६ | हरिद्वार | २९ | ५८ | −७ |
| रतलाम | २३ | २१ | −२० | विजावर | २४ | ३२ | −२ | हींगनघाट | २० | ३४ | −४ |
| रानीगंज | २३ | ४१ | +३२ | वस्तर | १८ | ३० | +६ | होशंगाबाद | २० | ४६ | −९ |

उदाहरण (१)—स्थानीय (जबलपुर) समय सारणीद्वारा पृष्ट४१ को सिद्ध किया जाता है। स्थानीय समय सारिणी में ५ जुलाई को १४ मिनट ऋण संस्कार लिखे हैं। अतः स्टेण्डर्ड टाइम ८।३३−१४ मिनट=८।१९ स्पष्ट स्थानीय समय हुआ। इसमें देशान्तर सारणी में जवलपुर के सामने (०) लिखा है अतः देशान्तर संकार न होगा। इसी प्रकार अन्य नगरों का पहिले करके फिर देशान्तर सारिणी से अभीष्ट नगर के सामने देशान्तर मिनट ऋण धन जैसे लिखे हों, वैसे ऋण धन करने से अभीष्ट नगर का स्पष्ट स्थानीय टाइम वन जाता है।

उदाहरण (२)—पृष्ट ४१ को स्थानीय समय सारणी और देशान्तर सारणी द्वारा स्पष्ट किया जाता है। स्थानीय समय सारणी में ता० २१ मई को ६ मिनट ऋण लिखा है। तो स्टेण्डर्ड टाइम ३।२०−६ मिनट= ३।१४ मध्यम समय हुआ। अब देशान्तर सारणी में कानपुर के सामने १ मिनट धन लिखा है। अतः मध्यम समय ३।१४+१मिनट= ३।१५ स्थानीय (कानपुर) स्पष्ट टाइम हुआ। इस क्रिया से सरलता एवं एकता रहती है।

अब स्थानीय दिनमान एवं सूर्योदय, सूर्यास्त जानने के लिये क्रान्त्यंश की व्यवस्था की है। यह पहिले बताया जा चुका है। तदनुसार क्रान्ति-स्पष्ट सारणी दी जाती है।

## सूर्य-क्रान्ति-सारणी

| भु. | अं. | क. | भु. | अं. | क. | भु. | अं. | क | भु. | अं. | क. | भु. | अं. | क. | भु. | अ. | क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | २४ | १६ | ६ | १८ | ३१ | ११ | ५० | ४६ | १६ | ३८ | ६१ | २० | २२ | ७६ | २२ | ४३ |
| २ | ० | ४८ | १७ | ६ | ४१ | ३२ | १२ | १० | ४७ | १६ | ५५ | ६२ | २० | ३४ | ७७ | २२ | ४६ |
| ३ | १ | ११ | १८ | ७ | ४ | ३३ | १२ | ३१ | ४८ | १७ | १२ | ६३ | २० | ४६ | ७८ | २२ | ५४ |
| ४ | १ | ३५ | १९ | | २७ | ३४ | १२ | ५१ | ४९ | १७ | २९ | ६४ | २० | ५७ | ७९ | २३ | ० |
| ५ | १ | ५९ | २० | ७ | ४९ | ३५ | १३ | १२ | ५० | १७ | ४५ | ६५ | २१ | ८ | ८० | २३ | ४ |
| ६ | २ | २३ | २१ | ८ | १२ | ३६ | १३ | ३२ | ५१ | १८ | १ | ६६ | २१ | १९ | ८१ | २३ | ९ |
| ७ | २ | ४७ | २२ | ८ | ३४ | ३७ | १३ | ५१ | ५२ | १८ | १७ | ६७ | २१ | २९ | ८२ | २३ | १३ |
| ८ | ३ | १० | २३ | ८ | ५७ | ३८ | १४ | ११ | ५३ | १८ | ३२ | ६८ | २१ | ३९ | ८३ | २३ | १६ |
| ९ | ३ | ३४ | २४ | ९ | १९ | ३९ | १४ | ३० | ५४ | १८ | ४७ | ६९ | २१ | ४९ | ८४ | २३ | १९ |
| १० | ३ | ५८ | २५ | ९ | ४१ | ४० | १४ | ४९ | ५५ | १९ | १ | ७० | २१ | ५८ | ८५ | २३ | २१ |
| ११ | ४ | २१ | २६ | १० | ३ | ४१ | १५ | ८ | ५६ | १९ | १६ | ७१ | २२ | ६ | ८६ | २३ | २३ |
| १२ | ४ | ४५ | २७ | १० | २४ | ४२ | १५ | २७ | ५७ | १९ | ३० | ७२ | २२ | १४ | ८७ | २३ | २५ |
| १३ | ५ | ८ | २८ | १० | ४६ | ४३ | १५ | ४५ | ५८ | १९ | ४३ | ७३ | २२ | २२ | ८८ | २३ | २६ |
| १४ | ५ | ३१ | २९ | ११ | ७ | ४४ | १६ | ३ | ५९ | १९ | ५६ | ७४ | २२ | २९ | ८९ | २३ | २७ |
| १५ | ५ | ५५ | ३० | ११ | २९ | ४५ | १६ | २१ | ६० | २० | १० | ७५ | २२ | ३६ | ९० | २३ | २७ |

❁ तत्कालिक सूर्य में अयनांश धन करने से सायनार्क होता है। इसका भुज करे अर्थात् सायनार्क ३ राशि तक हो तो स्वयं भुज होता है। और ३ राशि से अधिक हो तो ६ राशि में घटावे. शेष राश्यादि भुज होंगे। और ६ राशि से अधिक हो तो ६ राशि से जितना अधिक होगा

❁ ग्रह स्पष्ट, और अयनांश स्पष्ट आगे लिखा जायगा।

वही भुज होता है। ९ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटावे। शेष भुज होता है। इस प्रकार भुज बनाकर राशि × ३० + अंश = भुजांशादि तुल्य क्रान्ति-चक्र से अनुपात द्वारा क्रान्ति बनावे। यदि सायनार्क मेषादि हो तो उत्तरा क्रान्ति, तुलादि हो तो दक्षिणा क्रान्ति होती है।

उदाहरण (१)—सं० १९९० आषाढ़ शुक्ल १३ बुधवार को तात्कालिक सूर्य २।१९।३२।१९ है, अयनांश २२°।४८।२९ है।

| | |
|---|---|
| तात्कालिक सूर्य | २।१९।३२।१९ |
| शुद्ध अयनांश | २२।४८।२९ (सं. १९९० का) |
| सायनार्क | ३।१२।२०।४८ हुआ। |

| | |
|---|---|
| अब भुज बनाने के लिये राश्यादि | ६। ० ।० ।० |
| सायनार्क | ३। १२।२०।४८ |
| भुज | २। १९।३९।१२ हुआ। |

भुज राशि २ × ३० + १७ = ७७°।३९'।१२"

अनुपात द्वारा भुजांशादि तुल्य क्रान्ति-चक्र से २२।५२ सूर्य क्रान्ति सायनार्क मेषादि होने से उत्तरा हुई।

देशान्तर सारणी में अक्षांशों का उल्लेख है। अब चर-सारणी(पृ.४७) से अभीष्ट नगर के अक्षांश के सामने क्रान्त्यंश के नीचे चर-मिनटादि लेकर ६ घंटे में जोड़े (यदि उत्तरा क्रांति हो) और ६ घंटे में घटावे (यदि दक्षिणा क्रांति हो) तो सूर्यास्त काल बन जाता है। इस सूर्यास्त काल को १२ घंटे में घटाने से सूर्योदय काल बन जाता है। सूर्यास्त काल में ५ से गुणा करने पर घट्यादि दिनमान होता है। सूर्योदय काल में ५ से गुणा करने पर रात्रिमान होता है। अथवा दिनमान को ६० घटी में घटाने से भी रात्रिमान होता है।

---

# चर-सारणी

## सूर्योदय, सूर्यास्त काल जानने की मिनट, सेकंडों में

| अक्षांश \ क्रांत्य | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | ५५ | ५० | ४६ | ४२ | ३८ | ३४ | ३० | २७ | २३ | २० | १७ | १५ | १३ | १२ | ११ | ११ | १२ | १४ | १७ | २० | २४ | ३० | ३७ | ४६ |
| १४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २३ | २४ | २५ |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | २ | ३ | ५ | ७ | ९ | १२ | १५ | १९ | २३ | २९ | ३५ | ४१ | ४७ | ५७ | ८ | १८ | ३० |
| १५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २३ | २४ | २६ | २७ |
| | ४ | ८ | १३ | १८ | २२ | २७ | ३२ | ३८ | ४४ | ५० | ५६ | ४ | ११ | १९ | २८ | ३८ | ४७ | ५८ | १० | ३२ | ३६ | ५२ | ७ | २४ |
| १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २६ | २७ | २९ |
| | ९ | १८ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ४ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | ११ | २४ | ३८ | ५२ | ७ | २३ | ४० | ५८ | १६ | ३७ | ५८ | २० |
| १७ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १४ | १६ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २४ | २५ | २६ | २८ | २९ | ३१ |
| | १३ | २७ | ४० | ५४ | ८ | २२ | ३६ | ५१ | ६ | २२ | ३८ | ५४ | १२ | २९ | ४८ | ७ | २७ | ४८ | ११ | ३४ | ५७ | २३ | ५० | १९ |
| १८ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ |
| | १८ | ३६ | ५४ | १२ | ३२ | ५० | ९ | २८ | ४८ | ८ | ३० | ५० | १२ | ३५ | ५९ | २३ | ४८ | १४ | ४२ | ८ | ३५ | १० | ४२ | २० |
| १९ | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ |
| | २३ | ४५ | ८ | ३१ | ५४ | १८ | ४२ | ६ | ३० | ५५ | २१ | ४६ | १४ | ४१ | १० | ३९ | ९ | ४१ | १४ | ४८ | २४ | ५९ | ३७ | १६ |
| २० | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | १० | १३ | १४ | १६ | १७ | १९ | २० | २२ | २३ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३२ | ३३ | ३५ | ३७ | ८९ |
| | २७ | ५५ | २२ | ५० | १८ | ४६ | १५ | ५४ | ४१ | ३४ | ३१ | ४४ | ५१ | ८४ | ९२ | ३५ | ५३ | ० | ८४ | ७२ | ७ | ८४ | ६३ | ३१ |
| २१ | १ | ३ | ४ | ६ | ७ | ९ | १० | २१ | ३१ | ५१ | ७१ | ८२ | ०२ | १२ | ३२ | ५२ | ६२ | ८३ | ०३ | २३ | ३३ | ५३ | ७३ | ९२ |
| | ३२ | ४ | ३७ | ९ | ४३ | ५ | ५८ | २२ | ५६ | ३२ | ७ | ४३ | २० | ५८ | ३६ | १६ | ५६ | ३५ | २२ | ८ | ५० | ४१ | ३० | २१ |

# चर-सारणी

## सूर्योदय, सूर्यास्त काल जानने को

### मिनट, सेकंडों में

| अक्षांश | क्रांत्यंश १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १५ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२ | १ | ३ | ४ | ६ | ८ | ९ | ११ | १३ | १४ | १६ | १८ | १९ | २१ | २३ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | १४ |
| | ३७ | १४ | ५१ | २८ | ६ | ४४ | २३ | १ | ४० | २१ | १ | ४२ | २४ | ८ | ५२ | ३७ | २३ | १० | ५८ | ५० | ४१ | ३५ | ३० | २७ |
| २३ | १ | ३ | ५ | ६ | ८ | १० | ११ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ |
| | ४२ | २४ | ६ | ४८ | ३१ | १४ | ५७ | ४१ | २५ | १० | ५६ | ४२ | ३० | १८ | ७ | ५८ | ४९ | ४१ | ३७ | ३३ | ३० | २७ | ३० | ३५ |
| २४ | १ | ३ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ |
| | ४७ | ३४ | २१ | ८ | ५६ | ४४ | ३२ | २१ | १० | ० | ५२ | ४३ | ३६ | ३० | २४ | २० | १९ | २० | २१ | २३ | २५ | २९ | ३४ | ४० |
| २५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ | ४७ |
| | ५२ | ४४ | ३६ | २८ | २१ | १४ | ८ | २ | ५६ | ५२ | ४८ | ४५ | ४३ | ४० | ४३ | ४४ | ४७ | ५१ | ५८ | ५ | १५ | २६ | ४० | २० |
| २६ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४७ | ५० |
| | ५७ | ५४ | ५२ | ४९ | ४४ | ४५ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४६ | ४८ | ५२ | ५६ | २ | ९ | १८ | २८ | ४० | ५४ | १० | २८ | ४८ | १० |
| २७ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३८ | ४० | ४२ | ४५ | ४७ | ४९ | ५२ |
| | २ | ५ | ७ | १० | १३ | १७ | २१ | २६ | ३१ | ३७ | ४४ | ५२ | १ | १२ | २३ | ३६ | ५० | ७ | २५ | ४५ | ७ | ३२ | ५८ | २७ |
| २८ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १७ | १९ | २१ | २२ | २५ | २८ | ३० | ३२ | ३५ | ३७ | ३९ | ४२ | ४४ | ४७ | ४९ | ५२ | ५४ |
| | ७ | १५ | १३ | ३१ | ४० | ४९ | ५८ | ८ | १९ | ३१ | ४४ | ५७ | १२ | २८ | ४६ | ४ | २५ | ४९ | १२ | ३६ | ६ | ३७ | ४ | ३० |
| २९ | २ | ४ | ६ | ८ | ११ | १३ | १५ | १७ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५१ | ५४ | ५७ |
| | १३ | २६ | ४ | ५३ | ७ | २२ | ३६ | ५२ | ९ | ३६ | ४४ | ४ | २४ | ४६ | १० | ३५ | १ | ३० | ० | ३२ | ८ | ४६ | २६ | ९ |
| ३० | २ | ४ | ६ | ९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २० | २३ | २५ | २८ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४८ | ५१ | ५३ | ५६ | ५९ |
| | १९ | ३७ | ५६ | १५ | ३५ | ५५ | १६ | ३७ | ५९ | २२ | ४६ | १२ | ३८ | ५ | ३७ | ८ | ४० | १५ | ५० | ३१ | १३ | ५८ | ४६ | ३५ |

## चर-सारणी

| क्रांत्यं | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्षां | २ | ४ | ७ | ९ | १२ | १४ | १६ | १९ | २१ | २४ | २६ | २९ | ३१ | ३४ | ३७ | ३९ | ४२ | ४५ | ४७ | ५० | ५३ | ५६ | ५८ | ६२ |
| ३१ | ४२ | ४८ | १३ | ३८ | ३ | २९ | ५६ | २० | ५० | २० | ५० | २१ | ५४ | २८ | ४ | ४१ | २० | २ | ४६ | ३२ | २० | २ | ५० | ४ |
| ३२ | २ | ५ | ७ | १० | १२ | १५ | १७ | २० | २२ | २५ | २७ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५२ | ५५ | ५८ | ६१ | ६४ |
| | ३० | ० | ३० | १ | ३२ | ४ | ३६ | ९ | ४३ | १८ | ५४ | ३२ | ११ | ५२ | ३३ | १७ | ३ | ५२ | ४२ | ३५ | ३१ | ३० | २३ | ३७ |
| ३३ | २ | ५ | ७ | १० | १३ | १५ | १८ | २० | २३ | २६ | २९ | ३१ | ३४ | ३७ | ४० | ४२ | ४५ | ४८ | ५१ | ५४ | ५७ | ६० | ६३ | ६७ |
| | ३६ | १२ | ४८ | २४ | १ | ३९ | १८ | ५७ | ३८ | १८ | ० | ४४ | ३० | १६ | ५ | ५६ | ३९ | ४४ | ४१ | ४१ | ४४ | ४९ | ५४ | ४ |

उदाहरण (१)—सं० १९९० आषाढ़ शुक्ल १३ बुधवार ता० ५ जुलाई १९३३ ई० को स्थानीय ( जबलपुर ) का दिनमान स्पष्ट किया जाता है।

जबलपुर अक्षांश २३°।१० है, सूर्यक्रान्ति उत्तरा २२°।५२ है, तो त्रैराशिक द्वारा चर-सारणी से चर ४१ मिनट उत्तरा क्रान्ति होने के कारण ६ घंटे में जोड़ दिया। तो ६।४१ यही उक्त दिन में जबलपुर में सूर्यास्त समय हुआ। इसी को १२ घंटे में घटाने से ५।१९ स्थानीय सूर्योदय काल हुआ। फिर सूर्यास्त काल में ५ से गुणा किया। तो ६।४१ × ५ = ३०।२०५ = ३३।२५ घट्यादि दिनमान हुआ।

स्थानीय स्पष्ट टाइम में सूर्योदय घटाकर शेष में २½ का गुणा करने से इष्ट काल बन जाता है। अतएव स्थानीय स्पष्ट टाइम ८।१९ में सूर्योदय ५।१९ को घटाया। शेष ३ घंटा में २½ का गुणा करने पर घट्यादि ७।३० स्थानीय इष्ट काल हुआ। इसी प्रकार अन्य नगरों का इष्ट काल बनाना चाहिए।

उदाहरण (२)—दिनमान जानने के लिये स्थानीय (कानपुर) अक्षांश २६°।३'।० सूर्य क्रान्ति उत्तरा २०।१० है। चर-सारणी में अक्षांश के सामने क्रान्त्यंश के नीचे त्रैराशिक द्वारा ४२।१२ चर मिनटादि मिले। इनको उत्तरा क्रान्ति के कारण ६ घंटे में धन संस्कार किया; तो ६।० + ४२।१२ = ६।४२।१२ पर सूर्यास्त हुआ। इसको ५ से गुणा करने पर घट्यादि ३३।३१ दिनमान हुआ।

इष्ट बनाने के लिये दिनमान ३३।३१ + १३।१४।३० राज्यर्धमान = ४६।४५।३० राज्यर्धपर्यन्तकाल ( १२ बजे रात्रि तक का ) हुआ। शेष ३ घंटा १५ मिनट × २½ = ८।७।३० राज्यर्धगतकाल हुआ। अब राज्यर्ध पर्यन्तकाल ४६।४५।३० + ८।७।३० राज्यर्धगतकाल = ५४।५३ स्थानीय समय (३।१५) में इष्टकाल हुआ।

## लग्न-साधन

लग्न साधन में स्वदेशीय उदयमान जानना आवश्यक होता है। अतः ( उदयमान साधनार्थ ) चर खण्डा का साधन किया जाता है।

मेषादिगे सायनभागसूर्ये दिनार्धजा भा पलभा भवेत् सा।
त्रिष्ठा हता स्युर्दशभिर्भुजङ्गैर्दिग्भिश्चराधानि गुणोद्धृतान्त्या॥

भाषा—सायन मेष संक्रान्ति या सायन तुला संक्रान्ति के दिन मध्यान्ह काल में १२ अङ्गुल शङ्कु की छाया को पलभा कहते हैं। उसको ३ जगह रखकर प्रथम स्थान में १० से, दूसरे स्थान में ८ से और तीसरे स्थान में $\frac{१०}{३}$ से गुणा करने पर ३ राशियों का चरखण्ड स्पष्ट होगा॥

| जबलपुर की पलभा ५।८ | कानपुर की पलभा ५।५८ |
|---|---|
| (५।८) × १० = ५१ | (५।५८) × १० = ५९ |
| (५।८) × ८ = ४१ | (५।५८) × ८ = ४७ |
| $\frac{(५।८) \times १०}{३} = १७$ | $\frac{(५।५८) \times १०}{३} = २०$ |

लंकोदयमान में चरखण्डों के संस्कार से स्वदेशोदयमान होता है। अतः लंकोदयमान—

> लंकोदया विघटिका गजभानि गोऽङ्क-,
> दस्त्राक्षिपक्षदहनाः क्रमगोत्क्रमस्थाः।
> हीनान्विताश्चरदलैः क्रमगोत्क्रमस्थै-,
> र्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः॥

भाषा—(२७८।२९९।३२३) इन तीनों मानों को क्रम तथा उत्क्रम से लिखने में मेषादि ६ राशियों का लंकोदयमान होता हैं। इनमें पहले मेषादि ३ राशियों में चरखण्ड घटाने से और कर्कादि ३ राशियों में उत्क्रम से तीनों चरखण्ड जोड़ने से मेषादि ६ राशियों का स्वदेशीय उदयमान होता है। उत्क्रम से ये ही तुलादि ६ राशियों का उदयमान होता है।

| लंकोदय+च. खं. जबलपुर | लंकोदय+च. खं. कानपुर |
|---|---|
| मे. २७८–५१=२२७ मी. | मे. २७८–५९=२१९ मी. |
| वृ. २९९–४१=२५८ कुं. | वृ. २९९–४७=२५२ कुं. |
| मि. ३२३–१७=३०६ म. | मि. ३२३–२०=३०३ म. |
| क. ३२३+१७=३४० ध. | क. ३२३+२०=३४३ ध. |
| सिं. २९९+४१=३४० वृ. | सिं. २९९+४७=३४६ वृ. |
| कं. २७८+५१=३२९ तु. | कं. २७८+५९=३३७ तु. |

| शुद्ध वेधोपलब्ध | लंकोदय | चरखण्ड | शुद्ध जब्बलपुरोदय |
|---|---|---|---|
| मे. | २७९ | मीन ५१ | २२८ |
| वृष. | २९९ | कुंभ ४१ | २५९ |
| मि. | ३२२ | मकर १७ | ३०५ |
| कर्क | ३२२ | धन १७ | ३३९ |
| सिंह | २९९ | वृश्चिक ४१ | ३४० |
| कन्या० | २७९ | तुला ५१ | ३३० |

## लग्न-साधन

तत्काले सायनार्कस्य भुक्तभोग्यांशसंगुणात् ।
स्वोदयात् खाग्निलब्धं यद् भुक्तं भोग्यं रवेस्त्यजेत् ॥
इष्टनाड़ी पलेभ्यश्च गतगम्यं निजोदयात् ।
शेषं खत्र्याहतं भक्तमशुद्धेन लवादिकम् ।
अशुद्धशुद्धभे हीनं युक् तनुर्व्ययनांशकम् ॥

भुक्तं भोग्यं स्वेष्टकालान्नशुध्येत् त्रिंशन्निघ्नात्स्वोदयाप्तं लवाद्यम् ।
हीनं युक्तं भास्करे तत्तनुः स्याद्रात्रौ लग्नं भार्धयुक्ताद्रवेस्तु ॥

( नीलकण्ठी )

भाषा—लग्न-साधन दो प्रकार से किया जाता है। भुक्त और भोग्य; किन्तु गणित लाघवार्थ कब कौन सी क्रिया करनी चाहिये। इसके लिये चार नियम बताये जाते हैं।

(१) दिन का इष्टकाल हो तो भोग्य प्रकार।

(२) रात्रि का इष्टकाल हो तो उसमें दिनमान घटाकर रात्रिगत काल को इष्ट मान कर सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ कर भोग्य प्रकार।

(३) १२ बजे रात्रि के पश्चात् का इष्ट काल हो तो उसको ६० में घटाकर शेष रात्रि काल को इष्ट मानकर भुक्त प्रकार। (यहां सूर्य में ६ रा. जोड़ने की आवश्यकता नहीं)

(४) रात्रि शेष को इष्ट मानकर सायन सूर्य में ६ राशि जोड़ कर भोग्य प्रकार। इस तरह गणित करने में सुगमता होती है।

अब पहिले भोग्य प्रकार सोदाहरण बताया जाता है। तात्कालिक सूर्य में अयनांश जोड़ने से सायनार्क होता है। सायनार्क की राशि को छोड़कर अंशादि भुक्तांश होते हैं। भुक्तांश को १ राशि=३० अंश में घटाने से भोग्यांश होते हैं। भोग्यांश में सायनार्क राशि के स्थानीय उदयमान पलों से गुणा करे तो विकला के गुणन फल में ६०का भाग देकर लब्धि को कला के गुणनफल में जोड़े। फिर कला के गुणनफल में ६० का भाग देकर लब्धि को अंश के गुणनफल में जोड़े। फिर अंश के गुणनफल में ३० का भाग दे तो लब्धि पल होंगे। शेष में २ से गुणा कर विपल रखे। तो सूर्य के भोग्य काल पलादि होंगे। अब इष्टकाल की घट्यादि को पल बनावे। इष्टकाल के पलों में सूर्य के भोग्य पलादि घटावे, शेष में आगे की राशि के स्थानीय उदयमान पल घटावे; जब तक घटता जाय। फिर जिसका उदयमान पल न घटे; उसकी अशुद्ध संज्ञा होगी। फिर शेष पलों में ३० का गुणा करे और अशुद्ध राशि के उदयमान पलों से भाग देवे तो लब्धि में अंश होंगे। और शेष में ६० का गुणाकर फिर अशुद्ध राशि के उदयमान पलों से भाग दे तो लब्धि में कलाएँ होंगी। फिर शेष में ६० का गुणा कर अशुद्ध राशि के उदयमान पलों से भाग दे तो लब्धि में विकलाएँ होंगी। अब अंश, कला, विकला के साथ अशुद्ध राशि की बारहवीं राशि का अंक (जैसे मीन की अशुद्धोदय संज्ञा हो तो ११) राशि के स्थान में रखे। उसमें अयनांश हीन करें। तो भोग्य प्रकार से स्पष्ट लग्न होती है।

भुक्त प्रकार में इतनी विशेषता है कि सायनार्क के राशि छोड़ भुक्तांशादि को सायनार्क राशि के स्थानीय उदयमान पलों से गुणा कर पूर्वोक्त रीति से ६० एवं ३० से भाग देकर लब्धि पल, शेषको द्विगुणित कर विपल सूर्य का भुक्त काल रखे। फिर लग्न साधन नं० (३) पृष्ठ ५२ के अनुसार ६० घटी में इष्ट को घटाकर शेष के पल बनावे, फिर इष्ट पलादि में सूर्य के भुक्त काल को घटावे। फिर सायनार्क के पीछे की राशि के उदयमान (जैसे सायनार्क मिथुन से वृष, वृष से मेष) घटावे, जिसका

उदयमान न घटे तो उसकी अशुद्ध संज्ञा होगी । फिर शेष को अशुद्धोदय राशि के पहिले जिस का उदयमान घटाया है, उस राशि में घटावे, स्पष्टार्थ यह है कि भुक्त प्रकार में मेष से पहिले वृष, वृष से पहिले मिथुन इत्यादि राशि का मान ही घटाया जाता है फिर शेष में अयनांश घटावे। तो भुक्त प्रकार से स्पष्ट लग्न होगी।

नोट—भुक्त काल अथवा भोग्य काल इष्टकाल में न घटे, तो उस इष्ट काल को ३० से गुणा कर सूर्य राशि के उदयमान से भाग देकर जो अंशादि लब्ध हों उसको भुक्त प्रकार की क्रिया में सूर्य में घटाने से और भोग्य प्रकार में जोड़ने से लग्न होगी। अर्थात् लग्न साधन पृष्ठ ५२ के नियम नं० २, ४ के अनुसार बनावे।

उदाहरण(१)—सूर्य २।१९।३२।१९ अयनांश २२।४८।२९(सं.१९९०का)

इष्टकाल ७।३० दिनमान ३३।२५ है।

सूर्य २।१९।३२।१९
अयनांश + २२।४८।२९

सायनार्क ३।१२।२०।४८ हुआ
= १२°।२०'।४८" भुक्तांश

राशि १।०।०।०
भुक्तांश = १२।२०।४८

भोग्यांश १७।३९।१२ × ३४० (स्वोदयघ्न)

| ५७८० | ३०६० | ४०८० ÷ ६० |
|---|---|---|
| २२२ | १०२० | |
| | ६८ | ० शेष |
| ३०)६००२(२०० | १३३२८ ÷ ६० | |
| ६० | = ८ शेष | |

००२ × ६०
३०)१२०(४
१२०
×

= २००।४ पलादि भोग्य हुए

इष्टकाल ७।३० = ७ × ६० + ३० = ४५० पल
= ४५०।०
२००।४ सूर्य भोग्य काल पलादि
२४९।५६
३४०।० सिंहोदयमान न घटने से अशुद्ध संज्ञा

२४९ × ३० = ७४७०
५६ ÷ २ = २८

अशुद्धहृत ३४०)७४९८(२२ अंश
६८०
६९८
६८०
१८ × ६०
३४०)१०८०(३ कला
१०२०
६० × ६०
३४०)३६००(१० विकला
३४०
२०० अर्धाधिक होने से १ लिया

तो अशुद्धराशि की १२ वीं राशि सहित = ४।२२। ३।११
अयनांश— २२।४८।२९

स्पष्ट लग्न— ३।२९।१४।४२

भोग्य प्रकार से हुई

## भुक्त प्रकार

उदाहरण (२)—सं० १९९४ वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार ता० २१ मई सन् १९३७ ई. कानपुर का इष्टकाल ५४।५२ पलभा ५।५८ तात्कालिक सूर्य १।७।२५।२२ अयनांश २२।५२।३४ (सं० १९९४ का)

तात्कालिक सूर्य    १।७।२५।२२
अयनांश    २२।५२।३४
सायनार्क    २।०।१७।५६
= भुक्तांशादि    ०।१७।५६ × ३०३ पल (स्वोदयघ्न)

०।५१५१ | १८१८
२८२ | १५१५

३०)९१(३ | ५४३३ ÷ ६० | १६९६८ ÷ ६० = ४८ शेष
९०
१ × २    ३३ शेष अर्धाधिक होने से १ ग्रहण
२    किया तो ९१ हुए।

= ३।२ पलादि सूर्य भुक्त काल
लग्न साधन नियम (३) के अनुसार ६०।०–५४।५३ इष्ट काल
= ५।७ रात्रि शेष को ही इष्ट मान कर भुक्त प्रकार—
= ५ × ६० + ७ = ३०७ इष्टपल
= ३०७।० इष्ट पल
—३।२ सूर्यभुक्तकाल
३०३।५८
२५२। ० वृष का उदयमान
५१।५८
२१९।० मेष का उदयमान न घटने से अशुद्ध संज्ञा
= ५१ × ३० = | १५३०
= ५८ ÷ २ = | २९

अशुद्धहृत—२१९)१५५९(७ अंश
१५३३
२६ × ६०
२१९)१५६०(७ कला
१५३३
२७ × ६०
२१९)१६२०(७ विकला
१५३३
८७ शेष त्याग किया

अशुद्धोदय पूर्व १।०।०।० हीं (मेष से पूर्व वृषभ)
७।७।७ घटाया ; भुक्त प्रकार के कारण
०।२२।५२।५३
२२।५२।३४ अयनांश हीन किया
०।०।०।१९ स्पष्ट लग्न हुई।

इन दोनों लग्न साधन के उदाहरणों से स्पष्ट प्रकट होता है कि एक उदाहरण लग्न के अन्त का है, दूसरा लग्न के प्रारम्भ का है। जब्बलपुरीय उदाहरण में यदि उक्त संस्कार न किया जाय तो लग्न कर्क के बजाय सिंह आती है जो सर्वथा अशुद्ध है। इसी प्रकार दूसरा उदाहरण लग्न के शून्य अंश का है। परन्तु स्टेण्डर्ड टाइम के ग्रहण करने में लग्न के २ अंश तक आ जाते, सूक्ष्म विचार षष्ट्यंशादि में अन्तर पड़ता है। अतः शुद्ध गणना का अवलम्बन परमावश्यक है।

इष्ट संशोधन करने के लिये प्राचीन ग्रन्थों में अनेक युक्तियाँ बताई गयीं है। विस्तार भय से अनेक युक्तियों का उल्लेख न कर कुछ युक्तियों का दिग्दर्शन कराना आवश्यक है। अतः गुलिक और प्राणपद साधन लिखा जाता है।

## गुलिक और प्राणपद

विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद्वा निशाकरात्।
तदशुद्धं विजानीयात् स्थावराणां तदैव हि॥
तस्मात् तत्सप्तमस्थानात् तदंशाच्च कलत्रतः।
तत्रैव तत् त्रिकोणे च जन्म लग्नं विनिर्दिशेत्॥
मनुष्याणाम्.................................।
"द्वयोर्हीनवलेऽप्येवं गुलिकात् परिचिन्तयेत्"
(वृ. पा. हो.)

भाषा—प्राणपद, गुलिक और जन्म कालिक चन्द्रमा इन तीनों पर से लग्न की शुद्धि देखनी चाहिये। 'द्वयोर्हीननवलेऽप्येवं…' इसका अभिप्राय यह है, कि दो पर से न मिले; तो गुलिक से विचारना चाहिए। परंतु अधिकांश प्राणपद पर से ही देखे। प्राणपद के स्थान से १।३।५।७।९।११ वें भाव में या प्राणपद के नवांश से ५।७।९ वें भाव में लग्न होगी, और उस लग्न में मनुष्य का जन्म समझना चाहिये। अतः पहिले गुलिक साधन बताया जाता है।

## गुलिक—साधन

रविवारादिशन्यन्तं गुलिकादिनिरूप्यते ।
दिवसमष्टधा भक्त्वा वारेशाद्गणयेत्क्रमात् ॥
अष्टमांशो निरीशः स्याच्छन्यंशो गुलिकस्मृतः ।
रात्रिरप्यष्टधा भक्त्वा वारेशात् पञ्चमादितः ॥
गणयेदष्टमः खंडो निष्पत्तिः परिकीर्तितः ।
शन्यंशे गुलिकः प्रोक्तो गुर्वंशे यमघंटकः ॥
भौमांशे मृत्युरादिष्टो रव्यंशे कालसंज्ञकः ।
सौम्यांशेऽर्द्धप्रहरकः स्पष्टकर्मप्रदेशकः ॥

(बृहत् पाराशरहोरा)

भाषा—रविवार से लेकर शनिवार पर्य्यन्त गुलिक का साधन इस प्रकार है। जिस दिन गुलिक साधन करना हो, उस दिन के दिनमान को आठ से भाग देने पर जो लब्धि होगी; वह प्रथम खण्ड होगा; उसका अधिपति वारेश होगा। अष्टम खण्ड निरीश याने उसका कोई अधिपति नहीं होगा। शनि का अंश गुलिक होता है। अतः वारेश से क्रमशः गणना करने पर शनि

जिस खण्ड का अधिपति होगा; वही खण्ड उस दिन का गुलिक होगा। जैसे रविवार को सप्तम खण्ड गुलिक होगा ; सोमवार को ६, मंगल को ५ ...इत्यादि। रात्रि में गुलिक साधन के लिये नियम इस प्रकार हैं। कि रात्रिमान में ८ का भाग देने से जो प्रथम खण्ड होगा। उसका स्वामी वारेश से पंचम होगा ; और वहां से गणना करने पर शनि खण्ड जिस संख्या में पड़ेगा। रात्रि को वही गुलिक होगा। जैसे रविवार की रात्रि में प्रथम खण्ड का मालिक बृहस्पति होता है, बृहस्पति से तीसरा शनैश्चर होता है अतः रविवार की रात को तीसरा खण्ड गुलिक होगा। स्पष्टता के लिये नीचे चक्र दिया जाता हैं।

## गुलिकध्रुवाङ्क चक्र

| वार | र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवा | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | १ |
| रात्रि | ३ | २ | १ | ७ | ६ | ५ | ४ |

गुलिक का दूसरा नाम मान्द्य भी है। प्रत्येक दिन वारेश से गिनती करने पर गुलिकादि इस प्रकार होगा—

शनि खण्ड — गुलिक या मान्द्य
गुरु खण्ड — यमघण्टक
भौम खण्ड — मृत्यु
सूर्य खण्ड — काल
बुध खण्ड — अर्द्धप्रहर

गुलिकेष्ट साधन—दिन के अष्टम भाग को ध्रुवांक से गुणा करने पर सूर्योदय से गुलिकेष्टकाल होता है। रात्रि के अष्टम भागको रात्रि के ध्रुवांक से गुणा कर दिनमान में जोड़ने से गुलिकेष्ट होता है।

उदाहरण (१)—इष्टकाल ७।३० है, दिनमान ३३।२५ है। दिन बुधवार का—

दिनमान ३३।२५ ÷ ८ = ४।१०।३७।३०

= ४।१०।३७।३० × ४ अभीष्ट दिवस (बुधवार) का गुलिक ध्रुवांक = १६।४२।३० गुलिकेष्ट काल हुआ। अब लग्न साधनार्थ गुलिकेष्टकालिक सूर्य २।१९।४१।३ अयनांश २२।४८।२९ सायनार्क ३।१२।२९।३२ भोग्यांशादि १७।३०।२८ भोग्यकाल पलादि १९८।२४ लग्न साधन पृष्ठ ५२ नियम (१) की भोग्य प्रकार रीति से गुलिक लग्न राश्यादि ५।१९।२७।५५ हुई। 'द्वयोर्हीनवलेऽप्येवं गुलिकात्परिचिन्तयेत्' तो गुलिक लग्न कन्या से ११ वें कर्क लग्न है; अतः शुद्ध है।

उदाहरण (२)—इष्टकाल ५४।५३ दिनमान ३३।३१ है। दिन शुक्रवार का—

दिनमान ३३।३१ ÷ ८ = ४।११।२२।३०

= ४।११।२२।३० × २ शुक्रवार गुलिक ध्रुवांक

= ८।२२।४५० गुलिकेष्टकाल हुआ।

अब लग्न साधनार्थ गुलिकेष्टकालिक सूर्य १।६।४१।११ अयनांश २२।५२·३४ सायनार्क १।२९।३३।४५ भोग्यांशादि ०।२६।१५सूर्य भोग्य काल पलादि ३।४४ लग्न साधन भोग्य प्रकार की रीति से२।२४।१६।० गुलिक लग्न राश्यादि हुए। गुलिक लग्न मिथुन से जन्म लग्न मेष ११ वें है अतः शुद्ध है।

## प्राणपदसाधन

घटीचतुर्गुणा कार्या तिथ्याप्तैश्च पलैर्युता ।
दिवाकरेणापहृतं शेषं प्राणपदं स्मृतम् ॥

शेषात् पलान्तात् द्विगुणी विधाय राश्यंशसूर्यर्क्षनियोजिताय ।
तत्रापि तद्राशिचरान् क्रमेण लग्नांशप्राणांशपदैक्यता स्यात् ॥

अथवा

स्वेष्टकालं पलीकृत्य तिथ्याप्तं भादिकञ्च यत् ।
चराऽगर्द्धिभगे भानौ भानौ युक् नवमे सुते ॥
स्फुटं प्राणपदं तस्मात् पूर्ववच्छोधयेत् तनुः ।

( वृ. पा. हो. )

प्राणपद–साधन के तीन प्रकार हैं ।

(१)—इष्ट काल की केवल घटी को चार से गुणा करे, पलों में १५ का भाग देकर लब्धि को उस चतुर्गुणित घटी में जोड़ कर १२ से भाग देने पर जो शेप बचे वह प्राणपद की राशि होगी, शेष पलों को २ से गुणा करने पर अंश होगा । इस प्रकार मध्यम प्राणपद होगा । ꣸ इसको सूर्य, राश्यादि में जोड़ देने से स्पष्ट प्राणपद होगा ।

(२)—प्राणपद साधन का दूसरा प्रकार यह है; कि इष्टकाल को पलात्मक बनाकर १५ से भाग देने पर लब्धि में राशि, शेष में २ का गुणा कर अंश रखे तो मध्यम प्राणपद होगा । ꣸ फिर सूर्य में जोड़ने से स्पष्ट प्राणपद होगा ।

प्राणपद की उपपत्ति —

(३)—प्राणपद अर्थात् जीवधारियों में प्राणशक्ति देने वाला अंश । यह सूर्योदय से १५ पल में एक राशि का होता है । अतः एक दण्ड में ४ राशि; एवं ३ दण्ड में

---

꣸ नोट पृष्ठ ६२ में पढ़िये

१२ राशियों का भ्रमण रूपी भगण पूर्ति हो जाता है, इस नियम से १ पल में २ अंश प्राणपद होता है। अतः यदि इष्ट दण्ड में ३ का भाग दे दिया जाय; तो प्राणपद का पूरा भगण निकल जायगा। शेष दण्ड और पल से पूर्वोक्त रीतिसे गणित करने पर प्राणपद हो जायगा। यह तीसरा प्रकार है ।

नोट—यदि सूर्य चर राशि में हो; तो सूर्य में जोड़ना चाहिये, स्थिर या द्विस्वभाव राशि में सूर्य हो; तो सूर्य से त्रिकोण (५।९) राशियों में जो चर राशि हो; उस में जोड़ने से स्पष्ट होगा। इसीलिये 'तद्राशिचरान् क्रमेण' लिखा है। प्राणपद बनाने का तात्पर्य यह है कि इष्ट काल में गणितागत लग्न के अंश और प्राणपद के अंश बराबर होना चाहिये। तभी इष्ट काल की शुद्धता और सूक्ष्मता समझी जायगी। अन्यथा कुछ आगे पीछे होने पर इष्ट को संशोधित करना चाहिये; और वह संशोधन भी इस तरह का हो; कि लग्नांश में न्यूनता न हो। इसका उदाहरण आगे लिखा जाता है ।

## प्राणपद का उदाहरण

उदाहरण—(१) 'लग्नांशप्राणांशपदैक्यता स्यात्' इस ध्येय को मान कर इष्टकाल ७।३० सूर्य २।१९ में प्राणपद बनाया जाता है। 'घटी चतुर्गुणा कार्या...इत्यादि' से——

इष्टघटी = ७ × ४ = २८

इष्टपल = ३० ÷ १५ = २

= २८ + २ = ३०

= ३० ÷ १२ = लब्धि २ को त्यागकर शेष ६ राशि हुई। तो मध्यम प्राणपद राश्यादि = ६।० हुआ ।

सूर्य द्विस्वभावराशि (मिथुन) का है। अतः मिथुन की त्रिकोण चर राशि (तुला) सूर्य समान अंश युक्त (६।१९) कर, मध्यम प्राणपद में जोड़ा तो—

=६।०+६।१९=०।१९ स्पष्ट प्राणपद हुआ।

अब इष्ट काल ७।३० सूर्य २।१९ से (पृष्ठ ५५) में 'तत्काले सायनार्कस्य' द्वारा लग्न ३।२९।१४।४२ है। प्राणपद के १९ अंश और लग्न के २९ अंश हैं अतः दोनों में एकता नहीं है। पूर्वोक्त एकता करने के लिए १ पल=२ अंश प्राणपद की वृद्धि होती है। यदि ५ पल की वृद्धि इष्ट काल में कर दी जाय तो लग्नांश, प्राणांश की एकता हो जायगी। अतएव ५×२=१० अंश स्पष्टप्राणपद ०।१९ में जोड़ा। तो—

=०।१९+१० अंश=०।२९ शुद्ध स्पष्ट प्राणपद एवं ७।३५ शुद्ध इष्ट काल हुआ। प्राणपद, लग्न की अंशात्मक एकता भी हो गई और ऐसी वृद्धि इष्ट में कर देने से अंश में त्रुटि भी न हुई। जैसा कि आगे लग्न स्पष्ट कर दिखाया जाता है।

अब इस प्रकार से संशोधित ७।३५ इष्टकाल पर लग्न बनाई जाती है।

=७।३५ इष्ट काल का सूर्य—२।१९।३२।२३
अयनांश २२।४८।२९
३।१२।२०।५२
= १२।२०।५२ भुक्तांश

राशि १।०।०।०
भुक्तांश १२।२०।५२
भोग्यांश ०।१७।३९।८ × ३४० (स्वोदयम)

| | | |
|---|---|---|
| ५७८० | ३०६० | २७२०÷६० |
| २२० | १०२० | २० शेष |
| | ४५ | |
| ३०)६००१(२०० | १३३०५÷६० | |
| ६० | ४५ शेष | |
| ००१×२=२ | | |

=२००।२ भोग्य पल

अब इष्ट काल ७।३५=७ × ६० + ३५=४५५ इष्ट पल

=४५५।०

२००।२

२५४।५८

३४०।० सिंहोदय न घटने से अशुद्ध संज्ञा

=२५४ × ३०=७६२०

= ५८ ÷ २ = २९

अशुद्धहृत ३४०)७६४९(२२

६८०

८४९

६८०

१६९ × ६०

३४०)१०१४०(२९

६८०

३३४०

३०६०

२८० × ६०

३४०) १६८००(४९

१३६०

३२००

३०६०

१४० शेष त्याग किया

अशुद्ध राशि पूर्व ४।२२।२९।४९

२२।४८।२९

३।२९।४१।२०

इस ७।३५ इष्ट काल से प्राणपद के अंश एवं लग्न के अंश एक ही हुए। अतः शुद्ध इष्ट इस प्रकार बनाना चाहिए।

उदाहरण(२)—इष्ट काल ५४।५३ सूर्य १।७ से प्राणपद स्पष्ट किया जाता है। 'स्वेष्टकालं पलीकृत्य' से—

=इष्ट काल ५४ × ६० + ५३ = ३२९३ इष्टपल

=इष्टपल ३२९३ ÷ १५ = लब्धि २१९ राशि शेष ८ × २ = १६ अंश

=लब्धि २१९ ÷ १२ = १८ लब्धि का त्याग, शेष ३ राशि

=मध्यम प्राणपद राश्यादि ३।१६ हुआ।

अब सूर्य वृष ( स्थिर ) राशि का है 'चराऽगद्विभगे भानौ ......इत्यादि' से नवम (त्रिकोण) चर (मकर) राशि सूर्यसमांश सहित (९।७) जोड़ा; तो—

=मध्यम प्राणपद ३।१६ + ९।७ = ०।२३ स्पष्ट प्राणपद हुआ।

अब इष्ट काल ५४।५३, सूर्य १।७ से पृष्ठ ५७ में 'तत्काले सायनार्कस्य' द्वारा लग्न ०।०।०।१९ है। प्राणपद के २३ अंश, लग्न के शून्य अंश हैं; अत: दोनों में एकता नहीं है। पूर्वोक्त एकता करने के लिये १पल=२ अंश (प्राणपदांश) की वृद्धि होती है। यदि ३½ पल की वृद्धि इष्टकाल में कर दी जाय तो लग्नांश, प्राणांश की एकता हो जायगी।

अतएव—

३½ × २ = ७ अंश स्पष्ट प्राणपद ०।२३ में जोड़ा; तो ०।२३ + ७ अंश = १।० शुद्ध स्पष्ट प्राणपद एवं ५४।५६।३० शुद्ध इष्ट काल हुआ। प्राणांश, लग्नांश की एकता होगई; और ऐसी वृद्धि इष्ट में कर देने से अंश में त्रुटि भी न हुई। इसी प्रकार पूर्वोक्त कथनानुसार इष्ट का संशोधन करना चाहिए।

# लग्न—सारणी

## अक्षांशाः २३।१० पलभा ५।८

| अंशाः | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ० | ५२ | ० | ७ | १५ | २२ | ३० | ३७ | ४५ | ५३ | २ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४५ |
| वृ. | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| १ | ३ | ११ | २० | २८ | ३७ | ४६ | ५४ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ४ | १४ |
| मि. | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ |
| २. | ५७ | ७ | १७ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ |
| क. | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० |
| ३ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ |
| सिं. | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ |
| ४ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २३ | ३४ | ४५ |
| कं. | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ |
| ५ | ४० | ५१ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ३ | १४ |
| तु. | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ |
| ६ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ |
| वृ. | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ |
| ७ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ |
| घ. | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ |
| ८ | २७ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ |
| म. | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ |
| ९ | ४१ | ५१ | १ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | १ | १० | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५३ |
| कुं. | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ |
| १० | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४५ | ५४ | २ | ११ | १९ | २६ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ४ |
| मी. | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ११ | ५ | १३ | २० | २८ | ३५ | ४३ | ५० | ५८ | ६ | १३ | २१ | २८ | ३६ | ४३ | ५१ |

# लग्न–सारणी

## अक्षांशाः २३।१० पलभा ५।८

| अंशाः | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ० | ५: | २ | ११ | १९ | २८ | ३७ | ४५ | ५४ | २ | ११ | २० | २८ | ३७ | ४५ | ५४ |
| वृ. | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| १ | २४ | ३५ | ४४ | ५५ | ५ | १५ | २५ | ३५ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३७ | ४७ |
| मि. | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| २ | ३९ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १७ |
| क. | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ३ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५७ |
| सिं. | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ |
| ४ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | २ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५६ | ७ | १८ | २९ |
| कं. | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ |
| ५ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ |
| तु. | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| ६ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ |
| वृ. | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ |
| ७ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ |
| ध. | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० |
| ८ | ८ | १८ | २८ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २१ | ३१ |
| म. | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ |
| ९ | २ | १६ | १९ | २७ | ३७ | ४५ | ५३ | २ | १० | १९ | २८ | ३६ | ४५ | ५३ | २ |
| कुं. | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| १० | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४२ | ५० | ५७ | ५ | १२ | २० | २७ | ३५ | ४२ | ५० | ५७ |
| मी. | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ११ | ५९ | ६ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४४ | ५१ | ५९ | ७ | १४ | २२ | २९ | ३७ | ४४ |

## सारणी द्वारा लग्न साधन

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत् ।
तत्तुल्यघट्यादिभवेद्धि यत्र तत्तिर्यगूर्ध्वांकमितं हि लग्नम् ॥

भाषा—सूर्य की राशि के सामने और अंश के नीचे लग्न सारणी में जो अंक संख्या मिले; उसको इष्टकाल में जोड़ दे; वही योग संख्या या उससे कम जिस कोष्टक में मिले; उसके बांयीं ओर राशि का अंक तथा ऊपर अंश का अंक मिलेगा, यही लग्न के राशि, अंश होंगे । त्रैराशिक अनुपात द्वारा सूर्य के कला विकला समान जोड़कर लग्न की कला विकला भी जानना चाहिए ।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३।२३ इष्ट काल ७।३५ है सारणी में २ राशि (मिथुन) के सामने और १९ अंश के नीचे १५।२४

इष्टकाल ७।३५

योग २२।५९

=योग २२।५९ कर्क राशि के २९ अंश पर (२२।५७) मिले ।
अतः अनुपात द्वारा लग्न ३।२९।१४।४२ हुई ।

## प्राणपद की दूसरी उपयोगिता ।

............पशूनाश्च द्वितीये दशमे रिपौ ।
तृतीये मदने लाभे विहङ्गानां विनिर्दिशेत् ॥
कीटसर्पजलस्थानां शेषस्थानेषु चिन्तयेत् ।

भाषा—प्राणपद से २।६।१० वें भाव में जन्म लग्न होने से पशु का जन्म । एवं प्राणपद से ३।७।११ वें भाव में जन्म लग्न हो तो बिहङ्गम का जन्म और प्राणपद से ५।८।१२ वें भाव में जन्म लग्न होने से कीट, सर्प, जल जन्तु···इत्यादि का जन्म समझना चाहिये । इसका यह भी तात्पर्य है । कि पूर्वदर्शित स्थानों में प्राणपद के रहते पश्वादि स्वभाव वाले मनुष्यों का भी जन्म हो सकता है । क्योंकि 'द्वयोर्हीनवलेऽप्येवं गुलिकाद्वा' पृष्ठ ५८ में कहा है ।

नोट—इस प्रकार लग्न-शुद्धि के लिये प्राचीन ग्रन्थों में युक्तियाँ बतायी गई हैं।

## चालन द्वारा ग्रह साधन—

स्वेष्टकालो यदाग्रे स्यात्पंक्तिं च संशोधयेद्धनम्।
पंक्तिश्चैव यदाग्रे स्यादिष्टं च संशोधयेदृणम्॥

पंचांगों के ग्रह-स्पष्ट के प्रस्तार को पंक्ति कहते हैं। किसी पंचांग में अष्टमी, अमावास्या और पूर्णिमा का प्रस्तार रहता है। किसी में मेषार्क वार का प्रस्तार रहता है; इत्यादि—

किसी में मिश्रमान कालिक और किसी में प्रातः कालिक प्रस्तार रहता है।

इस प्रस्तार के दिन व इष्ट व मिश्रमान यदि इष्टकाल से आगे हो तो इष्ट के वार, घटी और पल में प्रस्तार के वार घटी पल घटाने से शेष वार, घटी और पल धन चालन होता है।

यदि इष्टकाल से पंक्ति (प्रस्तार) आगे हो तो इष्टकाल के वार घटी और पल में प्रस्तार के वार घटी पल घटाने से शेष वारादि ऋण चालन होते हैं।

चालन आदि के उदाहरण बनाने के लिये नीचे विक्रम-विजय-पंचांग जबलपुर की दो पंक्तियों (प्रस्तारों) को नीचे उद्धृत किया जाता है।

| (१) सं. १९९० आ. शु. ८ शनौ मिश्रमानम् ४७।५७ | | | | | | | | | (२) सं. १९९४ वै. शु. १५ भौमे मिश्रमानम् ४७।२७ | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | चं. | मं. | बु | गु. | शु. | श. | रा. | के | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
| २ | ६ | ५ | ३ | ४ | ३ | ९ | १० | ४ | १ | ७ | ६ | ० | ९ | ११ | ११ | ७ | १ |
| १६ | ० | ३ | ११ | २७ | ८ | १५ | १२ | १२ | ११ | १ ६ | २९ | २० | १० | २६ | ३ | २६ | २६ |
| २० | २ ४ | ३२ | २२ | ४६ | ४१ | ० | १६ | १६ | ८ | ५२ | ४७ | १३ | १ | ४६ | ३८ | ३६ | ३६ |
| ४१ | ५ ४ | २९ | १ | ३७ | १४ | ३७ | ३८ | ३८ | १८ | ८ | १५ | ३ | ३६ | ३५ | ३१ | २४ | २४ |
| ५६ | ८२५ | ३२ | ५९ | ८ | ७२ | ४ | ३ | ३ | ५७ | ७२८ | १७ | २४ | १ | ४४ | ३ | ३ | ३ |
| ५१ | ३१ | २ | २८ | १२ | ५ | ० | ११ | ११ | १९ | ५४ | २६ | ४५ | १३ | ५१ | ५६ | ११ | ११ |
| | | | | | | | | | | | व. | मा. | व. | | | | |

## धन चालन

उदाहरण (१)—सं. १९९० आषाढ़ शु. १३ बुधवार इष्टकाल ७।३५ है। पंक्ति (प्रस्तार) अष्टमी शनिवार मिश्रमान ४७।५७ की है। और इष्टकाल १३ बुधवार का है। अतः पृष्ठ ६९ में 'स्वेष्टकालो यदाग्रे स्यात्' के अनुसार—

इष्टवारादि ४। ७ ।३५ ( रव्यादि से बुधवार के ४ अंक )
पंक्तिवारादि ७।४७।५७
शेष ३।१९।३८

यहां पंक्ति घटाई गई है; अतः वारादि ३।१९।३८ धन चालन हुआ

## ऋण चालन

उदाहरण (२)—सं. १९९४ वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार इष्टकाल ५४।५६।३० है। प्रस्तार (पंक्ति) पूर्णिमा भौमवार मिश्रमान ४७।२७ का है और इष्टकाल १२ शुक्रवार का है; अतः पृष्ठ ६६ में पंक्तिश्चैव यदाग्रे स्यात्, के अनुसार—

पंक्ति वारादि ३।४७।२७
इष्टवारादि ६। ५४।५६।३०
३।५२।३०।३० यहां पंक्ति में इष्ट घटाय गया है, अतः ३।५२।३०।३० ऋण चालन हुआ।

## ग्रह—साधन

गतैष्यदिवाद्येन गतिर्निघ्नी खषट् हृता ।

लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद् ग्रहः ॥

धन व ऋण चालन के वार, घटी और पलों से अभीष्ट ग्रह की गति को गोमूत्रिका क्रम से गुणा करे; फिर गुणनफल में ६० का भाग देकर लब्धि बांयी ओर जोड़ता जाय। तो अंशादि मिलेंगे। इन अंशादिकों को पंक्ति के अभीष्ट ग्रह में ऋण चालन में ऋण, धन चालन में धन करने से स्पष्ट ग्रह बन जाता है।

नोट—सूर्य, चन्द्र सर्वदा मार्गी; राहु केतु सर्वदा वक्री रहते हैं। भौमादि पंचग्रह कभी वक्री और कभी मार्गी रहते हैं। अतएव वक्री ग्रहों में ऋणचालन में धन और धनचालन में ऋण

करे; मार्गी ग्रहों में ऋण चालन में ऋण, धन चालन में धन; जैसा कि पहिले बताया गया है, करने से स्पष्ट ग्रह होगा।

## गोमूत्रिका रीति से सूर्य–साधन

उदाहरण (१)—सूर्य गति ५६।५१ धन चालन ३।१९।३८

सूर्य–गति

| | | |
|---|---|---|
| चालन वारादि | ३ | ५६ , ५१ |
| | १९ | १६८ , १५३ |
| | ३८ | ५०४ ४५९<br>५६ , ५१ |
| | | ४४८ ४०८<br>१६८ , १५३ |
| | | १६८ , १२१७ , ३०९७ , १९३८ ÷ ६०<br>२१ ५२ ३२ १८ शेष |
| ० | ३ | १८९ , १२६९ , ३१२९<br>९ शेष ९ शेष २९ शेष |

= ३ अंश , ९ कला , ९ विकला

स्पष्टीकरण—पहिले ५६ × ३ = १६८ फिर ५१ × ३ = १५३ फर ५६ × १९ = १०६४ (खण्ड गुणन रीति से ५०४ + ५६०) फिर ५१ × १९ = ९६९ (४५९ + ५१०) फिर ५६ × ३८ = २१२८ (०४४८ + १६८०) फिर ५१ × ३८ = १९३८ (०४०८ + १५३०) किया। फिर गुणन फल क्रमशः एक दूसरे के नीचे रख कर योग किया। तो कलादि १६८।१२१७।३०९७।१९३८ हुए। इन सबों में ६० का भाग देते हुए लब्धि बाँयी ओर की संख्या में जोड़ने से अंशादि ३।९।९ मिले। इनको पंक्तिस्थ सूर्य राश्यादि २।१६।२०।४१ में ३।९।९ धन चालन होने के कारण जोड़ा। तो—

| | |
|---|---|
| पंक्तिस्थ सूर्य राश्यादि | २।१६।२०।४१ |
| गोमूत्रिका रीति से अंशादि | ३। ९। ९ |
| अभीष्ट समय का स्पष्ट सूर्य | २।१९।२९।५० हुआ। |

नोटः—इस गोमूत्रिका रीति से इसी प्रकार सभी ग्रह स्पष्ट करना चाहिये। सूर्य के इस एक ही उदाहरण को हृदयङ्गम कर लेने से शेष ग्रहों के लिये भी यह पद्धति सरल होगी इसी को त्रैराशिक रीति से भी स्पष्ट किया जाता है—

जब कि १ दिन में सूर्य को ५६ कला ५१ विकला गति है तब ३ दिन १९ घटी ३८ पल में कितनी गति होगी ?

∵ १ दिन = ६० घटी में — ५६।५१ सूर्य गति

∴ ३ दिन में — $\frac{५६।५१ \times ३}{६०}$

$$= \frac{५६ \times ६० + ५१ \times ३}{६० \times ६०} = \text{लब्धि अंशादि } २^\circ।५०'।३३''$$

स्पष्टीकरण—

```
                     ५६ × ६०
                     ३३६०
                   +   ५१
                     ३४११ × ३
६० × ६० = ३६००) १०२३३ (२ अंश
                     ७२००
                     ३०३३ × ६०
           ३६००) १८१९८० (५० कला
                     १८०००
                     १९८० × ६०
           ३६००) ११८८०० (३३ विकला
                     १०८००
                     १०८००
                     १०८००
                       ×
```

=पूर्वोक्त लब्धि अंशादि २°।५०'।३३"

अब १९ घटी का निकालना है तो—

∴ १ दिन = ६० घटी में      ५६'।५१" सूर्य गति

∴ १ घटी में      $\frac{५६।५१ \times १}{६०}$

∴ १९ घटी में      $\frac{५६।५१ \times १ \times १९}{६०}$

$= \frac{५६ \times ६० + ५१ \times १ \times १९}{६० \times ६०}$ = लब्धि कलादि १८'।०"।९'" =

स्पष्टी करण—

$$
\begin{array}{r}
५६ \times ६० \\
\hline
३३६० \\
+५१ \\
\hline
३४११ \times १ \\
\hline
३४११ \times १९ \\
\hline
३०६९९ \\
३४११ \\
\hline
\end{array}
$$

$$
\begin{array}{l}
६० \times ६० = ३६०० )\ ६४८०९\ (\ १८ \text{ कला} \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ ३६०० \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ \overline{२८८०९} \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ २८८०० \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ \overline{९ \times ६०} \\
\quad\quad\quad\quad\quad ३६०० )\ ५४०\ (\ ० \text{ विकला} \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ \times ६० \\
\quad\quad\quad\quad\quad ३६०० )\ ३२४००\ (\ ९ \text{ प्रतिविकला} \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ ३२४०० \\
\quad\quad\quad\quad\quad\quad\quad\ \overline{\quad \times \quad}
\end{array}
$$

=पूर्वोक्त लब्धि कलादि १८।०"।१९'''
अब ३८ पल का निकालना है तो--

∵ १ घटी=६० पल में $=\frac{५६।५१ \times १}{६०}$

∴ १ पल में $=\frac{५६।५१ \times ६०}{६० \times ६०}$

∴ ३८ पल में $=\frac{५६।५१ \times ६० \times ३८}{६० \times ६०}$

$=\frac{५६ \times ६० + ५१ \times ६० \times ३८}{६० \times ६० \times ६०}$ =लब्धि विकलादि ३६ + ...

स्पष्टी करण—

५६ × ६०
३३६०
+५१
३४११ × ६०
२०४६६० × ३८
१६३७२८०
६१३९८०
६० × ६० × ६० = २१६०००) ७७७७०८० (३६ विकला
६४८०००
१२९७०८०
१२९६०००
१०८० शेष त्याग किया। यहाँ
विकला तक ही आवश्यकता है।

अब ३ दिन =२।५०।३३
१९ घटी = १८। ०।१९
३८ पल = ३६
३। ९। ९।९

त्रैराशिक एवं गोमूत्रिका से एक ही आता है पर गोमूत्रिका रीति से गणित की लाघवता है। इस चालन द्वारा ग्रह कुछ स्थूल स्पष्ट होता है अतः हमने अहर्गण पर से स्पष्ट सूर्य २।१९।३२।२३ जो कि ७।३५ इष्ट काल से आता है; इसी से सभी उदाहरण लिखे गये हैं।

## भयात, भभोग—साधन

**गतर्क्ष नाड्यः खरसेषु शुद्धा सूर्य्योदयादिष्टघटीषु युक्ता।**
**भयातसंज्ञा भवतोह तस्य निजर्क्षनाडीसहिता भभोगः॥**

(नीलकण्ठी)

### भयात भभोग की उपपत्ति—

नक्षत्र के प्रारम्भ से इष्टकाल तक के काल को भयात कहते हैं; और सम्पूर्ण नक्षत्र को भभोग कहते हैं। अतः गत नक्षत्र को ६० घटी में घटाकर शेष को दो स्थान में रखे; प्रथम स्थान के शेष में इष्ट जोड़ने से भयात हो जाता है, द्वितीय स्थान के शेष में वर्तमान नक्षत्र जोड़ने से भभोग हो जाता है।

उदाहरण (१)—सं. १९९० आषाढ शुक्ल १३ बुधवार अनुराधा ४।६ (विक्रम-विजय-पंचांग जबलपुर) इष्ट काल ७।३५ है। गत नक्षत्र अनुराधा है; अतः भभोग साधन के लिये ज्येष्ठा का मान ०।५ भी लिखा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| घट्यादि | ६०।० में से | | |
| गत नक्षत्र | ४।६ घटाया | द्वितीय स्थान के शेष | ५५।५४ में |
| शेष | ५५।५४ में | ज्येष्ठा का मान | ० । ५ जोड़ा |
| इष्ट काल | ७।३५ जोड़ा | सर्वर्क्ष | ५५।५९ |
| गतर्क्ष | ६३।२९ | | |

नोट—सर्वर्क्ष के घटी पलों से यदि गतर्क्ष के घटी पल अधिक हों तो गतर्क्ष की घटी में ६० से भाग दे शेष गतर्क्ष की घटी जाने। तो गतर्क्ष की घटी ६३÷६०=३ शेष ,रहा। अतः गतर्क्ष मान ३।२९ सर्वर्क्षमान ५५।५९ हुआ।

उदाहरण (२)—सं. १९९४ वैशाख शुक्ल १२ शुक्रवार हस्त २२।४१ (विक्रम-विजय-पंञ्चाग जबलपुर में) है। इष्टकाल ५४।५६।३० है अतः हस्त नक्षत्र गत हो गया है; तो —

| | | | |
|---|---|---|---|
| अत्र घटी | ६०।० पल में से | शेष | ३७।१९ में |
| गतनक्षत्र हस्त | २२।४१ घटाया | चित्रा | २७।४२ जोड़ा |
| शेष | ३७।१९ में | | ६५।१ |
| इष्ट काल | ५४।५६।३० जोड़ा | | |
| | ९२।१५।३० | | |

पृष्ठ ७५ के नोट के अनुसार गतर्क्ष घटी ९२ ÷ ६० = शेष ३२ घटी रहा। तो गतर्क्ष मान ३२।१५।३० सर्वर्क्षमान ६५।१ हुआ।

नक्षत्र के घटी पलों से इष्टकाल अधिक रहने पर भयात साधन

"नक्षत्रदण्डादधिकं यदेष्टं तदेष्टदण्डाच्च विशोध्य घट्यः।
शेषं भयातं भवतीह तत्र भभोगमानं खलु पूर्ववत् स्यात् ॥

भाषा—नक्षत्र दण्डादि से यदि इष्ट काल अधिक हो तो इष्टकाल में से नक्षत्र दण्डादि घटाने से शेष भयात होता है और भभोग तो पूर्वोक्त रीति से ही साधन होता है।

उदाहरण (१)—

| | | |
|---|---|---|
| इष्ट काल | ७।३५ | में से |
| गतनक्षत्र | ४। ६ | घटाया |
| शेष | ३।२९ गतर्क्ष (भयात) हुआ। | |

उदाहरण (२)—

| | | |
|---|---|---|
| इष्ट काल | ५४।५६।३० | में से |
| हस्त | २२।४१ | घटाया |
| शेष | ३२।१५।३० गतर्क्ष (भयात) हुआ। | |

**जिस दिन नक्षत्र का मान ६०।० लिखा है। उस दिन के भभोग का साधन**

गत नक्षत्र के घटी पलों को ६० घटी में घटाकर शेष को वर्तमान दिन के नक्षत्र मान ६०।० में जोड़े तो भभोग होता है। भयात तो 'गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धा' इत्यादि रीति से ही बनाना चाहिए।

उदाहरण—सं० १९९४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ चन्द्रवार इष्ट काल २६।१२ अनुराधा ६०।० है। १४ भौमवार को अनुराधा ६।८ है। द्वादशी रविवार को विशाखा ५७।५३ (विक्रम-विजय-पंचांग जबलपुर में) है तो—

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ६०।० | | शेष २।७ |
| गतनक्षत्र | ५७।५३ | वर्तमान नक्षत्रमान | ६०।० |
| शेष | २।७ | | ६२।७ सर्वर्क्ष |
| इष्टकाल | २६।१२ जोड़ा | | |
| | २८।१९ गतर्क्ष | | |

(१) सर्वर्क्ष–गतर्क्ष = भोग्यर्क्ष

(२) वर्तमान नक्षत्रमान–इष्टकाल = भोग्यर्क्ष

नोट—गतर्क्ष सर्वर्क्ष चाहे जिस रीति से बनावे। परन्तु इन दोनों प्रकार से भोग्यर्क्ष एक ही होना चाहिए। तभी गतर्क्ष सर्वर्क्ष शुद्ध होता है।

**जिस दिन नक्षत्र का लोप हो उस दिन के भयात, भभोग का साधन**

उदाहरण—सं०१९९४ ज्येष्ठ कृष्ण १२ रविवार इष्टकाल २६।१२ अश्विनी ०।२५ है। उसी दिन भरणी ५६।३१ है; तो गत नक्षत्र अश्विनी है अतः—पृष्ठ ७६ में श्लोक 'नक्षत्रदण्डादधिकम्' के अनुसार—

| | |
|---|---|
| इष्टकाल | २६।१२ में से |
| अश्विनी | ०।२५ घटाया |
| शेष | २५।४७ गतर्क्ष हुआ |

पृष्ठ ७५ भयात भभोग की उपपत्ति के अनुसार ( नक्षत्र के सम्पूर्ण भोग को भभोग कहते हैं ) सर्वर्क्ष का मान ५६।३१ ही हुआ ।

## नक्षत्र के चरण जानने की रीति

भभोग में ४ का भाग देने से एक चरण होता है । उससे भयात में भाग देने पर लब्धि तुल्य गत चरण,शेष वर्तमान चरण होगा।

उदाहरण—पृष्ठ ७६ में गतर्क्ष ३।२९ सर्वर्क्ष ५५।५९ है। सर्वर्क्ष ५५।५९÷४=१३।५९।४५ प्रत्येक चरण का मान हुआ गतर्क्ष ३।२९÷१३।५९।४५=लब्धि (०), शेष ३।२९ ज्येष्ठा के प्रथम चरण में जन्म या वर्षप्रवेशादि हुआ ।

## चन्द्र-साधन (श्लोक पृष्ठ ८०)

भयात की घटी में ६० का गुणाकर पल जोड़ने से पलात्मक भयात होता है।

भभोग की घटी में ६० का गुणाकर पल जोड़ने से पलात्मक भभोग होता है।

पलात्मक भयात में ६० का गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग दे; फिर शेष में ६० का गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग दे; फिर शेष में ६० का गुणा कर पलात्मक भभोग से भाग दे; तो लब्धि में वर्तमान नक्षत्र के भुक्तघट्यादि प्राप्त होंगे। फिर अश्विनी से गत नक्षत्र तक गिन कर ६० का गुणा कर भुक्तघट्यादि में जोड़ दें; फिर दो से गुणा करें; इस गुणन फल में ९ से भाग दे; तो लब्धि में अंश, कला, विकला प्राप्त होंगे। यदि अंश ३० से अधिक हों; तो ३० से भाग देकर राशि बना ले। यही राश्यादि चन्द्र स्पष्ट होगा।

## चन्द्र-गति

४८००० में ६० का गुणाकर अर्थात् २८८०००० में पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि में गति की कलाएँ मिलेंगी। शेष में ६० का गुणाकर पलात्मक भभोग से भाग देने पर लब्धि में गति की विकलाएँ मिलेंगी ।

## चन्द्र-स्पष्ट

उदाहरण—गतर्क्ष ३।२९ सर्वर्क्ष ५५।५९ वर्तमान नक्षत्र ज्येष्ठा।

= गतर्क्ष ३ × ६० = १८० + २९ × २०९ पलात्मक भयात

= सर्वर्क्ष ५५ × ६० = ३३०० + ५९ = ३३५९ पलात्मक भभोग

= पलात्मक भयात २०९ × ६०

३३५९) १२५४० (३
१००७७
२४६३ × ६०
३३५९) १४७७८० (४३
१३४३६
१३४२०
१००७७
३३४३ × ६०
३३५९) २००५८० (५९
१६७९५
३२६३०
३०२३१
२३९९ अर्धाधिक होने से लब्धि
५९ के स्थान में ६० माना।

= लब्धि ।३।४४।० वर्तमान ।ज्येष्ठा नक्षत्र का भुक्तकाल

अश्विन्यादि गतनक्षत्र (अनुराधा) = १७ × ६० = १०२०

= १०२० + ३।४४।० = १०२३।४४।०

खषड्घ्नं भयातं भभोगोद्धृतं तत् खतर्कघ्नधिष्ण्येषु युक्तं द्विनिघ्नम् ।
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तु भुक्तिः खखाभ्राष्टवेदा भभोगेन भक्ताः ॥

= १०२३।४४।० × २

९) २०४७।२८। ० (२२७ अंश
१८
२४
१८
६७
६३
४ × ६०
२४०
२८

९) २६८ (२९ कला
१८
८८
८१
× ६०

९) ४२० (४६ विकला
३६
६०
५४
६

= २२७ ÷ ३० = लब्धि ७ राशि, शेष १७ अंश
= ७।१७।२९।४६ स्पष्ट चन्द्र हुआ ।

## चन्द्र--गति

= ४८००० × ६०

३३५९)२८८००००(८५७ कला
२६८७२
१९२८०
१६७९५
२४८५०
२३५१३
१३३७ × ६०
३३५९) ८०२२०(२३ विकला
६७१८
१३०४०
१००७७
२९६३

= चन्द्रगति ८५७।२३ हुई।

## गोमूत्रिका रीति से भौम-साधन

उदाहरण (१)—भौम गति ३२।२ धन चालन ३।१९।३८

भौम गति

३| ३२. २
१९| ९६, ६
३८| ६०८, ३८
| २५६, ७६
| ९६

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९६<br>१० | ६१४<br>२१ | १२५४<br>१ | ७६ ÷ ६०<br>१६ शेष |
| १०६<br>४६ शेष | ६३५<br>३५ शेष | १२५५<br>५५ शेष | |

१

पंक्तिस्थ भौमराश्यादि ५।३।३२।२९ में
गोमूत्रिका रीति से अंशादि १।४६।३५ धन चालन होने से जोड़ा
भौम स्पष्ट ५।५।१९।४ हुआ।

## बुध-साधन

उदाहरण (१)—बुधगति ५९।२८ धन चालन ३।१९।३८

३ | ५९ , २८

१९ | १७७ ; ८४

३८ | ५३१ २५२
५९ , २८

| ४७२ २२४
१७७ , ८४

| १७७ १२०५ २७७४ १०६४÷६०
२० , ४६ , १७ , ४४

३ | १९७ १२५१ २७९१
१७ , ५१ , ३१

=अंशादि ३।१७।५१

पंक्तिस्थ बुध ३।११।२२।१

अंशादि ३।१७।५१ धन चालन होने से जोड़ा

बुध स्पष्ट ३।१४।३९।५२ हुआ।

## गुरु-साधन

उदाहरण (१)—गुरु गति ८।१२ धन चालन ३।१९।३८

३ | ८ , १२

१९ | २४ , ३६

३८ | १५२ , २२८

| ३०४ , ४५६

| २४ , १८८ , ५३२ , ४५६÷६०
३ ९ ७ ३६

० | २७ , १९७ , ५३९
१७

=अंशादि ०।२७।१७

पंक्तिस्थ गुरु ४।२७।४६।३७

अंशादि ०।२७।१७ धन चालन होने से जोड़ा

गुरु स्पष्ट ४।२८।१३।४४ हुआ।

## शुक्र–साधन

उदाहरण (१)—शुक्र गति ७२।४५ धन चालन ३।१९।३८

```
३  | ७२, ४५
१९ | २१६. १३५
३८ |      ६४८,  ४०५
   |       ७२    ४५
   |              ५७६,   ३६०
   |              २१६    १३५
   | २१६,  १५०३, ३५९१ | १०१०÷६०
   |  २६     ६०    २८ |
४  | २४२,  १५६३, ३६१९
   |   २     ३     १९
```

= अंशादि ४।२।३

पंक्तिस्थ शुक्र ३।८।४१।१४

अंशादि ४। २। ३ धन चालन होने से जोड़ा

शुक्र स्पष्ट ३।१२।४३।१७ हुआ

## शनि–साधन

उदाहरण (१)—शनि गति ४।० धन चालन ३।१९।३८

```
३  | ४  ०
१९ | १२, ०
३८ |    ७६, ०
   |         १५२, ०
०  | १२, ७६,  १५२, ०÷६०
   |  १   २    ०    ०
   | १३, ७८  १५२
   |      १८  ३२
```

= अंशादि ०।१३।१८

| | |
|---|---|
| पंक्तिस्थ शनि | ९।१५। ०।३७ |
| अंशादि | ०।१३।१८ धन चालन होने से जोड़ा |
| शनि स्पष्ट | ९।१५।१३।५५ हुआ |

## राहु-साधन

उदाहरण (१)—गति ३।११ धन चालन ३ ।१९।३८

```
३ | ३, ११
१९| ९, ३३
३८|    ५७, २०९
  |         ११४, ४१८
  | ९, ९०, ३२३, ४१८÷६०
  | १  ५,   ७
० | १०, ९५, ३२०,
  |     ३५,  २०
```

=अंशादि ०।१०।३५

नोट पृष्ठ ७० के अनुसार राहु वक्री ग्रह होने के कारण धन चालन होने पर भी ऋण चालन होता है; अतः—

| | |
|---|---|
| पंक्तिस्थ राहु | १०।१२।१६।३८ |
| अंशादि | ०।१०।३५ ऋण किया |
| राहु स्पष्ट | १०।१२।६। ३ हुआ |

नोट—राहु के स्पष्ट राशि में ६ जोड़ देने से केतु स्पष्ट होता है; अतः—

राहु स्पष्ट १०।१२।६।३ में

६। ०।०।० जोड़ा

केतु स्पष्ट ४।१२। ६। ३ हुआ

सं. १९९० आषाढ़ शुक्ल १३ बुधवार इष्ट काल ७।३५ का

स्पष्टग्रह-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ७ | ५ | ३ | ४ | ३ | ९ | १० | ४ |
| १९ | १७ | ५ | १४ | २८ | १२ | १५ | १२ | १२ |
| २९ | २९ | १९ | ३९ | १३ | ४३ | १३ | ६ | ६ |
| ५० | ४६ | ४ | ५२ | ४४ | १७ | ५५ | ३ | ३ |
| ५६ | ८५७ | ३२ | ५९ | ८ | ७२ | ४ | ३ | ३ |
| ५१ | २३ | २ | २८ | १२ | ४५ | ० | ११ | ११ |

## भाव—संज्ञा

तनुर्धनञ्च भ्रातारं सुहृत्पुत्रो रिपुस्त्रियः।
आयुः धर्मकर्मायव्ययभावाः प्रकीर्तिताः॥

भाषा—तनु, धन, भ्रातृ, सुहृद्, पुत्र, रिपु, स्त्री, आयु, धर्म, कर्म, आय, व्यय ये क्रमशः १२ भावों की संज्ञा (नाम) हैं। इनके स्पष्ट करने का प्रयोजन लिखा जाता है।

## भावसाधन-प्रयोजन

जन्मप्रयाणव्रतबन्धचूड़ानृपाभिषेकादिकरग्रहेषु।
एवं हि भावाः परिसाधनीयास्तैरेव सर्वं भवति स्फुटत्वम्॥

भाषा—जन्म, यात्रा, व्रतबन्ध, चूड़ा कर्म, राज्याभिषेक, विवाह में भाव स्पष्ट करने से फलादिक स्फुट (प्रकाशित) होते हैं। अतः इनके साधन करने का प्रकार लिखा जाता है।

## द्वादशभाव—साधन

लग्न स्पष्ट पृष्ट ६३ के पश्चात् द्वादशभाव—साधनार्थ प्रथम दशम भाव-साधन रीति लिखी जाती है। इस दशम भाव साधन में पहिले नत साधन लिखा जाता है।

## नतकाल-साधन

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ।
दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युरात्रिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥

भाषा—नत काल साधन के ४ विभाग किये गये हैं ।

१—दिनार्ध से पहिले का इष्ट हो तो इष्टकाल को दिनार्ध में घटाने से पूर्वनत होता है ।

२—दिनार्ध के बाद का इष्टकाल हो तो दिनमान में इष्टकाल घटावे फिर शेष को दिनार्ध में घटाने से पश्चिमनत होता है।

३—राज्यर्ध से पहिले का इष्टकाल हो तो दिनमान में इष्टकाल घटावे । फिर शेष में दिनार्ध जोड़ने से पश्चिमनत होता है ।

४—राज्यर्ध के बाद का इष्टकाल हो तो ६० घटी में से इष्टकाल को घटावे । शेष में दिनार्ध जोड़ने से पूर्वनत होता है ।

उदाहरण (१) इष्टकाल ७।३५ दिनमान ३३।२५ दिनार्ध १६।४२।३० हुआ । नतसाधन नं. (१) के अनुसार—

दिनार्ध १६।४२।३० में से
इष्टकाल ७।३५।० घटाया
पूर्व नत ९। ७।३० हुआ

उदाहरण (२) ५४।५६।३० दिनमान ३३।२१ हैं । यह रात्रि का इष्ट है। अतः नत साधन नं० (४) अनुसार—

= ६०।०
५४।५६।३०
शेषरात्रि ५। ३।३० में
दिनार्ध १६।४०।३० जोड़ा
२१।४४ पूर्वनत

एवं लङ्कोदयैर्भुक्तं भोग्यं शोध्यं पलीकृतात् ।
पूर्वपश्चान्नतादन्यत् प्राग्वत्तद्दशमं भवेत् ।।

भाषा—पश्चिम नत हो तो भोग्य प्रकार से, पूर्व नत हो तो भुक्त प्रकार से लंकोदय मान (पृष्ठ ५१) द्वारा लग्नवत् दशम भाव स्पष्ट करना चाहिये।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ अयनांश २२।४८।२९ नतकाल ९।७।३०

पूर्व होने के कारण भुक्त प्रकार से—

सूर्य २।१९।३२।२३
अयनांश २२।४८।२९
सायनार्क ३।१२।२०।५२

=भुक्तांश १२।२०।५२ × ३२३ (स्वोदयघ्न)

| | | |
|---|---|---|
| ३८७६ | ६४६० | ६४६ |
| | | १६१५ |
| ३८७६ | ६४६० | १६७९६ ÷ ६० |
| ११२ | २७९ | ५६ शेष |

३०)३९८८(१३२ ६७३९ ÷ ६०
३० १९ शेष
९८
९०
८८
६०
२८ × २ = ५६

= १३२।५६ सूर्य का भुक्त काल पलादि

९ × ६० + ७।३० = ५४७।३० पूर्वनतकालपलादि

= ५४७।३०
१३२।५६
४१४।३४
३२३।० लंकोदय मिथुन का मान पल
९१।३४
२९९।० वृषोदय न घटने से अशुद्ध संज्ञा

=शेष ९१ × ३० = २७३०
३४ ÷ २ = १७

२९९)२७४७(९
२६९१
५६ × ६०
२९९)३३६०(११
२९९
३७०
२९९
७१ × ६०
२९९)४२६०(१४
२९९
१२७०
११९६
७४ शेष त्याग

=अशुद्ध पूर्व राशि २। ०। ०। ०
भुक्त अंशादि ९।११।१४
शेष १।२०।४८।४६ में
अयनांश २२।४८।२९ घटाया
स्पष्ट दशम भाव ०।२८। ०।१७ हुआ

## दशम साधन के अन्य दो प्रकार

(१)—नतको इष्ट मानकर (सार. पृ. ९०, ९१) 'यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे' से अंक लेकर पश्चिम नत हो तो जोड़ दे, पूर्वनत हो तो सारणी के अंकों में नतकाल घटावे। योगफल अथवा ऋण-फल को दशम सारणी में देखे तो बाँयी ओर राशि और ऊपर अंश मिलेंगे और वही राशि अंश दशम भाव के होते हैं।

(२)—इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करने से जो शेष बचे; वह दशम भाव का इष्ट होता है। यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके; तो इष्ट

घटी में ६० घटो जोड़कर दिनार्ध घटा लेवे ; शेष दशम भाव का इष्ट होता हैं । इसमें 'यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे' के अनुसार दशम सारणी से अंक लेकर जोड़ने से वही अंक (योगफल) समान दशम भाव के राशि अंश होते हैं ।

नोट—कभी २ दशम भाव साधन में नवम भाव या एकादश भाव स्पष्ट करने से आ जाता है, परन्तु वही दशमभाव स्पष्ट जानना चाहिए ।

उदाहरण (१)—सूर्य २।१९।३२।२३ इष्टकाल ७।३५ दिनार्ध १६।४२। ३० पूर्व नतकाल ९।७।३० (पृष्ठ ८६)

दशमसारणी द्वारा—

सूर्य २।१९।३२।२३ से अनुपात द्वारा सारणी का अंक १७।१५ में से
नत पूर्व होने के कारण नत काल ९। ७।३० घटाया
शेष ८। ७।३०

यह शेष ८।७।३० सारणी में देखने से अनुपात द्वारा दशमभाव ०।२८।०।१७ हुआ ।

उदाहरण (२)—

इष्टकाल ७।३५ में
दिनार्ध न घटने के कारण ६०। ० जोड़ा
६७।३५ योगफल में
दिनार्ध १६।४२।३० घटाया
दशमभाव का इष्ट ५०।५२।३० में
दशमसारणी से सूर्य २।१९।३२।२३ के अनुपातांक १७।१५। ० जोड़ा
योग फल ८। ७।३० हुआ

यह योग फल ८।७।३० दशमसारिणी में देखने से अनुपात द्वारा दशम भाव ०।२८।०। १७ हुआ ।

## दशम—सारणी

| अंशाः | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ० | ३३ | ४२ | ५२ | १ | १० | १९ | २९ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ |
| वृ. | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० |
| १ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ |
| मि. | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ |
| २. | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २८ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ४ | १५ |
| क. | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ |
| ३ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५० | १ | १२ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ |
| सिं. | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ |
| ४ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ५० | ५९ | ८ | १७ | २७ |
| कं. | २८ | २९ | २९ | २९ | २६ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ |
| ५ | ५५ | ४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ० | ९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५५ | ५ |
| तु. | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ |
| ६ | ३३ | ४२ | ५२ | १ | १० | १९ | २९ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ |
| वृ. | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३२ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० |
| ७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ |
| ध. | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ |
| ८ | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २८ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ४ | १५ |
| म. | ४६ | ४९ | ४६ | ४९ | ४६ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ |
| ९ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५० | १ | १२ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ |
| कुं. | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ |
| १० | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ५० | ५९ | ८ | १७ | २७ |
| मी. | ५८ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| ११ | ५५ | ४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ० | ९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५५ | ५ |

# दशम–सारणी

| अंशा: | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मे. | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ |
| ० | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ |
| वृ. | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ |
| १ | ३ | १४ | २५ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १८ | २९ | ४० | ५१ | १ | १२ | २३ | ३४ |
| मि. | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ |
| २ | २६ | ३७ | ४८ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ |
| क. | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ |
| ३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ |
| सिं. | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| ४ | ३६ | ४५ | ५५ | ४ | १३ | २२ | २३ | ४१ | ५० | ५९ | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४६ |
| कं. | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ |
| ५ | १४ | २३ | ३३ | ४२ | ५३ | ० | १० | १९ | २८ | ३७ | ४७ | ५६ | ५ | १४ | २४ |
| तु. | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ |
| ६ | ५८ | ८ | १८ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ |
| वृ. | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ |
| ७ | ३ | १४ | २५ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १८ | २९ | ४० | ५१ | १ | १२ | २३ | ३४ |
| ध. | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ |
| ८ | २६ | ३७ | ४८ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ |
| म. | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ |
| ९ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ |
| कुं. | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ |
| १० | ३६ | ४५ | ५५ | ४ | १३ | २२ | ३२ | ४१ | ५० | ५९ | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४६ |
| मी. | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ |
| ११ | १४ | २३ | ३३ | ४२ | ५१ | ० | १० | १९ | २८ | ३७ | ४७ | ५६ | ६ | १४ | २४ |

## द्वादशभाव-साधन

सषड्भे लग्नखे जायातुर्यौ लग्नोनतुर्यतः ।
षष्ठांशयुक् तनुः सन्धिरग्रे षष्ठांशयोजनात् ॥
त्रयः ससन्धयो भावाः षष्ठांशोनैकयुक् सुखात् ।
अग्रे त्रयः षडेवं ते भार्धयुक्ताः परेऽपि च ८ ॥

दशमभाव की राशि में ६ युक्त करने से चतुर्थ भाव बन जाता है; फिर चतुर्थ भाव में लग्न को हीन करे। शेष में ६ से भाग दे; फिर शेष में ६० का गुणा कर ६ से भाग दे; फिर शेष में ६० का गुणा कर ६ से भाग दे, तो अंशादि लब्ध होंगे। इस षष्ठांश ( अंशादिकों ) को लग्न में जोड़े ; तो लग्न की विराम सन्धि एवं धन भाव की आरम्भ सन्धि बन जायगी। इस सन्धि में फिर षष्ठांश जोड़े ; तो धन भाव बन जायगा। इसी प्रकार जोड़ते जाने से ससन्धि चतुर्थभाव तक बनेंगे। तदनन्तर षष्ठांश को १ राशि = ३० अंश में से घटावे। शेष को चतुर्थभाव में जोड़ते जाने से ससन्धि षष्ठभाव तक बन जाँयगे। इसके बाद लग्नादि की राशि में ६ जोड़ने से ससन्धि सप्तमादि भाव से द्वादश भाव तक बन जायँगे।

दशमभाव राशि + ६ राशि = चतुर्थभाव। चतुर्थभाव—लग्न = शेष। शेष ÷ ६ = षष्ठांश। लग्न + षष्ठांश = लग्न की विराम सन्धि और धनभाव की प्रारम्भ सन्धि। धन भाव की प्रारम्भ सन्धि + षष्ठांश = धन भाव की विराम सन्धि और तृतीय भाव की प्रारम्भ सन्धि। तृतीय भाव की प्रारम्भ सन्धि + षष्ठांश = तृतीय भाव। तृतीय भाव + षष्ठांश = तृतीय भाव की विराम सन्धि और चतुर्थभाव की प्रारम्भ सन्धि। चतुर्थ भाव की प्रारम्भ सन्धि + षष्ठांश = चतुर्थ भाव। ३० अंश— षष्ठांश = शेषांश। चतुर्थ भाव + शेषांश = चतुर्थ भाव की विराम सन्धि और पञ्चम भाव की प्रारम्भ सन्धि। पञ्चम भाव की प्रारम्भ सन्धि + शेषांश = पञ्चम भाव। पञ्चम भाव + शेषांश = पञ्चम भाव की विराम

सन्धि और षष्ठभाव की प्रारम्भ सन्धि। षष्ठभाव की प्रारंम्भ सन्धि + शेषांश = षष्ठभाव। षष्ठभाव + शेषांश = षष्ठभाव की विराम सन्धि और सप्तम भाव की प्रारम्भ सन्धि होती है।

लग्न + ६ राशि = सप्तम भाव। संधि + ६ राशि = संधि। धनभाव + ६ राशि = अष्टम भाव। संधि + ६ राशि = संधि। तृतीयभाव + ६ राशि = नवम भाव। संधि + ६ राशि = संधि। चतुर्थभाव + ६ राशि = दशम भाव। संधि + ६ राशि = संधि। पंचमभाव + ६ राशि = एकादश भाव। संधि + ६ राशि = संधि। षष्ठ भाव + ६ राशि = व्ययभाव। संधि + ६ राशि = संधि। संधि + शेषांश = लग्न

उदाहरण—

दशम भाव ० ।२८। ०।१७ में
६ । ०। ०। ० (६ राशि जोड़ा)
चतुर्थ भाव ६ ।२८। ०।१७ में से
लग्न भाव ३ ।२९।४१।२० घटाया
६)२ ।२८।१८।५७ (० राशि
०
२ × ३०
६०
२८ अंश जोड़ा
६)८८(१४ अंश
८४
४ × ६०
२४०
१८ कला जोड़ा
६)२५८(४३ कला
२४
१८
१८
×

६) ५७ (९ विकला
५४
३ × ६०
६) १८० ( ३० प्रतिविकला
१८
००

= षष्ठांश ०।१४।४३।९।३०

लग्न ३।२९।४१।२०। में
षष्ठांश ०।१४।४३।९।३० जोड़ा
सन्धि ४।१४।२४।२९।३० (लग्न की विराम एवं धन की प्रारंभ) में
षष्ठांश ०।१४।४३। ९।३० जोड़ा
धनभाव ४।२९। ७।३९। ० हुआ। इसमें
षष्ठांश ०।१४।४३। ९।३० जोड़ा
संधि ५।१३।५०।४८।३० (धन की विराम एवं तृतीय की प्रारंभ) में
षष्ठांश ०।१४।४३। ९।३० जोड़ा
तृतीयभाव ५।२८।३३।५८। ० हुआ। इसमें
षष्ठांश ०।१४।४३। ९।३० जोड़ा
संधि ६।१३।१७। ७।३० (तृतीय की विराम एवं चतुर्थ की प्रारंभ) में
षष्ठांश ०।१४।४३। ९।३० जोड़ा
चतुर्थभाव ६।२८। ०।१७। ० हुआ

१ राशि = ३०। ०। ०। ० अंशादि में से
षष्ठांश = १४।४३। ९।३० घटाया
शेषांश = १५।१६।५०।३० हुआ

चतुर्थभाव ६।२८। ०।१७।० में
शेषांश ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा

संधि ७।१३।१७। ७।३० (चतुर्थ को विराम एवं पंचम की प्रारंभ) में
शेषांश ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा

पञ्चमभाव ७।२८।३३।५८। ० हुआ। इसमें
शेषांश ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा

संधि ८।१३।५०।४८।३० (पञ्चम को विराम एवं षष्ठ की प्रारंभ) में
शेषांश ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा

षष्ठभाव ८।२९। ७।३९। ० हुआ। इसमें
शेषांश ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा

संधि ९।१४।२४।२९।३० (षष्ठ की विराम एवं सप्तम की प्रारंभ) हुई

लग्न ३।२९।४१।२०। ० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा

सप्तमभाव ९।२९।४१।२०। ० हुआ

संधि ४।१४।२४२।९।३० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा

संधि १०।१४।२४।२९।३० हुई

धनभाव ४।२९। ७।३९। ० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा

अष्टमभाव १०।२९। ७।३९। ० हुआ

संधि ५।१३।५०।४८।३० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा

संधि ११।१३।५०।४८।३० हुई

तृतीयभाव ५।२८।३३।५८। ० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा
नवमभाव ११।२८।३३।५८। ० हुआ

संधि ६।१३।१७।७।३० में
राशि ६। ०। ०।०। ० जोड़ा
संधि ०।१३।१७।७।३० हुई
चतुर्थभाव ६।२८।०।१७।० में
राशि ६। ०।०। ०।० जोड़ा
दशमभाव ०।२८।०।१७।० हुआ
संधि ७।१३।१७ ७।३० में
राशि ६। ०। ०।०। ० जोड़ा
संधि १।१३।१७.७।३० हुई
पंचमभाव ७।२८।३३।५८।० में
राशि ६। ०। ०। ०।० जोड़ा
एकादशभाव १।२८।३३।५८।० हुआ
संधि ८।१३।५०।४८।३० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा
संधि २।१३।५०।४८।३० हुई
षष्ठभाव ८।२९।७।३९।० में
राशि ६। ०।०। ०।०। जोड़ा
व्ययभाव २।२९।७।३९।० हुआ
संधि ९।१४।२४।२९।३० में
राशि ६। ०। ०। ०। ० जोड़ा
संधि ३।१४।२४।२९।३० हुई।

| | |
|---|---|
| संधि | ३।१४।२४।२९।३० में |
| शेषांश | ०।१५।१६।५०।३० जोड़ा |
| लग्न | ३।२९।४१।२०। ० हुई |

## स्पष्टद्वादशभाव-चक्र

| त. | सं. | ध. | सं. | तृ. | सं. | च. | सं. | पु. | स. | ष. | सं. | भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | राशि |
| २९ | १४ | २९ | १३ | २८ | १३ | २८ | १३ | २८ | १३ | २९ | १४ | अंश |
| ४१ | २४ | ७ | ५० | ३३ | १७ | ० | १७ | ३३ | ५० | ७ | २४ | कला |
| २० | २९ | ३९ | ४८ | ५८ | ७ | १७ | ७ | ५८ | ४८ | ३९ | २९ | विकला |
| ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | प्रतिवि. |

| स. | सं. | अ. | सं. | न. | सं. | द. | सं. | ला | सं. | व्य | सं. | भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | १० | १० | ११ | ११ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | राशि |
| २६ | १५ | २९ | १३ | २८ | १३ | २८ | १३ | २८ | १३ | २९ | १४ | अंश |
| ४१ | २४ | ७ | ५० | ३३ | १७ | ० | १७ | ३३ | ५० | ७ | २४ | कला |
| १० | २६ | ३९ | ४८ | ५८ | ७ | १७ | ७ | ५८ | ४८ | ३९ | २९ | विकला |
| ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | प्रतिवि. |

## लग्न—चक्र

F.—7
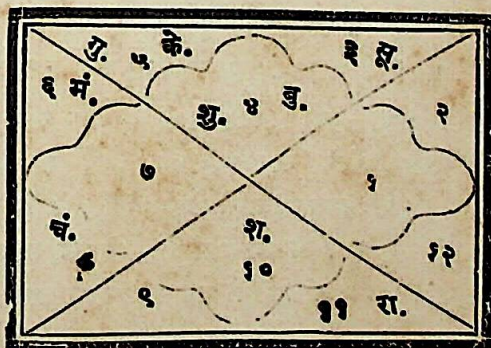
## चन्द्र–चक्र
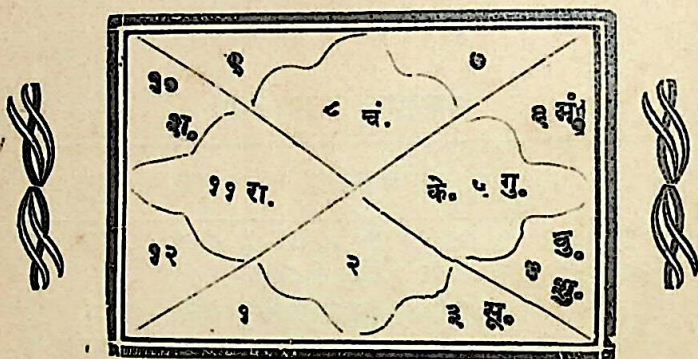
## चन्द्रद्वारा लग्नशुद्धि–ज्ञान

चंद्रलग्नेश्वरो यत्र तत् त्रिकोणमथापि वा।
तत्सप्तमे त्रिलाभे वा संदेहे लग्ननिर्णयः ॥

भाषा—चन्द्र जिस राशि में बैठा हो उस राशि के स्वामी से १।३।५।७।९।११ वें भाव में लग्न होती है। 'विना प्राणपदाच्छुद्धो गुलिकाद्वा निशाकरात्' के अनुसार गुलिक एवं प्राणपद से लग्नशुद्धि ज्ञान सोदाहरण पृष्ठ ६२-६५ में लिखा जा चुका है। प्रसंगवश 'निशाकरात्' से उदाहरणार्थ यहाँ चन्द्र राशीश भौम है; और भौम से ११ वें भाव में कर्क लग्न है; अतः शुद्ध है।

चलित विचार—सूर्य २।१९।२९।५० है; और लाभ की विराम एवं व्यय की प्रारंभ संधि २।१३।५०।४८।३० है और व्यय भाव २।२९।७।३९ है। अतः व्यय भाव की प्रारम्भ संधि में सूर्य है। चलित चक्र में ध्यान दीजिये; व्यय की प्रारंभ संधि में ही सूर्य रखा गया है। यह सूर्य व्यय भाव का फल कितने प्रमाण में देगा यह आगे स्पष्ट किया जायगा।

# चलित-चक्र

संकेत—वि० सं०=विराम सन्धि। प्रा० सं०=प्रारम्भ सन्धि
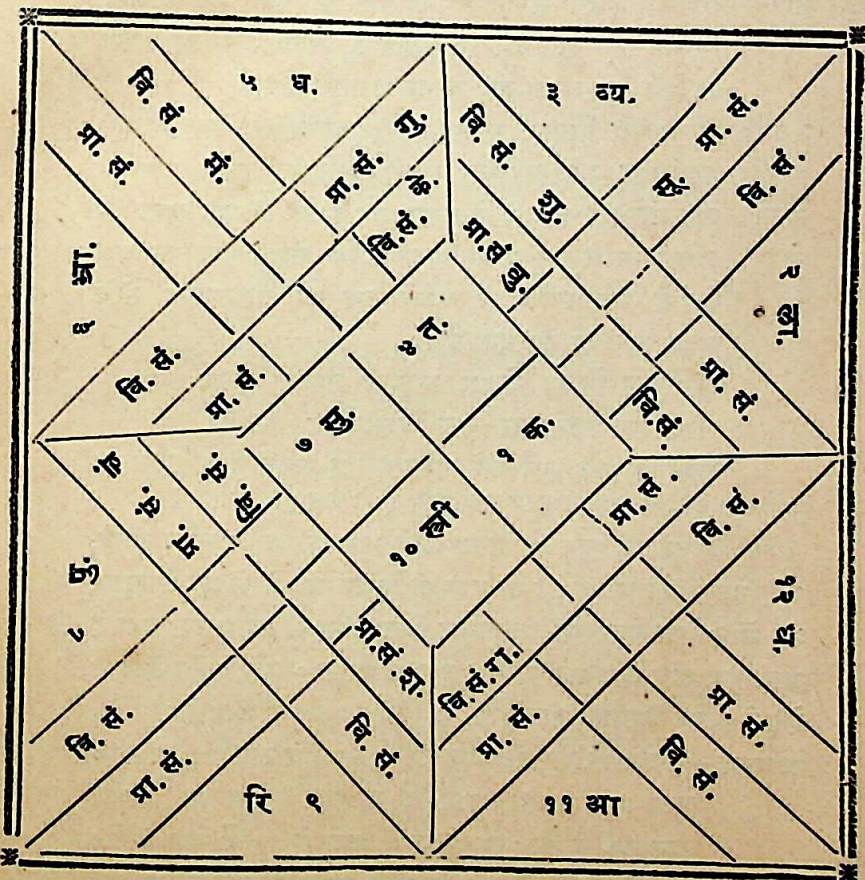
## विंशोपकवल-साधन

भावांशतुल्यः खलु वर्तमानं भावोद्भवं पूर्णफलं विधत्ते ।
भावोनके स्यादधिके च खेटे त्रैराशिकेनात्र फलं विचार्यम् ॥

भाषा—भाव के अंशादि समान जो ग्रह होता है; वही ग्रह भावोत्थ पूर्ण फल को देता है। यदि भाव के आगे पीछे ग्रह हो तो त्रैराशिक द्वारा फल का विचार करना चाहिए।

भवति सन्धिगतो विफलो ग्रहो यदि तदूनखगोऽस्य गतर्क्षगम् ।
भवति चेदधिको यदि सन्धितस्तदनु चाग्रिमजं तनुते फलम् ॥

भाषा—यदि सन्धि के अंशादि के समान ग्रह हो तो निष्फल रहता है, यदि सन्धि से कम हो तो विराम सन्धि संज्ञक भाव का फल देता है, यदि सन्धि से अधिक ग्रह हो तो प्रारम्भ संधि संज्ञक भाव का फल देता है।

संधीकृताधिका खेटाः ग्रहैश्च नखताडिताः ।
भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं तत्र विंशोपकाः फलम् ॥

"खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धि समे तु खम्" भाव तुल्य ग्रह पूर्ण फल देता हैं, सन्धि तुल्य ग्रह शून्य (०) फल देता है।

भावसे ग्रह न्यून हो तो ग्रहमें से भाव की आरंभ सन्धि घटावे; यदि भावसे ग्रह अधिक हो तो भाव की विराम संधि में से ग्रहको घटावे; शेष में २० का गुणा करे। तदनन्तर जिस सन्धि में ग्रह घटाया गया है उससे एवं भाव से अन्तर करना। इस अन्तर से२० गुणित शेष में भाग देने से लब्धि विश्वादि प्राप्त होंगे, यही विंशोपक वल होता है।

उदाहरण—सूय २।१९।३२।२३ व्यय की प्रारम्भ संधि २।१३।५०।४८।३० व्यय भाव २।२९।७।३९।० है यह सूर्य मिथुन का है और लग्न कर्क है अतः लग्न चक्र में लग्न से १२ वें भाव में है। पर चलित-चक्र में व्यय भाव की प्रारंभ संधि से अधिक एवं व्यय भाव से कम अर्थात् बीच में सूर्य है। 'भवतिचेदधिको यदि संधितस्तदनु चाग्रिमजं तनुते फलम्' के अनुसार यह

सूर्य व्यय भाव का फल करेगा। अतः 'भाव से ग्रह न्यून हो तो भाव की प्रारंभ सन्धि को ग्रह में से घटावे, के अनुसार

ग्रह (सूर्य) २।१९।३२।२३।० में से
व्यय भाव की प्रारम्भ सन्धि २।१३।५०।४८।३० घटाया
शेष ०। ५।४१।३४।३०

व्यय भाव २।२९। ७।३९। ०
प्रारम्भ सन्धि २।१३ ५०।४८।३०
शेष ०।१५।१६।५०।३०

इन दोनों शेषों को गुणा, भाग करने के लिये एक जातीय करना चाहिए। अतः ५ × ६० = ३०० + ४१ = ३४१ × ६० = २०४६० + ३४ = २०४९४ × ६० = १२२९६४० + ३० = १२२९६७० प्रतिविकलात्मक ग्रह, सन्ध्यन्तर (शेष) हुआ। तदनन्तर १५ × ६० = ९०० + १६ = ९१६ × ६० = ५४९६० + ५० = ५५०१० × ६० = ३३००६०० + ३० = ३३००६३० प्रतिविकलात्मक भाव, सन्ध्यन्तर (शेष) हुआ।

∴ ३३००६३० प्र० वि० में = २० विश्वा

∴ १ प्र० वि० में = $\frac{२०}{३३००६३०}$ विश्वा

∴ १२२९६७० प्र० वि० में = $\frac{१२२९६७० × २०}{३३००६३०}$ विश्वा

= १२२९६७० × २०

३३००६३०) २४५९३४०० ( ७ विश्वा
२३१०४४१०
१४८८९९० × ६०

३३००६३०) ८९३३९४०० (२७ प्रति विश्वा
६६ ०१२६०
२३३२६८००
२३१०४४१०
२२२३९०

= ७ विश्वा, २७... प्रतिविश्वा

स्पष्टीकरण—जब कि प्रारम्भ सन्धि से भावपर्यन्त ग्रह चलता है तब क्रमशः १ से २० विश्वातक फल देता है। और जब भाव से विराम सन्धि तक ग्रह चलता है तब २० से १ विश्वापर्यन्त फल देता है। तत्त्व यह कि प्रारम्भ सन्धि से विराम सन्धि तक भाव संज्ञा है। अतः प्रारम्भ सन्धि में चय फल अर्थात् भुक्त फल आयेगा, भाव से विराम सन्धि तक क्षयफल अर्थात भोग्यफल आयेगा। अतः =विश्वा२०–७।२७··· चयफल (भुक्तफल)=१२।३२ विश्वादि शेष भोग्य फल व्ययभावोत्थ फल सूर्य का होगा इसी प्रकार सभी ग्रहों का विचार किया जाता है।

## द्वादशभावस्थ सूर्य–फल

सवितरि तनुसंस्थे शैशवे व्याधियुक्तो,
नयनगदसु दुःखी नोचसेवानुरक्तः।
न भवति गृहमेधी दैवयुक्तो मनुष्यः,
भ्रमति विकलमूर्त्तिः पुत्रपौत्रैर्विहीनः॥

लग्न में सूर्य हो तो बाल्यावस्था में कष्ट, नेत्र कष्ट, नीच सेवा में तत्पर, घरू सुख कम, भाग्यवान्, सन्तति कष्ट तथा विकल रहता है।

धनगतदिननाथे पुत्रदारैर्विहीनः,
कृशतनुरतिदीनो रक्तनेत्रः कुकेशः।
भवति च धनयुक्तो लोहताम्रेण सत्यं,
न भवति गृहमेधी मानवो दुःखभागी॥

धन भाव में सूर्य हो तो सन्तान व स्त्री को कष्ट, दुर्बल शरीर, दरिद्र, लाल नेत्र, खराब केश, लोह या ताम्र के क्रयादि से लाभ होता है।

सहजभवनसंस्थे भास्करे भ्रातृनाशः,
प्रियजनहितकारी पुत्रदाराभियुक्तः।
भवति च धनयुक्तो धैर्ययुक्तः सहिष्णु-,
विपुलधनविहारी नागरीप्रीतिकारी॥

तृतीय भाव में सूर्य हो तो ज्येष्ठ भ्राता को कष्ट, मित्रों का हित-कारी, सन्तान एवं स्त्री का सुख, धनवान्, सहनशील, शौकीन होता है।

विविधजनविहारो बन्धुसंस्थो दिनेशो,
भवति च मृदुवक्ता गीतवाद्यानुरक्तः।
समरशिरसि युद्धे नास्ति भङ्गः कदाचित्,
प्रचुरधनकलत्रः पार्थिवानां प्रियश्च ॥

चतुर्थ भाव में सूर्य हो तो अनेक मित्र, मीठी वाणी, गान विद्या में आसक्त, युद्ध में विजयी, धनी, स्त्रियों तथा राजाओं से प्रतिष्ठा मिलती है।

तनयगतदिनेशो शैशवे दुःखभागी,
न भवति धनभागी यौवने व्याधियुक्तः।
जनयति सुतमेकं चान्यगेहश्च शूर-,
श्चपलमतिविलासी क्रूरकर्मा कुचेताः ॥

पंचम भाव में सूर्य हो तो सन्तान कष्ट, अल्प धन, युवावस्था में व्याधि युक्त, एक सन्तान का सुख, कुदृष्टि रखने वाला अन्य घर में वास, साहसी, चंचल बुद्धि वाला होता है।

अरिगृहगतभानौ योगशीलो मतिस्थो,
निजजनहितकारी ज्ञातिवर्गप्रमोदी।
कृशतनुगृहमेधी चारुमूर्तिविलासी,
भवति च रिपुजेता कर्मपूज्यो दृढाङ्गः।

षष्ठ भाव में सूर्य हो तो योगी, प्राणीमात्र का शुभ चिन्तक, जाति वर्ग को आनन्द देने वाला, दुर्बल स्त्री से युक्त, सुन्दर एवं ताकतवर शरीर, विलासी, शत्रुनाशक, सतकार्य करने वाला होता है।

युवतिभवनसंस्थे भास्करे स्त्रीविलासी,
न भवति सुखभागी चञ्चलः पापशीलः।
उदरसमशरीरो नातिदीर्घो न ह्रस्वः,
कपिलनयनरूपपिङ्गकेशः कुमूर्त्तिः।

सप्तम भाव में सूर्य हो तो स्त्री सुख से हीन, चंचल, दुष्टात्मा मध्यम शरीर, नेत्र तथा केश भूरे, चंचल, विलासी और कुरूप होता है।

निधनगतदिनेशो चञ्चलस्त्यागशीलः,
किल बुधगणसेवी सर्वदा रोगयुक्तः।
विकलबहुलभाषी भाग्यहीनो विशीलो,
रतिविहितकुचैलो नीचसेवा प्रवासी ॥

अष्टम भाव में सूर्य हो तो चंचल, निर्दयी, सज्जनों का सेवक सर्वदा रोग युक्त, वाचाल, भाग्यहीन, कमजोर, नीच सेवा करने वाला रति कारण अपवित्र या मलिनता, विदेश वासी तथा त्यागी होता है।

ग्रहगतदिननाथे सत्यवादी सुकेशः,
कुलजनहितकारी देवविप्रानुरक्तः।
प्रथमवयसि रोगी यौवने धैर्ययुक्तो,
बहुतरधनयुक्तो दीर्घजीवी सुमूर्त्तिः ॥

नवम भाव में सूर्य तो सत्यवक्ता, सुन्दर केश, कुल के व्यक्तियों का हितकारी, देव ब्राह्मणों का सेवक, चिरायु, स्वरूपवान्, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में धैर्य रखने वाला तथा अधिक धनी होता है।

दशमभवनसंस्थे तीव्रभानौ मनुष्यो,
गुणगणसुखभागी दानशीलोऽभिमानी।
मृदुलघुशुचियुक्तो नृत्यगीतानुरागो,
नरपतिरतिपूज्यः शेषकाले च रोगी ॥

दशमभाव में सूर्य हो तेजबुद्धि, अनेक गुणों से युक्त सुखी, दानी, शील युक्त, आत्म सम्मान चाहने वाला, मीठा स्वभाव, पवित्रता युक्त, गानप्रिय, राजकुल में पूज्य, वृद्धावस्था में रोगी होता है।

बहुतरधनभागी चायसंस्थे दिनेशे,
नरपतिगृहसेवी भोगहीनो गुणज्ञः।
कृशतनुधनयुक्तः कामिनीचित्तहारी,
भवति चपलमूर्तिर्जातिवर्गप्रमोदी ॥

लाभ भाव में सूर्य हो तो धनी, राजकुल में नौकरी करने वाला, कष्ट युक्त, गुणयुक्त, दुर्बल शरीर, स्त्री जनों का प्रेमी, चपल, जाति वर्ग को आनन्द देने वाला, अनेक प्रकार से धन का सुख होता है।

जड़मतिरतिकामी चान्ययोषिद्विलासी।
विहगगणविघाती दुष्टचेताः कुमूर्त्तिः।
नरपतिधनयुक्तो द्वादशस्थे दिनेशो,
कथकजनविरोधी जंघरोगी कृशाङ्गः॥

व्यय भाव में सूर्य हो तो मूर्खबुद्धि, कामी, पक्षिहंता, दुष्टचित्त, कुत्सित रूप वाला, पराई स्त्री से विलास करने वाला होता है।

## द्वादशभावस्थचन्द्र-फल

तनुगतकुमुदेशो वित्तपूर्णः सुखी स्यात्,
बहुतरधनभोगी वित्तयुक्तः सुदेहः।
भवति च यदि नीचश्चन्द्रमाः पापगो वा,
जड़मतिरतिदीनः स्यात्तदा वित्तहीनः॥

लग्नभाव में चन्द्र हो तो धनी, सुखी, सुन्दर तथा दृढ़शरीर, होता है, यदि चन्द्र नीच व पापग्रह के घर में व पापग्रह से युक्त हो तो मूर्ख बुद्धि, धनहीन तथा दरिद्र होता है।

धनगतहरिणाङ्कः त्यागशीलो मतिज्ञो,
निधिरिव धनपूर्णो चञ्चलात्मा सुदुष्टः।
जनयति बहुसौख्यं कीर्तिशाली सहिष्णु-,
र्मुखकमलविशाली चंद्रतुल्यस्वरूपः॥

धन भाव में चन्द्र हो तो त्यागी, बुद्धिमान, धनी, चंचल, सुखी कीर्तियुक्त, सहन शील, कोमल मुख, विशाल तथा सुन्दर शरीर होता है

शशिनि सहजसस्थे पापगेहे च नित्यं,
न भवति बहुभाषी भ्रातृहर्तारिमूर्तिः।
भवति च सुखभोगी सौम्यगे रात्रिनाथे,
सकलधनविधानं शास्त्रकाव्यप्रमोदी॥

तृतीय भाव में शुभग्रह के घर में चन्द्र हो तो सुखी, साहित्य प्रेमी, हर्ष युक्त, अनेक प्रकार से धनी होता है। यदि पापग्रह के घर में हो तो थोड़ा बोलने वाला, भाइयों की हानि, शत्रुमूर्ति तथा क्रोधी होता है।

बहुतरवसुपूर्णो रात्रिनाथे चतुर्थे,
प्रियजनहितकारी योषितां प्रीतिकारी।
सततमिह स रोगी मांसमत्स्यादिभोगी,
गजतुरगसमेतः क्रीड़ते हर्म्यपृष्ठे॥

चतुर्थ भाव में चन्द्र हो तो धनी, मित्रों का हितकारी, रोगयुक्त, स्त्रियों का प्रेमी, अखाद्य वस्तु खानेवाला, सवारी का सुख, गृहसुख होता है।

तनयगतशशाङ्के वित्तपूर्णः सुखी स्याद्,
बहुतरसुतयुक्तो वश्यनारीसमेतः।
यदि भवति शशाङ्के क्षीणपापारिगेहे,
युवतिसुखसमूहैः पुत्रपौत्रैर्विहीनः॥

पंचम भाव में चन्द्र हो तो धनी, सुखी, सन्तान अधिक, स्त्री से सुख होता है। यदि क्षीण व शत्रु व पापग्रह के घर में हो तो सन्तान कष्ट होता है।

रिपुगृहगशशाङ्के क्षीणता नाशकारी,
न भवति बहुभोगी व्याधिदुःखस्य दाता।
यदि गृहमथ तुङ्गः पूर्णदेहः शशाङ्को,
बहुतरसुखदाता स्यात्तदा मानवानाम्॥

षष्ठ भाव में चन्द्र क्षीण बली हो तो कष्ट, व्याधि, दुःख होता है। यदि स्वगृही या उच्च का या पूर्ण हो तो बहुत सुख होता है।

विमलवपुषि चन्द्रे सप्तमस्थे मनुष्यो,
रुचिरयुवतिनाथः काञ्चनाढ्यः सुदेही।
शशिनि कृशशरीरे पापगे पापदृष्टे,
न भवति सुखभागी रोगिपत्नीपतिःस्यात्॥

सप्तम भाव में चन्द्र हो तो निर्मल चित्त, सौम्य स्त्री का पति, सुवर्ण युक्त, सुन्दर शरीर होता है। यदि क्षीण अथवा पापग्रह के घर में या पाप ग्रह से युक्त हो तो कष्ट तथा रोगिणी स्त्री का पति होता है।

निधनभवनसंस्थे शीतरश्मौ नराणां,
निधनमचिरकाले पापगेहे ददाति।
निजभृगुगुरुगेही सौम्यगेही च पूर्णो,
जनयति वहुदुःखं श्वासकासादिरोगैः ॥

अष्टम भाव में पापग्रह के घर में चन्द्र हो तो शारीरिक कष्ट होता है, यदि २।३।४।६।७।९।१२ राशि में अथवा पूर्ण चन्द्र हो तो कास, श्वास से शारीरिक कष्ट तथा बहुत दुःख होता है।

नवमभवनसंस्थे शीतरश्मौ प्रपूर्णे,
बहुतरसुखभुक्त्या कामिनीप्रीतिकारी।
न भवति धनभागी क्षीणगे नीचगे वा,
विमलपथविरोधी निर्गुणो मूढचेताः ॥

नवम भाव में पूर्ण वली चन्द्र हो तो सुखी, स्त्री से प्रेम होता है, यदि नीच व क्षीण हो तो अधार्मिक, मूढचित्त, धन का कष्ट होता है।

वहुतरधनभागी कर्मसंस्थे हिमांशौ,
विविधधननिधानं पुत्रदारादिपूर्णः।
रिपुकुटिलगृहस्थे कासरोगः कृशाङ्गः,
पितृयुवतिधनाढ्यः कर्महीनो मनुष्यः ॥

दशमभाव में चन्द्र हो तो सुखी, धनी, स्त्री सन्तान का सुख होता है। यदि पापग्रह के घर में व शत्रु के घर में हो तो खाँसी रोग वाला, दुर्बल शरीर, माता के धन की प्राप्ति एवं कर्म हीन होता है।

बहुतरधनभोगी चायसंस्थे शशाङ्के,
प्रचुरसुखसमेतो दाराभृत्यादियुक्तः।
शशिनि कृशशरीरे नीचपापारिगेहे,
न भवति सुखभागी व्याधितो मूढ़चेताः ॥

लाभ भाव में चन्द्र हो तो धनी, नौकर और स्त्री का सुख होता है। यदि क्षीण हो अथवा नीच का हो तो व्याधि युक्त तथा मूढचित्त वाला होता है और सर्वदा असफलता एवं कष्ट होता है।

व्ययनिलयनिवेशो रात्रिनाथे कृशाङ्गः,
सततहिमसरोगी क्रोधनो निर्धनश्च।
निजबुधगुरुगेहे दान्तिकस्त्यागशीलः,
कृशतनुसुखभोगी नीचसंगी सदैव॥

व्ययभाव में चन्द्र हो तो दुर्बल शरीर, मलेरिया से कष्ट, क्रोधी, निर्धनी होता है। यदि ३।४।६।९।१२ राशि का चन्द्र हो तो जितेन्द्रिय, दयावान्, दुर्बल शरीर, नीच संगति करने वाला और पूर्ण सुखी होता है।

## द्वादशभावस्थभौम–फल

उदरदशनरोगी शैशवे लग्नभौमे,
पिशुनमतिकृशाङ्गः पापवित्कृष्णरूपः।
भवति चपल चित्तो नीचसेवी कुचैली,
सकलसुखविहीनः सर्वदा पापशीलः॥

लग्न में मंगल हो तो पेट और दाँतों में रोग, चुगलखोरी करने वाला, दुर्बल शरीर, कुकर्मी, सांवला वर्ण, चञ्चल स्वभाव, नीचों की सेवा में तत्पर तथा सब सुखों से रहित होता है।

धनगतपृथिवीजे धातुवादी प्रवासी,
ऋणधनकृतचित्तो द्यूतकर्ता सहिष्णुः।
कृषिकरणसमर्थो विक्रमे मग्नचित्तः
कृशतनुसुखभोगी मानवः सर्वदैव॥

धन भाव में भौम हो तो धातु का व्यापार करने वाला, परदेश में निवास करने वाला, धनी, जुआरी, सहनशील, खेती करने में शूरवीर, पतला शरीर, सदा झगड़ा करने में तत्पर सुख का भागी होता है।

सहजभवनसंस्थे भूमिजे भ्रातृहर्ता,
कृशतनुसुखभागी तुङ्गभौमो विलासी।
धनसुखनरहीनो नीचपापारिगेहे,
वसति सकलपूर्णो मन्दिरे कुत्सिते च ॥

भ्रातृ भाव में भौम हो तो भाई की हानि, दुर्बल देह, और सुखी होता है यदि उच्च का हो तो विलासी होता है। नीच वा पापग्रह वा शत्रु के स्थान में हो तो वह धन, सुख, से रहित होता है।

जड़मतिरतिदीनो बन्धुसंस्थे च भौमे,
न भवति कुलमार्यैं वन्धुहीनो न दुःखी।
भ्रमति सकलदेशे नीचसेवानुरक्तः,
परवशपरदारे लुब्धचित्तः सदैव ॥

चतुर्थ भाव में भौम हो वह जड़मति, दरिद्र, विदेशवासी, नीच की सेवा में तत्पर, पराये वश और परस्त्री में लोलुप, दुःखी रहता है।

तयनभवनसंस्थे भूमिपुत्रो मनुष्यो,
भवतितनयहीनः पापशीलोऽतिदुःखी।
यदि निजगृहतुङ्गे वर्तते भूमिपुत्रः,
कृशमलिनशरीरं पुत्रमेकं ददाति ॥

पञ्चम भाव में भौम हो तो वह मनुष्य पुत्र से रहित, पापी, दुःखी होता है। १।८।१० में हो तो दुर्बल, मलिन एक पुत्र होता है।

रिपुगृहगतभौमे संगरे मृत्युभागी,
सुतधनपरिपूर्णस्तुगंगे सौख्यभागी।
रिपुगणपरितुष्टे नीचगे क्षोणिपुत्रे,
भवति विकलमूर्त्तिः कुत्सितः क्रूरकर्मा ॥

शत्रु भाव में भौम हो तो वह लड़ाई में मरने वाला होता है, उच्च का हो तो धनी और सुखी होता है। शत्रु आदि खराब स्थान में हो तो अङ्गहीन, क्रूर और पाप कर्म करने वाला होता है।

मुनिगृहभौमे नीचसंस्थेऽरिगेहे,
युवतिमरणदुःखं जायते मानवानाम् ।
मकरनिजगृहस्थे नान्यपत्नीश्च धत्ते,
चपलमतिविशालां दुष्टचित्तां विरूपाम् ।।

सप्तमभाव में भौम नीच या शत्रुगृहस्थ हो तो स्त्री को कष्ट हो, मकर, मेष वृश्चिक में हो तो पूर्व स्त्री चञ्चल प्रकृति वाली, दुष्टचित्त और कुत्सित रूप वाली होती है ।

प्रलयभवनसंस्थे मङ्गले क्षीणनीचे,
व्रजति निधनभावं नीरमध्ये मनुष्यः ।
धनकिरणि चरार्कः सर्वदा चैव भोगी,
करपद्गसुनीलो मृत्युलोके प्रयाति ।।

नीचस्थ मङ्गल अष्टम भाव में हो तो वह मनुष्य जल में मरता है । यदि धन, मीन का सूर्य हो तो वह नित्य सुखी होता है ।

नवमभवनसंस्थे क्षोणिपुत्रेऽतिरोगी,
नयनकरशरीरः पिङ्गलः सर्वदैव ।
बहुजनपरिपूर्णो भाग्यहीनः कुचैलो,
विकलजनसुवेशो शीलविद्यानुरक्तः ।।

नवम भाव में मङ्गल हो तो अधिक रोगी, पीला शरीर, अधिक जनों से युक्त होने पर भी भाग्य रहित, शिल्प विद्या में चतुर होता है ।

दशमगतमहोजे दान्तिकः कोषहीनो,
निजकुलजयकारी कामिनीचित्तहारी ।
जठरसमशरीरो भूमिजीवोपकारी,
द्विजगुरुजनभक्तो नातिनीचो न ह्रस्वः ।।

दशम भाव में मङ्गल हो तो जितेंद्रिय, अपने कुल को जीतने वाला, कामिनियों का चित्त चुराने वाला, भूमि से जीविका, धन हीन, ब्राह्मण, गुरुओं का भक्त, मध्यम और वृद्धवत् शरीर होता है ।

सुरजनहितकारी चायसंस्थे च भौमे,
नृप इव गृहमेधी पीडितः कोपपूर्णः।
भवति च यदि तुंगे लोकसौभाग्ययुक्तो,
धनकिरणनियुक्तः पुण्यकामार्थलोभी ॥

लाभ भाव में भौम हो तो देवताओं का भक्त, राजा के समान स्त्री रखने वाला, शारीरिक कष्ट, क्रोधी होता है उच्च का हो तो लौकिक सौभाग्य, धनी, तेजस्वी पुण्यात्मा और धन लोभी होता है।

परधनहरणेच्छुः सर्वदा चञ्चलाक्ष-,
श्चपलमतिविहारी हास्ययुक्तः प्रचण्डः।
भवति च सुखभागी द्वादशस्थे च भौमे,
परयुवतिविलासी साक्षिकः कर्मपूरः।

द्वादश भाव में भौम हो तो पराये धन लेने में इच्छुक, चञ्चल बुद्धि, हास्य युक्त, प्रचण्ड (क्रूर), सुख का भागी, पर स्त्री में विलासी होता हैं।

## द्वादश भावस्थ बुध–फल

तनुगतशशिपुत्रे कान्तिमाँश्चातिहृष्टो,
विमलमतिविशालः पण्डितस्त्यागशीलः।
मितमृदुशुचिभोगो सत्यवादी विशाली,
बहुतरसुखभागी सर्वकालप्रवासी ॥

तनु भाव में बुध हो तो सुन्दर रूप, निर्मल बुद्धि द्वारा प्रसिद्ध, विद्वान्, पवित्र चीजों का भोगी, सत्यवक्ता, विशाल शरीर, विदेशवासी होता है।

भवति च पितृभक्तः सुस्थितःपापभीरु–,
मृदुतनुखररोमा दीर्घकेशोऽतिगौरः।
धनगतशशिसूनौ सत्यवादी विहारी,
बहुतरवसुभागी सर्वकालप्रवासी ।

धन भाव में बुध हो तो वह पितृ भक्त, धार्मिक, कोमल शरीर, दीर्घ केश, सत्यवक्ता, सुखी, परदेश में रहने वाला, बहुत धनी होता है।

साहसी निजजनैः परियुक्त,
श्चित्तशुद्धिरहितो हतसौख्यः ।
मानवः कुशलतेप्सितकर्ता,
शीतभानुतनयेऽनुजसंस्थे ॥

तृतीय भाव में बुध हो तो साहसी, अपने परिवार के सहित, अपवित्र, दुःखी, कल्याण की इच्छा से कर्म करने वाला होता है ।

बहुतरधनपूर्णो भ्रातृहर्ता च पापे,
बहुतरबहुपत्नी पूर्णगेहे स्वतुङ्गे ।
तरलमतिरलज्जः क्षीणजङ्घः कृशाङ्गः-,
शिशुवयसि च रोगी बन्धुसंस्थे कुमारे ।

चतुर्थ भाव में बुध पापाक्रान्त हो तो अधिक धन का सुख, भाई की हानि करने वाला होता है यदि अच्छे घर में व उच्च का हो तो बहुत स्त्री वाला चञ्चल, कृश शरीर, निर्लज्ज, बाल्यावस्था में रोग होता हैं ।

तयनमन्दिरगे शशिनन्दने,
सुतकलत्रयुतः सुखभाजनम् ।
विकचपङ्कजचारु मुखः सुखो,
सुरगुरुद्विजभक्तियुतः शुचिः ॥

पञ्चम भाव में बुध हो तो सन्तान और स्त्री से सुखी, सुन्दर व कोमल मुखवाला, शुद्ध, देवता गुरु और ब्राह्मण में भक्ति करने वाला होता है ।

अरिनिकेतनवर्त्तिशशाङ्कजे,
रिपुकुलाक्षयदो यदि वक्रगः ।
यदि च पूण्यगृहे शुभवीक्षिते,
रिपुकुलं विनिहन्ति शुभप्रदः ॥

यदि वक्री होकर बुध षष्ठ भाव में हो तो शत्रु से भय होता है यदि शुभ ग्रह के घर में अथवा शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो शत्रु नाशक, तथा सुखी होता है।

तुरगभावगते हरिणाङ्कजे,
भवति चञ्चलमध्यनिरीक्षितः।
विपुलवंशभवः प्रमदापतिः,
स च भवेच्छुभगे शशिवंशजे॥

सप्तम भाव में बुध हो तो चञ्चल एवं मध्यम दृष्टि होती है यदि शुभग्रह के घर में बुध हो तो किसी उच्च कुल की कन्या का स्वामी होता है।

निधनवेश्मनि सत्ययुतः शुभो,
निधनदाऽतिथिमण्डन एव च।
यदि च पापयुते रिपुगेहगे,
मदनकाम्यजवेन पतत्यधः॥

अष्टम भाव में बुध हो तो सत्य वक्ता, सुन्दर मूर्ति, अतिथि, अभ्यागतों की सेवा करने वाला होता है। यदि पाप ग्रह से युक्त या शत्रु के घर में हो तो कुकर्मी होने के कारण लोक में अत्यन्त घृणित समझा जाता है।

नवमसौम्यगृहे शशिनन्दने,
धनकलत्रसुतेन समन्वितः।
भवति पापयुते विपथस्थितः,
श्रुतिविमन्दकरः शशिजोद्यमी॥

नवम भाव में बुध हो तो स्त्री पुत्र एवं धन से परिपूर्ण रहता है, पापग्रहों के सहित हो तो कुमार्गगामी, वेदनिन्दक तथा उद्यमी होता है।

गुरुजनेन हिते निरतो जनो,
वहुधनो दशमे शशिनन्दने।
निजभुजार्जितवित्ततुरङ्गमो,
वहुधनैर्नियतो मितभाषणः॥

दशम भाव में बुध हो तो गुरुजनों के साथ भलाई करता है, धन का सुख, अपने बाहुबल से धनी, अल्प बोलने वाला होता है।

श्रुतिमतिर्निजवंशहितः कृशो,
वहुधनप्रमदाजनवल्लभः।
रुचिरनीलवपुर्गुणलोचनो,
भवति चायगते शशिजे नरः॥

एकादश भाव में बुध हो तो वेद के अनुसार चलने वाला, अपने कुटुम्ब का हित करने वाला, दुर्बल, धन एवं स्त्रियों का प्रेमी होता है।

भवति च व्ययगे शशिनन्दने,
विकलमूर्तिधरो धनवर्जितः।
परकलत्रधने धनचित्तवान्,
व्यसनदूररतः कृतकः सदा।

बारहवें भाव में बुध हो तो विकलाङ्ग, व्यसनों से हीन, निर्धन, पराये धन एवं स्त्रियों में चित्त रखने वाला तथा कृतज्ञ होता है।

## द्वादशभावस्थ गुरु–फल

विविधवस्त्रविपूर्णकलेवरः,
कनकरत्नधनः प्रियदर्शनः।
नृपतिवंशजनस्य च वल्लभो,
भवति देवगुरौ तनुगे नरः।

लग्न में गुरु हो तो वस्त्र का सुख सुवर्ण मोती आदि बहुमूल्य धन वाला, सुन्दर शरीर एवं राजवंशीय लोगों का प्रेमी होता है।

सुरगुरौ धनमन्दिरसंश्रिते,
प्रमुदितो रुचिरप्रमदापतिः।
भवति मानधनो बहु मौक्तिकै-,
र्गतवसुर्भवेता प्रसवान्हिके।

धन भाव में गुरु हो तो अहर्निश हर्षित, सुन्दर स्त्री का पति, अभिमानी, बाल्यावस्था में मृतप्राय होकर आगे सुखी होता है।

सहजमन्दिरगे च बृहस्पतौ,
भवति बन्धुगतार्थसमन्वितः।
कृपणतामपि गच्छति कुत्सिते,
धनयुतोऽपि सदा धनहानिमान्।

तृतीय भाव में गुरु हो तो उसके भाइयों के पास धन रहे खराब कामों में कृपणता, अच्छे कामों में इतना व्यय करता है कि पूर्ण धनी होते हुये भी सर्वदा अवसर पर साम्पत्तिक कष्ट भोगता है।

सन्माननानाधनवाहनाद्यैः,
सञ्जातहर्षः पुरुषः सदैव।
नृपानुकम्पा समुपात्तसम्प-,
द्दम्भोलिभृन्मन्त्रिणि भूतलस्थे॥

चतुर्थ भाव में गुरु हो तो सन्मान अनेक वाहनों (हाथी, घोड़े, मोटर, आदि) का सुख तथा राजा की कृपा से अधिक सम्पत्ति पाता है।

सुहृदता च सुहृज्जनवन्दितः,
सुरगुरौ सुतगेहगते नरः।
विपुलशास्त्रमतिः सुखभाजनं,
भवति सर्वजनप्रियदर्शनः॥

पञ्चम भाव में गुरु हो तो परम पवित्र हृदय, स्वयं मित्रों से पूजित, बुद्धिमान्, शास्त्रों का ज्ञाता, सुखी तथा लोक में दर्शनीय होता है।

करिहयैश्च कृशाङ्गतनुर्भवे-,
जयति शत्रुकुलं रिपुगे गुरौ।
रिपुगृहे यदि वक्रगते गुरौ,
रिपुकुलाद्भयमातनुते विभुः॥

शत्रुभाव में गुरु हो तो दुर्बल शरीर, वाहनों के द्वारा विजयी हो, यदि गुरु वक्री हो तो राजा होते हुए भी शत्रुकुल से भय पाता है।

युवति मन्दिरगे सुरयाजके,
नयति भूपतितुल्यसुखं जनः।
अमृतराशिसमानवचाः सुधी-,
र्भवति चारुवपुः प्रियदर्शनः॥

सप्तम भाव में गुरु हो तो राजा के समान सुखी, अमृत समान वाणी, सभी को प्रसन्न करने वाला, पण्डित, कान्तियुक्त, एवं उसकी सुन्दरता के कारण उसके दर्शन के लिये सभी लालायित रहते हैं।

विमलतीर्थकरश्च वृहस्पतौ,
निधनगे नृमनः स्थिरता यदा।
धनकलत्रविहीनकृशः सदा,
भवति योगपथे निरतः परम्॥

अष्टम भाव में गुरु हो तो निर्मल तीर्थ (प्रयाग, काशी आदि) में जाने वाला हो, मन में स्थिरता न हो, धन और स्त्री से असंतोष, दुर्बल शरीर तथा अहर्निश योगमार्ग की भावना में तत्पर रहता है।

सुरगुरौ नवमे मनुजोत्तमो,
भवति भूपतितुल्यधनो शुचिः।
कृपणबुद्धिरतः कृपणः सुखी,
बहुधनप्रमदाजनवल्लभः॥

नवम भाव में गुरु हो तो मनुष्यों में उत्तम, राजा के समान धनी, पवित्र, कंजूस, सुखी, धनी तथा स्त्रियों का प्रेमी होता है।

दशममन्दिरगे च बृहस्पतौ,
तुरगरत्नविभूषितमन्दिरः।
भवति नीतिगुणैर्बुधसंयुतः,
परवराङ्गणवर्जितधार्मिकः॥

दशम भावमें गुरु हो तो घोड़ें और रत्नों से सुशोभित घर से युक्त नीतियुक्त, सज्जनों की संगति, पर स्त्रियों से वर्जित और धार्मिक होता है।

व्रजति भूमिपतेः समतां धनै-,
र्निजकुलस्य विकारकरः सदा।
सकलधर्मरतोऽर्थसमन्वितो,
भवति चायगते सुरराजके॥

लाभ भाव में गुरु हो तो राजा के समान धनी, कुटुम्बीय जनों से शत्रुता, धर्म मार्ग में तत्पर, तथा धन का सुख होता है।

शिशुदशाभवने हृदि रोगवा-,
नुचितदानपराङ्मुख एव च।
कुलधनेन सदा कुलदांभिको,
भवति पापगृहे च बृहस्पतौ॥

बारहवें भाव में गुरु हो तो हृदय में रोग, उचित दान करने में पराङ्मुख होता है। यदि पापगृही गुरु हो तो कुल के धन से पाखंड करने वाला होता है।

## द्वादशभावस्थ शुक्र–फल

उरसिगे तनुगे भृगुनन्दने,
भवति कार्यरतः वरपंडितः।
विमलशल्यगृही सदने रतो,
भवति कौतुकहा विधिचेष्टितः॥

लग्न में शुक्र हो तो मन ही मन कार्य में रत रहने वाला, बड़ा पंडित, विमल शल्यगृही, घर में निवास करने वाला कौतुक को न माननेवाला और ब्रम्हा के समान चेष्टा वाला होता है।

परधनेन धनी धनगे भृगौ,
भवति योषिति।चित्तपरो नरः।
रजतसीसधनी गुणशैशवः,
कृशतनुः सुवचा बहुबालकः॥

द्वितीय भाव में शुक्र हो तो पराये धन से धनी, स्त्रियों के बन में तत्पर, चांदी सीसा के व्यापार से धनी, गुणी, दुर्बल शरीर, बहुत सन्तान तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है।

सहजमन्दिरवर्तिनि भार्गवे,
प्रचुरमोहयुतो भगिनीसुतः।
भवति लोचनरोगसमन्वितो,
धनयुतः प्रियवाक्यसदंबरः॥

तीसरे भाव में शुक्र हो तो वहिन के पुत्र पर अधिक मोह करे, नेत्र रोग, धनवान्, मधुर वाणी और सुन्दर वस्त्र धारण करता है।

भवति वंधुगते भृगुजे नरो,
वहुकलत्रसुतेन समावृतः।
सुरमते सुखमध्यवरे गृहे,
वसनपानविलाससमावृतः॥

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो स्त्री और पुत्र का सुख, उत्तम घर में निवास करने वाला और भोजन तथा वस्त्र के विलास से युक्त होता है।

तनयमन्दिरगे भृगुनन्दने,
भृगुसुतो दुहितावरपूजितः।
बहुधनो गुणवान्वरनायको,
भवति चापि विलासवतीप्रियः॥

पञ्चम भाव में शुक्र हो तो जामात्र पर प्रेम, कन्या अधिक उत्पन्न हों, बड़ा धनी, गुणी नायक, विलासवती स्त्री का पति होता है।

भवति वै कुशलांद्भवपण्डितो,
रिपुगृहे भृगुजेऽस्तगते नरः ॥
जयति वैरिवलं निजतुंगगे,
भृगुसुते सुखदे किल षष्ठगे ॥

अस्त होकर छठे भाव में शुक्र हो तो सामर्थ्य युक्त और पण्डित होता है उच्च का हो तो शत्रुओं को जीतने वाला तथा प्राणियों को सुख देने वाला होता है।

युवति मन्दिरगे वसते नरो,
वहुसुतेन धनेन समन्वितः।
विमलवंशभवः प्रमदापतिः,
भवति चारुवपुर्मुदितः सुखी ॥

सप्तम भाव में शुक्र हो तो वहुत धन और पुत्र से युक्त होता है, उत्तम वंश में उत्पन्न, स्त्रियों का स्वामी, सुन्दर शरीर, और सुखी होता है।

निधनसद्मगते भृगुजे जनो,
विमलधर्मरतो नृपसेवकः।
भवति मांसप्रियः पृथुलोचनो,
निधनमेति चतुर्थवयेऽपि ॥

अष्टम भाव में शुक्र हो तो धर्म में तत्पर, राजा का सेवक, मांस खाने वाला, बड़े २ नेत्र तथा वृद्धावस्था में मरण होता है।

विमलतीर्थपरोऽक्षतनुः सुखी,
सुरवरद्विजवर्णरतः शुचिः।
निजभुजार्जितभाग्यमहोत्सवो,
भवति धर्मगते भृगुजे नरः ॥

नवम भाव में शुक्र हो तो उत्तम तीर्थों की यात्रा, निर्मल शरीर, सुखी, देवता और ब्राह्मणों के सत्कार में तत्पर, अपनी बाहुओं से भाग्योन्नति करने वाला तथा बड़ा उत्साही होता है।

दशममंदिरगे भृगुवंशजे,
बधिरबन्धुयुतः स च भोगवान्।
वनगतोऽपि च राज्यफलं लभे-,
त्समरसुन्दरवेषसमन्वितः ॥

दशम भाव में शुक्र हो तो उसका भाई बधिर, यदि वन में चला जाय तो भी राजा के समान सुखी, समर में सुन्दर वेष वाला होता है।

लभनभावगते भृगुनन्दने,
वरगुणावहितोऽप्यनलव्रतः।
मदनतुल्यवपुः सुखभाजने,
भवति हास्यरतिः प्रियदर्शनः॥

लाभ भाव में शुक्र हो तो श्रेष्ठ गुणों से युक्त, अग्निहोत्रादि यज्ञ करने वाला, सुन्दर शरीर, सुखी, हास्य करने वाला और दर्शनीय होता है।

निजमिते व्ययवर्तिनि भार्गवे,
भवति रोगयुतः प्रथमे नरः।
तदनुदंभपरायणचेतनः,
कृशबलो मलिनः सहितः सदा॥

बारहवें भाव में शुक्र हो तो बाल्यावस्था में रोगी, कपट करने में तत्पर, दुर्बल, मलिन रहने वाला तथा पाखण्डी होता है।

## द्वादशभावस्थशनि-फल

सततमल्पगतिर्मदपीडित-,
स्तपनजे तनुगे खलु चाधमः।

भवति हीनकचः कृतविग्रहो,
निजसुहृद्रिपुसद्मनि मानवः ।

लग्न में शनि हो तो अल्पगति, अहंकारी, छोटे २ केश और दुर्बल होता है यदि शनैश्चर शत्रु के घर में हो तो अपने मित्रों से झगड़ा करने वाला होता है ।

धननिकेतनवर्तिनि भानुजे,
भवति वाक्यसहः सधनान्वितः ।
चपललोचनसंचयने रतो,
भवति चौरपरो नियतं सदा ॥

धन भाव में शनि हो तो सत्य बोलने वाला, धनी, चंचलनेत्र, धन संग्रह में तत्पर और सदा चोरी करनेवाला तथा क्षमाशील होता है ।

सहजमन्दिरगे तपनात्मजे,
भवति सर्वसहोदरनाशकः ।
तदनुकुलयनृपेण समो नरः,
स्वसुतपुत्रकलत्रसमन्वितः ॥

तृतीय भाव में शनि हो तो छोटे भाईयों की हानि, अपने कुल में राजा के समान और पुत्र कलत्र आदि से सुखी होता है ।

बन्धुस्थितो भानुसुतो नराणां,
करोति बंधोर्निधनंच रोगी ।
स्त्रीपुत्रभृत्येन विनाकृतश्च,
ग्रामान्तरे चासुखदः सवक्री ॥

चतुर्थ भाव में शनि हो तो बन्धुओं का विनाश, रोगी होता है यदि वक्री हो तो स्त्री, पुत्र, नौकर से कष्ट, परदेश में दुःखी होता है ।

शनैश्चरे पञ्चमशत्रुगेहे,
पुत्रार्थहीनो भवतीह दुःखम् ।

तुंगे निजे मित्रगृहे च पंगौ,
पुत्रैकभागी भवतीति कश्चित् ॥

पञ्चम भाव में शत्रु राशि का शनि हो तो पुत्र और धन से हीन तथा दुःखी होता है, यदि उच्च का या अपने घर का या मित्र के घर का हो तो एक पुत्र का सुख होता है।

नीचो रिपोर्नीचकुलक्षयं च,
षष्ठं शनिर्गच्छति मानवानाम् ।
अन्यत्र शत्रून्विनिहंति तुंगी,
पूर्णार्थकामाज्जनतां ददाति ॥

हीनवली अथवा शत्रु अथवा नीचराशि का छठे भाव में शनि हो तो कुलनाशक होता है, अन्य राशि में वा उच्चका हो तो शत्रुनाशक, कार्य में सफलता, धन की प्राप्ति तथा सद्गुणी होता है।

विश्रामभूतां विनिहन्ति जायां,
सूर्यात्मजः सप्तमगश्च रोगान् ।
धत्ते पुनर्दंभधराङ्गहीनं,
मित्रस्य वंशे दुहितासुहृच्च ॥

सप्तम भाव में शनि हो तो स्त्री को कष्ट, रोगी, दंभी, अंगहीन तथा मित्र के वंश की कन्या से मित्रता करने वाला होता है।

शनैश्चरे चाष्टमगे मनुष्यो,
देशान्तरे तिष्ठति दुःखभागी ।
चौर्यापराधेन च नीचहस्ते,
पञ्चत्वमाप्नोत्यथ नेत्ररोगी ॥

अष्टम भाव में शनि हो तो देशान्तर में निवास दुःखी, नेत्र कष्ट चोरी के अपराध में या नीच के हाथ से मृत्यु होती है।

धर्मस्य पंगुर्वहुदंभकारी,
धर्मार्थहीनः पितृवञ्चकश्च ।
मदानुरक्तो निधनी च रोगी,
पापिष्ठभार्या परहीनवीर्यः ।

नवम भाव में शनि हो तो पाखंडी, धर्मार्थ से रहित, पिता से छल करने वाला, मानी, धनहीन, रोगी, दुष्ट स्त्री तथा कमजोर होता है।

शनैश्चरे कर्मगृहे स्थितेऽपि,
महाधनी नृत्यजनानुरक्तः ।
प्राप्तप्रवासे नृपसद्मवासी,
न शत्रुवर्गाद्भयमेति मानी ।

दशम भाव में शनि हो तो धनवान्, नर्तनप्रिय, परदेश में लाभ, राज मन्दिर में निवास, शत्रु वर्ग से निर्भय और अभिमानी होता है।

सूर्यात्मजे चायगते मनुष्यो,
धनी विमृश्यो वहुभोग्यभागी ।
शितानुरागी मुदितः सुशीलः,
स वालभावे भवतीति रोगी ।

लाभ भाव में शनि हो तो धनवान्, विचारवान्, सुखी, उज्वल वस्तु का प्रेमी, प्रतापी, शीलवान् और वाल्यावस्था में रोगी होता है।

व्यये शनौ पञ्चगणाधिनाथो,
गदान्वितो हीनवपुः सुदुःखी ।
जङ्घाव्रणी क्रूरमतिः कृशाङ्गो
वधे रतः पक्षिगणस्य नित्यम् ।

बारहवें भाव में शनि हो तो पञ्चायत में प्रधान, रोगी, नाटा शरीर, जङ्घा में फोड़ा से कष्ट, तथा प्राणियों को कष्ट देने वाला होता है

## द्वादशभावस्थराहु-फल

रोगी सदा देवरिपौ तनुस्थे,
कुले च धारी बहुजल्पशीलः ।
रक्तेक्षणः पापरतः कुकर्मा,
रतः सदा साहसकर्मदक्षः ॥

लग्न में राहु हो तो कलह करने वाला, रक्त वर्ण नेत्र, रोगी, बहुत बोलने वाला, कुकर्म करने वाला तथा हिम्मती होता है ।

राहौ धनस्थे कृतचौरवृत्तिः,
सदा विलिप्तो बहुदुःखभागी ।
मत्स्येन मांसेन सदा धनी च,
सदा वसेन्नीचगृहे मनुष्यः ॥

धन भाव में राहु हो तो चोरी करने वाला, दुःखी, मांसखाने वाला और नीच के घर में वास करने वाला तथा धनी होता है ।

भ्रातुर्विनाशं प्रदधाति राहु,-
स्तृतीयगेहे मनुजस्य देही ।
सौख्यं धनं पुत्रकलत्रमित्रं,
ददाति तुंगी गजवाजिभृत्यान् ॥

तृतीय भाव में राहु हो तो भाइयों का नाश करता है यदि उच्च का हो तो धन, पुत्र, स्त्री, मित्र, नौकर तथा सवारी का सुख होता है ।

राहौ चतुर्थे धनवंधुहीनो,
ग्रामैकदेशे वसति प्रकृष्टः ।
नीचानुरक्तः पिशुनश्च पापी,
पुत्र्यैकभागी कृशयोषिदासाम् ॥

चतुर्थ भाव में राहु हो तो किसी सभा का नायक, नीच संगति एक कन्या का सुख, कुकर्मी तथा दुर्बल स्त्री का सुख होता है ।

राहुः सुतस्थः शशिनानुगो हि,
पुत्रस्य हर्ता कुपितः सदैव।
गेहांतरे सोपि सुतैकमात्रं,
दत्ते प्रमाणं मलिनं कुचैलम् ॥

पंचम में राहु चन्द्र से अनुगामी हो तो पुत्र कष्ट होता है, यदि अन्य घर में हो तो मलिन एक पुत्र का सुख देता है।

षष्ठे स्थितः शत्रुविनाशकारी,
ददाति पुत्रं च धनानि भोगान्।
स्वर्भानुरुच्चैरखिलाननर्था-,
न्हंत्यन्ययोषिद्गमनं करोति ॥

षष्ठ भाव में राहु हो तो शत्रुओं का नाश, पुत्र सुख, धन का सुख होता है उच्च का हो तो परस्त्रीगामी तथा अनर्थों का नाशक होता है।

जायास्थराहुर्धनहानिजायां,
ददाति नार्यो विविधांश्च भोगान्।
पापानुरक्तां कुटिलां कुशीलां,
ददाति शेषैर्बहुभिर्युतश्च ॥

सप्तम भाव में राहु हो तो धन का कष्ट, पाप कार्य में तत्पर, कुटनी स्त्रियों के साथ अपप्रवृत्ति करने वाला तथा सुख देने वाला होता है।

राहुः सदा चाष्टममंदिरस्थो,
रोगान्वितं पापरतं प्रगल्भम्।
चौरं कृशं कापुरुषं धनाढ्यं,
मायामतीतं पुरुषं करोति ॥

अष्टम भाव में राहु हो तो सर्वदा रोगी, पापी, आत्मा प्रगल्भ (ढीठ), चोर, दुर्बल शरीर, कायर प्रकृति तथा धन से सुखी होता है।

धर्मस्थिते चंद्ररिपौ मनुष्य-,
श्चाण्डालकर्मा पिशुनः कुचेलः ।
ज्ञातिप्रमोदे निरतश्च दीनः,
शत्रोःकुलाद्भीतिमुपैति नित्यम् ॥

नवम भाव में राहु हो तो चाण्डाल कर्म करने वाला, चुगलखोर, जाति वर्ग के आनन्द में तत्पर दरिद्र तथा शत्रुओं से भय होता है।

कामातुरःकर्मगते च राहुः,
परार्थलोभी मुखरश्च दीनः ।
म्लानो विरक्तः सुखवर्जितश्च,
विहारशीलश्चपलोऽतिदुष्टः ॥

दशम भाव में राहु हो तो कामी, दूसरे के धन का लोभी, वाचाल, दरिद्र, यात्रा अधिक करने वाला, चञ्चल तथा दुष्ट होता है।

आयस्थिते सोमरिपौ मनुष्या,
दांतो भवेन्नीलवपुःसुमूर्तिः ।
वाचाल्पयुक्तो परदेशवासी,
शास्त्रज्ञवेत्ता चपलो निलज्जः ।

लाभ भाव में राहु हो तो सुन्दर शरीर, अल्प वोलने वाला, सुन्दर शरीर, परदेश में निवास शास्त्रज्ञ चपल तथा निर्लज्ज होता है।

व्यये स्थिते सोमरिपौ नराणां,
धर्मार्थहीनो वहुदुःखतप्तः ।
कांताविमुक्तश्च विदेशवासी,
सुखैश्च हीनःकुनखी कुवेषः ॥

व्यय भाव में राहु हो तो अधर्मी, कष्ट पाने वाला, स्त्री से वियोग, विदेश में निवास, कुनखी तथा कुवेश वाला होता है।

## द्वादशभावस्थकेतु—फल

तनुस्थः शिखी बांधवक्लेशकर्ता
तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् ।

कलत्रादिचिंता सदोद्वेगता च,
शरीरे व्यथानेकधा मारुती स्यात् ॥

लग्न में केतु हो तो भाईयों से कष्ट दुष्टों से भय पाने वाला, सदा उद्वेगयुक्त, स्त्री और पुत्र की चिन्ता वात व्याधि से शरीरिक कष्ट होता है।

धने केतुरव्यग्रता क्किनरेशा-,
द्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च ।
कुटुंबाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा,
भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥

धन भाव में केतु हो तो राजा से धन व अन्न की हानि, मुखरोग से पीड़ित कुटुम्बीय जनों से विरोध तथा कटु भाषी होता है। यदि अपने तथा शुभग्रह के घर में हो तो अत्यन्त सुखी होता है।

शिखीविक्रमे शत्रुनाशं विवादं,
धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ।
सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीड़ा,
भयोद्वेगचिंताकुलत्वं विधत्ते ॥

तृतीय भाव में केतु हो तो शत्रुओं की हानि विवाद हो, बन्धुओं को कष्ट, हाथ में पीड़ा, भय, चिन्ता युक्त, चंचल तथा धन का सुख तथा तेजस्वी होता है।

चतुर्थेन मातुः सुखं नो कदाचि-,
त्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ।
शिखी बंधुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे,
चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥

चतुर्थ भाव में केतु हो तो, माता को कष्ट, बन्धु बान्धवों के कारण पिता के धन की हानि, प्रवासी, चिंता तथा क्लेश होता है। यदि उच्च का हो तो बंधुवर्ग से सुखी, घर में अधिक न रहे व्यग्रता रहती है।

यदा पंचमे राहुपुच्छं प्रयाति,
तदा सोदरे घातघातादिकष्टम् ।
स्वबुद्धिव्यथा संततः स्वल्पपुत्रः,
सदासौ भवेद्वीर्य्ययुक्तो नरोऽपि ॥

पंचम भाव में केतु हो तो शस्त्रघात, वात व्याधि से शरीर कष्ट अपनी ही बुद्धि की भूल से पछताना पड़े, अल्प संतान, बलवान् होता है ।

तमः षष्ठभागे गते षष्ठभावे,
भवेन्मातुलान्मानभंगो रिपूणाम् ।
विनाशश्चतुष्पात्सुखं तुच्छचित्तं,
शरीरे सदानामयं व्याधिनाशः ॥

षष्ठ भाव में केतु हो तो मामा से शत्रुओं का मान भंग पशुओं से सुखी, तुच्छ मन, आरोग्य शरीर तथा व्याधियों का नाश होता है ।

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिंता,
निवृत्तः स्वनाशोऽथवा वारिभीतिः ।
भवेत्कीटगः सर्वदा लाभकारी,
कलत्रादिपीडा व्ययो व्यग्रता चेत् ॥

सप्तम भाव में केतु हो तो यात्रा चिंता, यात्रा से लौटने पर शारीरिक कष्ट अथवा जल से भय, खर्च अधिक, व्यग्रचित्त, क्रोधी होता है । यदि वृश्चिक का हो तो सर्वदा लाभ युक्त होता है ।

गुदं पीड्यतेऽर्शादिरोगैरवश्यं,
भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः ।
भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः,
सदा कीटकन्याजगो युग्मकेतुः ॥

अष्टम भाव में केतु हो तो बवासीर, सवारी से कष्ट, धन हानि होती है । यदि मिथुन, कन्या, वृश्चिक राशि में हो तो लाभ होता है ।

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः,
सुतार्थी भवेन्म्लेक्षतो भाग्यवृद्धिः ।
सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते,
तपो दानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥

नवम भाव में केतु हो तो क्लेशों की हानि, पुत्र की इच्छा, नीच-द्वारा भाग्यवृद्धि, भ्रातृकष्ट, बाहु में पीड़ा, धर्म कार्य में अपमान होता है ।

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतु-,
स्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति ।
तदा वाहने पीडितं जातजन्म,
वृषाजालिकन्यासु चेच्छत्रुनाशम् ॥

दशम भाव में केतु हो तो पिता का अल्प सुख, भाग्य हीन, सवारी कष्ट तथा दुःखी होता है । यदि १।२।६।८ राशि में केतु हो तो शत्रुओं का नाशक होता है ।

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः,
सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य ।
दरे पीड्यते संततिर्दुर्भगा च,
शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥

लाभ भाव में केतु हो तो भाग्यवान्, विद्वान्, सन्तान भाग्यहीन हों, स्वरूपवान्, सुन्दर वस्त्रधारी, तेजस्वी तथा लाभ होता है ।

शिखी रिष्फगो वस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे,
रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म ।
सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं त-,
द्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति ॥

व्यय भाव में केतु हो तो नेत्र कष्ट, कमर के नीचे अंग में पीड़ा, नेत्र कष्ट, मामा का सुख न मिले, राजा के समान सुख, अच्छे कार्य में खर्च, शत्रुओं को नाश करने वाला होता है ।

इति कुण्डलीविवेकः

E.—9

———

## दशवर्ग-विवेक

इस विवेक में ग्रहों के वलावल जानने के लिये दशवर्गनिरूपण, पारिजातादि संज्ञा, मैत्री तथा वर्गवल लिखा जाता है ।

विलग्नहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशांशकाः ।
त्रिशांशकश्च षड्वर्गः शुभकर्मसु शस्यते ॥

गृह, होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश त्रिशांश षड्वर्ग हैं ।

'सप्तांशयुक्तः षड्वर्गः सप्तवर्गोऽभिधीयते ।'

षड्वर्ग में सप्तांश मिलाने से सप्तवर्ग होता है और सप्तवर्ग में दशांश, षोड़शांश, षष्ठ्यंश मिलाने से दशवर्ग होता है ।

## दशवर्ग

गृहं होरा दृकाणं स्वरनवदशकद्वादशांशाः कलांशाः ।
त्रिंशत्षष्ट्यंशकाख्या व्ययदुरितचयश्रीकरा मानवानाम् ॥

१ गृह, २ होरा, ३ द्रेष्काण, ४ सप्तांश ५ नवांश, ६ दशांश, ७ द्वादशांश, ८ षोडशांश, ९ त्रिंशांश, १० षष्ठ्यंश दशवर्ग होते हैं । यह मनुष्यों के खर्च, संकट, संग्रह, सम्पत्ति आदि का ज्ञान कराते हैं ।

## गृह

जिस राशि का जो ग्रह स्वामी है । वह राशि उस ग्रह का गृह होता है । यथा—

## राशि-स्वामी

धराजशुक्रज्ञशशीनसौम्यसितारजीवार्कजमंदजीवाः ।
क्रमेण मेषादिषु राशिनाथास्तदंशपाश्चेति वदन्ति सन्तः ॥

भाषा—मेष, वृश्चिक का मंगल । वृषभ, तुला का शुक्र । मिथुन कन्या का बुध । कर्क का चन्द्रमा । धनु, मीन का गुरु । सिंह का सूर्य । मकर, कुम्भ का शनि स्वामी होता है । एवं यही अंश के भी स्वामी हैं ।

जैसे मेष राशि मंगल का गृह है ।

## होरा

"होरे विषमेऽर्केन्द्वोः समराशौ चन्द्रतीक्ष्णांशोः"

एक राशि में ३० अंश होते हैं। इस ३०अंश के २ भाग बराबर करने से राश्यर्ध अर्थात् १५ अंश को होरा कहते हैं। विषम राशि में १५ अंश तक सूर्य का होरा, १६ अंश से ३० अंश तक चन्द्र का होरा सम राशि में १५ अंश तक चन्द्र का होरा, १६ अंश से ३० अंश तक सूर्य का होरा होता है। होरा चक्र नीचे लिखा गया है।

### होरा-चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु | वृ. | ध. | -. | कुं | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | १५ |
| ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ४ | ५ | ३० |

उदाहरण— लग्न साधन पृष्ट ६३ में सूर्य २।१९ अर्थात् मिथुन (विषम राशि, के १६ अंश से ३० अंश तक चन्द्र का होरा होने से सूय ४ राशि अर्थात् चन्द्र होरा में हुआ। इसी प्रकार चन्द्र ७।१७ अर्थात् सम राशि के द्वितीय भाग सूर्य होरा में हुआ। इसी प्रकार भौमादि ग्रहों का भी जानना।

## द्रेष्काण

" द्रेष्काणः प्रथमपञ्चनवपानाम् "

राशि के त्रिभाग अर्थात् १० अंश को द्रेष्काण कहते हैं। १ अंश से १० अंश तक प्रथम द्रेष्काण, ११ अंश से २० अंश तक द्वितीय द्रेष्काण, २१ अंश से ३० अंश तक तृतीय द्रेष्काण होता है।

जिस किसी राशि के प्रथम द्रेष्काण में ग्रह हो तो उसी राशि का, द्वितीय द्रेष्काण में उस राशि से पंचम राशि का, तृतीय द्रेष्काण में उस राशि से नवम राशि का द्रेष्काण होता है। द्रेष्काण चक्र आगे लिखा गया है।

## द्रेष्काण-चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | २० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ३० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ अर्थात् मिथुन के ११ अंश से २० अंश के मध्य में होने से द्वितीय द्रेष्काण में हुआ।

द्वितीय द्रेष्काण पंचम राशि का होता है अतः मिथुन से पंचम तुला अर्थात् द्रेष्काणेश शुक्र हुआ। द्रेष्काण चक्र में मिथुन के नीचे द्वितीय अंक ७ (तुला) ही लिखा है।

## सप्तांश

एक राशि में ३० अंश होते हैं। इस ३० अंश के ७ भाग बराबर करने से प्रत्येक भाग ४ अंश १७ कला ८ विकला का होता है। इसी को सप्तांश कहते हैं।

"सप्तांशास्तद् गृहादोजे समे सप्तमराशितः"

विषम राशि में उसी राशि से, सम राशि में सप्तम राशि से सप्तांश की गणना होती है। सप्तांश चक्र नीचे लिखा गया है।

## सप्तांश-चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अंश. | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | ४ | १७ | ८ |
| २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | ८ | ३४ | १७ |
| ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | १२ | ५१ | २५ |
| ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | १७ | ८ | ३४ |
| ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | २१ | २५ | ४२ |
| ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ७ | २ | ९ | ४ | ११ | २५ | ४२ | ५१ |
| ७ | २ | ९ | ४ | ११ | ६ | १ | ८ | ३ | १० | ५ | १२ | ३० | ० | ० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है सप्तांशादि ४।१७।८ के ५ वें भाग में सूर्य हैं। सप्तांश चक्र में मिथुन के नीचे ५ वां अंक ७ (तुला) है अतः सप्तांशेश शुक्र हुआ।

## नवांश

राशि के ९वें भाग अर्थात् ३ अंश २० कला को नवांश कहते हैं।

मेषे नवांशा मेषाद्या: वृषे च मकरादिकाः।
मिथुने च तुलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः॥
मेषाद्यौ च धनुः सिंहौ मृगकन्ये मकरादिकौ।
तुलाद्यौ तुलकुम्भौ च कर्काद्यौ मीनवृश्चिकौ॥

मेष का मेष से, वृष का मकर से, मिथुन का तुला से, कर्क का कर्क से, सिंह का मेष से, कन्या का मकर से, तुला का तुला से, वृश्चिक का कर्क से, धनु का मेष से, मकर का मकर से, कुम्भ का तुला से, मीन का कर्क से नवांश की गणना होती है। नवांश चक्र नीचे लिखा गया है।

## नवांश–चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | ३ | २० |
| २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | ६ | ४० |
| ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | १० | ० |
| ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | १३ | २० |
| ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | १६ | ४० |
| ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | २० | ० |
| ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | ७ | ४ | १ | १० | २३ | २० |
| ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | ८ | ५ | २ | ११ | २६ | ४० |
| ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ९ | ६ | ३ | १२ | ३० | ० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है नवांशादि ३।२० के छठवें भाग में सूर्य है। नवांश चक्र में मिथुन के नीचे छठवां अंक १२ (मीन) है अतः नवांशेश गुरु हुआ।

## दशमांश

राशि के दशवें भाग अर्थात् ३ अंश को दशमांश कहते हैं।

" ओजे स्वस्मात् समे नवमाद्दशमांशः "

विषम राशि में उसी राशि से, सम राशि में नवम राशि से दशमांश की गणना होती है। दशमांश चक्र नीचे लिखा गया है।

### दशमांश—चक्र

| मे. | वृ. | मि | क. | सिं | कं. | तु. | वृ. | ध. | म | कुं. | मी | अंशाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | ३ |
| २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | ६ |
| ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ९ |
| ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | १२ |
| ५ | २ | ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ | १५ |
| ६ | ३ | ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ | १८ |
| ७ | ४ | ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ | २१ |
| ८ | ५ | १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ | २४ |
| ९ | ६ | ११ | ८ | १ | १० | ३ | १२ | ५ | २ | ७ | ४ | २७ |
| १० | ७ | १२ | ९ | २ | ११ | ४ | १ | ६ | ३ | ८ | ५ | ३० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है दशमांशादि ३ के ७ वें भाग में सूर्य है दशमांश चक्र में मिथुन के नीचे ७वां अंक ९ (धनु) है। अतः दशमांशेश गुरु हुआ है।

## द्वादशांश

राशि के बारहवें भाग अर्थात् २ अंश ३० कला को द्वादशांश कहते हैं।

" स्वगृहाद् द्वादशभागाः "

इसकी गणना अपनी ही राशि से होती है। द्वादशांश चक्र आगे लिखा गया है।

## द्वादशांश-चक्र

| मे. | वृ. | मि | क. | सिं. | कं | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | २ | ३० |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | ५ | ० |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ७ | ३० |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | १० | ० |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | १२ | ३० |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | १५ | ० |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १७ | ३० |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | २० | ० |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | २२ | ३० |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | २५ | ० |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २७ | ३० |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ३० | ० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है द्वादशांशादि २।३० के ८ वें भाग में सूर्य है द्वादशांशचक्र में मिथुन के नीचे ८ वां अंक १० (मकर) है। अतः द्वादशांशेश शनि हुआ।

## षोडशांश

राशि के सोलहवें भाग अर्थात् १ अंश ५२ कला ३० विकला को षोडशांश कहते हैं।

"चरेऽजाद्याः, स्थिरे सिंहाद्याः, द्विस्वभावे चापाद्याः षोडशांशाः"

चर राशियों में मेषादि से, स्थिर राशियों में सिंहादि से द्विस्वभाव राशियों में धनु राशि से षोडशांश की गणना होती है। आगे चक्र लिखा गया है।

## षोड़शांश–चक्र

| चर | स्थिर | द्विस्वभाव | अंशादि | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मे. क. तु. म. | वृ. सिं. वृ. कुं | मि. कं. ध. मी. | | | |
| १ | ५ | ९ | १ | ५२ | ३० |
| २ | ६ | १० | ३ | ४५ | ० |
| ३ | ७ | ११ | ५ | ३७ | ३० |
| ४ | ८ | १२ | ७ | ३० | ० |
| ५ | ९ | १ | ९ | २२ | ३० |
| ६ | १० | २ | ११ | १५ | ० |
| ७ | ११ | ३ | १३ | ७ | ३० |
| ८ | १२ | ४ | १५ | ० | ० |
| ९ | १ | ५ | १६ | ५२ | ३० |
| १० | २ | ६ | १८ | ४५ | ० |
| ११ | ३ | ७ | २० | ३७ | ३० |
| १२ | ४ | ८ | २२ | ३० | ० |
| १ | ५ | ९ | २४ | २२ | ३० |
| २ | ६ | १० | २६ | १५ | ० |
| ३ | ७ | ११ | २८ | ७ | ३० |
| ४ | ८ | १२ | ३० | ० | ० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है तो षोडशांशादि १।५२।३० के ११ वें भाग में सूर्य है। षोडशांश चक्र में मिथुन के नीचे ११ वाँ अंक ७ (तुला) है। अतः षोडाशांशेश शुक्र हुआ।

## त्रिंशांश

त्रिंशांश की बात विलक्षण है। यह अन्वर्थ से तो तीसवें भाग अर्थात् १ अंश का होता है। विषम राशि में मेष राशि से तथा सम राशि में तुला राशि से गणना होती है। भले ही किसी प्राचीन ग्रन्थ में एक २ अंश पर से सूक्ष्म विचार क्यों न किया गया हो

और इसीसे इसका नाम त्रिशांश रखा गया हो। पर यह पद्धति वर्तमान काल में सर्व मान्य नहीं। वर्तमान काल में तो अधिकांश ज्योतिष मर्मज्ञ नारदादि उक्तियों से ही त्रिशांश की गणना करते हैं।

यथा—

कुजार्कीज्यज्ञशुक्राणां बाणेष्वष्टाद्रिमार्गणाः।
भागाः स्युर्विषमे ते तु समराशौ विपर्ययात् ॥

(नारद वाक्य मु. चिं. पीयूषधारा)

अन्यच्च

त्रिशांशेशाश्च विषमे कुजार्कीज्यज्ञभार्गवाः।
पञ्चपञ्चाष्टसप्ताक्षभागानां व्यत्ययात् समे ॥

(बृ. पा. होरा)

अन्यच्च

कुजयमजीवज्ञसिताः पञ्चेन्द्रियवसुमुनीन्द्रियांशानाम्।
विषमेषु समर्क्षेषूत्क्रमेण त्रिशांशकाः कल्प्याः ॥

( ल० जा० )

......इत्यादि आचार्यों के मत से इसी त्रिशांश की ही पद्धति ग्राह्य है।

विषम राशि में ५ अंश तक मेष का, १० अंश तक कुंभ का, १८ अंश तक धनु का, २५ अंश तक मिथुन का, ३० अंश तक तुला का त्रिशांश होता है।

सम राशि में ५ अंश तक वृष का, १२ अंश तक कन्या का, २० अंश तक मीन का, २५ अंश तक मकर का, ३० अंश तक वृश्चिक का त्रिशांश होता है त्रिशांश चक्र आगे लिखा गया है।

## त्रिशांश-चक्र

विषम त्रिशांश

| अं. | मे. | मि. | सिं. | तु. | ध. | कुं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| १८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| २५ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| ३० | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |

सम त्रिशांश

| वृ. | क. | कं. | वृ. | म. | मी. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | २ | २ | २ | २ | ५ |
| ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ |
| १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | २० |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | २५ |
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ३० |

उदाहरण—सूय २।१९ है त्रिशांश के भाग सम नहीं है। विषम एवं सम राशि के भाग पृथक २ लिखे गये हैं।

सूर्य विषम राशि ( मिथुन ) का है विषम त्रिशांश चक्र में मिथुन के नीचे ४ थे खण्ड (१९ अंश से २५ अंश तक) में सूर्य होने से ३ (मिथुन) राशि के त्रिशांश में है। अतः त्रिशांशेश बुध हुआ।

## षष्ट्यंश

राशि के ६० वें भाग अर्थात ३० कला को षष्ट्यंश कहते हैं।

' स्वभात् षष्ट्यंशः '

इसकी गणना अपनी ही राशि से प्रारंभ होती है। विशेषता यह है कि विषम राशि में क्रम से, समराशि में उत्क्रम से गणना की जाती है।

## देवतांश

घोरांशको राक्षसदेवभागौ कुबेरयक्षोगणकिन्नरांशाः।
भ्रष्टः कुलघ्नो गरलाग्निसंज्ञो मायांशकःप्रेतपुरीशभागः॥
अपांपतिर्देवगणेशभागः कालाहिभागावमृतांशचन्द्रौ।
मृद्वंशकः कोमलपद्मभागौ लक्ष्मीशवागीशदिगंवरांशाः॥
देवार्द्रभागौ कलिनाशसंज्ञः क्षितीश्वराख्यः कमलाकरांशः।
मन्दात्मजो मृत्युकरस्तु कालो दावाग्निघोराभयकंटकांशा॥

सुधामृतांशौ परिपूर्णचन्द्रो विषप्रदग्धः कुलनाशभागः।
मुख्यास्तु वंशक्षयपातकांशौ कालस्तु सौम्यो मृदुशीतलांशौ॥
दंष्ट्राकरालेन्दुमुखाः प्रवीणाः कालाग्निदण्डायुधनिर्मलाख्याः।
शुभाकरोऽशोभनशीतलांशौ सुधापयोधिभ्रमणेन्दुरेखाः॥

भाषा—षष्ट्यंश के प्रत्येक भाग के नाम इस प्रकार है। १ घोरांश, २ राक्षसांश, ३ देवांश, ४ कुवेरांश, ५ यक्षोगणांश, ६ किन्नरांश ७ भ्रष्टांश, ८ कुलघ्नांश, ९ गरलांश, १० अग्न्यंश ११ मायांश, १२ प्रेतपुरीशांश, १३ अपांपत्यंश, १४ देवगणेशांश, १५ कालांश, १६ अहिभागांश, १७ अमृतांश १८ चन्द्रांश १९ मृद्वंश, २० कोमलांश, २१ पद्मांश, २२ लक्ष्मीशांश २३ वागीशांश, २४ दिगम्बरांश, २५ देवांश, २६ आर्द्रद्रांश, २७ कलिनाशांश, २८ क्षितीश्वरांश, २९ कमलाकरांश ३० मन्दात्मजांश, ३१ मृत्युकरांश, ३२ कालांश, ३३ दावाग्न्यंश, ३४ घोरांश, ३५ अभयांश, ३६ कंटकांश, ३७ सुधांश, ३८ अमृतांश, ३९ परिपूर्णचन्द्रांश, ४० विषप्रदग्धांश, ४१ कुलनाशांश, ४२ वंक्षक्षयांश, ४३ पातकांश, ४४ कालांश, ४५ सौम्यांश, ४६ मृद्वंश, ४७ शीतलांश, ४८ दंष्ट्राकरालांश, ४९ इन्दुमुखांश, ५० प्रवीणांश ५१ कालाग्न्यंश ५२ दण्डायुधांश, ५३ निर्मलांश, ५४ शुभाकरांश, ५५ अशोभनांश ५६ शीतलांश, ५७ सुधांश, ५८ पयोध्यंश, ५९ भ्रमणांश, ६० इन्दुरेखांश।

## षष्ट्यंश-देवतांश-साधन

जिस ग्रह का षष्ट्यंश तथा देवतांश साधन करना हो। उस ग्रह की राशि को छोड़कर अंश के कला बनावे। उसमें आगे की कला जोड़ कर ३० से भाग देवे। लब्धि में एक (१) जोड़ दे। तो योग संख्या के सामने ग्रह राशि के नीचे षष्ट्यंश चक्र में अभीष्ट ग्रह की षष्ट्यंश

राशि प्राप्त होगी। एवं विषम राशिस्थ ग्रह का देवतांश योग संख्या के सामने विषम देवतांश में; समराशि ग्रह का सम देवतांश में प्राप्त होगा।
उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ (लग्न साधन पृष्ठ ६३) राशि को छोड़कर;

= अंश १९ × ६०
१९४० कला में
३२ कला जोड़ा
३०)११७२(३९
९०
२७२
२७०
२

= लब्धि ३९ + १ = ४० योग संख्या

षष्ट्यंश चक्र में योग संख्या (४०) के सामने मिथुन (सूर्य २। १९ होने से) के नीचे '६ (कन्या)' सूर्य की षष्ट्यंश राशि प्राप्त हुई। एवं विषम देवतांश में 'विषदग्धांश' प्राप्त हुआ।

## दूसरी विधि

योग संख्या में १२ का भाग देने से जो संख्या शेष बचे वह शेष संख्या होगी। ग्रह राशि से शेष संख्या पर्यन्त गणना करने से षष्ट्यंश राशि प्राप्त होगी।

उदाहरण—योग संख्या ४० ÷ १२ = ४ शेष संख्या सूर्य मिथुन (२।१९) से शेष संख्या (४) पर्यन्त गणना करने से (मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या,) कन्या षष्ट्यंश राशि हुई। षष्ट्यंश चक्र आगे लिखा गया है।

# षष्ठ्यंश-चक्र

| विषमे | सं. | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी. | अंशादि | समे- |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मृत्युकर | ३१ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | १५।३० | मान्दी |
| काल | ३२ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | १६।० | कमलाकर |
| दावाग्नि | ३३ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १६।३० | क्षितीश्वर |
| घोर | ३४ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १७।० | कलिनाश |
| अक्षय | ३५ | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | १७।३० | आर्द्र |
| कण्टक | ३६ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १८।० | देव |
| सुधा | ३७ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १८।३० | महेश्वर |
| अमृत | ३८ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | १९।० | ब्रह्मा |
| पूर्णचन्द्र | ३९ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | १९।३० | विष्णु |
| विपदग्ध | ४० | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | २०।० | पद्म भाग |
| कुलनाश | ४१ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | २०।३० | कोमल |
| वंशक्षय | ४२ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | २१।० | मृद्वंश |
| पातक | ४३ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | २१।३० | चन्द्र |
| काल | ४४ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | २२।० | अमृत |
| सौम्य | ४५ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | २२।३७ | अहिभाग |
| मृदु | ४६ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | २३।० | काल |
| शीतल | ४७ | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २३।३० | देवगणेश |
| दंष्ट्राकराल | ४८ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | २४।० | अपांपति |
| इन्दुमुख | ४९ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | २४।३० | प्रेतपुरीश |
| प्रवीण | ५० | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २५।० | माया |
| कालाग्नि. | ५१ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | २५।३० | अग्नि |
| दण्डायुध | ५२ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | २६।० | गरल |
| निर्मल | ५३ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | २६।३० | कुलघ्न |
| शुभाकर | ५४ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | २७।० | भ्रष्ट |
| अशोभन | ५५ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | २७।३० | किन्नर |
| शीतल | ५६ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | २८।० | यक्षोगण |
| सुधा | ५७ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | २८।३० | कुबेर |
| पयोधि | ५८ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | २९।० | देव |
| भ्रमण | ५९ | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | २९।३० | राक्षस |
| इन्दुरेखा | ६० | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ३०।० | घोर |

# षष्ट्यंश-चक्रम्

| विषमे | सं. | मे. | वृ. | मि | क | सिं | क. | तु. | व. | ध. | म | कुं. | मी. | अंशादि | समे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घोर | १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ०।३० | इन्दुरेखा |
| राक्षस | २ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | १।० | भ्रमण |
| देव | ३ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | १।३० | पयोधि |
| कुबेर | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | २।० | सुधा |
| यक्षोगण | ५ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | २।३० | शीतल |
| किन्नर | ६ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ३।० | अशोभन |
| भ्रष्ट | ७ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ३।३० | शुभाकर |
| कुलघ्न | ८ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ४।० | निर्मल |
| गरल | ९ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ४।३० | दण्डायुध |
| अग्नि | १० | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ५।० | कालाग्नि |
| माया | ११ | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ५।३० | प्रवीण |
| प्रेतपुरीश | १२ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ६।० | इन्दुमुख |
| अपांपति | १३ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ६।३० | दंष्ट्राकराल |
| देवगणेश | १४ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | ७।० | शीतल |
| काल | १५ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ७।३० | मृदु |
| अहिभाग | १६ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ८।० | सौम्य |
| अमृत | १७ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ८।३० | काल |
| चन्द्र | १८ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ९।० | पातक |
| मृदुंश | १९ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ९।३० | वंशक्षय |
| कोमल | २० | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | १०।० | कुलनाश |
| पद्मभाग | २१ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १०।३० | विषदग्ध |
| विष्णु | २२ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११।० | पूर्णचन्द्र |
| ब्रह्मा | २३ | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११।३० | अमृत |
| महेश्वर | २४ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२।० | सुधा |
| देव | २५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १२।३० | कण्टक |
| आर्द्र | २६ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | १३।० | अभय |
| कलिनाश | २७ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | १३।३० | घोर |
| क्षितीश्वर | २८ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | १४।० | दावाग्नि |
| कमलाकर | २९ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | १४।३० | काल |
| मान्दी | ३० | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | १५।० | मृत्यु |

## षष्ट्यंश–प्रयोजन

शुभषष्ट्यंशसंयुक्ता:ग्रहा: शुभफलप्रदा:।
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्ता नाशयन्ति खचारिण: ॥

षष्ट्यंश चक्र में ६० देवताओं के नाम जातकपारिजातानुसार दिये गये हैं जिनमें २६ क्रूर, एक मध्यम और ३३ शुभ हैं। इसीलिये कि जो ग्रह शुभ देवताओं के षष्ट्यंश में होगा उसका शुभ फल और क्रूर षष्ट्यंश वाले ग्रहों का अशुभ फल होगा। इन देवताओं के शुभाशुभ फल नाम सदृश ही जानना। दशवर्ग चक्र में जो उत्तमादि वर्गों का विचार किया जाता है। उनमें इन देवताओं का प्रयोजन नहीं होता। केवल ग्रहषष्ट्यंश का ही प्रयोजन होता है।

नोट—देवतांश के नामों में पाठ भेद है।

| जातक पारिजात | जन्म पत्रिका विधान | बृहत्पराशर |
|---|---|---|
| यक्षोगण | रक्षोगण | यक्ष |
| देवगणेश | देवगणेश | मरुत्वान् |
| पद्मभाग | पद्मभाग | हेरम्ब |
| लक्ष्मीश, वागीश | लक्ष्मीश वागीश | ब्रह्मविष्णु |
| अभय | अधम | यम |

## उच्च, नीचादिसंज्ञा

'मेषे वृषो मकरषष्ठकुलीरमीना:'
तौली च कुंभभवनानि तदस्तनीचा:।

भाषा—सूर्य मेष का, चन्द्र वृषभ का, भौम मकर का, बुध कन्या का, गुरु कर्क का, शुक्र मीन का, शनि तुला का उच्च का होता है। तुला का सूर्य, वृश्चिक का चन्द्र, कर्क का भौम, मीन का बुध, मकर का गुरु, कन्या का शुक्र, मेष का शनि नीच का होता है।

## परमोच्चांश-नीचांश

सूर्य १०, चन्द्र ३, भौम २८, बुध १५, गुरु ५, शुक्र २७, शनि २० अंश तक परम उच्च का होता है, वही नीचांश भी होते हैं।

## उच्चांशादि-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ९ | ५ | ३ | ११ | ६ | उच्च राश्यादि |
| १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | |
| ६ | ७ | ३ | ११ | ९ | ५ | ० | नीच राश्यादि |
| १० | ३ | २८ | १५ | ५ | २७ | २० | |

## मूलत्रिकोणसंज्ञा

"मूलत्रिकोणाहरितावुक्षक्रियाः,
वधूधनुस्तौलिघटा दिवाकरात्"।

भाषा—सिंह का सूर्य, वृष का चन्द्र, मेष का भौम, कन्या का बुध, धनु का गुरु, तुला का शुक्र, कुंभ का शनि मूलत्रिकोण का होता है। जैसे गुरु धनु राशि का स्वगृही तथा मूलत्रिकोणी दोनों होता है। इसकी विवेचना आगे नोट में लिखी जाती है।

नोट—सितासितार्काङ्गिरसां नखांशका,
त्रिकोणमादौ परतः स्वमन्दिरम्।
वृषादिभागत्रयमुच्चमिन्दोः,
मूलत्रिकोणं परतस्तु सर्वम्।

मेषादिगा द्वादशभागसंज्ञाः,
कुजस्य कोणं परतः स्वभं स्यात् ॥
कन्याधमुच्चं शशिजस्य कोणं,
दशांशकाः स्वर्क्षफलं शरांशाः ।
कुम्भत्रिकोणं फणिनायकस्य,
तुङ्गं नृयुग्मं रमणीगृहं स्यात् ॥

भाषा—गुरु शुक्र, शनि २० अंश तक मूलत्रिकोणी तथा २१ अंश से स्वगृही होते हैं। चन्द्र वृषभ के ३ अंश तक उच्च तथा ४ अंश से मूलत्रिकोणी होता है। भौम मेष के १२ अंश तक मूलत्रिकोणी तथा १३ अंश से स्वगृही होता है बुध कन्या राशि के १५ अंश तक उच्च, १६ अंश से मूलत्रिकोणी तथा २६ अंश से स्वगृही होता है। राहु कुंभ राशि का मूल-त्रिकोणी, मिथुन राशि का उच्च तथा कन्या राशि का स्वगृही होता है राहु से केतु सप्तम रहता है अतः केतु सिंह राशि का मूलत्रिकोणी, धन राशि का उच्च तथा मीन राशि का स्वगृही होता है।

## ग्रन्थान्तर में राहु के उच्चादि स्थान

राहोः कन्यागृहं प्रोक्तं मीनं केतोस्तथैव च ।
राहोस्तु वृषभं केतोर्वृश्चिकं तुङ्गसंज्ञकम् ॥

भाषा—राहु कन्या राशि का स्वगृही तथा वृषभ राशि का उच्च का होता है।

केतु मीन राशि का स्वगृही तथा वृश्चिक राशि का उच्च का होता है। उच्च बल साधन वर्ष विवेक में लिखा गया है।

## वर्गोत्तमराशि

"वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्य-,
पर्यन्ततः शुभफला नवभागसंज्ञाः।"

भाषा—चर राशियों में प्रथम नवांश की, स्थिर राशियों में मध्य (पञ्चम) नवांश की, द्विस्वभाव राशियों में अन्त्य (नवम) नवांश की वर्गोत्तम संज्ञा है।

तत्त्व यह कि जो ग्रह जिस राशि में स्थित हो; यदि वही ग्रह उसी राशि के नवांश में हो तो वह वर्गोत्तम राशिस्थ ग्रह कहा जाता है।

## पारिजातादिसंज्ञा

"द्व्यादिस्वर्क्षस्वोच्चाऽधिमित्रवर्गाः क्रमेण पारिजातोत्तम-गोपुरसिंहासनपारावतदेवलोकदेवलोकैरावतवैशेषिकसंज्ञकाः"

(जा. तत्त्व.)

भाषा—दशवर्ग चक्र में जो ग्रह अपने वर्ग में अथवा अतिमित्र के वर्ग में अथवा उच्च के वर्ग में होता है उसे स्वर्क्षादिवर्गी ग्रह कहते हैं।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | स्वर्क्षादिवर्गी | ग्रह | की | ··· | पारिजात | संज्ञा |
| ३ | ,, | ,, | ,, | ··· | उत्तम | ,, |
| ४ | ,, | ,, | ,, | ··· | गोपुर | ,, |
| ५ | ,, | ,, | ,, | ··· | सिंहासन | ,, |
| ६ | ,, | ,, | ,, | ··· | पारावत | ,, |
| ७ | ,, | ,, | ,, | ··· | देवलोक | ,, |
| ८ | ,, | ,, | ,, | ··· | देवलोक | ,, |
| ९ | ,, | ,, | ,, | ··· | ऐरावत | ,, |
| १० | ,, | ,, | ,, | ··· | वैशेषिक | ,, |

'वसुभिर्ब्रह्मलोकाख्यम्' (वृ. पा. हो.)

वृहत्पाराशर के मत से ८ स्वर्क्षादिग्रह की ब्रह्मलोक संज्ञा है।

'दिग्भिः श्रीधामयोगं स्यात्' (वृ. पा. हो.)

वृहत्पाराशर के मत से १० स्वर्क्षादिवर्गी ग्रह की श्रीधाम संज्ञा है।

नोट—'स्वोच्च' पाठ ग्रन्थों में केवल षड्वलज्ञान के लिये है। क्योंकि पारिजातादि संज्ञा स्वर्क्ष, अधिमित्र के ही आधार पर बनाई जाती है। एवं 'स्वोच्च' पाठ बृहत् पाराशर होरा में संज्ञाओं की बलवत्ता जानने के लिये है। यथा—

स्वोच्चमूलत्रिकोणस्वभवनाधिपतिं तथा।
स्वारूढात्केन्द्रनाथानां वर्गा ग्राह्याः सुधीमता॥
अस्तंगता ग्रहजिता नीचगा दुर्बलास्तथा।
शयनादिवया दुःस्था उत्पन्ना योगनाशकाः॥

अतएव बलज्ञान के लिये 'स्वोच्च' पाठ है। पारिजातादि संज्ञा के लिये नहीं। केवल स्वर्क्ष और पंचधा मैत्री (अधिमित्र) द्वारा पारिजातादि संज्ञा बनाना चाहिए।

जन्मपत्रिका विधान की टीका में—

मूलत्रिकोणकोणोच्चेत्ययं पक्षो नादरणीयः। मुख्यपक्षस्तु स्वत्र्यंशे, स्वनवांशे, स्वभवन इत्यादयः ग्राह्यः। उत्तमोऽयं पक्षश्च। मूलत्रिकोणादिगानामुत्तमांशादिकल्पनेति मध्यमपक्षः। शुभग्रहवर्गगतानां तत्कल्पनेति हीनपक्ष इति।

तत्त्व यह कि अपने तथा अतिमित्र त्रिंशांश, नवांश, गृहादि में जो ग्रह हो उसीसे पारिजातादि संज्ञा निरूपण करना चाहिए।

पारिजातादि संज्ञाओं का वर्णन जातक पारिजात में इस प्रकार है।

मूलत्रिकोणस्वगृहोच्चभागवर्गोत्तमानां दशवर्गजानाम्।
संयोगजातोत्तमनामपूर्वा वैशेषिकांशा इति ते वदन्ति॥
उत्तमन्तु त्रिवर्गैक्यं चतुर्वर्गन्तु गोपुरम्।
वर्गपञ्चकसंयोगं सिंहासनमिहोच्यते॥
वर्गद्वयं पारिजातं षण्णां पारावतांशकः।
सप्तमं देवलोकः स्यादष्टमञ्च तथा भवेत्।
ऐरावतन्तु नवमं फलं तेषां पृथक् पृथक्॥

## किंशुकादिसंज्ञा

द्वाभ्यां किंशुकनामा च त्रिभिर्व्यञ्जनमुच्यते ।
चतुर्भिश्चामराख्यं च छत्रं पञ्चभिरेव च ।
षड्भिःकुण्डलयोगः स्यान्मुकुटाख्यश्च सप्तभिः ।
सप्तवर्गेऽथ दिग्वर्गे पारिजातादिसंज्ञकाः ॥ (बृ. पा.)

भाषा—सप्तवर्ग से किंशुकादि संज्ञा होती है ।

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | स्वक्षादिवर्गी | ग्रह | की | ... | किंशुक | संज्ञा |
| ३ | ,, | ,, | ,, | ... | व्यञ्जन | ,, |
| ४ | ,, | ,, | ,, | ... | चामर | ,, |
| ५ | ,, | ,, | ,, | ... | छत्र | ,, |
| ६ | ,, | ,, | ,, | ... | कुण्डल | ,, |
| ७ | ,, | ,, | ,, | ... | मुकुट | ,, |

## नैसर्गिक-मैत्री

चन्द्रेज्यक्षितिजा रवीन्दुतनयौ गुर्विन्दुसूर्याः क्रमा-
च्छुक्रार्कौ रविचन्द्रभूमितनया ज्ञार्की सितज्ञौ मताः ।
अर्कादेः सुहृदः समा अथ बुधा सर्वे हि शुक्रार्कजौ,
भौमाचार्ययमा यमः कुजगुरू पूज्यः परे वैरिणः ॥

नीचे चक्र लिखा जाता है ।

## निसर्गमैत्री—चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं. मं. बृ. | सू. बु. | सू. चं. बृ. | सू. शु. | सू. चं. मं. | बु. श. | बु. शु. | मित्र |
| बु. | मं. बृ. शु. श. | शु. श. | मं. बृ. श. | श. | मं. बृ. | बृ. | सम |
| शु. श. | ० | बु. | चं. | बु. शु. | सू. चं. | सू. चं. मं. | शत्रु |

## तात्काल-मैत्री

अन्योन्यतः सोदरलाभमानपातालवित्तव्ययराशिसंस्थाः ।
तत्कालमित्रं द्युचरा भवन्ति तदन्यथाता यदि शत्रवस्ते ॥

भाषा—प्रत्येक ग्रह से २, ३, ४, १०, ११, १२ वें भाव के ग्रह मित्र होते हैं। प्रत्येक ग्रह से १, ५, ६, ७, ८, ९, वें भाव के ग्रह शत्रु होते हैं। उदाहरणार्थ लग्न—चक्र पृष्ठ ९७ के अनुसार तात्कालिक मैत्री-चक्र नीचे लिखा जाता है।

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं.<br>बु.<br>गु.<br>शु. | मं.<br>गु.<br>श. | सू<br>चं.<br>बु.<br>गु.<br>शु. | सू.<br>मं.<br>गु. | सू.<br>चं.<br>मं.<br>बु.<br>शु. | सू.<br>मं.<br>गु. | चं. | मित्र |
| चं.<br>श. | सू.<br>बु.<br>शु. | श. | चं.<br>शु.<br>श. | श. | चं.<br>बु.<br>श. | सू.<br>मं.<br>बु.<br>गु.<br>शु. | शत्रु |

## पंचधा-मैत्री

तत्कालनैसर्गिकतश्च पंचधा पुनः प्रकल्प्यास्त्वतिमित्रशत्रवः ।
द्वयोः सुहृत्त्वन्त्वतिमित्रता भवेद्द्विधारयस्ते तु सदातिशत्रवः ।
सुहृत्समत्वं सुहृदेव केवलं रिपुःसमारिमित्रता समः ॥

मित्र , मित्र में ... ... अतिमित्र
मित्र , सम में ... ... मित्र
मित्र , शत्रु में ... ... सम
सम , शत्रु में ... ... शत्रु
शत्रु , शत्रु में ... ... अतिशत्रु

स्पष्टीकरण—नैसर्गिक और तात्कालिक चक्र से मिलकर पंचधा मैत्री बनायी जाती है। नैसर्गिक में सूर्य के भौम, गुरु मित्र हैं और तात्कालिक चक्र में भी सूर्य के भौम, गुरु मित्र हैं अतः 'द्वयोः सुहृत्वन्त्वतिमित्रता भवेत्' के अनुसार पंचधामैत्री-चक्र में सूर्य के अतिमित्र के स्थान में मं. गु. रखा गया है। इसी प्रकार सभी ग्रहों को रखना चाहिये। उदाहरणार्थ उक्त दोनों चक्रों द्वारा मैत्रीनिरूपण कर नीचे पंचधामैत्री-चक्र लिखा जाता है।

## पञ्चधामैत्री-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मं. गु. | ० | सू. चं. गु. | सू. | सू. चं. मं. | ० | ० | अतिमित्र |
| बु. | मं. गु. श. | शु. | मं. गु. | ० | मं. गु. | ० | मित्र |
| चं. शु. | सू. बु. | बु. | शु. | बु. शु. | सू. बु. श. | चं. बु. शु. | सम |
| ० | शु. | श. | श. | श. | ० | गु. | शत्रु |
| श. | ० | ० | चं. | ० | चं. | सू. मं. | अतिशत्रु |

# दशवर्ग—चक्र

( स्पष्ट ग्रह चक्र पृष्ठ ८५ )

| ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं.४ मि. | बु. ३ मि. | मं. ८ मि. | बु. ६ स. | चं. ४ अ. श. | सू. ५ अ. मि. | चं. ४ अ. श. | श. १० स्व. | गृह मित्रादि |
| सू. ५ | चं. ४ स. | सू. ५ स. | चं. ४ अ. मि. | चं ४ अ. श. | चं. ४ अ. मि. | चं. ४ अ. श. | सू. ५ अ. श. | होरा मित्रादि |
| गु. १२ मि. | शु. ७ स. | गु. १२ मि. | बु. ६ स. | मं. ८ मि. | मं. १ अ. मि. | मं. ८ मि. | शु. २ स. | द्रेष्काण मित्रादि |
| गु. १२ मि. | गु. १२ अ. मि. | गु. ९ मि. | श. ११ श. | मं. ८ मि. | गु. ९ स्व. | शु. ७ स्व. | शु. २ स. | नवांश मित्रादि |
| बु. ३ स. | श. १० अ. श. | शु. २ श. | मं. ८ स्व. | गु. ९ मि. | चं. ४ अ. मि. | गु. ९ मि. | चं. ४ स. | द्वादशांश मित्रादि |
| मं. ८ मि. | बु. ३ मि. | गु. १२ मि. | बु. ७ स. | गु. १२ मि. | शु. ७ स. | गु. १२ मि. | गु. १२ श. | त्रिंशांश मित्रादि |
| चं. ४ स्व. | शु. ७ स. | बु. ६ स. | मं. १ स्व. | मं. १ स्व. | श. ११ श. | गु. १२ मि. | शु. ७ स. | सप्तांश मित्रादि |
| गु. ९ मि. | गु. ९ अ. मि | गु. ९ मि. | बु. ३ स. | चं. ४ अ. श. | शु. २ स. | चं. ४ अ. श. | श. ११ स्व. | दशांश मित्रादि |
| चं. ४ स्व. | शु. ७. स. | शु. २ श. | श. ११ श. | मं. ८ मि. | मं. ८ अ. मि. | शु. ७ स्व. | गु. ९ श. | षोडशांश मित्रादि |
| बु. ३ स. | बु. ६ मि. | बु. ६ स. | चं. ४ अ. मि. | गु. ९ मि. | मं. १ अ. मि. | सू. ५ स. | चं. स. | षष्ट्यंश मित्रादि |

नोट— लग्न का दशवर्ग साधन इस प्रकार है कि लग्नेश ही लग्न का गृहेश होता है। लग्नेश का गृहेश पंचधा मैत्री में जैसा (अधिमित्रादि) हो; वैसा ही लग्न के गृह में लिखना चाहिये। एवं बल भी इसी आधार पर बनाना चाहिये। इसी प्रकार होरादि में भी लग्नेश के आधार पर स्वाधिमित्रादि लिखना चाहिए।

उदाहरण—लग्न ३।२९।४१।२० (पृष्ठ ६४) है अतः लग्नेश चन्द्र हुआ; तो लग्न के गृहके स्थान में चन्द्र लिखा। चन्द्र भौम के गृह (८) में है और पंचधा मैत्री में चन्द्र का भौम मित्र है अतः गृह के स्थान में मित्र लिखा। लग्न सूर्य होरा में है और लग्नेश (चन्द्र) का सूर्य पंचधामैत्री में सम है अतः होरा के स्थान में सूर्य एवं स. (सम) लिखा। इसी प्रकार द्रेष्काणादि में भी जानना।

## सलग्नग्रह-देवतांश-चक्र

| लग्न | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घोर | विपदग्ध | आर्द्र | प्रवीण | मृत्यु | सुधा | आर्द्र | मान्दी | देवतांश |

## सलग्नग्रह-पारिजातादि-संज्ञा

| लग्न | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ पारिजात | २ पारिजात | ० | ४ गोपुर | ० | ७ देवलोक | २ पारिजात | २ पारिजात | वर्ग योग संज्ञा |

## सलग्नग्रह-किंशुकादि–संज्ञा

| लग्न | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ० | ३ | ० | ५ | १ | १ | वर्गयोग |
| ० | ० | ० | व्यञ्जन | ० | छत्र | ० | ० | संज्ञा |

## ग्रह–बल

स्वभे ग्रहेऽर्धन्त्वधिमित्रराशौ,
त्रयो गजांशा हितभे तु पादम्।
समेऽष्टमांशाः खलु वैरिगेहे,
कलांशकोश्चाध्यरिभे रदांशाः॥
सप्तवर्गोद्भवं वीर्यं गृहाधिपवशाद्बुधैः।
तदैक्यं खचरस्यात्र निरुक्तं मिहिरादिभिः॥

(जन्मपत्रिकाविधान)

भाषा—सप्तवर्ग बल साधन वराहमिहिरादि के मत से इस प्रकार है—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| स्वगृही | का | बल | अंशादि | ०।३०।० |
| अतिमित्र | ,, | ,, | ,, | ०।२२।३० |
| मित्र | ,, | ,, | ,, | ०।१५।० |
| सम | ,, | ,, | ,, | ०। ७।३० |
| शत्रु | ,, | ,, | ,, | ०। ३।४५ |
| अतिशत्रु | ,, | ,, | ,, | ०। १।५२।३० |

नोट—सब ग्रहों के बल जोड़ ६० से भाग देकर अंशात्मक ऐक्य बल रखना चाहिए।

## सप्तवर्गबल—चक्र

| ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | १<br>५२<br>३० | २२<br>३०<br>० | १<br>५२<br>३० | ३०<br>०<br>० | गृहबल |
| ७<br>३०<br>० | ७<br>३०<br>० | ७<br>३०<br>० | २२<br>३०<br>० | १<br>५२<br>३० | २२<br>३०<br>० | १<br>५२<br>३० | १<br>५२<br>३० | होराबल |
| १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | २२<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | द्रेष्काणबल |
| ३०<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | ७<br>३०<br>० | ३०<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | ३<br>४५<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | सप्तांशबल |
| १५<br>०<br>० | २२<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ३<br>४५<br>० | १५<br>०<br>० | ३०<br>०<br>० | ३०<br>० | ७<br>३०<br>० | नवांशबल |
| ७<br>३०<br>० | १<br>५२<br>३० | ३<br>४५<br>० | ३०<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | २२<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | द्वादशांशबल |
| १५<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ७<br>३०<br>० | १५<br>०<br>० | ३<br>४५<br>० | त्रिंशांशबल |
| १<br>४४<br>०<br>० | १<br>१६<br>५२<br>३० | १<br>१८<br>४५<br>० | १<br>४८<br>४५<br>० | १<br>१८<br>४५<br>० | २<br>११<br>१५<br>० | १<br>३३<br>४५<br>० | १<br>५<br>३७<br>३० | बलैक्य |

नोट—दशवर्ग एवं सप्तवर्गबल यहां लिखा गया है ; षड्बल आगे लिखा जायगा ।

इति दशवर्गविवेकः

# संज्ञाविवेक

## मेषादि–संज्ञा

मेषाजविश्वक्रियतुम्बुराद्या,
वृषोक्षगोताबुरुगोकुलानि ।
द्वन्द्वं नृयुग्मं जुतुमं यमश्च,
युगं तृतीयं मिथुनं वदन्ति ॥
कुलीरकर्कारककर्कटाख्याः,
कण्ठीरवः सिंहमृगेन्द्रलेयाः ।
पाथोनकन्यारमणीतरुण्य–,
स्तौली वणिक् जूकतुला घटाश्च ॥
अल्यष्टमं वृश्चिककौर्पिकीटाः,
धन्वी धनुश्चापशरासनानि ।
मृगे मृगास्यो मकरश्च नक्रः,
कुम्भो घटस्तोयधराभिधानः ॥
'मीनालिमत्स्यपृथुरोमझषा वदन्ति' ।

भाषा—यह मेषादि राशियों के नाम हैं ।

मेष—अज, विश्व, क्रिय, तुंबुर, आद्य

वृष—उक्ष, गो, ताबुरु, गोकुल

मिथुन—द्वन्द्व, नृयुग्म, जुतुम, यम, युग, तृतीय

कर्क—कुलीर, कर्काटक, कर्कट

सिंह—कण्ठीरब, मृगेन्द्र, लेय

कन्या—पाथोन, कन्या, रमणी, तरुणी

तुला—तौली, वणिक , जूक, घटा

वृश्चिक—अलि, अष्टम कौर्पि, कीट

धनु—धन्वी, चाप, शरासन

मकर—मृग, मृगास्य , नक्र

कुम्भ—घट, तोयधर

मीन—मीनाली, मत्स्य, पृथुरोम, झष

## राशि-संज्ञा

पुमांश्चरोऽग्निः सुदृढश्चतुस्पा-,
द्रक्तोष्णपित्तोऽतिरवोऽतिरुग्रः ।
पीतो दिनं प्राग्विषमोदयोऽल्प-,
संगप्रजो रूक्षनृपः समोऽजः ॥
वृषः स्थिरःस्त्री क्षितिशीतरुक्षो,
याम्येट् सुभूर्वाग्युनिशा चतुष्पात् ।
श्वेतोऽतिशब्दो विषमोदयश्च,
मध्यप्रजासंगशुभोऽपि वैश्यः ॥
प्रत्यक् समीरः शुकभाङ्गपान्ना,
द्वन्द्वं द्विमूर्तिर्विषमोदयोष्णः ।
मध्यप्रजासंगवनस्थशूद्रो-,
दीर्घश्वनः स्निग्धदिनेट् तथोग्रः ॥
वहुप्रजासंगपदः कुलीर-,
श्चरोऽङ्गना पाटलहीनशब्दः ।
शुभः कफी स्निग्धजलाम्बुचारी,
समोदयी विप्रनिशोत्तरेशः ॥
पुमांन्स्थिरोऽग्निर्दिनपीतरुक्षः,
पित्तोष्णपूर्वेशदृढश्चतुष्पात् ।
समोदयो दीर्घरवोऽल्पसग-,
प्रजो हरिः शैलनृपोग्रधूम्रः ॥
पाण्डुर्द्विपात्स्त्री द्वितनुर्यमाशा,
निशामरुच्छीतसमोदया क्ष्मा ।
कन्यार्धशब्दा शुभभूमिवैश्या,
रुक्षाल्पसंगप्रसवा शुभा च ॥

पुमाँश्चरश्चित्रसगोदयोग्रः,
प्रत्यङ्क्षरुतिस्निग्धरत्रो न वन्यः।
स्वल्पप्रजासंगमशूद्र उग्र-,
स्तुलो द्युचार्यो द्विपदः समानः॥
स्थिर सितः स्त्री जलमुत्तरेश-,
निशा रवो नो बहुपात् कफी च।
समोदयो वारिचरोऽतिसंग-,
प्रजः शुभः स्निग्धतनुर्द्विजोऽलिः॥
ना स्वर्णभाः शैलसमोदयोऽति-,
शब्दो दिनं प्राक् दृढरुक्षपीतः।
राजोष्णपित्तो धनुरल्पसूतिः,
संगो द्विमूर्तिर्द्विपदोऽग्निरुग्रः॥
मृगश्चरक्ष्मार्धरवो यमाशा,
स्त्रीपिंगरुक्षः शुभभूमिशीतः।
स्वल्पप्रजासंगसमीररात्रि-,
रादौ चतुष्पाद्विषमोदयो विट्॥
कुम्भोऽपदो ना दिनमध्यसंग-,
प्रसूः स्थिरः कर्वुरवन्यवायुः।
स्निग्धोष्णखण्डस्वरतुल्यधातुः,
शूद्रः प्रतीची विषमोदयोग्रः॥
मीनोऽपदः स्त्री कफवारिरात्रि-,
निःशब्दबभ्रुर्द्विनतुर्जलस्थः।
स्निग्धोऽतिसंगप्रसवोऽपि विप्रः,
शुभोत्तराशेट् विषमोदयश्च॥

इन श्लोकों का अर्थ आगे चक्र में स्पष्ट दिया गया है।

## राशि-संज्ञा

| संज्ञा | स्थान | क्रूरादि | वली | समवि | दिशा | स्त्रीसंग | कांति | जाति | उदय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | पृष्ठ |
| वृषभ | समभू. | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | मध्य | रूक्ष | वैश्य | पृष्ठ |
| मिथुन | वनचर | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | मध्य | स्निग्ध | शूद्र | शीर्ष |
| कर्क | जलचर | सौम्म | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | पृष्ठ |
| सिंह | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | शीर्ष |
| कन्या | शुभभू | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | अल्प | रूक्ष | वैश्य | शीर्ष |
| तुला | वनचर | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | अल्प | स्निग्ध | शूद्र | शीर्ष |
| वृश्चिक | जलचर | सौम्य | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | शीर्ष |
| धनु | पर्वत | उग्र | दिवा | विषम | पूर्व | अल्प | रूक्ष | क्षत्री | पृष्ठ |
| मकर | बनचर | सौम्य | रात्रि | सम | दक्षिण | अल्प | रूक्ष | वैश्य | पृष्ठ |
| कुंभ | भूमि | उग्र | दिवा | विषम | पश्चिम | मध्य | स्निग्ध | शूद्र | शीर्ष |
| मीन | जलचर | सौम्य | रात्रि | सम | उत्तर | बहु | स्निग्ध | विप्र | उभय |

## राशि-संज्ञा

| संज्ञा | पु. स्त्री. | चरादि | तत्त्व | पुष्टकृश | पाद | वर्ण | गुण | धातु | शब्द |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | पुरुष | चर | अग्नि | दृढ | चतुष्प. | पाटल | तप्त | पित्त | अति |
| वृषभ | स्त्री | स्थिर | पृथ्वी | दृढ | चतुष्प. | श्वेत | शीत | वायु | अति |
| मिथुन | पुरुष | द्विस्व. | वायु | मृदु | द्विपद | हरित | तप्त | समधा. | दीर्घ |
| कर्क | स्त्री | चर | जल | मृदु | अपद | पाटल | शीत | कफ | हीन |
| सिंह | पुरुष | स्थिर | अग्नि | दृढ | चतुष्प | धूम्र | उष्ण | पित्त | दीर्घ |
| कन्या | स्त्री | द्विस्व. | पृथ्वी | कृश | द्विपद | पांडुर | शीत | वायु | अर्ध |
| तुला | पुरुष | चर | वायु | दृढ | द्विपद | विचित्र | उष्ण | समधा | हीन |
| वृश्चिक | स्त्री | स्थिर | जल | कृश | बहुपद | श्वेत | शीत | कफ | हीन |
| धनु | पुरुष | द्विस्व. | अग्नि | दृढ | द्विपद | सुवर्ण | उष्ण | पित्त | अति |
| मकर | स्त्री | चर | पृथ्वी | दृढ | चतुष्प. | पीत | शीत | वायु | अति |
| कुंभ | पुरुष | स्थिर | वायु | दृढ | अपद | कर्बुर | उष्ण | समधा | खंड |
| मीन | स्त्री | द्विस्व. | जल | दृढ | अपद | धूम्र | शीत | कफ | हीन |

## राशियों की अन्यान्य संज्ञायें

| | |
|---|---|
| वहुप्रजाराशि | ··· कर्क, वृश्चिक, मीन |
| मध्यप्रजाराशि | ··· वृष, मि., कुंभ |
| अल्पप्रजाराशि | ··· मे., सिं., कन्याः तु. ध. म. |
| शुष्कराशि | ··· मे., वृ., मि., सिं., कन्या., धनु |
| सजलराशि | ··· कर्क कुं., मक., मीन., वृ., तु. |
| आध्यात्मिकराशि | ··· सिं., क., तु., वृ. |
| शास्त्रीयराशि | ··· मि., तु., कुं. |
| धार्मिकराशि | ··· ध., म., कुं., मी. |
| नरराशि | ··· मि., क., तु., धनुराशि का पूर्वार्ध, कुं. |
| जलचरराशि | ··· मकर का उत्तरार्ध., मी., क. |
| जलाश्रयीराशि | ··· वृष., मि., क, कुं., वृश्चि. |
| निर्जलभूमिचारीराशि | ··· मे., सिं., तु., ध. |
| विषुवराशि | ··· मे., तु. |
| अयनराशि | ··· कर्क, मकर |
| कीटराशि | ··· वृश्चिक |
| द्विशरीर राशि | ··· मि., मी., धनु का पूर्वार्ध |
| पशु राशि | ··· मे., वृ., सिं., धनु का उत्तरार्ध., मकर का पूर्वाध |
| दीर्घ राशि | ··· सिं., क., तु., वृश्चि |
| सम राशि | ··· ध., म., मि., कर्क |
| ह्रस्व राशि | ··· कुं., मी., मे., वृष |

राशियों को द्विपदादि संज्ञा और भावविशेषों में बलवत्ता—

चापापरार्धहरिगोमकरादिमेषाः,
मानस्थिता बलयुताश्च चतुष्पदाख्याः।
कन्यानृयुग्मघटतौलिशराशनाद्याः,
लग्नान्विता यदि नरा द्विपदाबलाढ्याः॥

मृगापरार्धान्त्यकुलीरसंज्ञाः,
जलाभिधाना बलिनश्चतुर्थे ।
जलाश्रयो वृश्चिक नामधेयः,
ससप्तमस्थानगतो बली स्यात् ॥ (जा. पा)

भाषा—धनु राशि का उत्तरार्ध और मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध ये चतुष्पद संज्ञक और जन्म लग्न से दशवें स्थान में बली होती हैं । कन्या, मिथुन, कुंभ, तुला तथा धनु का पूर्वार्ध य द्विपद संज्ञक और लग्न स्थान में बली होती हैं; मकर का उत्तरार्ध, मीन, कर्क ये जलचर संज्ञक है, और चतुर्थ स्थान में बली होती हैं। वृश्चिक राशि जलाश्रयी और सप्तम में बली होती है । ग्रन्थान्तर में कर्क को कीट और वृश्चिक को सरीसृप कहते हैं– यथा— "कीटः कर्कटराशिः सरीसृपो वृश्चिकः कथितः (ल. जा ) रत्न-कलाप में वृश्चिक को कीट और कर्क को जलचर कहा है– यथा—

"नृयुक् कुम्भतुला कन्यो चापाद्यार्धश्च मानुषाः ।
चापान्त्यार्धे मृगाद्यार्धे गोसिंहाजाश्चतुष्पदाः ।
मृगान्त्यार्धे कर्किमीना वाप्याः कीटश्च वृश्चिकः ।
( रत्नकलाप )

## ग्रह–संज्ञा

हेलिः सूर्यस्तपनदिनकृद्भानुपूषारुणार्काः,
सोमः शीतद्युतिरुडुपतिग्लौमृगाङ्केन्दुचन्द्राः ।
आरो वक्रक्षितिजरुधिरांगारकक्रूरनेत्राः,
सौम्यस्ताराततनयबुधविद्बोधनाश्चेन्दुपुत्रः ॥
मन्त्री वाचस्पतिगुरुसुराचार्यदेवेज्यजीवाः,
शुक्रः काव्यः सितभृगुसुताच्छास्फुजिद्दानवेज्याः ।
छायासूनुस्तरणितनयक्रोणशन्यार्किमन्दाः,
राहुः सर्पासुरफणितमः सैंहिकेयागवश्च ॥
'ध्वजः शिखी केतुरिति प्रसिद्धः'

भाषा—यह ग्रहों की संज्ञायें हैं।

सूर्य—हेली, तपन, दिनकृत्, भानु, पूषा, अरुण, अर्क, इन

चन्द्र—सोम, शीतद्युति, उडुपति, ग्लौ, मृगांक, इन्दु

भौम—आर, वक्र, क्षितिज, रुधिर, अंगारक, क्रूरनेत्र

बुध—सौम्य, तारातनय, वित, बोधन, इन्दुपुत्र

गुरु—मन्त्री, वाचस्पति, सुराचार्य, देवेज्य, जीव, अमरमन्त्री

शुक्र—काव्य, सित, भृगुसुत, अच्छ, आस्फुजित्, दानवेज्य उशनस्

शनि—छायासुनु, तरणितनय, कोण, आर्कि, मन्द

राहु—सर्प, असुर, फणि, तम, सैंहिकेय, अगु

केतु—ध्वज, शिखो

## ग्रह-संज्ञा

सूर्यो नृपो ना चतुरस्रमध्यं,
दिनेन्द्रदिक् स्वर्णचतुष्पदाग्नेः।
सत्त्वं स्थिरस्तिक्तपशुक्षितिस्तु,
पित्तं जरन् पाटल मूलवन्यः॥

वैश्यः शशी स्त्री जलभूस्तपस्वी,
गौरो पराह्णमुद्धातुसत्त्वम्।
वायव्यदिक् श्लेष्मभुजंगरूप्य-,
स्थूलो युवा क्षारशुभः सिताभः॥

भौमस्तमः पित्तयुवोग्रवन्यो,
मध्याह्न धातुर्यमदिक् चतुष्पात्।
नाराट् चतुष्कोणसुवर्णकारो,
दग्धावनी व्यंगकटुश्च रक्तः॥

ग्राम्यः शुभो नीलसुवर्णवृत्तः,
शिश्वोष्णकोच्चः समधातुजीवः ।
श्मशानयोषोत्तरदिग्प्रभातं,
शूद्रः खगः सर्वरसो रजो ज्ञः ॥

गुरुः प्रभाते नृशुभेशदिग्द्विजः,
पीतो द्विपाद् ग्राम्यसुवृत्तजीवः ।
वाणिज्यमाधुर्यसुरालयेशो,
वृद्धः सुरत्नं समधातुसत्त्वम् ॥

शुक्रः शुभः स्त्री जलगो पराह्णः,
श्वेतः कफी रूप्यरजोऽम्लमूलम् ।
विप्रोऽग्निर्दिङ्मध्यवयो रतीशो,
जलात्र निस्निग्धरुचिर्द्विपाच्च ॥

शनिर्विहंगोऽनिलवन्यसन्ध्या,
शूद्राङ्गना धातुसमः स्थिरश्च ।
क्रूरः प्रतीची तु वरोऽतिवृद्धो-,
त्करक्षितीट् दीर्घसुनीललोहम् ॥

राहुस्वरूपं शनिवन्निषाद-,
जातिर्भुजंगोऽस्थिपनैर्ऋतीशः ।
केतुःशिखी तद्वदनेकरूपः,
खगस्वरूपात्फलमूह्यमित्थम् ॥

इन श्लोकों का अर्थ तथा ग्रन्थान्तर से भी विचार कर आगे ग्रह-संज्ञा-चक्र में स्पष्ट किया गया है ।

## ग्रह-संज्ञा-चक्र

| संज्ञा | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | रक्त | शुक्ल | रक्त | हरित | पीत | श्वेत | कृष्ण | कृष्ण |
| दिशा | पूर्व | वायव्य | दक्षिण | उत्तर | ईशान | आग्नेय | पश्चिम | नैऋत्य |
| पुं. स्त्री | पुरुष | स्त्री | पुरुष | नपुं | पुरुष | स्त्री | नपुंस. | स्त्री |
| गुण | सत्त्व | सत्त्व | तम | रज | सत्त्व | रज | तम | तम |
| प्रकृति | पित्त | कफ | पित्त | समधा | समधा | कफ | वात | वात |
| तत्त्व | अग्नि | जल | अग्नि | भूमि | आका | जल | वायु | वायु |
| जाति | क्षत्री | वैश्य | क्षत्री | शूद्र | विप्र | विप्र | शूद्र | म्लेक्ष |
| अवस्था | वृद्ध | युवा | युवा | बाल | वृद्ध | युवा | वृद्ध | वृद्ध |
| चतुष्प. | चतु | सर्प | चतु. | पक्षी | द्विपद | द्विपद | पक्षी | सर्प |
| भूमि | पशुभू | आर्द्रभू | दग्धभू | श्मशा. | ग्रामभू | जलभू | ऊषर | ऊषर |
| रस | तिक्त | लवण | कटु | कटु | मधुर | अम्ल | तिक्त | तिक्त |
| काल | मध्या. | पराह्न | मध्या. | पूर्वाह्न | पूर्वाह्न | पराह्न | संध्या | संध्या |
| कोण | चौकोन | स्थूल | चौकोन | गोल | गोल | खण्ड | दीर्घ | दीर्घ |
| धातु | सुवर्ण | कांस्य | गेरु | सुवर्ण | रत्न | रूप्य | लौह | लौह |
| स्वभा | स्थिर | चर | उग्र | मिश्र | मृदु | लघु | तीक्ष्ण | तीक्ष्ण |

नोट—केतु के अनेक रूप हैं पक्षियों का स्वामी है। शेष शनिवत् जानना।

## ग्रह-शुभादि-संज्ञा

क्रूरग्रहोऽर्कः कुजसूर्यजौ तु,
पापौ शुभाः शुक्रशशांकजीवाः।
सौम्यस्तु सौम्यः सहितो विशेषात्,
पापैस्तु पापत्वमुपैति नित्यम्॥

भाषा—सूर्य की क्रूर (शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक बली चन्द्र; अन्यथा क्षीण चन्द्र होता है) क्षीण चन्द्र की पाप, बली (पूर्ण) चन्द्र की शुभ, पापसंसर्ग रहित बुध की शुभ अन्यथा पाप, गुरु तथा शुक्र की शुभ, मंगल तथा शनि की पाप संज्ञा है।

## भाव-संज्ञा

कल्पोदयांद्यतनुजन्मविलग्नहोरा,
वागर्थभुक्तिनयनस्वकुटुम्बभानि।
दुश्चिक्यविक्रमसहोदरवीर्यधैर्य-,
कर्णास्तृतीयभवनस्य भवन्ति संज्ञाः॥

पातालवृद्धिहिबुकक्षितिमातृविद्या-,
यानाम्बुगेहसुखबन्धुचतुष्टयानि।
धीदेवराजपितृनन्दनपंचकानि,
रोगांशशस्त्रभयषष्ठरिपुक्षतानि॥

जामित्रकामगमनानि कलत्रसम्पत्,
द्यूनास्तसप्तमगृहाणि वदन्ति चार्याः।
रन्ध्रायुरष्टरणमृत्युविनाशनानि,
धर्मो गुरुः शुभतपो नवभाग्यभानि॥

व्यापारमेषूरणमध्यमानं,
ज्ञानं च राजास्पदकर्मसंज्ञाः।
एकादशोपान्त्यभवायलाभा-,
रिष्फव्ययद्वादशकान्त्यभानि॥

भाषा—द्वादशभावों की संज्ञायें उक्त श्लोकों से तथा ग्रन्थान्तर से इस प्रकार हैं।

प्रथम—देह, तनु, कल्प, उदय, आद्य, जन्म, विलग्न, होरा, अंग

द्वितीय—द्रव्य, धन, वाक्, अर्थ, भुक्ति, नयन, स्व, कुटुम्ब

तृतीय—पराक्रम, भ्रातृ, दुश्चिक्य, विक्रम, सहोदर, वीर्य, धैर्य, कर्ण

चतुर्थ—सुख, सुहृत, पाताल, वृद्धि, हिबुक, क्षिति, मातृ, विद्या, यान अम्बु, गेह, बन्धु

पंचम—सुत, पुत्र, धी, देवराज, पितृनन्दन, पंचक

षष्ठ—शत्रु, रिपु, रोग, अंश, शस्त्र, भय, क्षत

सप्तम—कलत्र, स्त्री, जामित्र, काम, गमन, कलत्रसम्पत्, द्यून, अस्त

अष्टम—मृति, आयु, रन्ध्र, रण, विनाशन

नवम—भाग्य, धर्म, गुरु, शुभ, तप

दशम—कर्म, व्यापार, मेषूरण, मध्य, मान, ज्ञान, राज, आस्पद

एकादश—लाभ, आय, उपान्त्य, भव

द्वादश—व्यय, रिष्फ, अन्त्य

## केन्द्रादि-संज्ञा

आद्यं तुर्यं कलत्रं दशममिह बुधैः केन्द्रमुक्तं त्रिकोणं,
पुत्रं धर्माख्यमुक्तं पणफरमुदितं मृत्युलाभात्मजार्थम्।
धर्मश्चापोक्लिमाख्यं व्ययरिपुसहजं कण्टकाख्यं हि केन्द्रं,
चैतच्चातुष्टयं स्यात्त्रिकमिह गदितं वैरिरिष्फान्तकाख्यम्॥

भाषा—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम स्थान की केन्द्र, कण्टक, चतुष्टय आदि संज्ञा है। पंचम, नवम स्थान की त्रिकोण संज्ञा है। धन, पंचम, अष्टम, एकादश स्थान की पणफर संज्ञा है। तृतीय षष्ठ, नवम, द्वादश स्थान की आपोक्लिम संज्ञा है।

"चतुरस्त्रं मृत्युबन्धुद्वयञ्च"
"स्यात्त्रित्रिकोणमुदयान्नवमं वदन्ति"
"दुश्चिक्यायारिमानान्युपचय..."

भाषा—४, ८ वें भाव की चतुरस्र, लग्न से नवम भाव पर्यन्त की त्रित्रिकोण, ३, ६, १०, ११ वें भाव की उपचय संज्ञा होती है।

## प्लव-संज्ञा

"प्लवत्वं स्वाम्याशाख्यम्"

भाषा—राशि अपने स्वामी की दिशाओं में स्थित हो तो प्लव संज्ञा होती है।

नोट—लग्न की पूर्व, चतुर्थ को उत्तर, सप्तम को पश्चिम, दशम की दक्षिण दिशा कही गई है। यह आगे प्रश्नविवेक में लिखेंगे।

मेष, वृश्चिक का स्वामी भौम है और भौम की दिशा दक्षिण है एवं दशम की भी दिशा दक्षिण है यदि मेष, वृश्चिक राशि दशम भाव में हो तो प्लव संज्ञक राशि कही जायगी।

इति संज्ञाविवेकः

---

## दृष्टि—विवेक

पादेक्षणं भवति सोदरमानराश्योः,<br>
अर्धं त्रिकोणयुगलेऽखिलखेचराणाम्।<br>
पादोनदृष्टिनिचयश्चतुरस्रयुग्मे,<br>
सम्पूर्णदृग्बलमनङ्गगृहे वदन्ति।

अन्यच्च—

शनिरतिबलशाली पाददृग्वीर्ययोगे,<br>
सुरकुलपतिमन्त्री कोणदृष्टौ शुभः स्यात्।<br>
त्रितयचरणदृष्ट्या भूकुमारः समर्थः<br>
सकलगगनवासाः सप्तमे दृग्बलाढ्यः॥

भाषा—प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से ३।१० वें भाव को १ चरण से; ५।९ वें भाव को २ चरण से; ४।८ वें भाव को ३ चरण से, सप्तम भाव को ४ चरण अर्थात् पूर्ण देखना है।

भाषा—३।१० वें भाव को शनि, ५।९ वें को गुरु; ४।८ वें भाव को भौम पूर्ण देखता है।

स्पष्टता के लिये नीचे चक्र लिखा जाता है।

## दृष्टि—चक्र

| सूर्य | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ १० | ३ १० | ३ १० | ३ १० | ३ १० | ३ १० | ३ १० | १ चरण |
| ५ ९ | ५ ९ | ५ ९ | ५ ९ | ५ ९ | ५ ९ | ५ ९ | २ चरण |
| ४ ८ | ४ ८ | ४ ८ | ४ ८ | ४ ८ | ४ ८ | ४ ८ | ३ चरण |
| ७ | ७ | ४ ७ ८ | ७ | ५ ७ ९ | ७ | ३ ७ १० | पूर्ण दृष्टि |

नोट—'शनिरतिवलशाली' का अभिप्राय यह है कि यदि मं. गु. श. वली हों तो क्रमशः त्रिपाद, द्विपाद, पादैक दृष्टि स्थान को भी पूर्ण देखेंगे। अन्यथा नहीं।

सारवली में युक्तियुक्त दृष्टि का स्पष्टीकरण इस प्रकार किया गया है।

पूर्णं पश्यति रविजस्तृतीयदशमे त्रिकोणमपि जीवः,
चतुरस्रं भूमिसुतः । सताकंबुधहिमकराः कलत्रं च।

भाषा—तीसरे स्थान को पराक्रम और दशवें को राज्य कहते हैं—शनैश्चर भृत्यग्रह है। पराक्रम और राज्य की रक्षा करना भृत्य (नौकर) का मुख्य कर्तव्य है इसलिये उक्त दोनों स्थानों को शनैश्चर पूर्ण देखता है इसी तरह बृहस्पति धर्माचार्य (गुरु) हैं। पंचमस्थान विद्या का और नवम स्थान धर्म का है। विद्या और धर्म की रक्षा तथा शिक्षा देना गुरू का कर्तव्य है। इसलिये नवम पंचम को बृहस्पति पूर्ण देखता है। एवं चतुर्थस्थान सुख का है और अष्टम स्थान दुर्गस्थान (किला) या मृत्यु का स्थान है मंगल सेनापति है। राजा को मृत्युभय से बचाना और उसको सुखी रखना सेनापति का ही कर्तव्य है इसीलिये मङ्गल चतुर्थ और अष्टम को पूर्ण देखता है। सूर्य और चन्द्रमा दोनों राजा ग्रह हैं; एवं बुध राजकुमार और शुक्र राजमंत्री है। सप्तमस्थान कलत्र (स्त्री) का है। राजा, राजकुमार, राजमंत्री सभी विशेष कामासक्त होते हैं, इसी लिये सप्तम को ये सब पूर्ण देखते हैं। जिस स्थान को जो ग्रह पूर्ण देखता है उसका फल भी पूर्ण देता है। एवं जहाँ जिसकी पादवृद्धि से दृष्टि कही गई है वहाँ फल भी उसी नियम से न्यूनाधिक होता है। दृष्टि जनित फल विशेषतः पूर्ण दृष्टि का ही होता है

## राहु-दृष्टि

सुते सप्तमे पूर्णदृष्टिं तमस्य,<br>
तृतीये रिपौ पाददृष्टिर्नितान्तम्।<br>
धने राज्यगेहेऽर्धदृष्टिं वदन्ति,<br>
स्वगेहे त्रिपादं भवेच्चैव केतोः॥

भाषा—राहु एवं केतु की ५।७ वें भाव में पूर्ण दृष्टि, स्वगृह में त्रिपाद दृष्टि, २।१० वें भाव में द्विपाद दृष्टि, ३।६ वें भाव में पादैक दृष्टि होती है।

उदाहरणार्थ ग्रहों की ग्रहों के प्रति दृष्टि चक्र आगे लिखा जाता है। लग्न चक्र पृष्ठ ९७

## ग्रह दृष्टि-चक्र

| द्रष्टा | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | दृश्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ० | ० | ३ | ० | १ | ० | ३ | चरण |
| चं. | ३ | ० | ० | २ | १ | २ | ० | चरण |
| मं. | १ | १ | ० | ० | ० | ० | २ | चरण |
| बु. | ० | २ | १ | ० | ० | ० | पूर्ण | चरण |
| गु. | ० | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | चरण |
| शु. | ० | २ | १ | ० | ० | ० | पूर्ण | चरण |
| श. | ० | ० | २ | पूर्ण | ३ | पूर्ण | ० | चरण |

## ग्रन्थान्तर में राहु-दृष्टि

सुतमदननवान्त्ये पूर्णदृष्टिं तमस्य,
युगलदशमगेहे चार्धदृष्टिं वदन्ति।
सहजरिपुविपश्यन् पाददृष्टिं मुनीन्द्राः,
निजभुवनमुपेतो लोचनान्धः प्रदिष्टः॥

उदाहरणार्थ ग्रहों को भावों के प्रति दृष्टि चक्र लिखा जाता है।

## दृष्टि-चक्र

| दृष्टा | त. | ध. | स. | सु. | पु. | रि. | जा. | रं. | ध. | क. | ला. | व्य. | दृश्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ० | १ | ३ | २ | ० | पूर्ण | ३ | २ | १ | ० | ० | ० | चरण |
| चं. | २ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | ३ | २ | ० | पूर्ण | ३ | चरण |
| मं. | ० | ० | ० | ० | १ | पूर्ण | २ | ० | पूर्ण | पूर्ण | २ | १ | चरण |
| बु. | ० | ० | १ | ३ | २ | ० | पूर्ण | ३ | २ | १ | ० | ० | चरण |
| गु. | ० | ० | ० | १ | ३ | पूर्ण | ० | पूर्ण | ३ | पूर्ण | १ | ० | चरण |
| शु. | ० | ० | १ | ३ | २ | ० | पूर्ण | ३ | २ | १ | ० | ० | चरण |
| श. | पूर्ण | ३ | २ | पूर्ण | ० | ० | ० | ० | पूर्ण | ३ | २ | ० | चरण |

नोट—दृष्टिबल साधन भी केन्द्रादिबल के समीप आगे लिखा जायगा।

इति दृष्टिविवेकः

---

## कारकविवेक

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुः सत्त्वं कुजो ज्ञो वचो,
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखं दिनेशात्मजः।
राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारो बुधः,
सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यः सहस्रांशुजः॥ (वृ.जा.)

वृहज्जातक में आत्मादिक के स्थिर कारक इस प्रकार हैं।

रवि………आत्मा, राजा
चन्द्र………मन, राजा
भौम………सत्व, सेनापति
बुध………वाणी, राजकुमार
गुरु………ज्ञान सुख, मन्त्री
शुक्र………मद (वीर्य), मन्त्री
शनि………दुःख, प्रेष्य
यही ग्रह पित्रादिक के भी स्थिरकारक होते हैं।
सूर्य………पिता
चन्द्र………माता
मंगल………भ्राता
बुध………मातुल
गुरु………पुत्र
शुक्र………दारा
शनि………मृत्यु

इन सब आत्मादिकारकों का प्रयोजन सारावली में इस प्रकार वर्णन किया गया है।

आत्माद्यो गगनगैर्बलिभिर्बलवत्तराः ।
दुर्बलैर्दुर्बला ज्ञेया विपरीतं शनेः स्मृतम् ॥ (सा. व.)

भाषा—जन्मकाल में आत्मादिक कारक ग्रहों के बलवान होने से आत्मादिक कथित पदार्थ भी बली होते हैं और निर्बल होने से आत्मादिक भी निर्बल होती है जैसे–जन्म काल में सूर्य बलवान हो तो उस मनुष्य का आत्मबल उत्तम होगा एवं यदि बुध निर्बल है तो वाणी निर्बल होगी, अर्थात् अपना अभिप्राय वर्णन करने में भी असमर्थ होगा। इसी तरह प्रत्येक कारक ग्रहों का विचार जन्म काल और प्रश्नकाल में करना चाहिये।

"विपरीतं शनेः स्मृतम्" का तात्पर्य यह है ; कि जन्म काल में शनि वलवान् हो तो भृत्यवर्ग (नौकर चाकर) और दुःख का विनाश होगा ।

पित्रादि कारक ग्रहों से पिता, माता इत्यादि का अरिष्ट विचार किया जाता है । यथा—

सूर्यात्तातस्य नवमश्चन्द्रान्मातुश्चतुर्थकः,
भौमाद् भ्रातुस्तृतीयो ज्ञात् चतुर्थो मातुलस्य च ।
पुत्रस्य पंचमो जीवाद् भृगोः सप्तमकः स्त्रियः,
क्रूरः खगोऽरिष्टकरो शनेर्मृत्युप्रदोऽष्टमः ॥

(मानसागरी)

भाषा—सूर्य से नवम भाव में पापग्रह हो तो उसके पिता को, चन्द्रमा से चतुर्थ में पाप ग्रह हो तो माता को, मङ्गल से तृतीय में पाप ग्रह हो तो भाइयों को, बुध से चतुर्थ में पाप ग्रह हो तो मातुल (मामा) को, बृहस्पति से पंचम में पापग्रह हो तो पुत्र को, शुक्र से सप्तम में पापग्रह हो तो स्त्री को एवं शनैश्चर से अष्टम में पापग्रह हो तो स्वयं उस जातक को अरिष्ट (क्लेश) होता है यह विचार करना आवश्यक है ।

## भाव—स्थिरकारक

द्युमणिरमरमन्त्री भूसुतः सोमसौम्यौ,
गुरुरिनतनयारौ भार्गवो भानुपुत्रः ।
दिनकरदिविजेज्यौ जीवभानुज्ञमन्दाः,
सुरगुरुरिनसूनुः कारकाः स्युर्विलग्नात् ॥ (जा. पा.)

भाषा—लग्नादि भावों के स्थिर (नैसर्गिक) कारक निम्न लिखित होते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ म | भाव का | ... | सूर्य |
| २ य | ,, ,, | ... | गुरु |
| ३ य | ,, ,, | ... | मंगल |
| ४ र्थ | ,, ,, | ... | चन्द्रमा, बुध |
| ५ म | ,, ,, | ... | बृहस्पति |
| ६ ष्ठ | ,, ,, | ... | शनि, मंगल |
| ७ म | ,, ,, | ... | शुक्र |
| ८ म | ,, ,, | ... | शनि |
| ९ म | ,, ,, | ... | सूर्य, बृहस्पति |
| १० म | ,, ,, | ... | गुरु, सूर्य, बुध, शनि |
| ११ श | ,, ,, | ... | गुरु |
| १२ श | ,, ,, | ... | शनि |

नोट:—जिन भावों के एक से अधिक कारक कहे गये हैं उनमें से बलवान् ग्रह को कारक जानना चाहिये ।

## भावकारक

सूर्यो १ गुरुः २ कुजः ३ सोमो ४ गुरु ५ भौमः ६ सितः ७ शनिः ८। गुरु ९ श्चन्द्रसुतो १० जीवो ११ मन्दश्च १२ भावकारकाः ॥ (बृ. पा.)

भाषा—उपर्युक्त पद्य में हरएक भाव के एक ही एक कारक कहे गये हैं ।

## चरकारक

अंशप्रभृतिभिर्ज्यायान् मध्ये गगनचारिणाम् ।
आत्मकारकसंज्ञः स्यात् स ईष्टे बन्धमोक्षयोः ॥

(जै. प. अ.)

भाषा—सूर्यादि ७ ग्रहों में जिसका अंश सबसे अधिक हो वह आत्मकारक होता है । बन्ध (कारागार वगैरह) मोक्ष (रिहाई या छुटकारा) के विचार में आत्मकारकग्रह श्रेष्ठ होता है ।

सर्वग्रहेभ्योऽधिकांशादिना आत्मकारकस्ततः क्रमेण न्यूनांशा अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र, ज्ञाति, दाराकारकाः
( जा. त. )

भाषा—इसमें ८ कारक कहे गये हैं। अतः सूर्यादि राहुपर्यन्त सभी ग्रहों में जिसका अंशादि अधिक हो; उसको आत्मकारक और न्यून अंशों के क्रम से अमात्य, भ्रातृ, मातृ, पितृ, पुत्र, ज्ञाति, स्त्री इन सबों के कारक समझना।

"आत्माऽधिकः कलादिभिर्नभोगः सप्तानामष्टानां वा"
( जै. सू. )

व्याख्या—सूर्यादिशन्यन्तानां सप्तानां वा राह्वन्तानामष्टानां मध्ये यः नभोगो ग्रहः कलादिभिः अंशादिभिः (कलाया आदयोऽशास्तैरिति व्युत्पत्तिः) अधिकः स आत्मा. आत्मकारक इत्यर्थः—स वन्ध मोक्षयोः वन्धो दुःख विशेषः तत्र ईष्टे समर्थो भवति।

भाषा—जैमिनि सूत्र में विकल्प से ८ कारक कहे गये हैं। किन्तु कारक पक्ष में राहु की गणना अयुक्त है इसीलिये 'अष्टानां वा' कहा गया है। इस विषय में म. म. पं. दुर्गाप्रसाद जी की टीका इस प्रकार है। "सूर्यादितत्पुत्रान्ताः सप्तैव खेटाः वराहमिहिरादिकेशवान्तपौरुषकृतिषु व्यवह्रियन्ते.। यत्तु क्वचित्तमो ग्रहस्य संग्रहः स तावत् सांहितिक इति सम्भावयामः" इत्यादि लेख से ७ ही कारक सिद्ध होते हैं।

सर्वग्रहेभ्योऽधिकांशादिनात्मकारकस्ततः
क्रमेण ज्ञेयः—आत्मा १, अमात्य २, भ्रातृ ३, मातृ ४, पुत्र ५ ज्ञाति ६ दारा ७ इत्यादि चरकारकग्रहाः स्युः—।
( बृ. पा. )

भाषा—बृहत् पाराशर के इस लेख से भी ७ ही कारक सिद्ध होते हैं। वस्तुतः शन्यन्त ७ ही ग्रहों का दश वर्ग निरूपण एवं बलाबलविवेक जातकपद्धतियों में किया गया है एवं भावों के जो स्थिरकारक जातकपारिजात या बृहत् पाराशरादि ग्रन्थों में कहे गये हैं; उनमें भी राहु, केतु की गणना नहीं की है। अतएव कारक विवेक में राहु की गणना असङ्गत होने से सप्त ग्रहों द्वारा सिद्ध कर कारकचक्र आगे लिखा जाता है।

उदाहरणार्थ ग्रह स्पष्ट (पृष्ट ६५) द्वारा आगे कारक चक्र स्पष्ट किया जाता है।

## कारक-चक्र

| कारक | आत्मा | अमात्य | भ्रातृ | मातृ | पुत्र | ज्ञाति | स्त्री |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रह | गुरु | सूर्य | चन्द्र | शनि | बुध | शुक्र | भौम |

## कारकांश साधन

आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हों; उसी को लग्न मान कर जन्मस्थ सभी ग्रहों को (यथा राशि में ही) रखने से जो कुण्डली होती है; उसको कारकांशकुण्डली कहते हैं।

## कारकांश-कुण्डली
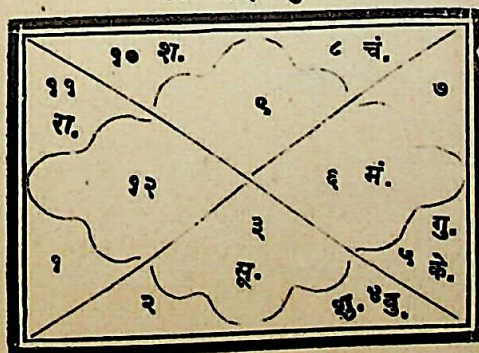
उदाहरण—आत्मकारक ग्रह गुरु है; गुरु धनुराशि के नवांश (पृ. १५१) में है। अतः धनुराशि लग्न में मान कर सभी ग्रहों को स्थापित कर आगे कारकांश कुण्डली बनाई जाती है।

## स्वांश-साधन

"अत्रवहुभिर्नवांशकुण्डल्यां स्वस्वनवांशेषु ग्रहान् चाल्यन्ते"
(जै. प. अ.)

कारकांश कुण्डली निर्माण की दूसरी विधि यह भी है; कि प्रत्येक कारक ग्रहों को अपनी २ नवांश राशि में रखे; एवं आत्मकारक नवांश राशि को लग्न माने। ऐसी कुण्डली को कारकांश या स्वांश कुण्डली कहते हैं। उदाहरणार्थ आगे स्वांश-कुण्डली निरूपण की जाती है। पृ. १५१ में दशवर्ग चक्र स्वस्वनवांशस्थ ग्रह देखिये।

## स्वांश-कुण्डली
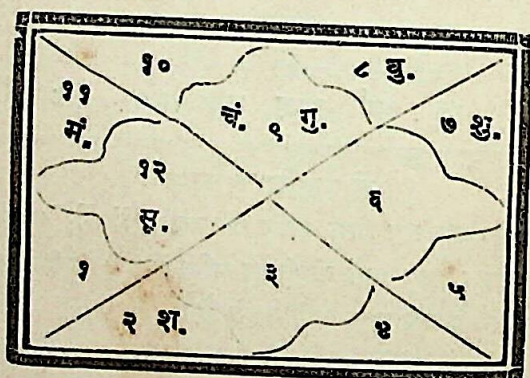
नोट—इन कारकों का फल कारकफलविवेक में लिखा जायगा।

इति कारकविवेकः

## दशाविवेक

ग्रहों के फल जानने के लिये अनेकों ग्रन्थों में दशाओं के अनेक भेद बताये गये हैं। केशव, दामोदर, गर्ग, वराह मिहिर आदि आचार्यों ने अपने २ मत से देशकालानुसार भिन्न २ दशाओं को बताया है। केवल वृहत् पाराशर में ही दशाओं के ४२ भेद लिखे गये हैं; एक आचार्य का मत यह है कि—

गुर्जरे कच्छसौराष्ट्रे पाञ्चाले सिन्धुपर्वते।
एतेष्वष्टोत्तरी श्रेष्ठान्यत्र विंशोत्तरा स्मृता॥

वराहमिहिर ने लिखा है कि—

'आयुः कृत येन हि यत् तदेव कल्प्या दशा सा प्रबलस्य पूर्वा।'

अर्थात् जिससे आयु का निर्णय किया गया हो उसकी दशा साधन करे। यह युक्ति युक्त वाक्य है। हो सकता है कि आयु कल्पना की गई दशा का साधन करने से आयु विचार समय ठीक होता हो। परन्तु जन्म योगायोगों का फल क्या आयु कल्पित दशा साधन से ठीक २ निकल सकता है। सभी योगों के लिये तो यह कहा गया है कि—

फलानि नक्षत्रदशाप्रकारेण विवृण्महे।
दशा विंशोत्तरी ग्राह्या चात्र नाष्टोत्तरी मता॥
(ल. पारा.)

जातक शास्त्र के आचार्यों ने ग्रहों के शुभाशुभत्व फल काल जानने के लिये विशेषतः विंशोत्तरी को ही माना है। अन्यच्च—

"मारकार्थे विचक्षणैः" (दैवज्ञकल्पद्रुम)

अर्थात् मारकेशनिर्णय के लिये विंशोत्तरी दशा को ही प्रधान माना है। अतः विंशोत्तरी दशा का साधन लिखा जाता है।

## विंशोत्तरी–दशा

रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपतिमिता,
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ।
रवाविन्द्वावारे तमसि च गुरौ भानुतनये,
बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥

(भाव कुतूहल)

भाषा—सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की दशा १० वर्ष, भौम की दशा ७ वर्ष, राहु की दशा १८ वर्ष, गुरु की दशा १६ वर्ष, शनि की दशा १९ वर्ष, बुध की दशा १७ वर्ष, केतु की दशा ७ वर्ष एवं शुक्र की दशा २० वर्ष को होती है।

नयनोनजन्तुर्भमंकहृत्क्रमशोऽर्केन्दुकुजागुसूरयः ।
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तु दशाधिपास्तथा ।

भाषा—अश्विनी से जन्म नक्षत्र तक गिनकर दो कम करे; शेष में ९ का भाग दे। लब्धि का त्याग करें; शेष में १ बचें तो सूर्य दशा, २ बचे तो चन्द्रदशा, ३ बचे तो भौमदशा, ४ बचे तो राहुदशा ५ बचे गुरुदशा, ६ बचे तो शनिदशा, ७ बचे तो बुधदशा, ८ बचे तो केतुदशा, ० बचे तो शुक्रदशा जानना। स्पष्टता के लिये नीचे चक्र दिया जाता है।

### नक्षत्रद्वारा ग्रहदशा–चक्र

| ग्रह | सूर्य | चन्द्र | कुज | राहु | जीव | शनि | बुध | केतु | शुक्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २० |
| नक्षत्र | कृ.<br>उ. फा.<br>उ. षा | रो.<br>ह.<br>श्र. | मृ.<br>चि.<br>ध. | आ.<br>स्वा.<br>श. | पुन.<br>वि.<br>पू. भा. | पु.<br>ऽनु.<br>उ. भा. | श्ले.<br>ज्ये.<br>रे. | म.<br>मू.<br>अ. | पू. फा.<br>पू. षा.<br>भ. |

# दशा-साधन

स्वजन्मकालिकीदशा भयातनाडिकाहता,
भभोगनाडिकोद्धृता फलं गता दशा भवेत् ।
अथानया विवर्जिता स्वजन्मकालिकीदशा,
दशात्र भोग्यसंज्ञिता ततः शुभाशुभं वदेत् ॥

भाषा—जिस नक्षत्र में जन्म हो; उसके अनुसार ग्रह दशा चक्र से दशा जानना। भयात में दशा वर्ष से गुणा करे। उस गुणनफल में भभोग से भाग दे; शेष में १२ का गुणा कर भभोग से भाग दे; शेष में ३० का गुणाकर भभोग से भाग दे। फिर लब्धि के भुक्त दशा वर्षादिकों को दशा वर्ष में घटावे। शेष भोग्य दशावर्षादि होंगे।

उदाहरण—भयात ३।२९ भभोग ५५।५९ (पृष्ट ७५) जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा। नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा चक्र (पृष्ट १७८) से ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध दशा है और बुध दशा. १७ वर्ष की होती है। त्रैराशिक द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

भयात घटी ३ × ६० + २९ = २०९ पलात्मक भयात

भभोग घटी ५५ × ६० + ५९ = ३३५९ पलात्मक भभोग

∴ ३३५९ पल में $=$ १७ वर्ष

∴ १ पल में $= \frac{१७}{३३५९}$ वर्ष

∴ २०९ पल में $= \frac{२०९ \times १७}{३३५९}$ वर्ष

=२०९ × १७

३३५९) ३५५३ (१ वर्ष
३३५९
१९४ × १२

३३५९ २३२८(० मास
००००
२३२८ × ३०

३३५९)६९८४०(२० दिन
६७१८
२६६०
००००
२६६०

=दशावर्षादि १७।०। ० में

=भुक्तदशा वर्षादि १।०।२० घटाया।

शेष १५।११।१० भोग्यदशा

उदाहरणार्थ नीचे विंशोत्तरी दशा चक्र लिखा जाता है।

## विंशोत्तरी दशा

| भुक्त बु. | भोग्य बु. | के. | शु. | सू. | चं. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १५ | ७ | २० | ६ | १० | वर्ष |
| ० | ११ | | | | | मास |
| २० | १० | | | | | दिन |
| १९ ९० | २० ०६ | २० १३ | २० ३३ | २० ३९ | २० ४९ | संवत् |
| २ ९ | १ २९ | १ २९ | १ २९ | १ २९ | १ २९ | उत्तीर्णार्क |

## चन्द्रद्वारा दशा–साधन

स्फुटतरो हिमगुः कलिकात्मकः,
खखगजैर्विभजेद्गतऋक्षकम् ।
तदुडुत्रषर्गुणं च समादिकं,
खखगजैर्विभजेत्फलमत्र च ॥

भाषा—चन्द्र स्पष्ट की कला बनाकर ८०० का भाग दे; लब्धि में अश्विन्यादि गतनक्षत्र की संख्या प्राप्त होगी। शेष वर्तमान नक्षत्र की भुक्त कला जानना। नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा चक्र पृष्ट १७८ से वर्तमान नक्षत्रानुसार ग्रहदशा वर्ष ग्रहण करे; शेष कला में दशावर्ष से गुणा करे; ८०० से भाग दे; तो लब्धि में वर्ष प्राप्त होंगे। शेप में १२ का गुणा कर चन्द्र स्पष्ट की विकला जोड़ दे; ८०० से भाग देने पर लब्धि में मासे प्राप्त होंगे; शेष में ३० का गुणा कर ८०० से भाग दे; तो लब्धि में दिन प्राप्त होंगे। इन भुक्त वर्षादिकों को दशावर्ष में घटावे; शेष भोग्य वर्षादि प्राप्त होंगे।

उदाहरण—चन्द्र स्पष्ट ७।१७।२९।४६ (पृष्ट ८०)

=चन्द्र राशि ७ × ३० = २१० अंश + १७ अंश = २२७ अंश × ६० = १३६२० कला + २९ कला = १३६४९ ÷ ८०० = लब्धि १७ शेष ४९ कला।

∵ लब्धि १७ है अतः अश्विन्यादि गत नक्षत्र अनुराधा हुआ। वर्तमान ज्येष्ठा नक्षत्रानुसार बुधदशा ( १७ वर्ष ) है। अतः—

= शेष कला ४९ × १७ = ८३३ ÷ ८०० = लब्धि १ (वर्ष), शेष ३३ × १२ = ३९६ + ४६ चन्द्रस्पष्टविकला = ४४२ ÷ ८०० = लब्धि (०) मास, शेष ४४२ × ३० = १३२६० ÷ ८०० = लब्धि १६ (दिन), शेष ४६० त्याग किया।

=लब्धि भुक्त वर्षादि १। ०।१६

=दशावर्षादि १७। ०।० में से
भुक्त वर्षादि १। ०।१६ घटाया
१५।११।१४ भोग्यवर्षादि बुधदशा

नोट—चन्द्र और भयात भभोग से दशा साधन में स्वल्पान्तर रहता है। पर चन्द्र से सूक्ष्म दशा निकलती है। जब कि चन्द्र स्पष्ट में भी सूक्ष्मता की जाय। चन्द्र की अपेक्षा नक्षत्र मान कुछ स्थूल रहता है। अतः चन्द्र द्वारा दशा साधन सूक्ष्म एवं शुद्ध होता है।

## अन्तर्दशा

दशा दशा हता कार्या दशभिर्भागमाहरेत्।
यल्लब्धं तद्भवेन्मासाः शेषत्रिघ्नं दिनं भवेत् ॥

भाषा—दशा दशा का परस्पर गुणा करे, फिर १० से भाग दे, लब्धि में मास प्राप्त होंगे, शेष में ३ से गुणा करे तो दिन प्राप्त होंगे। यदि मास १२ से अधिक हों तो १२ से भाग देकर वर्ष बना लेने से वर्षादि अन्तर्दशा के होते हैं।

उदाहरण—सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा जानना है तो ६ × ६ (सूर्यदशा वर्ष) = ३६ ÷ १० = ३ लब्धि (मास), शेष ६ × ३ = १८ दिन हुए।

सूर्य में चन्द्र की अन्तर्दशा जानना है तो सूर्य दशा वर्ष ६ × १० (चन्द्र दशा वर्ष) = ६० ÷ १० = ६ लब्धि (मास) हुई। इसी प्रकार सभी की अन्तर्दशा जानना चाहिए। सरलता के लिये आगे अन्तर्दशा के चक्र लिखे गये हैं।

# विंशोत्तरी-अन्तर्दशा

| (१) सूर्यान्तर्दशा | | (२) चन्द्रान्तर्दशा | | (३) कुजान्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि |
| सू. | ०।३।१८ | चं. | ०।१०।० | कु. | ०। ४।२७ |
| चं. | ०।६।० | कु. | ०।७।० | रा. | १। ०।१८ |
| कु. | ०।४।६ | रा. | १।६।० | जी. | ०।११।६ |
| रा. | ०।१०।२४ | जी. | १।४।० | श. | १। १।९ |
| जी. | ०।९।१८ | श. | १।७।० | बु. | ०।११।२७ |
| श. | ०।११।१२ | बु. | १।५।० | के. | ०। ४।२७ |
| बु. | ०।१०।६ | के. | ०।७।० | शु. | १। २।० |
| के. | ०।४।६ | शु. | १।८।० | आ. | ०। ४।६ |
| शु. | १।०।० | आ. | ०।६।० | चं | ०। ७।० |

| राह्वन्तर्दशा | | जीवान्तर्दशा | | शन्यन्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि |
| रा. | २।८।१२ | जी. | २।१।१८ | श. | ३।०।३ |
| जी. | २।४।२४ | श. | २।६।१२ | बु. | २।८।९ |
| श. | २।१०।६ | बु. | २।३। ६ | के. | १।१।९ |
| बु. | २।६।१८ | के. | ०।११।६ | शु. | ३।२।० |
| के. | १।०।१८ | शु. | २।८। ० | आ. | ०।११।१२ |
| शु. | ३।०। ० | आ. | ०।९।१८ | चं. | १।७।० |
| आ. | ०।१०।२४ | चं. | १।४। ० | कु. | १।१।९ |
| चं. | १।६। ० | कु. | ०।११।६ | रा. | २।१०।६ |
| कु. | १।०।१८ | रा. | २।४।२४ | जी. | २।६।१२ |

| (७) बुधान्तर्दशा | | (८) केत्वन्तर्दशा | | (९) शुक्रान्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि |
| बु. | २।४।२७ | के. | ०।४।२७ | शु. | ३।४।० |
| के. | ०।११।२७ | शु. | २।० | आ. | १।०।० |
| शु. | २।१०।० | आ. | ०।४।६ | चं. | १।८।० |
| आ. | ०।१०।६ | चं. | ०।७।० | कु. | १।२।० |
| चं. | १।५।० | कु. | ०।४।२७ | रा. | ३।० ० |
| कु. | ०।११।२७ | रा. | १।०।१८ | जी. | २।८।० |
| रा. | २।६।१८ | जी. | ०।११।६ | श. | ३।२।० |
| जी. | २।३।६ | श. | १।१।९ | बु. | २।१०।० |
| श. | २।८।९ | बु. | ०।११।२७ | के. | १।२।० |

उदाहरणार्थ नीचे अन्तर्दशा चक्र लिखा गया है।

## बुधान्तर्दशा

| बु. | के. | शु. | आ. | चं. | कु. | रा. | जी. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>४<br>७ | ०<br>११<br>२७ | २<br>१०<br>० | ०<br>१०<br>६ | १<br>५<br>० | ०<br>११<br>२७ | २<br>६<br>१८ | २<br>३<br>६ | २<br>८<br>९ |
| १९<br>९१ | १९<br>९२ | १९<br>९५ | १९<br>९६ | १९<br>९७ | १९<br>९८ | २०<br>०१ | २०<br>०३ | २०<br>०६ |
| ६<br>२६ | ६<br>२३ | ४<br>२३ | २<br>२९ | ७<br>२९ | ७<br>२६ | २<br>१४ | ५<br>२० | १<br>२९ |

नोट—बुधान्तर्दशा वर्षादि २।४।२७ हैं; परन्तु जन्मकाल से पूर्व ही वर्षादि १।०।२० भुक्त है।

अतः २।४।२७ में
भुक्तवर्षादि १ ।०।२० घटाया
शेष १।४। ७ बुध के नीचे (पृ १८४) रखा

इन वर्षादिकों में जन्म का वर्ष एवं सूर्य के राशि अंश जोड़ते जाने से अभीष्ट दशा काल निकल आयगा। कहीं २ शकाब्द, कहीं सन् (ईशवी आदि), कहीं आयु के गतवर्षादि जोड़ने की प्रथा है। पर है एक ही बात। किसी को भी जोड़कर अभीष्ट काल शुद्ध जान लेना ही परमावश्यक है।

दशा निर्णय में अष्टोत्तरी दशा पर स्वरशास्त्र का मत निम्न लिखित है।

दशाप्यष्टोत्तरी शुक्ले कृष्णे विंशोत्तरी मता।
गणनीया दशा सुज्ञैस्तपुमेयेश्वरसम्मतम्॥
(स्वरशास्त्र)

भाषा—जिसका शुक्ल पक्ष में जन्म हो तो अष्टोत्तरी दशा एवं कृष्ण पक्ष में जन्म हो तो विंशोत्तरी दशा से ग्रहों शुभाशुभ काल जानना चाहिए। यह स्वर शास्त्र का मत है।

नोट—हो सकता है कि शुक्ल पक्ष में चन्द्र की प्रबलता एवं चन्द्राधार से अष्टोत्तरो दशा द्वारा ग्रहों का शुभाशुभत्व काल शुद्ध आता हो। इसी से अष्टोत्तरी दशा का मत वर्तमान काल में खास कर दक्षिण प्रान्त में विशेष प्रचलित है। अतः आगे अष्टोत्तरी दशा साधन लिखा जाता है।

## अष्टोत्तरी-दशा

अष्टादशांशः क्रियतेंऽशुमाली,
लब्धं द्विसार्धं क्रियते हिमांशुः।
त्रिभागशूरः सकलश्च भौमः-,
सूर्यस्यत्र्यंशः सरुक्‌ः शशीज्ञः॥

भानोस्त्रिभागः कुजयुक्तसौरि-,
रर्धं कुजश्चन्द्रयुतो गुरुश्च।
भानोर्द्विगुण्यः क्रियते च राहु-,
हिमांशुभानुसहितौ च शुक्रः॥

स्पष्टार्थ—अष्टोत्तरी (१०८ वर्ष की) दशा में सूर्यदशा ६ वर्ष, चन्द्रदशा १५ वर्ष, भौम दशा ८ वर्ष, बुध दशा १७ वर्ष, शनि दशा १० वर्ष, गुरुदशा १९ वर्ष, राहु दशा १२ वर्ष, शुक्रदशा २१ वर्ष की होती है।

## दशाग्रहज्ञान

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत्।
रौद्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह॥

भाषा—अभिजित् के सहित आर्द्रादि नक्षत्रों को पाप ग्रहों में चार २ और शुभ ग्रहों में तीन २ स्थापित करे; तो दशा ग्रह स्पष्ट होगा। स्पष्टता के लिये नीचे चक्र दिया जाता है।

| सू. | चं. | मं. | बु. | श. | गु. | रा. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ. | म. | ह. | अ. | पू.षा. | ध. | उ. | कृ. |
| पुन. | पू.फा. | चि. | ज्ये. | उ. षा. | श. | रे. | रो. |
| पु. | उ. फा. | स्वा. | मू. | अभि. | पू. | अ. | मृ. |
| श्ले. | | वि. | | श्र. | | भ. | |

नोट—भयात, भभोग से या चन्द्र स्पष्ट से पूर्ववत् (विंशोत्तरी प्रकार दशा साधन करना चाहिए।

उदाहरण—भयात ३।२९ भभोग ५५।५९ (पृष्ट ७५) जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा

=पलात्मक भयात २०९

„ भभोग ३३५९

=भयात पल २०९ × १७ (अष्टोत्तरी बुधदशा वर्ष)

```
                    १४६३
                    २०९
                   ------
भभोगपल ३३५९ ) ३५५३ ( १ वर्ष
                   ३३५९
                   ------
                    १९४ × १२
                   ------
        ३३५९ ) २३२८ ( ० मास
                   ००००
                   ------
                   २३२८ × ३०
                   ------
        ३३५९ ) ६९८४० ( २० दिन
                   ६७१८
                   ------
                   २६६०
                   ००००
                   ------
                   २६६०
```

=बुधदशावर्ष १७–१।०।२०=भोग्यदशा वर्षादि १५।११।१०

## अष्टोत्तरी दशाचक्र

| भु. बु. | भो. बु. | श. | गु. | रा. | शु. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १<br>०<br>२० | १५<br>११<br>१० | १० | १९ | १२ | २१ | वर्ष<br>मास<br>दिन |
| १९<br>९० | २०<br>०६ | २०<br>१६ | २०<br>३५ | २०<br>४७ | | संवत् |
| २<br>१९ | १<br>२९ | १<br>२९ | १<br>२९ | १<br>२९ | | उत्तीर्णार्क |

## अन्तर्दशा साधन

महादशा स्वस्वदशाब्दनिघ्ना,
भक्ता गजाकाशकुभिः समाद्याः ।
अन्तर्दशाः स्युर्गगनेचराणां,
तदैक्यभावो हि महादशा स्यात् ॥

भाषा—दशा, दशा का परस्पर गुणाकर १०८ से भाग दे; लब्धि में वर्ष, शेष में १२ का गुणा कर १०८ से भाग दे; लब्धि में मास, शेष में ३० का गुणा कर १०८ से भाग दे; लब्धि में दिन, शेष में ६० का गुणा कर १०८ से भाग दे; लब्धि में घटी एवं शेष में शून्य रहेगा।

उदाहरण—सूर्य में सूर्य की अन्तर्दशा जानना है अतः—

=सूर्य दशा वर्ष ६ × ६
१०८ ) ३६ ( ० वर्ष
००
३६ × १२
१०८ ) ४३२ ( ४ मास
४३२
×

सूर्य में सूर्यान्तर्दशा वर्षादि ०।४।०।० हुए । इसी प्रकार सभी ग्रहों की अन्तर्दशाओं को जानना। सरलता के लिये आगे अन्तर्दशा के चक्र लिखे जाते हैं।

# अष्टोत्तरी-अन्तर्दशा

| (१) सूर्यान्तर्दशा | | (२) चन्द्रान्तर्दशा | | (३) कुजान्तर्दशा | | (४) बुधान्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्र | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र | वर्षादि |
| सू. | ०।४।०।० | चं | २।१।०।० | मं. | ०।७।३।२० | बु. | २।८।३।२० |
| चं. | ०।१०।०।० | मं. | १।१।१।०।० | बु | १।३।३।२० | श. | १।६।२६।४० |
| मं. | ०।५।१० ० | बु. | २।४।१।०।० | श. | ०।८।२६।४० | गु. | २।११।२६।४० |
| बु | ०।११।१।०।० | श. | १।४।२०।० | गु. | १।४।२६।४० | रा. | १।१०।२०।० |
| श | ०।६।२०।० | गु. | २।७।२०।० | रा. | ०।१०।२०।० | शु. | ३।३।२०।० |
| गु. | १।०।२०।० | रा. | १।८।०।० | शु. | १।६।२०।० | सू. | ०।११।१।०।० |
| रा. | ०।८।०।० | शु. | २।११।०।० | सू. | ०।५।१०।० | चं. | २।४।१०।० |
| शु. | १।२।०।० | सू. | ०।१०।०।० | चं. | १।१।१०।० | मं. | १।३।३।२० |

| (५) शन्यन्तर्दशा | | (६) गुर्वन्तर्दशा | | (७) राह्वन्तर्दशा | | (८) शुक्रान्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्र. | वर्षादि | ग्र | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि | ग्र. | वर्षादि |
| श. | ०।११।३ २० | गु. | ३।४।३।२० | रा. | १।४।०।० | शु. | ४।१।०।० |
| गु. | १।९।३।२० | रा. | २।१।१।०।० | शु. | २।४।०।० | सू. | १।२।०।० |
| रा. | १।१।१।०।० | शु. | ३।८।१।०।० | सू. | ०।८।०।० | चं. | २।११।०।० |
| शु. | १।११।१।०।० | सू. | १।०।२०।० | चं. | १।८।०।० | मं. | १।६।२०।० |
| सू. | ०।६।२०।० | चं. | २।७।२०।० | मं. | ०।१०।२०।० | बु | ३।३।२०।० |
| चं. | १।४।२०।० | मं | १।४।२६।४० | बु. | १।१०।२०।० | श. | १।११।१।०।० |
| मं. | ०।८।२६।४० | बु | २।११।२६।४० | श. | १।१।१।०।० | गु. | ३।८।१।०।० |
| बु. | १।६।२६।४० | श | १।९।३।२० | गु. | २।१।१।०।० | रा | २।४।०।० |

नोट—विंशोत्तरी दशा की तरह इसकी भी अन्तर्दशा में संवत् एवं सूर्य राश्यादि जोड़ कर रखना चाहिए।

## योगिनी-दशा

श्री भगवान् शंकर एवं गौरी देवी के सहालाप में योगिनी दशा का विधान बताया गया है। इसमें ८ योगिनी की दशायें हैं; जो कि ३६ वर्ष में पूर्ण हो जाती हैं। किसी २ का मत है कि पुनः इन्हीं दशाओं का भोग होता है। परन्तु प्रायः इनका फल ३६ वर्ष तक ही मिलता है आगे यही निष्फल हो जाती हैं। वर्तमान काल में इसका भी प्रचार है अतः योगनी दशा साधन एवं इनके स्वामियों के नाम लिखे जाते हैं।

## योगिनी-संज्ञा

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिकापि च।
उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्यष्टदशाः स्मृताः॥

भाषा—१ मंगला, २ पिंगला, ३ धान्या, ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, ८ संकटा ये आठों योगिनी दशाओं के नाम हैं।

## वर्ष-संख्या

एकद्वित्रीणि पंचषट् सप्तकानि च।
अष्टवर्षाणि हि भवेन्मंगलादावनुक्रमात्॥

भाषा—मंगलादि दशाओं की वर्ष भोग संख्या क्रमशः १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ हैं।

## योगिनी-दशा-स्वामी

अथासामधोशः क्रमान्मंगलातः,
शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसुनुः ।
बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाः,
सुतः संकटायास्तथान्ते च केतुः ॥

भाषा—मंगलादि दशाओं के स्वामी क्रमशः चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध, शनि, शुक्र होते हैं। केवल संकटा दशा के पूर्वार्ध (४ वर्ष तक) में राहु, उत्तरार्ध (५ से ८ वर्ष तक) में केतु स्वामी होता है।

## योगिनी-दशा-साधन

स्वर्क्षं पिनाकिनयनैः संयोज्यं वसुभिर्भजेत् ।
योगिन्यष्टौ समाख्याताः शून्यपातेन संकटा ॥

भाषा—जन्म नक्षत्र में ३ जोड़कर आठ से भाग दे; लब्धि त्याग कर शेष में क्रमशः मंगलादि दशा, एवं शून्य (०) शेष में संकटा दशा जनना।

नोट—विंशोत्तरी दशा की तरह भयात, भभोग या चन्द्र स्पष्ट से योगिनी दशा के भुक्त भोग्य वर्षादि साधन करना चाहिए।

उदाहरण—भयात ३।२९, भभोग ५५।५९ जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा (पृष्ट ७५) अश्विन्यादि जन्म नक्षत्र (ज्येष्ठा) पर्यन्त संख्या १८ है। अतः—

१८ + ३ = २१ ÷ ८ = लब्धि २ का त्याग किया, शेष ५ मंगलादि क्रमशः गणना करने पर भद्रिका दशा हुई। सरलता के लिये नक्षत्रानुसार योगिनी दशा चक्र आगे लिखा जाता है।

## योगिनी-दशा-चक्र

| दशा | मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ईश | चं. | सू | गु. | मं. | बु. | श. | शु. | रा. के. |
| नक्षत्र | आ. चि. श्र. | पुन. स्वा. ध. | पु. त्रि. श | श्ले. ऽनु पू. अ. | म. ज्ये. उ. भ. | पूफा. मू. रे. कृ. | उफा पूषा. रो. | ह. उषा. मृ |
| वर्ष | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |

उदाहरण—ज्येष्ठा नक्षत्र होने से योगिनी दशा-चक्र द्वारा भद्रिका दशा हुई।

पलात्मक भयात २०९ × ५ (भद्रिका वर्ष)
पलात्मक भभोग ३३५९)१०४५(० वर्ष
0000
१०४५ × १२
३३५९)१२५४०(३ मास
१००७७
२४६३ × ३०
३३५९)७३८९०(२१ दिन
६७१८
६७१०
३३५९
३३५१

नोट—शेष अर्धाधिक होने से दिन २१ के स्थान में २२ माना गया है।

=भुक्तदशा वर्षादि ०।३।२२.
भोग दशा वर्ष ५—०।३।२२=४।८।८ भोग्य दशा वर्ष

## योगिनी—दशा

| भु. भ. | भो. भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | पि. | धा. | भ्रा. | दशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बु. | बु. | श. | श. | रा. के. | चं. | सू. | गु. | मं. | स्वामी |
| ० | ४ | ६ | ७ | ८ | १ | २ | ३ | ४ | वर्ष |
| ३ | ८ | | | | | | | | मास |
| २२ | ८ | | | | | | | | दिन |
| १९ ९० | १९ ९४ | २० ०० | २० ०७ | २० १५ | २० १६ | २० १८ | २० २१ | २० २५ | संवत् |
| २ १९ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | १० २७ | उत्तीर्णाके |

## अन्तर्दशा—साधन

अथान्तर्दशायाः प्रकारं प्रवच्मि,
दशा वार्षिकं स्वस्ववर्षेण गुण्यम् ।
ततः षट् त्रिभिर्लब्धवर्षादिका सा,
सदा खेटचिह्नैर्विधेया फलार्थम् ॥

भाषा—दशा दशा की वर्ष संख्या का परस्पर गुणा कर ३६ से भाग देने पर अन्तर्दशा के वर्षादिक लब्ध होंगे।

उदाहरण—मंगला में मंगला की अन्तर्दशा जानना है तो—

=मंगला वर्ष १×१ मंगलावर्ष=१÷३६=लब्धि ० (वर्ष), शेष १×१२=१२÷३६=लब्धि ० (मास), शेष १२×३०=३६०÷३६=लब्धि १० (दिन) शेष ० (शून्य)

=मंगला में मंगलान्तर्दशा वर्षादि ०।०।१० हुए। इसी प्रकार साधन कर अन्तर्दशा चक्र लिखे गये हैं।

# योगिनी-अन्तर्दशा

| मंगलान्तर्दशा | | पिंगलान्तर्दशा | | धान्यान्तर्दशा | | भ्रामर्यन्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| द. | वर्षादि | द. | वर्षादि | द. | वर्षादि | द. | वर्षादि |
| मं. | ०।०।१० | पिं. | ०।१।१० | धा. | ०।३।० | भ्रा | ०।५।१० |
| पिं. | ०।०।२० | धा. | ०।२।० | भ्रा | ०।४।० | भ. | ०।६।२० |
| धा. | ०।१।० | भ्रा | ०।२।२० | भ. | ०।५।० | उ. | ०।८।० |
| भ्रा | ०।१।१० | भ. | ०।३।१० | ब. | ०।६।० | सि. | ०।९।१० |
| भ. | ०।१।२० | उ. | ०।४।० | सि. | ०।७।० | सं. | ०।१०।२० |
| उ. | ०।२।० | सि. | ०।४।२० | सं. | ०।८।० | मं. | ०।१।१० |
| सि. | ०।२।१० | सं. | ०।५।१० | मं. | ०।१।० | पिं. | ०।२।२० |
| सं. | ०।२।२० | मं. | ०।०।२० | पिं. | ०।२।० | धा. | ०।४।० |

| भद्रिकान्तर्दशा | | उल्कान्तर्दशा | | सिद्धान्तर्दशा | | संकटान्तर्दशा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| द. | वर्षादि | द. | वर्षादि | द. | वर्षादि | द. | वर्षादि |
| भ. | ०।८।१० | उ. | १।०।० | सि. | १।४।१० | सं. | १।९।१० |
| उ. | ०।१०।० | सि. | १।२।० | सं. | १।६।२० | मं. | ०।२।२० |
| सि | ०।११।२० | सं. | १।४।० | मं. | ०।२।१० | पिं. | ०।५।१० |
| सं. | १।१।१० | मं. | ०।२।० | पिं. | ०।४।२० | धा. | ०।८।० |
| मं. | ०।१।२० | पिं. | ०।४।० | धा. | ०।७।० | भ्रा | ०।१०।२० |
| पिं. | ०।३।१० | धा. | ०।६।० | भ्रा | ०।९।१० | भ. | १।१।१० |
| धा. | ०।५।० | भ्रा | ०।८।० | भ. | ०।११।२० | उ. | १।४।० |
| भ्रा | ०।६।२० | भ. | ०।१०।० | उ. | १।२।० | सि. | १।६।२० |

नोट—इन सभी दशाओं के फल प्रसंगानुसार आगे दशा फल विवेक में लिखे जांयगे ।

इति दशाविवेकः

## वर्ष-विवेक

ताजिक शास्त्र की प्रवृत्ति प्राचीन नहीं। प्राचीन काल के आचार्य जन्म लग्न को प्रथम वर्ष, धनभाव को द्वितीय वर्ष इत्यादि मानते थे। ताजिक वर्ष पद्धति यवन कालीन है। ताजिक शास्त्र में जातक शास्त्र की तरह लग्न, ग्रह स्पष्ट, भाव चलितादि बताये गये हैं इत्यादि आगे स्पष्ट कर लिखे जाते हैं।

## वर्षेष्ट-साधन

त्र्यस्थापितो जन्मगताब्दवृन्दकैः,
क्रमात्सपादार्धकसार्धकी कृते।
समन्वितो जन्मदिनादिकेन,
वर्षप्रवेशस्य घटीमितिः स्यात्॥

इस श्लोक का किसी आचार्यने एक दोहा में स्पष्टार्थ किया है।

वर्ष सवाया अर्ध करि, पुनि ड्योढ़ा करि देय।
वारघटी पल जोरि कै, वर्ष ध्रुवा कहि देय॥

भाषा—जन्म संवत् को अभीष्ट संवत् में घटावे; शेष (गताब्द) को तीन स्थान में रखे। क्रमशः $१\frac{१}{४}$, $\frac{१}{२}$, $१\frac{१}{२}$ का गुणा कर सवों को जोड़ने से वर्षमान ध्रुवा (वार घटी, पल) प्राप्त होगा। इसमें जन्मवारादि जोड़ने से वर्षेष्ट होता है।

नोट—पल ६० से अधिक हों; तो ६० से भाग देकर लब्धि को घटी में जोड़कर शेष पल के स्थान में रखे। घटी ६० से अधिक हों; तो ६० से भाग देकर लब्धि को वार में जोड़े; शेष घटी के स्थान में रखे। वार ७ से अधिक हों तो ७ से भाग देकर लब्धि का त्याग करे; शेष वार के स्थान में रखना चाहिये।

उदाहरण—संवत् १९९० आषाढ़ शुक्ल १३ बुधवार इष्टकाल ७।३५ (पृष्ट ७०) में जन्म हुआ है। संवत् १९९५ का वर्ष-पत्र बनाना है। तो—

अभीष्ट संवत  १९९५ में
जन्म संवत  १९९० घटाया
५ गताब्द हुए। इनको ३ स्थान में रखा

(१) ५ × १ $\frac{१}{४}$  (२) ५ × $\frac{१}{२}$  (३) ५ × १ $\frac{१}{२}$

(१) = ६।१५।०
(२) = २।३०
(३) = ७।३०

वारादि ६।१७।३७।३० गताब्दीय (५) ध्रुवा हुए। इसमें
जन्मवारादि ४। ७।३५। ० जोड़ा
३।२५।१२।३०

नोट—वर्ष तिथ्यादि जानने के लिये ताजिक शास्त्र में गणित लिखा गया है; परन्तु 'किं वृथा पर्वतलंघनेन' तिथ्यादि जानने की सरल रीति यह है कि जन्म काल का सूर्य एवं वर्ष काल का सूर्य एक ही होता है। जिस दिन अभीष्ट संवत् में वैसा ही (राश्यंशादि) सूर्य हो। उसी तिथि एवं नक्षत्रादि में वर्षप्रवेश होता है।

उदाहरण —जन्मकालिक सूर्य २।१९।३२।२३ है। सं. १९९५ आषाढ़ शुक्ल ८ भौमवार को भी वर्षेष्टकाल (२५।१२) पर इतना ही सूर्य है। अतः ८ भौमवार एवं हस्त नक्षत्रादि में वर्ष-प्रवेश हुआ।

नोट—वर्षध्रुवा, जन्मवारादि जोड़ने से जो वार आवे। वही दिन वर्ष प्रवेश काल में भी होना चाहिए। अन्यथा वर्षप्रवेश वार (दिन) अशुद्ध होता है।

देखिये! वर्षध्रुवा, जन्मवार जोड़ने से तीन आया है। एवं ८ भौमवार (रविवारादि तीसरा दिवस) को वर्षप्रवेश है। अतः शुद्ध है। इसी प्रकार स्पष्ट कर वर्ष सारणी आगे लिखी जाती है।

# वर्ष–सारणी

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ |
| १५ | ३१ | ४६ | २ | १७ | ३३ | ४८ | ४ | १९ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३७ | ५२ | ८ | २३ | ३९ | ५४ |
| ३१ | ३० | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ |
| ३० | ० | ३० | ४ | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० |

| २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ |
| १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ | १ | १६ | ३२ | ४७ | ३ | १८ | ३४ | ४९ |
| ३० | १ | ३३ | ४ | ३६ | ७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | १२ | ५४ | २५ | ५७ |
| ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ३० | ३० | ० |

| ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ |
| ५ | २१ | ३६ | ५२ | ७ | २३ | ३८ | ५४ | ९ | २५ | ४० | ५६ | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ |
| २८ | ० | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० |

| ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ |
| ० | १५ | ३१ | ४७ | २ | १८ | ३३ | ४९ | ४ | २० | ३५ | ५१ | ६ | २२ | ३७ | ५३ | ८ | २४ | ३९ |
| २७ | ५८ | ३० | १ | ३३ | ४ | ३६ | ७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ |
| ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० |

| ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० | ९१ | ९२ | ९३ | ९४ | ९५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० |
| ५५ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १३ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | १ | १७ | ३२ | ४८ | ३ | १९ | ३४ |
| २५ | ५७ | २८ | ० | ३१ | ३ | ३४ | ६ | ३७ | ९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ |
| ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० | ० | ३० |

नोट—यह वर्ष सारणी शुद्ध सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान दिनादि ३६५, १५, ३१, ३१·४ पर से निर्मित हुई है। पर आधुनिक शोधक उक्त वर्षमान में "सार्धैंपलैरष्टभिः" कम किया है। अतः उसका प्रथमांक १।१५।२२।५७ है विशेष सिद्धान्त विवेक में पढ़िये।

नोट—लग्न, चालन, ग्रह स्पष्ट, द्वादश भाव, चलित चक्रादि साधन पृष्ट ६९ से १०२ तक पहिले लिखा जा चुका है। अतः उदाहरणार्थं स्पष्ट करके आगे चक्रादि लिखे जाते हैं।

## वर्ष-पत्र-लेखनपद्धति

श्री शुभ संवत् १९९५ शकाब्दाः १८६० आषाढ़ शुक्ल ८ भौमवासरे हस्तमानं ६।३४ दिनमान ३३।२६ इष्टकालः २५।१२ सूर्यः २।१९।३२।२३ लग्नस्पष्टं ७।४।१७।२४ गताब्दाः ५ प्रवेशाब्दः ६ गतर्क्षं १८।३८ सर्वर्क्षं ६०।५७ चित्रा द्वितीय चरणे वर्षप्रवेशो जातः।

## वर्षलग्न—चक्रम्
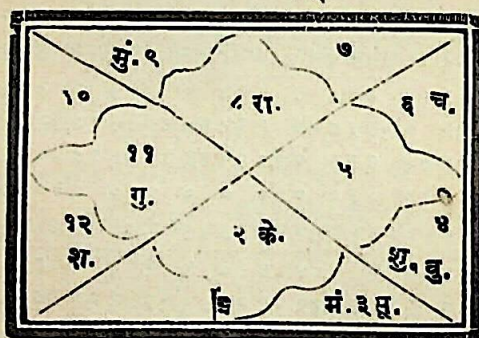
सूर्यादि नवग्रहों के साथ एक ग्रह मुन्था भी ताजिक शास्त्र में माना गया है। इसका १ वर्ष में १ राशि का भोग है। १ मास में २½ अंश एवं १ दिन की गति ५ कला है इसकी एक सी गति रहती है।

## मुन्था-साधन

"सैका गताब्दा विहृता पतङ्गै-,
स्तच्छेषभावे मुथहा जनुर्भात्।"

भाषा—गताब्द संख्या में १ जोड़कर १२ से भाग दे। जन्म लग्न राशि से शेष संख्या तक गिनने पर वर्ष लग्न-चक्र में उसी राशि पर मुन्था रखना चाहिये।

उदाहरण—गताब्द ५ + १ = ६ ÷ १२ = लब्धि (०) शेष ६। जन्म लग्न कर्क (पृष्ठ ९७) से गिनने पर (कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु) धनु राशि पर मुन्था (देखो वर्ष-लग्न-चक्र पृष्ठ १९८) रखा; जो कि वर्ष लग्न से धन भाव में है।

## मुन्था- राश्यादि-साधन

गताः समा जन्मलग्ने योजयित्वा ततः परम्।
द्वादशेनैव विभजेच्छेषे मुन्था वदेत्सुधीः॥

भाषा—जन्म लग्न स्पष्ट के राश्यादि में गताब्द जोड़ कर १२ से भाग दे; शेष मुन्था स्पष्ट होगी।

उदाहरण—जन्म लग्न ३।२९।४१।२० गताब्द ५
= ३।२९।४१।२० में
५।००।००।०० गताब्द जोड़ा
८।२९।४१।२० ÷ १२

= लब्धि (०) शेष ८।२९।४१।२० स्पष्टमुन्थालग्न हुई। यही वर्ष चक्र में रखना चाहिए।

संवत् १९९५ के विक्रमविजयपंचांग (जबलपुर) द्वारा आषाढ़ शुक्ल ८ भौमवार की पंक्ति से चालन द्वारा स्पष्टग्रहचक्र नीचे लिखा जाता है। ऋण चालन वारादि ०।२२।१५ है।

### स्पष्टग्रह–चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | के. | मुं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ५ | २ | ३ | १० | ३ | ११ | ७ | १ | ८ |
| १९ | २७ | २५ | २ | १४ | २९ | १८ | ५ | ५ | २९ |
| ३२ | २५ | ३ | ५४ | ४५ | ७ | ८ | ६ | ६ | ४१ |
| २३ | ८ | ९ | ४३ | २६ | २० | ४५ | ५५ | ५५ | २० |
| ५६ | ७८७ | ४० | १०४ | १ | ६८ | २ | ३ | ३ | ५ |
| ५० | २० | ० | ५३ | ५० | ५१ | ६ | ११ | ११ | ० |
| | | | | व | | | | | |

## द्वादशभाव-चक्र

| ल. | सं. | ध. | सं. | भ्रा. | सं. | सु | सं. | पु. | सं. | रि. | सं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ० | ० |
| ४ | २० | ६ | २१ | ७ | २३ | ९ | २३ | ७ | २१ | ६ | २० |
| १७ | ८ | ० | ५१ | ४२ | ३४ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ० | ८ |
| २४ | ४७ | १० | ३३ | ५६ | १९ | ४२ | १९ | ५६ | ३३ | १० | ४७ |
| **जा.** | **सं.** | **रं.** | **सं.** | **ध.** | **सं.** | **क.** | **सं.** | **ला.** | **सं.** | **व्य.** | **सं.** |
| १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| ४ | २० | ६ | २१ | ७ | २३ | ९ | २३ | ७ | २१ | ६ | २० |
| १७ | ८ | ० | ५१ | ४२ | ३४ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ० | ८ |
| २४ | ४७ | १० | ३३ | ५६ | १९ | ४२ | १९ | ५६ | ३३ | १० | ४७ |

नोट—सूर्य रन्ध्र भाव की विराम सन्धि के एकदम समीप है रन्ध्रभावस्थ सूर्य का फल अनुपात द्वारा कित नेविश्वा शेष है। इसी को स्पष्ट किया जाता है।

उदाहरण—विराम सन्धि २।२१।५१।३३
रन्ध्रभाव २। ६। ०।१०
०।१५।५१।३३

विराम सन्धि २।२१।५१।३३
सूर्य २।१९।३२।२३
०। २।१९।१०

=१५×६०+५१×६०+ ३३=५७०९३ भावसन्ध्यन्तर विकला
=२×६०+१९×६० + १०= ८३५० ग्रहसन्ध्यन्तर विकला
=८३५०×२०=१६७००÷५७०९३=लब्धि २ (विश्वा), शेष ५२८१४×६०=३१६८४÷५७०९३=लब्धि ५५ (प्रति विश्वा), शेष २८७२५ का त्याग किया; तो रन्ध्रभावस्थ सूर्य का फल विश्वादि २।५५ शेष रहा।

# चलित—चक्र

संकेत—वि० सं० = विराम सन्धि । प्रा० सं० = प्रारम्भ सन्धि
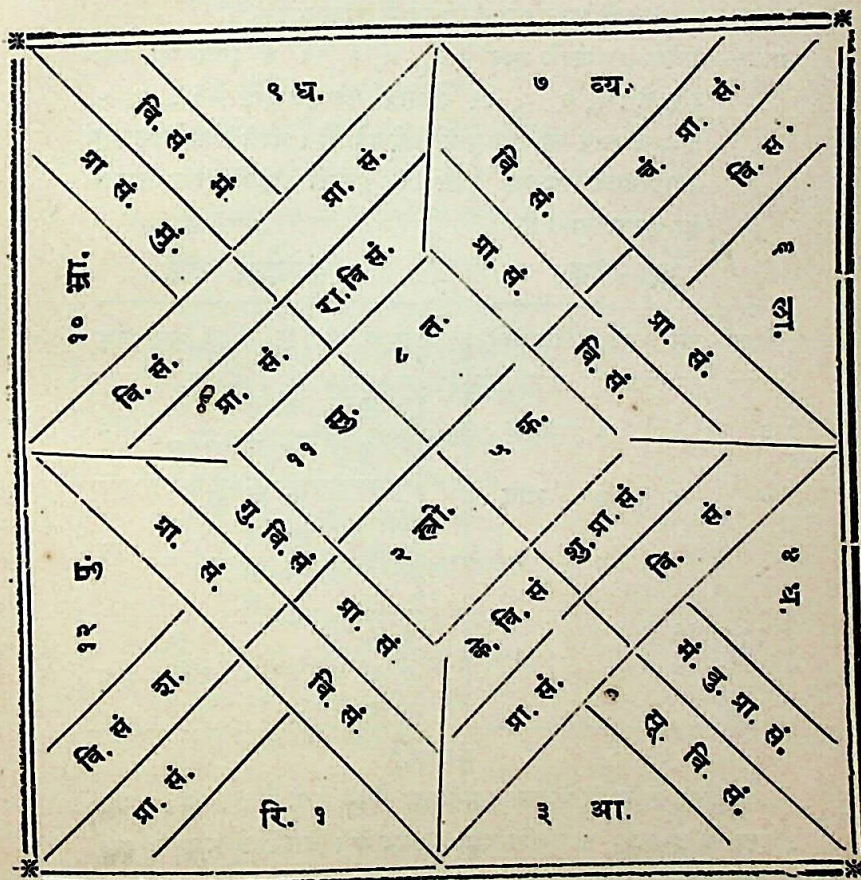
## ताजिकमित्रादि-संज्ञा

मित्रं तृतीयपंचमनवमैकादशगतोऽपि यो यस्य ।
धनमृतिरिष्फेषु च समो ग्रहः स्यादिति ज्ञेयम् ॥
शत्रुस्तथैकतुर्ये जायास्थाने तथा दशमे ।
ताजिकहिल्लाजमतेनैतादृक्कथितमस्माभिः ॥

भाषा—प्रत्येक ग्रह अपने भाव से ३, ५, ९, ११ वें भाव को मित्र दृष्टि से। २, ६, ८, १२ वें भाव को सम दृष्टि से। १, ४, ७, १०, वें भाव को शत्रु दृष्टि से देखते हैं। नीचे मैत्री-चक्र एवं उदाहरणार्थ वर्ष-चक्र (पृष्ट १९८) द्वारा ग्रहमैत्री-चक्र निरूपण कर लिखा जाता है।

### मैत्री-चक्र

| मित्र | सम | शत्रु | मित्रादि |
|---|---|---|---|
| ३ | २ | १ | प्रथम |
| ५ | ६ | ४ | भाव |
| ९ | ८ | ७ | से |
| ११ | १२ | १० | |

### ग्रहमैत्री-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गु. | बु. शु. | गु. | चं. श. | सू. मं. | चं. श. | बु. शु. | मित्र |
| बु. शु. | गु. | बु. शु. | सू. मं. गु. | चं. बु. शु. श. | सू. मं. गु. | गु. | सम |
| चं. मं. श. | सू. मं. श. | सू. चं. श. | शु. | ० | बु. | सू. चं. मं. | शत्रु |

### पंचवर्ग

ताजिक शास्त्र में पंचवर्ग इस प्रकार लिखा गया है। १ गृह, २ उच्च, ३ हद्दा, ४ द्रेष्काण, ५ नवांश यही पञ्चवर्ग हैं। जिसमें १ गृह, २ उच्च, ३ द्रेष्काण, ४ नवांश पहिले क्रमशः पृष्ट १३०, १४३, १३१, १३३, में लिखा जा चुका है। आगे यहां हद्दा साधन प्रकार लिखा जाता है।

## हद्दा

मेषेऽगतर्काष्टशरेषु भागा,
जीवास्फुजिज्ज्ञानशनैश्चराणाम् ।
वृषेऽष्टषण्नागशरानलांशाः,
शुक्रज्ञजीवार्किकुजेशहद्दाः ॥

युग्मे षडंगेषु नगाङ्कभागाः,
सौम्यास्फुजिज्जीवकुजार्किहद्दाः ।
कर्केऽद्रितर्काङ्गनगाब्धिभागाः,
कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥

सिंहेऽगभूताद्रिरसाङ्कभागाः,
सुरेज्यशुक्रार्किबुधारहद्दाः ।
स्त्रियो नगाशाब्धिनगाक्षिभागाः,
सौम्यो शनो जीवकुजार्किनाथाः ॥

तुले रसाष्टाद्रिनगाक्षिभागाः,
कोणज्ञजीवास्फुजिदारनाथाः ।
कीटे नगाब्ध्यष्टशरांगभागाः,
भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥

चापे रवीष्वम्बुधिपञ्च वेदा,
जीवास्फुजिज्ज्ञारशनैश्चराणाम् ।
मृगे नगाद्र्यष्टयुगश्रुतीनां,
सौम्येज्यशुक्रार्किकुजेशहद्दाः ॥

कुम्भे नगांगाद्रिशरेषु भागाः,
शुक्रज्ञजीवारशनैश्चराणाम् ।
मीनेऽर्कवेदानलनन्दपक्षाः,
सितेज्यसौम्यारशनैश्चराणाम् ॥

भाषा—मेष के ६ अंश तक गुरु, ७ से १२ अंश तक शुक्र, १३ से २० अंश तक बुध, २१ से २५ अंश तक भौम, २६ से ३० अंश तक शनि हद्देश होता है। इसी प्रकार वृषभादि राशियों के हद्देश आगे चक्र द्वारा सुस्पष्ट लिखे गये हैं।

## हद्देश-चक्र

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मे. | वृ. ६ | शु. १२ | बु. २० | मं. २५ | श. ३० |
| वृ. | शु. ८ | बु. १४ | गु. २२ | श. २७ | मं. ३० |
| मि. | बु. ६ | शु. १२ | गु. १७ | मं. २४ | श. ३० |
| क. | मं. ७ | शु. १३ | बु. १९ | गु. २६ | श. ३० |
| सिं. | गु. ६ | शु. ११ | श. १८ | बु. २४ | मं. ३० |
| कं. | बु. ७ | शु. १७ | गु. २१ | मं. २८ | श. ३० |
| तु. | श. ६ | बु. १४ | गु. २१ | शु. २८ | मं. ३० |
| वृ. | मं. ७ | शु. ११ | बु. १९ | गु. २४ | श. ३० |
| ध. | गु. १२ | शु. १७ | बु. २१ | मं. २६ | श. ३० |
| म. | बु. ७ | गु. १४ | शु. २२ | श. २६ | मं. ३० |
| कुं. | शु. ७ | बु. १३ | गु. २० | मं. २५ | श. ३० |
| मी. | शु १२ | गु. १६ | बु. १९ | मं. २८ | श. ३० |

उदाहरण—सूर्य २।१९ है अतः सूर्य (मिथुन) के नीचे हद्दा के चौथे भाग अर्थात् भौम के हद्दा में है। इसी प्रकार सभी ग्रहों के हद्देश जानना चाहिए।

## पंचवर्गीवल

पंचवर्गीवल साधन में पहिले उच्च साधन लिखा जाता है।

नीचोनितो ग्रहा षड्भाधिकश्चक्राद्विशोधितः।
तदंशा वह्निभिर्भक्ताः कलाद्यं वलमुच्चजम्॥

भाषा—उच्चवल साधन के लिये ग्रह को अपने नीच राश्यादि में घटावे। शेष यदि ६ राशि से अधिक हो तो चक्र (१२ राशि) में घटावे, शेष के अंश बनाकर ९ से भाग दे; लब्धि में कलादि उच्च वल प्राप्त होगा।

नोट—उच्चांशादि-चक्र पृष्ट १४४ में है।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३

सूर्य नीच राश्यादि ६।१०। ०। ० में

सूर्य २।१९।३२।२३ घटाया

३।२०।२७।३७ शेष

=३ × ३० = ९० + २० = ११० अंश

९ ) ११०।२७।३७ ( १२ कला

९

२०

१८

२ × ६०

१२०

२७

९ ) १४७ ( १६

९

५७

५४

३

= लब्धि १२।१६ सूर्य का उच्चबल हुआ।

आगे गृहादिवल लिखा जाता है।

## पंचवर्गीबल

त्रिंशत्स्वभे विंशतिरात्मतुंगे,
हद्देऽक्षचन्द्रा दशकं द्रकाणे ।
मुसल्लहे पंचलवाः प्रदिष्टा,
विंशोपकाः वेदलवैः प्रकल्प्याः ॥
"स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्भे,
पादोनमर्धं समभेऽरिभेऽङ्घ्रिः ।"

भाषा—स्वगृही ग्रह का ३० विश्वा, उच्चगृही ग्रह का २० विश्वा, स्वहद्दास्थ ग्रह का १५ विश्वा, स्वद्रेष्काणस्थ ग्रह का १० विश्वा, स्वनवांशस्थ ग्रह का ५ विश्वा बल होता है ।

अपने २ अधिकार का बल मित्र गृह में त्रिपाद, समगृह में द्विपाद, शत्रुगृह में पादैक बल होता है । नीचे चक्र लिखा जाता है ।

### बल ज्ञान-चक्र

| | स्व. | मि. | स. | श. |
|---|---|---|---|---|
| गृहेश | ३०<br>० | २२<br>३० | १५<br>० | ७<br>३० |
| हद्देश | १५<br>० | ११<br>१५ | ७<br>३० | ३<br>४५ |
| द्रेष्काणेश | १०<br>० | ७<br>३० | ५<br>० | ३<br>४५ |
| नवांशेश | ५<br>० | ३<br>४५ | २<br>३० | १<br>१५ |

नोट—'विंशतिरात्मतुंगे' का भावार्थ यह है कि स्वोच्च ग्रह का २० कलात्मक बल होता है क्योंकि उच्च राश्यादि से नीच राश्यादि पर्यन्त ग्रह २० कला (बल) से क्रमशः हीन होता है; एवं नीच राश्यादि से उच्च राश्यादि पर्यन्त १ कला से २० कला तक क्रमशः वृद्धि होती है। जब उच्चांश में ग्रह होगा तब २० कला (बल) एवं नीचांश में ग्रह होगा तब शून्य (०) कला (बल) होता है। उच्चांश से नीचांश तक ६ राशि का अन्तर है। तो ६ × ३० = १८० अंश ÷ ९ = २० कलात्मक बल होता है। पूर्वोक्त उदाहरण की तरह उच्चबल साधन करना चाहिए।

यदि नीचांश से ग्रह अधिक हो तो ग्रह में से नीचांश को हीन कर अंश बनावे; ९ से भाग देने पर कलात्मक बल प्राप्त होता है। इस क्रिया में चक्र शुद्धि करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

## विश्वा साधन

"एवं समानीयबलं तदैक्य-,
वेदाप्तभुक्ते हीनबलः शरोनः।"

भाषा—पूर्वोक्त रीति से ग्रहों के बल साधन कर योग करे। फिर योग में ४ से भाग देने पर विश्वात्मक बल होता है। ५ विश्वा से न्यून बल जिस ग्रह का हो; वह हीनबली ग्रह होता है।

## बलीग्रह

पंचाल्पो हीनवीर्यः स्याद्धिको मध्य उच्यते।
दशाधिको बली प्रोक्तः पंचवर्गीबलादिषु॥

भाषा—गृहबल ३० + २० उच्चबल + हद्दाबल १५ + द्रेष्काणबल १० + नवांशबल ५ = ८० कला ÷ ४ = २० विश्वा पूर्ण बल होता है; १ विश्वा से ५ विश्वा तक अल्पबली, ६ से १० विश्वा तक मध्यबली, ११ से २० विश्वा तक पूर्ण बली ग्रह होता है।

उदाहरणार्थ पंचवर्गी बल चक्र लिखा जाता है ग्रह स्पष्ट चक्र पृष्ठ ११९

## ग्रह–पंचवर्गीबल–चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | सलग्नग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बु. ३<br>स.<br>१५<br>० | बु. ६<br>मि.<br>२२<br>३० | बु. ३<br>स<br>१५<br>० | चं. ४<br>मि.<br>२२<br>३० | श. ११<br>स.<br>१५<br>० | चं. ४<br>मि.<br>२२<br>३० | गु. १२<br>स.<br>१५<br>० | मं. ८<br>स.<br>१५<br>० | सराशि गृहेश मित्रादि बल |
| १२<br>१५ | ३<br>५७ | ३<br>३९ | ११<br>५९ | ४<br>२५ | ६<br>२६ | ३<br>३२ | १०<br>४२ | उच्चबल |
| मं. १<br>श.<br>३<br>४५ | मं. ८<br>श.<br>३<br>४५ | श. ११<br>श.<br>३<br>४५ | मं. ८<br>स.<br>७<br>३० | गु. ९<br>स्व.<br>१५<br>० | श १०<br>मि.<br>११<br>१५ | बु. ६<br>मि.<br>११<br>१५ | मं. ८<br>स्व.<br>१५<br>० | सराशि हद्देश मित्रादि बल |
| शु. ७<br>स.<br>५<br>० | शु. २<br>मि.<br>७<br>३० | श. ११<br>श.<br>३<br>४५ | चं. ४<br>मि.<br>७<br>३० | बु. ३<br>स.<br>५<br>० | गु. १२<br>स.<br>५<br>० | चं. ४<br>श.<br>३<br>४५ | मं. ८<br>स्व.<br>१०<br>० | सराशि द्रेष्काणेश मित्रादि बल |
| गु १२<br>मि.<br>३<br>४५ | बु. ६<br>मि.<br>३<br>४५ | शु. २<br>स.<br>२<br>३० | चं. ४<br>मि.<br>३<br>४५ | श. ११<br>स.<br>२<br>३० | गु. १२<br>स.<br>२<br>३० | गु. ९<br>स.<br>२<br>३० | सू. ५<br>श.<br>१<br>१५ | सराशि नवांशेश मित्रादि बल |
| २९<br>४५ | ४०<br>७ | २८<br>३९ | ५३<br>१४ | ४१<br>५५ | ४७<br>४१ | ३६<br>२ | ५१<br>५७ | बलैक्य |
| ७<br>२६<br>१५ | १०<br>१<br>४५ | ७<br>९<br>४५ | १३<br>१८<br>३० | १०<br>२८<br>४५ | ११<br>५५<br>१५ | ९<br>०<br>२ | १२<br>५९<br>१५ | विश्वादि |
| मध्यव | पूर्णव. | मध्यव | पूर्णव. | पूर्णव. | पूर्णव. | मध्यव. | पूर्णव. | बली |

## पंचाधिकारी

जन्मलग्नपतिरब्दलग्नपो,
मुथहाधिप इतस्त्रिराशिपः।
सूर्यराशिपतिरह्नि चन्द्रमा-,
धीश्वरो निशि विमृश्य पंचकम् ॥

भाषा—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुथहाधिप ३, त्रिराशिपति ४, सूर्यराशिपति (यदि दिन में वर्ष प्रवेश हो) व चन्द्र राशिपति (यदि रात्रि में वर्ष प्रवेश हो) ५ यही वर्पपत्रिका में पांच विशेष अधिकारी हैं।

## त्रिराशिपति

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्किशुक्राः,
दिने निशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः।
मेषाच्चतुर्णां हरिभाद्विलोमं,
नित्यं परेष्वार्किकुजेज्यचन्द्रः ॥

भाषा—मेषादि १२ राशियों के दिवा, रात्रि भेद से दो २ त्रिराशिपत्ति कहे गये हैं। स्पष्टतार्थ नीचे त्रिराशिपति चक्र लिखा जाता है।

### त्रिराशिपति-चक्र

| मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | . | ध. | म. | कुं. | मी | राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | शु. | श. | शु. | गु. | चं. | बु. | मं. | श. | मं. | गु. | चं. | दिवा |
| गु. | चं. | बु. | मं. | सू. | शु. | श. | शु. | श | मं. | गु. | चं | रात्रि |

स्पष्टी करण—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो वर्ष लग्न की राश्यानुसार दिवा का त्रिराशिपति ग्रहण करना; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो वर्ष लग्न की राश्यानुसार रात्रि का त्रिराशिपति ग्रहण करना चाहिए।

उदाहरणार्थ नीचे पंचाधिकारिचक्र लिखा जाता है। जन्म लग्न चक्र (पृष्ठ ९७), वर्ष लग्न चक्र (पृष्ट १९८) त्रिश्वावल, पूर्णादिवली (पृष्ठ २०८)

## पंचाधिकारी

| जन्म लग्नेश | वर्ष लग्नेश | मुन्थेश | त्रिराशीश | सूर्यराशीश |
|---|---|---|---|---|
| चन्द्र | भाम | गुरु | भौम | बुध |
| १०<br>१<br>४५<br>पूर्णवली | ७<br>९<br>४५<br>मध्यवली | १०<br>२८<br>४५<br>पूर्णवली | ७<br>९<br>४५<br>मध्यवली | १२<br>१८<br>३०<br>पूर्णवली |

वर्षेश निर्णय के लिये प्रथम दृष्टि ज्ञान एवं दृष्टि साधन प्रकार लिखा जाता है।

## दृष्टि-साधन

दृष्टिः स्यान्नवपंचमे बलवती प्रत्यक्षतः स्नेहदा,
पादोनाखिलकार्यसाधनकरी मेलापकाख्योच्यते।
गुप्तस्नेहकरी तृतीयभवने कार्यस्य संसिद्धिदा,
त्र्यंशोना कथिता उपान्त्यभवने षड्भागदृष्टिर्भवेत् ॥
दृष्टिः पादमिता चतुर्थदशमे गुप्तारिभावा स्मृता-,
न्योन्यं सप्तमभे तथैकभवने प्रत्यक्षवैराखिला।
दुष्टं दृक्त्रितयं क्षुताह्वयमिदं कार्यस्य विध्वंसदं,
संग्रामादिकलिप्रदं दृश इमाः स्युर्द्वादशांशान्तरे ॥

भाषा—ताजिक शास्त्र में ४ प्रकार की दृष्टि बताई गई है। १ प्रत्यक्ष-स्नेहा, २ गुप्तस्नेहा, ३ गुप्तवैरा, ४ प्रत्यक्षवैरा।

५।९ वें भाव में प्रत्यक्षस्नेहा एवं वलवती तथा ४५ कला वाली दृष्टि होती है इसको मेलापका भी कहते हैं। यह कार्य सिद्धि कराने वाली होती है।

३ य भाव में गुप्त स्नेहा एवं ४० कला वाली दृष्टि होती है। एवं यही दृष्टि ११ वें भाव में १० कला की होती है; और यही मित्र दृष्टियां कही जाती हैं।

४।१० वें भाव में गुप्त वैरा एवं १५ कला वाली दृष्टि होती है। १।७ वें भाव में प्रत्यक्षवैरा एवं ६० कला वाली दृष्टि होती है। इन दोनों को क्षुत दृष्टि भी कहते हैं यह कार्य नाश कराने वाली एवं संग्राम कराने वाली होती हैं।

दृश्य, दृष्टा का अन्तर यदि द्वादशांश (बारह भाग) से अधिक न हो तो उक्त फल दृष्टियों का होता है; अन्यथा उक्त फल नहीं होना। नीचे स्पष्टार्थ वोधक दृष्टि चक्र लिखा जाता है।

## दृष्टि-चक्र

| मिलाप दृष्टि | दृष्टि नाम | भाव | फल | कलात्मक दृष्टि वल |
|---|---|---|---|---|
| मित्र दृष्टि | प्रत्यक्षस्नेहा | ५।९ | वलवती, प्रत्यक्ष स्नेहदा | ४५ |
| | गुप्तस्नेहा | ३ | कार्य सिद्धि करी | ४० |
| | | ११ | स्नेह वर्द्धिनी | १० |
| शत्रु या क्षुत दृष्टि | गुप्तवैरा | ४।१० | दुर्जनाख्या, मित्र घात करी, शोक सन्तापदा | १५ |
| | प्रत्यक्षवैरा | १।७ | विवाद, विग्रहकर्त्री | ६० |

'एकर्क्षं वलिनी दृष्टिः प्राधान्यात्कार्यसाधिनी'

( इत्येके )

भाषा—ताजिक मर्मज्ञ एक आचार्य का यह भी मत है कि एकर्क्ष ( एक भावस्थ ) दृष्टि कार्य प्रसाधिका होती है ।

## दृष्टि साधन

अपास्य पश्यन्निजदृष्टिखेटा-,
देकादिशेषे ध्रुवलिप्तिकाः स्युः ।
पूर्णं खवेदास्तिथयोऽक्षवेदा,
खं षष्टिरभ्रं शरवेदसंख्याः ॥
तिथ्यः खचन्द्रा विदयभ्रतर्काः,
शेषांकयातैष्यविशेषघातात् ।
लब्धं खरामैरधिकोनकैष्ये,
स्वर्णं ध्रुवेता स्फुटदृष्टिलिप्ता ॥

भाषा—जो ग्रह देखता है वह द्रष्टा, जिस ग्रह को देखे वह दृश्य । दृश्य में द्रष्टा को हीन करे शेष राशि, अंश, कला, विकला की कलात्मक दृष्टि आगे लिखे ध्रुवांक चक्र से अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा साधन करे; तो कलात्मक दृष्टि स्पष्ट होती है ।

स्पष्टीकरण—शेष (१) राशि से शेष (२) राशि तक ध्रुवांक चक्र में ४० कला दृष्टि की वृद्धि होती है तो राशि १ अंश १५ में त्रैराशिक द्वारा २० कला दृष्टि होगी । शेष राशि के ध्रुवांक को आगे की राशि के ध्रुवांक में से घटावे (यदि आगे की राशि का ध्रुवांक अधिक हो ) तो धन चालन होता है । अन्यथा शेष राशि के ध्रुवांक में से शेष राशि के आगे की राशि के ध्रुवांक को घटावे ( यदि शेष राशि के ध्रुवांक से आगे की राशि का ध्रुवांक कम हो ) तो ऋण चालन होता है । इस धनर्णांक से दृश्य द्रष्टान्तर राशि को छोड़ अंशादि

में गुणा करे; गुणनफल में ३० से भाग देने पर जो लब्धि कलादि हो उसको दृश्य दृष्टान्त के राशि ध्रुवांक में जोड़े (यदि धन चालन हो) राशि ध्रुवांक में घटावे ( यदि ऋण चालन हो ) तो कलादिक स्पष्ट दृष्टि होती है।

## दृष्टि-ध्रुवांक-चक्र

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | शेष राशि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ४० | १५ | ४५ | ० | ६० | ० | ४५ | १५ | १० | ० | ६० | ध्रुवांकाः |

उदाहरणार्थ—प्रथम ग्रहों की लग्न ग्रहों के प्रति दृष्टि चक्र लिखा जाता है।

## ग्रहदृष्टि—चक्र

| द्रष्टा | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | दृश्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ० | ४ | १ | २ | ९ | २ | १० | ६ | भाव |
| | | १५ | ६० | ० | ४५ | ० | १५ | ० | कला |
| चं. | १० | ० | १० | ११ | ६ | ११ | ७ | ३ | भाव |
| | १५ | | १५ | १० | ० | १० | ६० | ४० | कला |
| मं. | १ | ४ | ० | २ | ९ | २ | १० | ६ | भाव |
| | ६० | १५ | | ० | ४५ | ० | १५ | ० | कला |
| बु. | १२ | ३ | १२ | ० | ८ | १ | ९ | ५ | भाव |
| | ० | ४० | ० | | ० | ६० | ४५ | ४५ | कला |
| गु. | ५ | ८ | ५ | ६ | ० | ६ | २ | १० | भाव |
| | ४५ | ० | ४५ | ० | | ० | ० | १५ | कला |
| शु. | १२ | ३ | १२ | १ | ८ | ० | ९ | ५ | भाव |
| | ० | ४० | ० | ६० | ० | | ४५ | ४५ | कला |
| श. | ४ | ७ | ४ | ५ | १२ | ५ | ० | ९ | भाव |
| | १५ | ६० | १५ | ४५ | ० | ४५ | | ४५ | कला |

नोट—इस चक्रमें जहाँ दृष्टि (०) लिखी है पर दृष्टि साधन में अवश्य ही कुछ न कुछ कला दृष्टि होती है। यह आगे स्पष्ट कर लिखा जाता है। ग्रह दृष्टि चक्र में ऊपर का अंक भाव वोधक (वर्षचक्र पृष्ट। १९८) एवं नीचे के अंक दृष्टि कला या त्रिपाद (४५), द्व्यंशोन (४०) षष्ठांश (१०), पादैक (१५), पूर्ण (६०), दृष्टि बोधक (दृष्टि चक्र पृष्ट २११) हैं। आगे गणित द्वारा कलात्मक दृष्टिसाधन का उदाहरण लिखा जाता है।

उदाहरण—चन्द्र स्पष्ट ५।२७।२५।८ (स्पष्टग्रहचक्र पृष्ट १९९) है इस चन्द्र से सूर्य १० वें भाव में है अतः १५ कलात्मक (पादैक) दृष्टि है सूर्य स्पष्ट २।१९।३२।२३ है चन्द्र दृष्टा एवं सूर्य दृश्य है।

अतः—

सूर्य २।१९।३२।२३ में से (दृश्य)
चन्द्र ५।२७।२५। ८ को घटाया (दृष्टा)
८।२२। ७।१५ हुआ।

शेष ८ राशि के नीचे के अंक में से ध्रुवांक चक्र (पृष्ट २१३) द्वारा आगे को राशि (९) के ध्रुवांक को घटाया (क्योंकि आगे की राशि (९) का ध्रुवांक कम है), अतः—

=शेष ८ राशि का ध्रुवांक ४५ (कला) में से
आगे की राशि (९) का ध्रुवांक १५ (कला) घटाया
शेष ३० कला से

दृश्य दृष्टान्तर अंशादि २२।७।१५ में गुणा किया तो—

२२ । ७ । १५ × ३०

| ६६० | २१० | ४५० ÷ ६० |
|---|---|---|
| ३ | ७ | ३० शेष |
| ६६३ | २१७ ÷ ६० | |
| | ३७ शेष | |

गुणनफल ६६३।३७।३० में ३० से भाग दिया; तो—

```
३०)६६३।३७।३०(२२
   ६०
   ---
   ६३
   ६०
   ---
   ३ × ६०
   -------
   १८०
    ३७
   -----
३०)२१७(७
   २१०
   ----
    ७ × ६०
   --------
    ४२०
     ३०
   -------
३०)४५०(१५
    ३०
   -----
    १५०
    १५०
   -----
     ×
```

= लब्धि फलादि २२।७।१५ हुए। यहां ऋणचालन है (क्योंकि आगे की राशि का ध्रुवांक कम है) अतः लब्धि को शेष राशि के ध्रुवांक में घटाया तो—शेष राशि (८) काध्रुवांक ४५।०।० में २२।७।१५ घटाया

तो कलादि २२।५२।४५ स्पष्ट दृष्टि हुई।

स्पष्टीकरण—चन्द्र से १० वां भाव २।२७।२५।८ से प्रारम्भ होता है।

यथा—चन्द्र५।२७।२५।८ + ९ = २।२७।२५।८दशमभाव प्रारम्भ। एवं १।२७।२५।८से नवम भाव प्रारम्भ होता है।

चन्द्र (५।२७।२५।८) के नवम भाव से दशम भाव के प्रारम्भ तक के बीच में ही सूर्य (२।१९।३२।२३) हैं नवम में ४५ कला एवं दशम में १५ कला दृष्टि होती हैं अनुपात से सूर्य चन्द्र के नवम और दशम भाव के मध्य से आगे अर्थात् नवम की अपेक्षा दशम की ओर

अधिक है अतः ४५, १५ के अनुपात अर्थात् ४५, १५ के मध्य से १५ की ओर अधिक हैं अतएव उक्त उदाहरण में सूर्य की दृष्टि कलादि २२। ५२।४५ स्पष्ट हुई है। इस दृष्टि गणित में त्रैराशिक के आधार पर दृष्टि साधन किया गया है। इसी प्रकार सभी ग्रहों की दृष्टि साधन कर नीचे स्पष्ट दृष्टि चक्र लिखा जाता है।

## स्पष्टदृष्टि—चक्र

| दृष्टा | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. | दृश्य |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ० | २२<br>५२<br>४५ | ४८<br>५८<br>२८ | ३३<br>१५<br>२० | ३७<br>४९<br>३४ | १२<br>४६<br>३६ | १६<br>२३<br>३८ | २२<br>५०<br>२९ | ग्रहों की सलग्नग्रहों के प्रति कला, विकला, प्रतिविकला दृष्टि है। |
| चं. | २२<br>५२<br>४५ |  | १७<br>२१<br>५९ | १४<br>५<br>४ | १८<br>५९<br>३३ | ९<br>२५<br>५६ | ४१<br>२७<br>१४ | ९<br>९<br>४१ |  |
| मं. | ४८<br>५८<br>२८ | १७<br>२१<br>५९ | ० | ४४<br>१६<br>५२ | २९<br>३३<br>२५ | ५<br>२५<br>३४ | २१<br>५४<br>२४ | ३१<br>१७<br>३८ |  |
| बु. | ३३<br>१५<br>२० | १९<br>३४<br>३९ | ४४<br>१६<br>५२ | ० | २७<br><br>४ | ५<br>३२<br>४६ | २९<br>४५<br>४८ | ४२<br>५५<br>५९ |  |
| गु. | ३७<br>४९<br>३४ | १८<br>५९<br>३३ | २९<br>३३<br>२५ | २७<br>४६<br>४ | ० | २८<br>४३<br>४८ | ४<br>३१<br>५ | २५<br>२८<br>२ |  |
| शु. | २<br>११<br>३९ | ३७<br>४३<br>३४ | १<br>२१<br>२४ | ७<br>३४<br>४५ | २८<br>४३<br>४८ | ० | २८<br>३२<br>७ | २०<br>१०<br>४ |  |
| श. | १६<br>२३<br>३८ | ४१<br>२७<br>१४ | २१<br>५४<br>२४ | २९<br>४५<br>५८ | १<br>७<br>४७ | २८<br>३२<br>७ | ० | २२<br>४२<br>५८ |  |

नोट—जब दृश्य दृष्टान्तर की शेष राशिआद्यन्त (०, १, १०, १२) में आती है तभी दृष्टि कला में परस्पर अन्तर होता है।

## वलवती दृष्टि

'चक्रे वामदृगुच्यते वलवती'

भाषा—'वामदृक्' शब्द मध्यमपदलोपी समास से बना है। इसका अर्थ वराह मिहिर एवं समरसिंह आदि ने यह किया है कि वाम भागस्थ ग्रह की दक्षिण भागस्थ ग्रह के ऊपर वलवती दृष्टि होती है। लग्नादि रिपु भाव पर्यन्त दक्षिण भाग एवं सप्तमादि व्यय भावान्त वाम भाग माना गया है। एवं दक्षिण भागस्थ ग्रह की वाम भागस्थ ग्रह के ऊपर निर्वल दृष्टि होती है।

उदाहरण—देखो? वर्ष-चक्र (पृष्ट १९८) बुध, शुक्र की शनि पर वलवती दृष्टि है क्योंकि बुध शुक्र वाम भाग में एवं शनि दक्षिण भाग में है। शनि की बुध शुक्र पर निर्वल दृष्टि है। क्योंकि शनि दक्षिणभागस्थ एवं बुध शुक्र वाम भागस्थ हैं।

## विशेषदृष्टि

पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः।
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः॥

भाषा—दृष्टा ग्रह के दीप्तांशों के मध्य में ही दृश्य ग्रह आगे व पीछे स्थित हो तो 'विशिष्टं दृक्फलं' अर्थात् विशेष दृष्टि का फल होता है। यदि दीप्तांशों से अधिक दृश्य ग्रह आगे पीछे स्थित हो तो 'मध्यमं दृक्फलं' अर्थात् मध्यम दृष्टि का फल होता है।

## दीप्तांश

"तिथ्यर्काष्टनगांकशैलखचराः सूर्यादिदीप्तांशकाः"

भाषा—सूर्य के १५ अंश, चन्द्र के १२ अंश, भौम के ८ अंश, बुध के ७ अंश, गुरु के ९ अंश, शुक्र के ७ अंश, शनि के ९ अंश दीप्तांश होते हैं।

उदाहरण— सूर्य के १९ अंश (पृष्ट १९९) और चन्द्र के २७ अंश हैं। सूर्य के दीप्तांश (१५) के मध्य में ही चन्द्र

होने पर विशेष फलवती दृष्टि है। एवं चन्द्र के दीप्तांश १२ हैं; सूर्य चन्द्र के दीप्तांश (१२) से अधिक पर पीछे स्थित है अतः चन्द्र की सूर्य पर निर्बल दृष्टि हैं।

## वर्षेश-निर्णय

वलोय एषां तनुमीक्षमाण:,
सवर्षपो लग्नमनीक्षमाणः ।
नैवाब्दपो दृष्ट्यतिरेकतः स्या-,
द्बलस्य साम्ये विदुरेवमाद्याः ॥

भाषा—पूर्वोक्त पंचाधिकाररियों में पंचवर्गी वल से जो अधिकारी अधिक वलवान् होकर लग्न को देखता हो; वही वर्षेश होता है। यदि लग्न को न देखता हो; तो वर्षेश भी नहीं होता। यदि पंचाधिकारियों में कई ग्रहों का वल बराबर हो तो जो अधिकारी लग्न को अधिक देखता (पाददृष्टि से) हो; वही वर्षेश होता है।

## समदृष्टि में वर्षेश-निर्णय

दृगादिसाम्येऽप्यथ निर्वलत्वे,
वर्षाधिपः स्यान्मुथहेश्वरस्तु ।
पंचापि चेन्नो तनुमीक्षमाणो,
वीर्याधिकोऽब्दस्य विभुर्विचिन्त्यः ॥

भाषा—यदि पंचाधिकारियों की लग्न पर समान दृष्टि हो एवं 'दृगादि' में आदि शब्द से वल भी बराबर हो; अथवा पांचों निर्बली हो तो मुन्थेश ही वर्षेश होता है। यदि पांचों की दृष्टि लग्न पर न हो तो उनमें जो अधिक वली हो; वही वर्षेश होता है।

## समदृष्टिवल में वर्षेश-निर्णय

"वलादिसाम्ये रविराशिपोऽन्हि,
निशीन्दुराशीडिति केचिदाहुः ।"

भाषा—यदि पंचाधिकारियों की दृष्टि एवं बल समान (बराबर) हो तो समयाधिपति (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य राशीश; रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्र राशीश) वर्षेश होता है। यह कई आचार्यों का मत है।

## चन्द्रवर्षेश–निर्णय

"येनेत्थसालोऽब्दविभुः शशी स,
वर्षाधिपश्चन्द्रमपोऽन्यथात्वे।"

भाषा—ताजिक शास्त्र के मर्मज्ञ आचार्यों ने चन्द्रमा को वर्षेश होना नहीं माना। इसके लिये तो कोई स्पष्ट कारण नहीं बताया; पूर्वोक्त श्लोक में चन्द्र के वर्षेश होने का विरोध किया गया है।

यदि पूर्वोक्त वर्षेशनिर्णय से किसी प्रकार चन्द्र वर्षेश हो तो चन्द्रमा जिस ग्रह के साथ इत्थसाल योग करता हो वही ग्रह वर्षेश होता है।

यदि किसी ग्रह के साथ चन्द्र का इत्थसाल न हो तो वर्ष-लग्न का चन्द्र राशीश ही वर्षेश होता है।

नोट—इत्थसाल योग ( पृष्ठ २२२ )

उदाहरण—पंचाधिकारिचक्र पृष्ट २१० में बुध ही अधिक बली (विश्वादि १३।१८।३०) एवं लग्न पर दृष्टि (कलादि ४२।५५।५९ पृष्ट २१६) पंचाधिकारियों में सबसे अधिक है। अतः बुध ही वर्षेश हुआ।

## वर्षविश्वा–साधन

एषां पंचाधिकारीणां, ग्रहाणां बलसंयुतम्।
सुतेनाप्तं फलं वर्षे, बलं विश्वात्मकं बुधैः॥

भाषा—पंचाधिकारियों के पंचवर्गी विश्वादि बल को जोड़कर ५ से भाग दे तो लब्धि में विश्वा एवं शेष में ६० का गुणाकर पंचवर्गी बल के प्रतिविश्वा जोड़ दे; फिर ५ से भाग देने पर लब्धि में प्रति विश्वा बल प्राप्त होता है।

उदाहरण—पंचाधिकारिचक्र पृ. २१०

ज. ल. प.……चन्द्र……बल १०।१।४५
व. ल. प.……भौम…… ,, ७।९।४५
मुं. ल. प.……गुरु…… ,, १०।२८।४५
त्रि. रा. प.……भौम…… ,, ७।९।४५
सू. ल. प.……बुध…… ,, १३।१८।३०

४८।८।३०

= ४८ ÷ ५ = लब्धि ९ (विश्वा), शेष ३ × ६० = १८० + ८ = १८८ ÷ ५ = लब्धि ३७, शेष ३ × ६० = १८० + ३० = २१० ÷ ५ = ४२।
= स्पष्ट वर्षविश्वादि ९।३७।४२ हुएं।

## हर्षबल-साधन

नन्दत्रिषड्लग्नभवर्क्षपुत्र-,
व्यया इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम्।
त्रिभं त्रिभं लग्नमतः क्रमेण,
स्त्रीणां नृणां रात्रिदिने च तेषु॥

(१) { ग्रह सू., चं., म., बु., गु., शु., श. / भाव ९, ३, ६, १, ११, ५, १२ } वें भाव में ग्रह हों तो प्रथम हर्ष पद होता है।

(२) स्वगृही या उच्च राशि का ग्रह हो तो द्वितीय हर्षपद होता है।

(३) ४।५।६ वें भाव में पुरुषग्रह। ७।८।९ वें भाव स्त्रीग्रह। १०।११।१२ वें भाव में पुरुषग्रह। १।२।३ रे भाव में स्त्री ग्रह हो तो तृतीय हर्षपद होता है।

(४) दिन में वर्ष प्रवेश हो तो पुरुष ग्रह का एवं रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो स्त्री ग्रह का हर्षपद होता है।

नोट—जहाँ हर्षपद प्राप्त हो वहाँ ५ विश्वात्मक बल होता है।

उदाहरण—वर्ष लग्न चक्र पृष्ठ १९८

## हर्षस्थान-बल

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | प्रथम |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | द्वितीय |
| ० | ० | ० | ५ | ५ | ५ | ० | तृतीय |
| ५ | ० | ५ | ० | ५ | ० | ० | चतुर्थ |
| ५ | ० | ५ | ५ | १० | ५ | ० | ऐक्य |

नोट—सूर्य, भौम, गुरु पुरुष ग्रह। चं., बु., शु., श. स्त्री ग्रह हैं। यहाँ नपुंसक संज्ञा नहीं मानी जाती।

स्पष्टीकरण—प्रथम हर्षपद के भावों में एक भी ग्रह नहीं हैं अतः प्रथम हर्षपद में शून्य (०) रखा गया।

कोई ग्रह उच्च या स्वगृही नहीं है अतः द्वितीय हर्षपद में भी शून्य (०) रखा गया।

चतुर्थ में गुरु (पुरुष ग्रह), नवम में बु. शु. (स्त्री ग्रह) हैं; अतः बु., गु., शु. के नीचे तृतीय हर्षपद में विश्वा (५) रखा एवं शेष ग्रहों में शून्य रखा गया।

वर्षप्रवेश दिन में है अतः सूर्य, भौम, गुरु (पुरुष ग्रह) के नीचे चतुर्थ हर्षपद में विश्वा (५) रखा गया। फिर सबों का योग करके रखा गया है।

इस स्थल पर वर्षेशनिर्णय के लिये इत्थसाल योग का लक्षण लिखा जाता है।

## इत्थसालयोग

शीघ्रोऽल्पभागैर्घनभागमन्दे,
ग्रस्ते निजं तेज उपाददीत।
स्यादित्थशालोऽयमथो विलिप्ता,
लिप्तार्धहीनो यदि पूर्णमेतत् ॥

व्याख्या—शीघ्रः शीघ्रगतिको ग्रहः, अल्पभागैरल्पांशैः (अन्यापेक्षयाल्पांशैरित्यर्थः); घनभागमन्दे घना भागाः यस्य एवंभूतः मन्दगतिको ग्रहस्तस्मिन् घनभागमन्दे (अन्यापेक्षयाधिकांशमन्दे), ग्रस्ते दीप्तांशावधिदृष्टिसहिते, निजं, तेज उपाददीत, अयम् इत्थसालः (मुथसिलः) स्यात्। अथ यदि विलिप्ता लिप्तार्धहीनः एतत् पूर्णम्।

भाषा—जिसकी गति अधिक हो वह शीघ्रगति वाला ग्रह होता है। जिसकी गति कम हो वह मन्द गति वाला ग्रह होता है। साधारणता चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य, भौम, गुरु, शनि उत्तरोत्तर मन्द गति ग्रह है। शीघ्र गति वाले ग्रह के अंशादि अल्प हों, मन्द गति वाले ग्रह के अंशादि अधिक हों। शीघ्रगति ग्रह के दीप्तांश से अधिक न जाकर मन्दगति ग्रह दृष्टि युक्त हो तो शीघ्रगति वाला ग्रह मन्द गति वाले ग्रह को अपना तेज (सामर्थ्य) देता है इसी को इत्थसाल या मुथसिलयोग कहते हैं।

यदि शीघ्रगति ग्रह मन्द गति ग्रह से १ विकला से ३० विकला तक ही कम हो। तो पूर्ण मुथसिल योग होता है।

नोट—जब दोनों ग्रहों को विकला पर्यन्त समता हो तभी पूर्ण योग
२० विश्वा का होता है। यह श्लोक से स्पष्ट होता है।

## दृष्टिरहित मुथसिलयोग

शीघ्रो यदा भान्त्यलवः स्थितः सन्,
मन्देऽन्यभस्थे निदधाति तेजः।
स्यादित्थसालोऽयमथैष शीघ्रो,
दीप्तांशकांशैरिह मन्दपृष्ठे॥

तथा भविष्यद् गणनीयमित्थ-,
शालं त्रिधैवं मुथशीलमाहुः॥

भाषा—शीघ्रगतिग्रह राशि के अन्त्य भाग में स्थित हो; मन्दगति ग्रह दीप्तांशावधि अंशों में होकर अग्रिम राशि में स्थित हो तो शीघ्रगतिग्रह मन्दगतिग्रह को तेज देता है। यह योग दृष्टि न होते हुए भी दीप्तांशावधि में स्थित ग्रह से बताया गया है।

स्पष्टीकरण—शीघ्रगतिग्रह राशि के आखीर अंशों में एवं मन्द गति ग्रह अगले भाव में राशि के प्रारम्भ अंशों में हो। पर शीघ्रगतिग्रह के दीप्तांशावधि में हो मन्दगतिग्रह हो तो दृष्टि रहित (द्विर्द्वादश भावस्थ) मुथसिल योग होता है।

शीघ्र गति ग्रह अपने दीप्तांशों से अधिक मन्दगति ग्रह से पीछे स्थित हो; और मन्द गति ग्रह को भविष्य में तेज प्रदान करने की कामना करता हो; तो इस योग को भविष्यत् इत्थसाल कहते हैं। यह गणित साध्य है।

इत्थसाल योग का साधन प्रकार यह है कि शीघ्रगतिग्रह को स्वदीप्तांश से युक्त करे। योगांशफलावधि के मध्य में यदि मन्दगति ग्रह हो तो इत्थसाल होता है अन्यथा नहीं।

यदि शीघ्रगतिग्रह से दृष्टि युक्त भाव में मन्दगतिग्रह हो तो दृष्टियुक्त मुथसिल (मिलाप) योग होता है । अन्यथा यदि शीघ्रगति ग्रह से दृष्टिरहित भाव में मन्दगति ग्रह हो तो दृष्टिरहित (द्विद्वादश भावस्थ) इत्थसाल (मुथसिल) योग होता है ।

नोट—यहां स्पष्ट दृष्टि चक्र नहीं माना जाता; केवल 'दृष्टिःस्यान्नवपंच-मेत्यादि' के अनुसार दृष्टिविचार करना चाहिए ।

उदाहरण (१)—स्पष्टग्रह (पृष्ठ ८५) लग्न चक्र (पृष्ठ ९७) शुक्र शनि का, (२) बुध, शनि का दृष्टियुक्त इत्थसाल योग है ।

उदाहरण (२)—सं. १९९५ ज्येष्ठ शुक्ल १५ रविवार की पंक्ति विक्रम विजय पंचांग (जबलपुर)

सूर्य १।२८।२।२९ गति ५७।१ भौम २।१।४७।२९ गति ४०।६ सूर्य दीप्तांश (१५) के अवधि में ही भौम है अतएव दृष्टि हीन मुथसिल योग हुआ ।

उदाहरण (४)—सं० १९९५ भाद्रपद कृष्ण ३० गुरुवार को पूर्वाह्न काल में सूर्य चन्द्र का पूर्ण इत्थसाल योग होगा । यह भविष्यत् इत्थसाल योग हुआ ।

## सहम

पुण्यादि ५० सहम साधन ताजिक शास्त्र में लिखे गये हैं जिनमें कुछ सहमों का साधन इस स्थल पर लिखा जाता है ।

कुछ सहमों का दिन व रात में एक सा साधन बताया गया है । और कुछ का दिन व रात्रि में विपरीत रहता है ।

## सहम संस्कार

"शोध्यर्क्षशुद्धाश्रयभान्तराले,
लग्नं न चेत्सैकभमेतदुक्तम् ।"

भाषा—जिसमें घटाया जाय उसे शुद्धाश्रय; जो घटाया जाय उसे शोध्य कहते हैं । शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में यदि लग्न न हो तो

एक राशि और जोड़ देना चाहिए। यदि शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न हो तो फिर एक जोड़ने की आवश्यकता नहीं।

उदाहरण—सूर्य मीन में एवं शुद्धाश्रय ग्रह है चन्द्र वृश्चिक में एवं शोध्य ग्रह है लग्न तुला है तो शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न नहीं है; अतः यहां 'सैक' अर्थात् एक राशि जोड़ना चाहिए। यह संस्कार सभी सहमों में किया जाता हैं।

## पुण्यसहम

"सूर्योनचन्द्रान्वितमह्नि लग्नं,
वीन्द्वर्कयुक्तं निशिपुण्यसंज्ञम्।"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र में से सूर्य को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से चन्द्र को घटाकर शेष में लग्नको जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से पुण्यसहम होता है।

उदाहरण—ग्रहस्पष्टचक्र (पृष्ट १९९) इष्टकाल २५।१२ वर्षप्रवेश दिन में है अतः—

| | | |
|---|---|---|
| चन्द्र | ५।२७।२५। ८ में | ( शुद्धाश्रय ) |
| सूर्य | २।१९।३२।२३ घटाया | ( शोध्य ) |
| शेष | ३। ७।५२।४५ में | |
| (पृ. १९८) लग्न | ७। ४।१७।२४ जोड़ा | |
| | १०।१२।१०। ९ में | |
| | १ | (१ राशि) जोड़ी |

पुण्य सहम ११।१२।१०। ९ हुआ।

स्पष्टीकरण—पूर्वोक्त उदाहरण में शोध्य (मिथुन) राशि और शुद्धाश्रय (कन्या) राशि के मध्य में लग्न (वृश्चिक) नहीं है; अतः 'सैक' अर्थात् १ राशि जोड़ने से पुण्यसहम स्पष्ट किया गया है। इसी प्रकार सभी सहमों को स्पष्ट करना चाहिए।

## गुरु, यशसहम

व्यत्यस्तमस्माद् गुरुविद्ययोस्तु,
संसाधनं पुण्यवियुक्सुरेज्यः ।
दिवा विलोमं निशि पूर्ववत्तु,
यशोभिधं तत्सहमं वदन्ति ॥

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से चन्द्र को घटावे, रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र में से सूर्य को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से गुरु सहम होता है इसीको विद्यासहम भी कहते हैं। दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरु में से पुण्यसहम को घटावे रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में से गुरु को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से यशसहम होता है ।

## मित्रसहम

पुण्यसद्म गुरुसद्मतस्त्यजे-,
द्व्यत्ययो निशि सितान्वितं च तत् ।
सैकता तनुवदुक्तरीतितो,
मित्र नाम सहमं विदुर्बुधाः ॥

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरुसहम में से पुण्यसहम को घटावे, रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में से गुरुसहम को घटाकर शेष में शुक्र को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से मित्रसहम होता है ।

नोट—इसमें लग्न के स्थान में शुक्र को जोड़ा जाता है । अतः शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में यदि शुक्र न हो तो १ राशि और जोड़ना चाहिए । अन्यथा नहीं ।

## आशासहम

"शुक्रं मन्दादह्नि नक्तं विलोम-,
माशाख्यं स्यादुक्तवच्छेषमूह्यम् ।"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से शुक्र को घटावे; रात्रि में वर्ष प्रवेश हो तो शुक्र में से शनि को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से आशा (इच्छा) सहम होता है।

## राजसहम

"..................अर्कमार्के-,
रपास्य वामं निशि राजताता।"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से सूर्य को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो सूर्य में से शनि को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से राजसहम होता है इसी को पिता सहम भी कहते हैं।

## मातासहम

"मातेन्दुतोपास्य सितं विलोमं नक्तम्"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र में से शुक्र को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में से चन्द्र को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से माता सहम होता हैं।

## कर्मसहम

"कर्म क्षमाराज्ञिशि वाममुक्तम्"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो भौम में से बुध को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बुध में से भौम को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से कर्मसहम होता है।

## प्रसूतिसहम

"गुरोर्बुधं प्रोज्झ्य भवेत्प्रसूतिर्वाममम्"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो गुरु में से बुध को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो बुध में से गुरु को घटा कर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से प्रसूति सहम होता है।

## शत्रुसहम

"मन्दं कुजात्प्रोज्झ्य रिपुर्विलोमं रात्रौ"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो भौम में से शनि को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से भौम को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से शत्रुसहम होता है।

## बन्धनसहम

"पुण्याच्छनिं विशोध्याह्नि'
वामं निशि तु बन्धनम्।"

भाषा—दिन में वर्षप्रवेश हो तो पुण्यसहम में से शनि को घटावे; रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शनि में से पुण्यसहम को घटाकर शेष में लग्न को जोड़ पूर्वोक्त सैकता करने से बन्धनसहम होता है।

नोट—यहाँ तक के सहमों का दिवा, रात्रि भेद से विपरीत साधन बताया गया है। इसके आगे के सहमों का दिवा, रात्रि में एक सा साधन लिखा जाता है।

## भ्रातृसहम

"भ्रातार्किहीनाद् गुरुतः सदोह्यः"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो गुरु में से शनि को घटावे; शेष में लग्न को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से भ्रातृसहम होता है।

## पुत्रसहम

"सुतोऽहर्निशमिन्दुमीज्यात्"

भाषा—दिन व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो गुरु में से चन्द्र को घटावे; शेष में लग्न को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से पुत्रसहम होता है।

## विवाहसहम

"विशोध्य मन्दं सितात्तु विवाहसद्म"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो शुक्र में से शनि को घटावे; शेष में लग्न को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से विवाहसहम होता है।

## व्यापारसहम

"व्यापारमारात्ज्ञमपास्य शश्वत्"

भाषा—दिवा व रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो भौम में से बुधको घटावे; शेषमें लग्न को जोड़कर पूर्वोक्त सैकता करने से व्यापारसहम होता है।

## रोगसहम

"रोगाख्यमिन्दुं तनुतः सदैव"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो लग्न में से चन्द्र को घटावे; शेष में लग्न को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से रोगसहम होता है।

## मृत्युसहम

"..............................मृतिरष्टमर्क्षा-,
दिन्दुं विशोध्योक्तवदार्कियोगात्।"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो अष्टमभाव में से चन्द्र को घटावे; शेष में शनि को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से मृत्युसहम होता है।

नोट—मृत्युसहम में लग्न के स्थान में शनि जोड़ा गया है अतः शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में यदि शनि न हो तो १ राशि और जोड़ना चाहिए। अन्यथा नहीं।

## यात्रा (देशान्तर) सहम

देशान्तराख्यं नवमाद्विशोध्य,
धर्मेश्वरं संततमुक्तवत्स्यात्।"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो नवमभाव में से नवमेश को घटावे; शेष में लग्न को जोड़कर पूर्वोक्त सैकता करने से यात्रा (देशान्तर) सहम होता है।

## अर्थसहम

"अहर्निशं वित्तपमर्थभावा-,
द्विशोध्य पूर्वोक्तवदर्थसद्म।"

भाषा—दिवा व रात्रि में वर्षप्रवेश हो तो धनभाव में से धनेश को घटावे; शेष में लग्न को जोड़ कर पूर्वोक्त सैकता करने से अर्थसहम होता है।

नोट—स्पष्टार्थ बोधक आगे सहम साधन चक्र लिखा जाता है। इसमें दिवा, रात्रि के भेद से पृथक् २ लिखे गये हैं। यदि इन सबों में शोध्य, शुद्धाश्रय के मध्य में लग्न न हो तो १ राशि और जोड़ना चाहिये। देखिये! सहमसंस्कार (पृष्ट २२४)

## सहमसाधनचक्र

| सहम | दिवा | रात्रि |
|---|---|---|
| पुण्य | चं.–सू.+ल. | सू.–चं.+ल. |
| गुरु | सू–चं.+ल. | चं.–सू.+ल. |
| यश | गु.–पुण्य+ल. | पुण्य–गु.+ल. |
| मित्र | पुण्य–गुरुसहम+शु. | गुरुसहम–पुण्य+शु. |
| आशा | श.–शु.+ल. | शु–श.+ल. |
| राज | श.–सू.+ल. | सू.–श.+ल. |
| माता | चं.–शु.+ल. | शु.–चं.+ल. |
| कर्म | मं.–बु.+ल. | बु.–मं.+ल. |
| प्रसूति | गु.–बु.+ल. | बु.–गु.+ल. |
| शत्रु | मं.–श.+ल. | श.–मं.+ल. |
| बन्धन | पुण्य–श.+ल. | श.–पुण्य+ल. |

नोट—आगे लिखे चक्र में दिवा व रात्रि में एक सा सहमसाधन समझना चाहिये। इसमें भी सहमसंस्कार (पृष्ट २२४) करना चाहिए।

## सहमसाधनचक्र

| सहम | दिवा, रात्रि में एकसा | सहम | दिवा, रात्रि में एकसा |
|---|---|---|---|
| भ्रातृ | गु. – श. + ल. | रोग | लग्न – चं. + लग्न |
| पुत्र | गु. – चं. + ल. | मृत्यु | अष्टमभाव – चं. + श. |
| विवाह | शु. – श. + ल. | यात्रा | नवमभाव – भाग्येश + ल. |
| व्यापार | मं. – बु. + ल. | अर्थ | धनभाव – धनेश + ल. |

उदाहरणार्थ इसी प्रकार सभी सहमों को साधन कर आगे स्पष्ट सहम चक्र लिखा जाता है।

## स्पष्टसहम–चक्र

( ग्रहस्पष्टचक्र १९९ )

| स्पष्ट सहम राश्यादि | | | स्पष्ट सहम राश्यादि | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुण्य | ... | ११।०२।१०।९ | शत्रु | ... | ११।११।११।४८ |
| गुरु | ... | ३।२६।२४।३९ | बन्धन | ... | ६।२८।१८।४८ |
| यश | ... | ६। ६ ।५२।४१ | भ्रातृ | ... | ६। ० ।५४।५ |
| मित्र | ... | ११।१४।५२।५० | पुत्र | ... | ११।२१।३७।४२ |
| आशा | ... | २।२३।१८।४९ | विवाह | ... | ०।१५।१५।५९ |
| राज | ... | ४। २ ।५३।४६ | व्यापार | ... | ७।२६।२५।५० |
| पिता | ... | ४। २ ।५३।४६ | रोग | ... | ९।११। ९।४० |
| माता | ... | १०।२।३५।१२ | मृत्यु | ... | ७।२६।४३।४७ |
| कर्म | ... | ७।२६।२५।५० | यात्रा | ... | ४।१४।३५।१२ |
| प्रसूति | ... | २।१६। ८ ।७ | अर्थ | ... | ४।२६।३२।८ |

नोट—रोगसहम में १ राशि सर्वदा जोड़ना चाहिए। राजसहम के समान पितासहम। गुरुसहम के समान ज्ञान, विद्या, ज्ञाति

सहम। यशसहम के समान बल, देहसहम। विवाह के समान स्त्रीसहम। यात्रासहम के समान परदेशसहम साधन करना चाहिए। उदाहरणार्थ नीचे सहमकुण्डली लिखी जाती है।

## सहम-कुण्डली
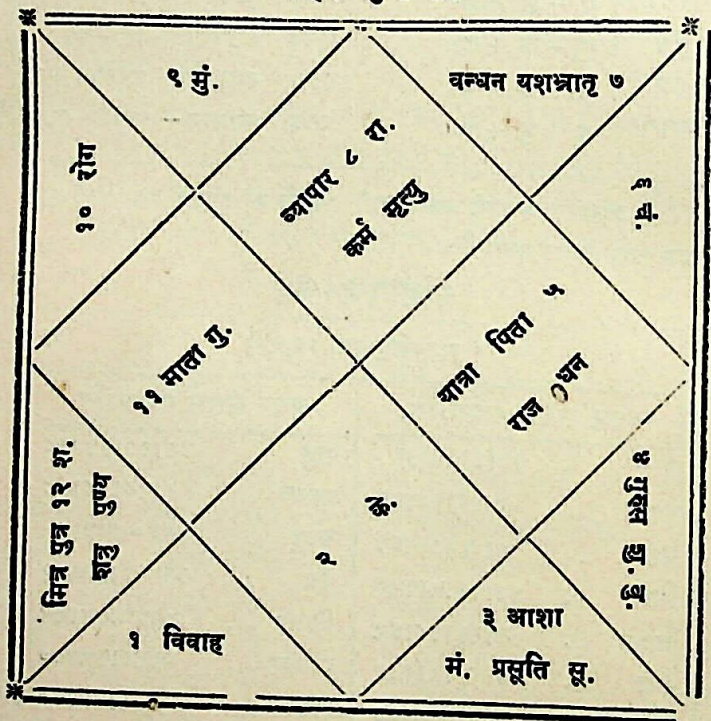
## त्रिपताकी-चक्रप्रकार

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थ-,
मन्योन्यविद्धाग्रगमेककोणात्।
स्मृतं बुधैस्तत्त्रिपताकिचक्र-,
म्प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात्॥

"न्यसेद्‌ग्रचक्रं किल ........"

भाषा—तीन रेखा खड़ी, तीन रेखा आड़ी, तीन रेखा तिरछी बनाने से त्रिपताकिचक्र होता है। इसमें तीन खड़ी रेखा के मध्य की रेखा में वर्षलग्नराशि से प्रारम्भ कर वामभाग क्रम से १२ राशि स्थापित करना चाहिए।

## त्रिपताकिचक्र में ग्रह-स्थापन

सैका गताब्दसंख्याया: विभक्ता नवभिस्ततः।
शेषांके जन्मनि गताच्चन्द्रराशेः हि न्यसेत् ॥

भाषा—गताब्द संख्या में १ जोड़कर नव से भाग दे, शेष में जन्म राशिस्थ चन्द्र से गिन कर चन्द्र को रखे।

परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये,
स्थाने स्वराशौ खचरास्तु लेख्याः ॥

भाषा—गताब्द में चार से भाग देवे; शेष में सूर्यादि शेष ग्रहों को जन्म चक्र राशिस्थ से गिनकर रखना चाहिए।

उदाहरण—जन्मलग्नचक्र (पृष्ठ ९७) वर्षलग्नचक्र (पृष्ठ १९८) गताब्द (पृष्ठ १९६)

=गताब्द ५+१=६÷९=लब्धि ० (शून्य) शेष ६। जन्म लग्नस्थ चन्द्र ८ (वृश्चिक) से शेष ६ तक गणना करने पर (वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन, मेष) मेष राशि में चन्द्र स्थापित किया।

गताब्द ५÷४=लब्धि १ (एक) का त्याग; शेष १ (एक)। जन्मलग्नस्थसूर्य ३ (मिथुन) से शेष (१) तक गणना करने पर मिथुन राशि में सूर्य स्थापित किया; एवं शेष ग्रहों को भी शेष (१) तक गणना कर (कन्या में भौम। कर्क में बुध, शुक्र। सिंह में गुरु, केतु। मकर में शनि। कुंभ में राहु) स्थापित किया। आगे त्रिपताकिचक्र लिखा जाता है।
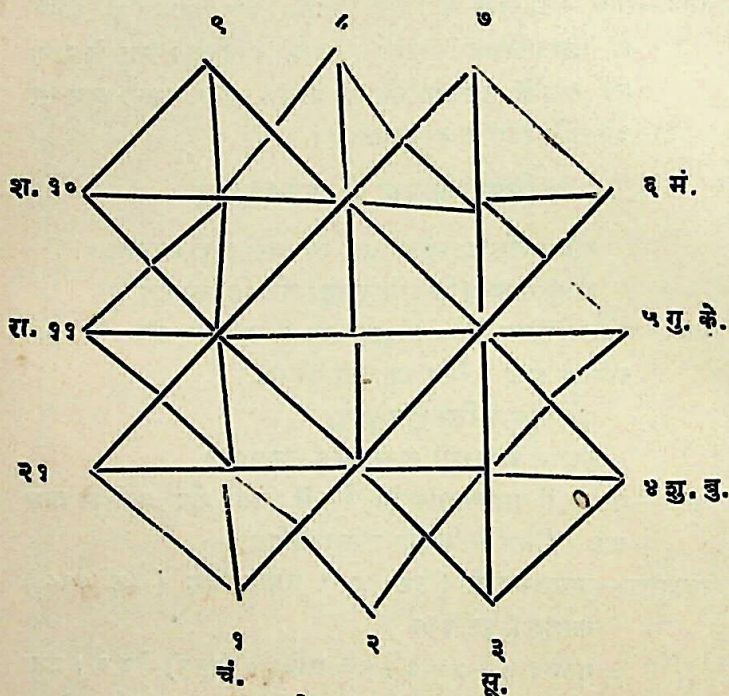
## त्रिपताकिचक्र

## वेध–फल

स्वर्भानुविद्धे हिमगौ तु कष्टं,
पातङ्गिविद्धे रुगिणा भवन्ति ।
महीजविद्धे तु शरीरपीड़ा,
शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ॥

भाषा—चन्द्र, राहु का वेध हो तो कष्ट। चन्द्र, सूर्य का वेध हो तो सन्ताप। चन्द्र, शनि का वेध हो तो रोग। चन्द्र, भौम का वेध हो तो शरीर पीड़ा (रक्तविकारादि) होती है। यदि शुभ ग्रह (बुध, गुरु, शुक्र) से वेध हो तो जय, सुख, लाभ होता है।

उदाहरण—त्रिपताकिचक्र में चन्द्र का भौम से वेध है। अतः शरीर पीड़ा होगी।

वर्षविवेक में ग्रहों के शुभाशुभ फलकाल जानने के लिये अनेकों दशाओं का उल्लेख है जिसमें प्रमुख एवं प्रचलित मुद्दा दशा और वर्ष दशा हैं। मुद्दा के दो भेद हैं विंशोत्तरी मुद्दा, योगिनी मुद्दा। प्रथम विंशोत्तरी मुद्दा दशा लिखी जाती है। यही अधिक प्रचलित है।

## विंशोत्तरीमुद्दादशा

जन्मर्क्षसंख्या सहिता गताब्दा,
द्व्यूनिता नन्दहृतावशेषात्।
आ-चं-कु-रा-जी-श-बु-केतुभार्गवाः,
दशाक्रमोऽब्दे परिचिन्तनीयाः॥

भाषा—अश्विनी से जन्मनक्षत्र तक गिनें; इसमें गताब्द जोड़कर दो कम करके ९ (नव) से भाग दे; एकादि शेष में क्रमशः आ., चं., कु., रा.; जी; श., बु, के., शु. की दशा होती है।

नोट—स्वदशा वर्ष में ३ से गुणाकर दिनादि दशा जानना। कारण यह कि विंशोत्तरी दशा १२० वर्ष की होती है एवं एक वर्ष में ३६० दिन होते हैं। अतः ३६०÷१२०=३ लब्धि स्वदशा वर्ष में गुणा करने से दिनादि मुद्दा दशा स्पष्ट होती है। यथा सूर्य ६ वर्ष×३=१८ दिन मुद्दा दशा में सूर्यदशा रहेगी। इसी प्रकार स्पष्ट कर आगे मुद्दा मासादिचक्र लिखा जाता है।

## विंशोत्तरी मुद्दामासादिचक्र

| आ. | चं. | कु. | रा. | जी. | श. | बु. | के. | शु. | दशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | मास |
| १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० | दिन |

उदाहरण—जन्मनक्षत्र ज्येष्ठा (पृष्ट ७९) अश्विन्यादि से जन्मनक्षत्र तक गणना करने पर अंक १८–२ =,१६+५ (गताब्द) = २१÷९=शेष ३= कुजदशा (आ, चं. कु.) में वर्ष प्रवेश हुआ। उदाहरणार्थ आगे मुद्दादशाचक्र लिखा जाता है।

## विंशोत्तरीमुद्दादशा–चक्र

| कु. | रा. | जी. | श. | बु. | के. | शु. | आ. | चं. | दशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ | मास |
| २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० | १८ | ० | दिन |
| १९<br>९५ | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | १९<br>९६ | ,, | ,, | संवत् |
| ३<br>१० | ५<br>४ | ६<br>२२ | ८<br>१९ | १०<br>१० | ११<br>१ | १<br>१ | १<br>१९ | २<br>१९ | सूर्य |

## योगिनीमुद्दादशा

जन्मनक्षत्रसंख्याञ्च गतवर्षेषु योजयेत्।
त्रियुतञ्च तदष्टाभिर्भाजिते मंगलादिका॥

भाषा—अश्विन्यादि से जन्मनक्षत्र तक गिन कर ३ जोड़े; फिर गताब्द जोड़कर ८ से भाग दे; शेष में मंगलादि दशा जानना।

नोट—योगिनी दशाओं का भोग ३६ वर्ष का है एवं वर्ष में ३६० दिन होते हैं। अतः ३६०÷३६=१० का गुणा योगिनी के मंगलादि स्वदशावर्षों में करने दिनादि मुद्दा दशा होगी। यथा—मंगला वर्ष १×१०=१० दिन। इसी प्रकार सभी दशाओं की दिनादि मुद्दा दशा स्पष्ट कर आगे चक्र में लिखी गई है।

## योगिनीमुद्दामासादि-चक्र

| मं. | पिं. | धा. | भ्रा. | भ. | उ. | सि. | सं. | दशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ | मास |
| १० | २० | ० | १० | २० | ० | १० | २० | दिन |

उदाहरण—ज्येष्ठा जन्मनक्षत्र है अश्विन्यादि से गणना करने पर अंक: १८ + ३ + ५(गताब्द) = २६ ÷ ८ = २ शेष पिंगला दशा में वर्षप्रवेश हुआ। उदाहरणार्थ आगे चक्र लिखा जाता है।

## योगिनीमुद्दादशाचक्र

| पिं. | धा. | भ्रा | भ. | उ. | सि. | सं. | मं. | दशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>२० | १<br>० | १<br>१० | १<br>२० | २<br>० | २<br>१० | २<br>२० | ०<br>१० | मास<br>दिन |
| १९<br>९५ | ” | ” | ” | , | ” | १९<br>९६ | , | संवत् |
| ३<br>९ | ४<br>९ | ५<br>१९ | ७<br>९ | ९<br>९ | ११<br>१९ | २<br>९ | २<br>१९ | सूर्य |

## हीनांशपात्यांशवर्ष-दशा

"राशीन्विनात्यल्पलवं तु पूर्वम्"

भाषा—सलग्न सूर्यादि सप्त ग्रहों में राशि को छोड़कर जो ग्रह हीनांश (अल्प अंश) का हो उसकी दशा प्रथम जानना; फिर उत्तरोत्तर अधिक अंश वाले ग्रह की दशा होती है।

## समानांश में निर्णय

शुद्धांशसाम्ये बलिनो दशाद्या,<br>
बलस्य साम्येऽल्पगतेस्तु पूर्वा।<br>
साम्ये विलग्नस्य खगेन चिन्त्या,<br>
बलाधिका लग्नपतेर्वि चिन्त्या॥

भाषा—यदि दो ग्रहों के अंशादि समान (बराबर) हों; तो पंचवर्गी में जिसका बल अधिक हो उसकी दशा प्रथम जानना। यदि पंचवर्गी बल भी समान हो तो अल्पगतिग्रह की दशा प्रथम जानना। लग्न के अंशादि के समान यदि किसी ग्रह के अंशादि हों तो लग्नेश और ग्रह का पंचवर्गी बल में जिसका अधिक बल

हो उसकी दशा प्रथम जानना। यदि बल भी बराबर तो लग्नेश और ग्रह में जो अल्पगतिग्रह हो उसकी दशा प्रथम जानना।

यथा— लग्नेश अल्पगति ग्रह है तो लग्न की दशा प्रथम होगी।

उदाहरण—ग्रहस्पष्टचक्र (पृष्ट १९९) में बुध हीनांश (अल्प अंश) का है। अतः प्रथम दशा बुध की हुई। बुध से लग्न के अधिक अंश एवं अन्य ग्रहों से अल्प अंश हैं; अतः द्वितीय दशा लग्न की हुई। इसी प्रकार क्रमशः गुरु, शनि, सूर्य, भौम, चन्द्र, शुक्र (हीनांश) की दशा हुई।

## हीनांश-चक्र

| बु. | ल. | गु. | श. | सू. | मं. | चं. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ४ | १४ | १८ | १९ | २५ | २७ | २९ |
| ५४ | १७ | ४५ | ८ | ३२ | ३ | २५ | ७ |
| ४३ | २४ | २६ | ४५ | २३ | ९ | ८ | २० |

## पात्यांश-साधन

"ऊनं विशोध्याधिकतः क्रमेण शोध्यम्"

भाषा—अधिक में से कम को क्रमशः घटाकर पात्यांश साधन करना चाहिए।

स्पष्टीकरण—प्रथम जिस ग्रह की दशा हो उसके हीनांश ही पात्यांश होते हैं। अतः प्रथम हीनांश के नीचे वही अंशादि भी पात्यांश के कोष्टक में रखे। फिर द्वितीय हीनांश में प्रथम हीनांश घटाकर शेष द्वितीय पात्यांश कोष्टक में रखे; इसी प्रकार क्रमशः घटाकर सर्वों के पात्यांश रखना चाहिए।

"विशुद्धांशकशेषकैक्यम्।
सर्वाधिकांशान्मितमेव तत्स्यात्"॥

भाषा—पात्यांश के अंशादिकों का योग करें; यह योगफल हीनांश दशा के अन्तिम ग्रह के अंशादि के समान होता है। यदि समान न हो तो पात्यांश बनाने में त्रुटि हो गई है ऐसा जानना चाहिए।

उदाहरण—बुध की प्रथम दशा है। अतः बुध के हीनांश २।५४।४३ ही पात्यांश हुए।

लग्न हीनांश ४।१७।२४ में
बुध ,, २।५४।४३ घटाया
लग्नपात्यांश १।२२।४१

गुरु हीनांश १४।४५।२६ में
लग्न ,, ४।१७।२४ घटाया
गुरु पात्यांश १०।२८। २

शनि हीनांश १८। ८।४५ में
गुरु ,, १४।४५।२६ घटाया
शनिपात्यांश ३।२३।१९

सूर्य हीनांश १९।३२।२३ में
शनि ,, १८। ८।४५ घटाया
सूर्य पात्यांश १।२३।३८

भौम हीनांश २५। ३। ९ में
सूर्य ,, १९।३२।२३ घटाया
भौम पात्यांश ५।३०।४६

चन्द्र हीनांश २७।२५। ८ में
भौम ,, २५। ३। ९ घटाया
चन्द्र पात्यांश २।२१।५९

शुक्र हीनांश २९। ७।२० में
चन्द्र ,, २७।२५। ८ घटाया
शुक्र पात्यांश १।४२।१२

## पात्यांश-चक्र

| बु. | ल. | गु. | श. | सू. | मं. | चं. | शु. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | १० | ३ | १ | ५ | २ | १ | २९ |
| ५४ | २२ | २८ | २३ | २३ | ३० | २१ | ४२ | ७ |
| ४३ | ४१ | २ | १९ | ३८ | ४६ | ५९ | १२ | २० |

## ध्रुवांक–साधन

"अनेन वर्षस्य मितिस्तु भाज्या"

भा॰पा—पूर्वोक्त पात्यांश योगफल से सावनमान (३६५ दिन १५ घटी ३१ पल ३० विपल) या सौरमान (३६० दिन) में भाग दे; लब्धि में दिनादि ध्रुवांक होते हैं।

उदाहरण—पात्यांश योग २९।७।२०

सावनमानदिनादि ३६५,१५,३१,३०

= २९ × ६० + ७ × ६० + २० = १०४८४० विकलात्मक पात्यांशयोग।

= ३६५ × ६० + १५ × ६० + ३१½ = १३१४९३१,३० पलात्मक सावनमान।

= १३१४९३१,३० ÷ १०४८४० = लब्धि १२ (दिनादि); शेष ५६८५१ × ६० + ३० = ३४११०९० ÷ १०४८४० लब्धि ३२ (घटी); शेष ५६२१० × ६० = ३३७२६०० ÷ १० ४८४० = लब्धि ३२ (पल); शेष २२७४०० का त्याग किया। तो लब्धि दिनादि १२।३२।३२ ध्रुवांक हुए।

## दशादिवससाधन

शुद्धांशकांस्तान्गुणयेदनेन,
लब्धध्रुवांकेन भवेद्दशायाः।
मानं दिनाद्यं खलु तद्ग्रहस्य,
फलान्यथासां निगदेत्तु शास्त्रात्॥

भाषा—पात्यांशों को ध्रुवांक से गोमूत्रिका द्वारा गुणा करने पर ग्रह का दिनादिदशामान प्राप्त होता है।

उदाहरण—बुधपात्यांश २।५४।४३ ध्रुवांक १२।३२।३२ है।

| ध्रुवांक | बुधपात्यांश | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | २ , | ५४ , | ४३ | | |
| ३२ | २४ | , ६४८ | ५१६ | | |
| ३२ | ❀ | ६४ | १०८<br>१६२ | ८६<br>१२९ | |
| | ❀ | ❀ | ६४ | १०८<br>१६२ | ८६<br>१२९ |
| | २४<br>१२ | ७१२<br>+ ३९ | २२८८<br>+ ५२ | ३१०४<br>+ २२ | १३७६ ÷ ६०<br>५६ शेष |
| | ३६ ÷ ३० | ७५१ ÷ ६० | २३४० ÷ ६० | ३१२६ ÷ ६० | |
| १ | ६ शेष | ३१ शेष | ० शेष | ६ शेष | |

= बुधदशा मासादि १।६।३१।०

नोट—इसी प्रकार सभी पात्यांशों को ध्रुवांक से गोमूत्रिका द्वारा गणित कर ग्रहों की मासादिदशा स्पष्ट कर आगे वर्ष दशा चक्र में लिखी गई है। विशेष बात यह है कि वर्षप्रवेश के सूर्य राश्यादि में दशा मासादि जोड़ने पर यदि द्वितीय वर्षप्रवेशारंभ से अधिक या न्यून हो तो मासादि दशा में भी अधिक या न्यून अनुपात द्वारा कर लेना चाहिए। क्योंकि ध्रुवांक साधन एवं गोमूत्रिका द्वारा दशा साधन में शेष भाग त्याग एवं अर्धाधिक ग्रहण करने से न्यूनाधिकता हो जाती है। सौरमान (३६०) से न्यूनता एवं सावनमान (३६५।१५।३१।३०) से अधिकता आती है। अतः संशोधन करके दशा चक्र लिखा गया है।

## वर्षदशा--चक्र

| बु. | ल. | गु | श. | सू. | मं. | चं | शु. | दशाग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ४ | १ | ० | २ | ० | ० | मास |
| ५ | १६ | १० | ११ | १६ | ८ | २८ | २० | दिन |
| ५४ | ३९ | ३८ | ५२ | ५० | ३० | ५० | ४३ | घटी |
| २ | ५ | ५८ | ४ | ५८ | ३५ | २९ | ४९ | पल |
| १९<br>९५ | ,, | ,, | ,, | ,, | १९<br>९६ | ,, | १९<br>९६ | संवत् |
| ३ | ४ | ८ | १० | १० | ० | १ | २ | सूर्य |
| २५ | १२ | २२ | ४ | २१ | २९ | २८ | १९ | |
| २६ | ५ | ४४ | ३६ | २७ | ५८ | ४८ | ३२ | |
| २५ | ३० | २८ | ३२ | ३० | ५ | ३४ | २३ | |

## मास--प्रवेश

वर्षप्रवेश का ही सूर्य प्रथम मास का सूर्य है। इस सूर्य की राशि में. १ जोड़ने से द्वितीय मासप्रवेश का सूर्य होता है एवं द्वितीय मास के सूर्य की राशि में १ जोड़ने से तृतीयमास का सूर्य होता है इसी प्रकार राशि में १ जोड़ते जाने से चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश मासप्रवेश का सूर्य प्राप्त होता है।

यथा—

वर्षप्रवेश का सूर्य २।१९।३२।२३ है तो राशि में १ जोड़ने से (३।१९।३२।२३) द्वितीय मासप्रवेश का सूर्य हुआ। इसी प्रकार ४।१९।३२।२३ तृतीय मासप्रवेश का सूर्य; ५।१९।३२।२३ चतुर्थ मासप्रवेश का सूर्य; ६।१९।३२।२३ पंचम मासप्रवेश का सूर्य; ७।१९।३२।२३ षष्ठ मास प्रवेश का सूर्य: ८।१९।३२।२३ सप्तम मासप्रवेश का सूर्य; ९।१९।३२।२३ अष्टम मासप्रवेश का सूर्य; १०।१९।३२।२३ नवम मासप्रवेश का सूर्य; ११।१९।३२।२३ दशम मासप्रवेश का सूर्य; ०।१९।३२।२३ एकादश मासप्रवेश का सूर्य; १।१९।३२।२३ द्वादश मासप्रवेश का सूर्य हुआ एवं २।१९।३२।२३ त्रयोदश मास ( द्वितीय वर्षप्रवेश ) का सूर्य हुआ।

## मासेष्ट—साधन

तात्कालिक सूर्य की अभीष्ट राश्यादि जिस समय स्पष्ट होंगी। वही समय मासेष्टकाल का होता है।

स्पष्टीकरण—त्रैराशिक द्वारा सूर्य स्पष्ट ( पृष्ट ७२ ) जब कि १ दिन में ५६ कला ५१ विकला गति है तब, ३ दिन में कितनी गति होगी ?

=लब्धि अंशादि २।५०।३३ गति प्राप्त हुई है।

इसी प्रकार जब १ दिन में ५६ कला ५१ विकला गति है तो २ अंश ५० कला ३३ विकला गति कितने दिन में होगी ?

तत्व यह कि व्यस्त त्रैराशिक करने से स्पष्ट होगा कि कितने दिन में उक्त गति है। जिस प्रकार ५६।५१ × ३ किया है उसी प्रकार व्यस्त त्रैराशिक में इसका उलटा अंशादि २।५०।३३ ÷ ५६।५१ = लब्धि ३ दिन। यथा—

=अंश २ × ६० = १२० + ५० = १७० × ६० = १०२०० + ३३ = १०२३३ विकला

=गति कला ५६ × ६० + ५१ = ३४११ विकला।

१०२३३ ÷ ३४११ = लब्धि ३ दिन में पूर्वोक्त (२।५०।३३) गति है। अतः स्पष्ट हो गया कि गोमूत्रिकाक्रम में जिस प्रकार गुणा किया। उसी प्रकार व्यस्त त्रैराशिक में गुणनफल को भाज्य ; गुण्य को भाजक मानने से लब्धि में गुणक प्राप्त हुआ है।

गोमूत्रिका रीति (पृष्ट ७१) में ५६।५१ गुण्य को भाजक और गुणनफलांशादि २।५०।३३ (१६८ कला, १५३ विकला) को भाज्य मानकर गुणक ३ को लब्धि में लाया गया है। इसी प्रकार व्यस्त त्रैराशिक करना चाहिए।

मासार्कस्य तदासन्नपंत्तयर्केण सहान्तरम्।
कलीकृत्यार्कगत्याप्तं दिनाद्येन युतोनितम् ॥

तत्पंक्तिस्थं वारपूर्वं मासार्केऽधिकहीनके ।
तद्वाराद्यं मासवेशो द्युवेशोऽप्येवमेव च ॥

भाषा—मासप्रवेश का सूर्य पंक्ति के सूर्य से यदि आगे हो तो मासप्रवेश के सूर्य में पंक्तिस्थ सूर्य को घटावे। यह धन चालन होता है।

मासप्रवेश का सूर्य पंक्ति के सूर्य से यदि पीछे हो तो पंक्ति के सूर्य में मासप्रवेश का सूर्य घटावे। यह ऋण चालन होता है।

पंक्ति और मासप्रवेशार्क के शेष को भाज्य और पंक्ति के सूर्य की गति को भाजक जाने; अर्थात् शेष में गति से भाग दे; तो लब्धि दिनादिकों को पंक्ति के वार, घटी, पल में धनर्ण ( ऋण व धन ) करे तो तात्कालिक सूर्य (मासप्रवेश के सूर्य ) का समय निकल आयगा। यही मासेष्टकाल या द्युप्रवेशकाल होता है।

नोट—वर्षप्रवेश के सूर्य की राशि में १ धन करने से द्वितीयादि मास होते हैं। इसी प्रकार मासप्रवेशार्क के अंश में १ धन करने से द्वितीयादि दिन होते हैं। इष्ट काल एवं तात्कालिक सूर्य से पूर्वोक्त लग्न, ग्रह, भावादि स्पष्ट ( पृष्ट ६९ से १०२ तक )करना चाहिये।

उदाहरण—वर्षप्रवेश का सूर्य २।१९।३२।२३ है इसमें १ राशि जोड़ा तो ३।१९।३२।२३ द्वितीय मासप्रवेश का सूर्य हुआ। पंक्ति विक्रम विजय पंचांग (जबलपुर) सं. १९९५ श्रावण शुक्ल १० शुक्रवार मिश्रमान ४७।१० सूर्य ३।१९।१८।६ गति ५७।१६ है।

पंक्तिस्थ सूर्य मासप्रवेश के सूर्य से कम है। अतः मासप्रवेश के सूर्य (३।१९।३२।२३) में पंक्तिस्थ सूर्य (३।१९।१८।६) को घटाया। तो शेष राश्यादि ०।०।१४।१७ रहा ; एवं धन चालन हुआ।

शेष राश्यादि ०।०।१४।१७ भाज्य ; गति ५७।१६ भाजक है। भाग करने के लिये समजातीय क्रिया। तो =०×६०+०×३०+१४×६०+१७=८५७ विकला भाज्य।

=५७×६०+१६=३४३६ विकला भाजक।

=८५७ ÷ ३४३६ = लब्धि शून्य (वार); शेष ८५७ × ६०
=५१४२० ÷ ३४३६ = लब्धि १४ (घटी); शेष ३३१६ × ६०
=१९८९६० ÷ ३४३६ = शेष अर्धाधिक (१) ग्रहण करने से
लब्धि ५८ (पल) प्राप्त हुई। इसको पंक्ति के वारादि ६।४७।१० में (धन चालन होने से) जोड़ा तो ७।२।८ वारादि द्वितीयमासप्रवेश के हुए।

## द्वितीयमासः

श्री शुभ संवत् १९९५ शकाब्दाः १८६० श्रावण शुक्ल ११ शनिवारेष्टम् २।८ सूर्यः ३।१९।३२।२३ लग्नम् ४।०।२३।१८ एतत्समये द्वितीयमासप्रवेशो जातः।

## द्वितीयमासचक्रम्
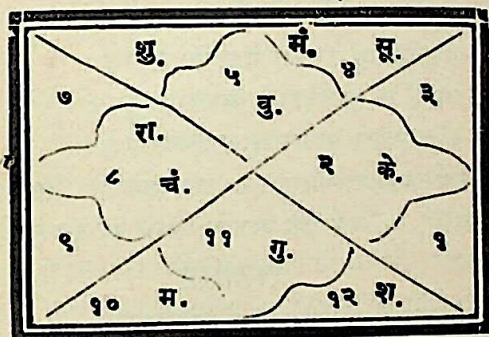
नोट—मुन्था साधन ( पृष्ठ १९८,१९९ ) में यह बताया गया है कि एक मास में २$\frac{१}{२}$ अंश की गति है अतः वर्षप्रवेश की मुन्था राश्यादि ८।२९।४१।२० में अंशादि २।३० जोड़ा तो राश्यादि ९।२।११।२० द्वितीयमासप्रवेशकाल की मुन्था स्पष्ट हुई। देखिये! द्वितीयमासचक्र में मकर राशि एवं षष्ठ भाव में मुन्था है। इसी प्रकार दिनप्रवेश भी साधन करना चाहिए।

सूचना—इस वर्ष विवेक के ग्रहादिकों का फल प्रसंगानुसार वर्षफल-विवेक में लिखा जायगा।

इति वर्षविवेकः

---

## आयुर्विवेक

पूर्वमायुः परीक्षेत् ततो लक्षणमादिशेत् ।
आयुर्विना नराणां तु लक्षणैः किं प्रयोजनम् ॥

भाषा—प्रथम आयु का विवेक करे; फिर अन्य भाग्ययोगादि का विवेक करना चाहिए। क्योंकि आयुर्विवेक के विना भाग्ययोगादि विवेक करना व्यर्थ है ।

आचार्यों ने आयुर्ज्ञान के लिये ३ भेद बताये हैं। नियत, अनियत, योगज । इस स्थल पर प्रथम योगज आयु लिखी जाती है ।

## योगजायु

अष्टौ वालारिष्टमादौ नराणां,
योगारिष्टं प्राहुराविंशतिः स्यात् ।
अल्पं च द्वात्रिंशतो मध्यमायु-,
रासप्तत्या पूर्णमायुः शतान्तम् ॥

भाषा—८ वर्ष तक वालारिष्ट, २० वर्ष तक योगारिष्ट, ३२ वर्ष तक अल्पायु, ७० वर्ष तक मध्यायु, १०० वर्ष तक पूर्णायु होती है ।

## वालारिष्ट

"आद्वादशाब्दान्तरयोनिजन्मना-,
मायुः कला निश्चयितुं न शक्यते ।"

भाषा—१२ वर्ष की अवस्था तक बालक की आयु का ठीक २ निर्णय नहीं हो सकता । कारण यह है कि—

आद्ये चतुष्के जननीकृताघै-,
र्मध्ये तु पित्रार्जितपापसंघैः ।
वालस्तदन्त्यासु चतुःसमासु,
स्वकीयदोषैः समुपैति नाशम् ॥

भाषा—प्रथम चार वर्ष तक माता के पापों से; ८ वर्ष तक पिता के पापों से; १२ वर्ष तक स्वयंकृत पापों से बालक को अरिष्ट होता

है। परन्तु आचार्यों ने वालारिष्ट के भी योग निर्मित किये हैं माता, पिता की जन्म पत्रिका द्वारा जो सन्तति कष्ट के योग होते हैं वह सन्तान भाव में लिखे जांयगे। इस स्थल पर जो वालारिष्ट के योग है वही लिखे जाते हैं। यथा—

विलग्नयातस्त्वपि देवमन्त्री,
विनाशरिःफारिगते शशाङ्के।
विलोकिते पापवियच्चरेण,
विभानुना मृत्युमुपैति वालकः॥

भाषा—लग्न में गुरु हो; ६।८।१२ वें भाव में स्थित चन्द्र को सूर्य के सिवाय अन्य पापग्रह देखते हों तो बालक की मृत्यु हो जाती है।

नोट—क्षीण चन्द्र उक्त स्थानों में हो तो अरिष्ट योग निश्चय होता है एवं उक्त स्थानों में चन्द्र से भौम की अंशात्मक युति हो तो अपस्मार या उन्माद होता है अथवा जन्म भर पीड़ा होती है यदि पिता माता की कुण्डली में बालक के लिये अरिष्ट होगा तो अवश्य ही उक्त वालारिष्ट के योग घटित होंगे। अन्यथा नहीं। इत्यादि विचार कर वालारिष्ट का निश्चय करना चाहिए।

गण्डान्ततारा सहिते मृगाङ्के,
पापेक्षिते पापसमन्विते वा।
वालो लयं याति स मृत्युभागे,
चन्द्रे तथा पापनिरीक्षिते वा॥

भाषा—गण्डान्तराशि में स्थित चन्द्र पापग्रह से युक्त व दृष्ट हो तो बालक की मृत्यु होती है; अथवा अष्टम भाव स्थित में चन्द्र पर पापग्रह की दृष्टि हो तो भी बालक की मृत्यु होती है।

"स्यादक्षसन्धिः कटकालिमीन-,
भान्तं प्रगण्डान्तमिति प्रसिद्धम्।"

भाषा—कर्क, वृश्चिक, मीन का अन्त्य भाग एवं मेष, धनु का प्रारंभ भाग की गण्डान्त ( राशि सन्धि ) संज्ञाहोती है।

क्षीणे शशिन्युदयगे यदि कण्टकस्थे,
पापेऽथवा निधनगे म्रियतेऽथ बालः।
रन्ध्रारिगैरशुभखेटदृशा समेतैः,
सौम्यैः कृतान्तनगरं समुपैति मासात् ॥

भाषा—क्षीण चन्द्र लग्न में हो; पापग्रह केन्द्र अथवा अष्टमभाव में हो तो बालक की मृत्यु होती है। ६।८वें भाव में शुभग्रह पापग्रहों से दृष्ट हो तो बालक की मृत्यु एक मास में होती है।

एकत्र मन्दावनिनन्दनार्का,
रन्ध्रस्थिता वा रिपुराशियाताः।
सौम्यैरयुक्ता नविलोकितास्ते,
जातस्य सद्यो मरणप्रदाः स्युः ॥

भाषा—६ या ८ वें भाव में एकत्र ( इकट्ठे ) शनि, भौम, सूर्य हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट व युक्त न हों तो बालक की मृत्यु होती है।

नोट—श्लोक में 'एकत्र' का पाठ है इसका अर्थ युति बोधक है यदि १, २ अंशों की न्यूनाधिकता में उक्त ग्रह ६ या ८ वें भाव में हों तो पूर्ण योग होगा। अन्यथा जितने ही दूर २ ग्रह होंगे उतनी ही योगज फल में न्यूनता होगी।

चन्द्रांशे सप्तमे भौमे सौम्यदृष्टिविवर्जिते।
सप्तसप्ततितारायामुपैति मरणं शिशुः ॥

भाषा—सप्तम भावस्थ भौम चन्द्रनवांश में शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो ७७वें नक्षत्र (ढाई मास) में बालक की मृत्यु होती है।

मन्दावनिजमार्तण्डैः पुत्रस्थानसमन्वितैः।
सप्तसप्ततिनक्षत्रे जातस्य मरणं वदेत् ॥

भाषा—शनि, भौम, सूर्य एकत्र होकर पंचम भाव में हों तो ७७ वें नक्षत्र (ढाई मास) में बालक की मृत्यु होती है।

धरासुते चन्द्रनवांशकस्थे लग्नांशके वा न च जीवदृष्टे ।
सुधाकरे नन्दनराशियाते समेति याम्यं पदमाशु बालः ॥

भाषा—भौम चन्द्रनवांश अथवा लग्ननवांश में हो और उस भौम पर गुरु की दृष्टि न हो चन्द्र पंचम भाव में हो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होती है ।

नोट—चन्द्रनवांश अर्थात् भौम नीचनवांश (कर्क) में; लग्न के नवांश अर्थात् नवांश कुण्डली में भौम लग्न की राशि के नवांश में हो । ऐसा जानना चाहिए ।

नीचंगते लग्नपतौ विलग्नान्नाशं गते वा रविजे तथास्ते ।
जातो मृतप्रायकलेवरः सन् कृच्छ्रेण वैवस्वतलोकमेति ॥

भाषा—लग्नेश नीच राशि में अथवा अष्टम भाव में हो और शनि सप्तम भाव में हो तो बालक जन्म समय में ही मृततुल्य होता है एवं उसकी अति कष्ट से मृत्यु होती है । 'निधने चार्कजे' (शुकजातक) अर्थात् ८ वें भाव में शनि हो तो मृत्यु होती है ।

आपोक्लिमस्थानगता नभोगा विधूतवीर्या यदि भानुमुख्याः ।
मासद्वयं तस्य ऋतुत्रयं वा जातस्य चायुः कथयन्ति तज्ज्ञाः ॥

भाषा—निर्बली सूर्यादि सब ग्रह आपोक्लिम (३।६।९।१२) में हों तो बालक की २ या ६ मास में मृत्यु होती है ।

नोट—'ऋतुत्रयं' का अर्थ ६ मास भी होता है । ऋतु शब्द दो मास का बोधक है यथा—मधुश्च माधवश्च वासंतिकावृतू ॥

सौरे मदस्थे यदि वा विलग्ने जलोदयेऽब्जे यदि कीटगे वा ।
सौम्येषु केन्द्रोपगतेषु सद्यो जातस्य नाशं यवनोपदिष्टम् ॥

भाषा—शनि लग्न या सप्तम भाव में हो; चन्द्र जलराशि व वृश्चिक राशि में हो और शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो बालक की मृत्यु होती है यह यवनाचार्य का मत है ।

भौमक्षेत्रगते जीवे नीचराशिगतेऽथवा ।
संध्यात्रये च संजातो मासान्मृत्युमुपैति सः ॥

भाषा—गुरु १।८।१० राशि में हो और प्रातः, या मध्याह्न, या सायंकाल में जन्म हो तो बालक की १ मास में मृत्यु होती है।

रन्ध्रे धरासूनुदिनेशसौरा जातस्तु मृत्युं समुपैति मासात्।
केतुस्तु यस्मिन्नुदितेऽत्र जातो मासद्वयेनैव यमं प्रयाति॥

भाषा—अष्टम भाव में सूर्य, मंगल, शनि हो तो बालक की एक मास में मृत्यु होती है। यदि केतु भी लग्न में हो तो दो मास में बालक की मृत्यु होती है।

नोट—केवल लग्न में केतु होने से बालक की २ मास में मृत्यु हो ऐसा सम्भव नहीं। अतः उक्त रन्ध्रस्थान में योग होते हुए लग्न में केतु हो तो दो मास में मृत्यु हो। इसीलिये 'यदि केतु भी' लिखा गया है।

लग्नारिरन्ध्रव्ययगे शशांके पापेन दृष्टे शुभदृष्टिहीने।
केन्द्रेषु सौम्यग्रहवर्जितेषु प्राणैर्वियोगं व्रजति प्रजातः॥

भाषा—१।६।८।१२ वें भाव में स्थित चन्द्र पापग्रह से दृष्ट एवं शुभ ग्रह से अदृष्ट हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हों तो बालक की मृत्यु होती है।

पापावुदयास्तगौ क्रूरेण युतश्च शशी।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदचिरात्॥

भाषा—लग्न, सप्तम में पापग्रह हों और चन्द्र क्रूर ग्रह से युक्त हो तथा शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक की तत्काल मृत्यु होती है।

क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः।
केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत् क्षिप्रं निधनं प्रवदेत्॥

भाषा—क्षीण चन्द्र व्यय भाव में हो; पापग्रह लग्न व अष्टम भाव में हो; केन्द्र में शुभग्रह न हों तो बालक की तत्काल मृत्यु होती है।

क्रूरसंयुतः शशी स्मरान्त्यमृत्युलग्नगः।
कण्टकाद्बहिः शुभैरनीक्षितश्च मृत्युदः॥

भाषा—चन्द्र क्रूर ग्रहों से युक्त १।७।८।१२ वें भाव में हो; केन्द्र में शुभ ग्रह न हों और चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक की मृत्यु होती है।

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते।
शुभैरथ समाष्टकं दलमतश्च मिश्रेक्षिते॥
असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासं शुभे।
कलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे॥

भाषा—६ वा ८ वें भाव में पापग्रहों से दृष्ट चन्द्र हो तो शीघ्र ही बालक की मृत्यु होती है। यदि ६ या ८ वें भावस्थ चन्द्र पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो ( अर्थात् पापग्रह की दृष्टि न हो ) तो बालक की आठ वर्ष में मृत्यु होती है। यदि ६ या ८ वें भावस्थ चन्द्र पर शुभाशुभ दोनों ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक की चार वर्ष में मृत्यु होती है। यदि शुभ ग्रह बलवान् हो और पापग्रह की दृष्टि ६, ८ वे भाव में हो तो बालक की एक मास में मृत्यु होती है। लग्नेश सप्तम में पापग्रह से विजित हो तो बालक की एक मास में मृत्यु होती है।

असितरविशशांकभूमिपुत्रै-,
र्व्ययनवमोदयनैधनाश्रितैः।
भवति मरणमाशु देहिनां,
यदि बलिना गुरुणा न वीक्षितैः॥

भाषा—व्यय भाव में शनि, धर्म भाव में सूर्य, लग्न में चन्द्र, अष्टम भाव में भौम हो और इन पर बलवान् गुरु की दृष्टि न हो तो बालक की तत्काल मृत्यु होती है।

नोट—एक गुरु की दृष्टि सब पर एक समय पूर्ण नहीं होगी यदि चतुर्थ भाव में गुरु हो तो व्ययस्थ शनि, अष्टमस्थ भौम पर पूर्ण दृष्टि होगी एवं ऐसे योग में बालक का मरण योग हो सकता है। यदि पंचम में गुरु हो तो लग्न एवं लग्नस्थ चन्द्र तथा धर्मस्थ

सूर्य पर पूर्ण दृष्टि होगी और अष्टम तथा व्यय भाव पर त्रिपाद दृष्टि होगी, ऐसे योग में बालक की मृत्यु सम्भव नहीं।

सुतमदननवान्त्यलग्नरन्ध्रे-,
ष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यै-,
र्यदि बलिभिर्न युतोऽवलोकितो वा॥

भाषा—क्षीण चन्द्र १।५।७।८।९।१२ वें भाव में पाप युक्त हो और बलवान शुभ ग्रहों (बुध गुरु, शुक्र) की दृष्टि न हो तो बालक की मृत्यु होती है।

सन्ध्यायां हिमदीधितिहोरा,
पापैर्भान्तगतैर्मरणाय।
प्रत्येकं शशिपापसमेतैः,
केन्द्रैर्वा स विनाशमुपैति॥

भाषा—सन्ध्या काल में जन्म हो लग्न में चन्द्र का होरा हो तथा लग्न के अन्त्य नवांश में पाप ग्रह हो तो बालक की मृत्यु होती है। अथवा चन्द्र एक केन्द्र में, एक केन्द्र में सूर्य, एक केन्द्र में भौम, एक केन्द्र में शनि हो तो भी बालक की मृत्यु होती है।

"पापैर्विलग्नास्तमयान्वितैश्च"

भाषा—२।६।८।१२ वें भाव में पापग्रह हो तो बालक की मृत्यु होती है।

नोट—इस श्लोक के विभिन्न आचार्योंने चार प्रकारके अर्थ किये है।

यथा— (१) २।१२ वें भाव में पापग्रह हो तो मृत्यु होती है।
(२) ६।८ वें भाव में पापग्रह हो तो मृत्यु होती है।
(३) २।८ वें भाव में पापग्रह हो तो मृत्यु होती है।
(४) ६।१२ वें भाव में पाप ग्रह हो तो मृत्यु होती है।

"चक्रस्य पूर्वापरभागगेषु,
क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः"

भाषा—पूर्व चक्रार्ध में क्रूरग्रह, पर चक्रार्ध में शुभ ग्रह हों एवं कर्क या वृश्चिक लग्न में जन्म हो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होती है।

चक्रार्ध—

लग्न के जितने अंश भुक्त हों। चतुर्थ स्थान के उतने अंश छोड़कर भोग्यांश (लग्न के भोग्यांश समान) से लग्न के भुक्तांश समान दशम भाव के अंश तक पर चक्रार्ध होता है। शेष पूर्व चक्रार्ध जानना।

उदाहरण—लग्न ३।२९।४१।२० है। चतुर्थ भाव के राश्यादि (६।२९। ४१।२०) से दशम भाव के राश्यादि (०।०।१८।४०) तक परचक्रार्ध हुआ, एवं दशमभाव के राश्यादि(०।०।१८।४०) से चतुर्थ भाव के राश्यादि (६।२९।४१।२०) तक पूर्व चक्रार्ध हुआ।

शशिन्नन्मृत्युदाः सौम्याश्चेद्वक्राः क्रूरवीक्षिताः।
शिशो जातस्य मासेन लग्ने सौम्यविवर्जिते॥

भाषा—यदि शुभ ग्रह (बु. गु. शु.) वक्री, क्रूर ग्रह से दृष्ट हों; लग्न में शुभ ग्रह न हो तो बालक की १ मास में मृत्यु होती है।

पापेक्षितयुतो भौमो लग्नगो न शुभेक्षितः।
मृत्युदस्त्वष्टमस्थोऽपि सौरेणार्केण वा पुनः॥

भाषा—लग्नस्थ मंगल पापग्रहों से युक्त व दृष्ट हो; एवं शुभग्रह से अदृष्ट हो तो बालक की मृत्यु होती है। यदि शनि या सूर्य अष्टम भाव में हो तो भी बालक की मृत्यु होती है।

लग्नस्थितो यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमा।
बालस्य तस्य रिष्टं स्याद्रक्षितो यदि शंकरः॥

भाषा—लग्न में राहु; केन्द्र में चन्द्र हो तो भी बालक की मृत्यु होती है।

सप्तमे च यदा राहुर्लग्ने भवति चन्द्रमा।
अष्टमे मंगलश्चैव स याति यममन्दिरम्॥

भाषा—सप्तम में राहु; लग्न में चन्द्र, अष्टम में भौम हो तो बालक की मृत्यु होती है ।

चन्द्रादित्यौ तृतीयस्थौ क्रूरभे क्रूरसंयुते ।
व्याधिन्तस्य विजानीयात्त्रिदोषश्चातिवर्तते ॥

भाषा—क्रूरग्रह की राशि (१।८।१०।११) में क्रूर ग्रह (मं. श. रा. के.) से युक्त सूर्य, चन्द्र तीसरे भाव में हों तो त्रिदोष (सन्निपात) की व्याधि होती है ।

होरायां कर्कटस्थेन्दौ निधने च समन्विते ।
निधनस्थः परः कश्चिज्जातमात्रो न जीवति ॥

भाषा—कर्क के होरा में चन्द्र अष्टमभाव में किसी अन्य ग्रह के साथ हो तो बालक की मृत्यु होती है ।

सहितौ जन्मयामित्रे यस्याङ्गारकभास्करौ ।
राहूदये यदा जातः आदशाहान्मृतिर्भवेत् ॥

भाषा—लग्न या सप्तम भाव में सूर्य मंगल एक साथ हों; लग्न में राहु हो तो बालक की ११ दिन में मृत्यु होती है ।

अर्केन्दुयोगराशिः पापयुतो यस्य केन्द्रनवमस्थः ।
निधनं कुरुतेऽवश्यं विषजलहेतुं न सन्देहः ॥

भाषा—सूर्य चन्द्र पापग्रह के साथ केन्द्र ( १।४।७।१० ) में या नवम भाव में हो तो विष या जल से मृत्यु होती है ।

चतुर्थे नवमे सूर्ये चाष्टमे च बृहस्पतौ ।
द्वादशस्थे शशांके च सद्यो मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥

भाषा—चतुर्थ या नवम भाव में सूर्य हो; अष्टम में गुरु हो; व्यय भाव में चन्द्र हो तो बालक की शीघ्र मृत्यु होती है ।

द्वादशस्थो यदा सौरिर्जन्मसंस्थोऽपि भूसुतः ।
चतुर्थे सैंहिकेयश्च सोऽष्टमासान्न जीवति ॥

भाषा—व्यय भाव में शनि, लग्न में मंगल, चतुर्थ में राहु हो तो बालक की ८ मास में मृत्यु होती है ।

शुभ लग्ने यदा जातः षष्ठे चैव निशाकरः ।
शनैश्चरश्च बन्धुस्थस्तृतीये मासि नश्यति ॥

भाषा—शुभ ग्रह की लग्न (२।३।४।६।७।९।१२) में जन्म हो, षष्ठ भाव में चन्द्र हो, शनि तृतीय भाव में हो तो तीसरे मास में बालक की मृत्यु होती है ।

मेषालिमृगकुम्भस्थो लग्नादष्टमगो रविः ।
द्वित्र्यादिपापकैर्दृष्टो मरणाय न संशयः ॥

भाषा—अष्टम भाव में १।८।१०।११ राशि पर सूर्य स्थित हो, दो या तीन पापग्रहों की दृष्टि हो तो बालक की मृत्यु होती है ।

लग्नाच्च नवमे सूर्यः सप्तमे च शनैश्चरः ।
एकादशे गुरुभृगू त्रिमासान्मृत्युमिच्छति ॥

भाषा—नवम भाव में सूर्य हो, सप्तम में शनि हो, लाभ भाव में गुरु, शुक्र हों तो बालक की तीन मास में मृत्यु होती है ।

लग्नात्षष्ठे शनिकुजौ सौम्यस्तु द्वादशे स्थितः ।
तनुस्थानगते चन्द्रे मासमेकं न जीवति ॥

भाषा—षष्ठ भाव में शनि, भौम हों, बुध बारहवें भाव में हो, लग्न में चन्द्र हो तो बालक की १ मास में मृत्यु होती है ।

अरिजायास्थिते चन्द्रे भृगुपुत्रेण संयुते ।
मार्तण्डे चाष्टमस्थे च मासमेकं न जीवति ॥

भाषा—६ या ७ वें भाव में चन्द्र शुक्र से युक्त हो, अष्टम में सूर्य हो तो बालक की १ मास में मृत्यु होती है ।

कृष्णपक्षे दिवा जातः सप्तमे गुरुभार्गवौ ।
चन्द्रे राहौ शनौ दृष्टे सप्तरात्रं न जीवति ॥

भाषा—कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो; सप्तम भाव में गुरु, शुक्र हो, इन पर चन्द्र, राहु, शनि की दृष्टि हो तो बालक की ७ दिन में मृत्यु होती है ।

## मृत्युकालज्ञान

योगे स्थानं गतवति वलिन-,
श्चन्द्रे स्वं वा तनुगृहमथवा।
पापैर्दृष्टे वलवति मरणं,
वर्षस्यान्ते किल मुनिगदितम्॥

भाषा—पूर्वोक्त जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं लिखा गया है उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो अधिक बलवान् हो; वह बलवान् ग्रह जन्म चक्र में जिस राशि में हो उस राशि में जब चन्द्र प्रवेश करता है; तब मृत्यु होती है।

अथवा जन्म चक्र में जिस राशि में चन्द्र हो उसी राशि पर जब चन्द्र फिर प्रवेश करता है तब मृत्यु होती है।

अथवा १ वर्ष के अन्दर उन अरिष्टयोग के स्थानों में जाकर जब चन्द्र बलवान् हो और पापदृष्ट हो तब मृत्यु होती है।

वक्रीशनिर्भौमगृहं प्रपन्नश्चन्द्रेऽष्टषष्ठेऽथ चतुष्टये वा।
कुजेन सम्प्राप्तवलेन दृष्टो वर्षद्वयं जीवयति प्रजातम्।

भाषा—वक्री शनि मेष या वृश्चिक राशि में हो; चन्द्र १।४।६।७।८ १० वें भाव में हो, बलवान् भौम की दृष्टि हो तो बालक दो वर्ष जीता है।

ग्रहणपरिवेषकाले जातः पापो विलग्नस्थः।
लग्ने वा वलहीने जीवति वर्षत्रयं त्रिमासं वा॥

भाषा—ग्रहण (चन्द्र, सूर्य) के समय जन्म हो, लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न निर्बल हो तो तीन मास या तीन वर्ष में मृत्यु होती है।

वृहस्पतिर्भौमगृहेऽष्टमस्थः सूर्येन्दुभौमार्कजदृष्टमूर्तिः।
अब्दैस्त्रिभिर्भार्गवदृष्टिहीनो लोकान्तरं प्रापयति प्रसूतम्॥

भाषा—गुरु मेष वा वृश्चिक राशिस्थ होकर अष्टमभाव में हो और सूर्य, चन्द्र, भौम, शनि की दृष्टि हो तथा शुक्र से अदृष्ट हो तो बालक की तीन वर्ष में मृत्यु होती है।

कर्कटधामनि सौम्यः षष्ठाष्टव्ययगतो विलग्नर्क्षात्।
चन्द्रेण दृष्टमूर्तिर्वर्षचतुष्केण मारयति ॥

भाषा—६।८।१२ वें भाव में कर्क राशि का बुध हो, चन्द्र की दृष्टि हो तो ४ वर्ष में बालक की मृत्यु होती है।

केन्द्रे रविमुषिततनुः क्षितिसुतमन्दावलोकितोऽथ युतः।
वर्षचतुष्के चन्द्रो मारयति किमत्र गणितेन ॥

भाषा—सूर्य सानिध्य से अस्त चन्द्र भौम, शनि से दृष्ट व युक्त हो तो बालक की ४ वर्ष में मृत्यु होती है।

षष्ठाष्टमे तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः।
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥

भाषा—१।६।८ वें भाव में बुध हो तो बालक की चौथे वर्ष मृत्यु होती है।

रविचन्द्रभौमगुरुभिः कुजगुरुसौरेन्दुभिस्तथैकस्थैः।
रविशनिभौमशशांकैर्मरणं खलु पंचभिर्वर्षैः।

भाषा—सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु एक साथ हों अथवा चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि एक साथ हों अथवा सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि एक साथ हों तो बालक की ५ वर्ष में मृत्यु होती है।

दर्शनभागे सौम्याः क्रूराश्चादृश्यके प्रसवकाले।
राहुर्लग्नोपगते यमक्षयं नयति पंचभिर्वर्षैः ॥

भाषा—शुभग्रह दृश्य भाग में हों एवं क्रूरग्रह अदृश्य भाग में हों; राहु लग्न में हो तो बालक की पांच वर्ष में मृत्यु होती है।

**दृश्यभाग—**

अष्टमस्थान से लग्नपर्यन्त भाग को दृश्य (उदित) और द्वितीय स्थान से सप्तमस्थानपर्यन्त भाग को अदृश्य (अनुदित) कहते हैं।

रविशशिभवने शुक्रो द्वादशरिपुरन्ध्रगः शुभैः सर्वैः।
दृष्टः करोति षड्भिवर्षैर्मरणं किमत्र चित्रं हि।

भाषा—कर्क या सिंह राशि का शुक्र ६।८।१२ वें भाव में हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक की ६ वर्ष में मृत्यु होती है।

यदा सुधारश्मिनवांशकस्थे निरीक्षिते शीतकरेण मन्दे।
लग्नाधिपे चन्द्रदृशा समेते जातस्य षड्वर्षमितं तदायुः॥

भाषा—चन्द्र से दृष्ट कर्क राशि के नवांश में शनि हो और लग्नेश पर भी चन्द्र की दृष्टि हो तो बालक की ६ वर्ष में मृत्यु होती है।

यस्याष्टमगः पापो लग्नेशो पापसंयुते केन्द्रे।
सौम्ययुतदृष्टिहीने निधनं स्यात्सप्तमे वर्षे॥

भाषा—अष्टम भाव में पापग्रह हो, पापयुक्त लग्नेश केन्द्र में हो एवं लग्नेश शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त न हो तो बालक की ७ वें वर्ष मृत्यु होती है।

लग्ने यद्द्रेष्काणा निगलाहिविहंगपाशधरसंज्ञाः।
मरणाय् सप्तवर्षैः क्रूरयुताः न स्वपतिदृष्टाः॥

भाषा—लग्न में निगल या अहि या विहंग या पाशधर संज्ञक जो द्रेष्काण हो उस द्रेष्काण की राशि में क्रूर ग्रह हो और द्रेष्काणेश से द्रेष्काण राशि अदृष्ट हो तो बालक की ७ वर्ष में मृत्यु होती है।

## निगलादिद्रेष्काण

कुलीरमीनालिगता दृकाणां, मध्यावसानप्रथमा भुजंगाः।
अलिद्वितीयो मृगलेयपूर्वः क्रमेण पाशो निगलो विहंगः॥

भाषा—कर्क राशि का द्वितीय द्रेष्काण, मीन राशि का तृतीय द्रेष्काण, वृश्चिक राशि का प्रथम द्रेष्काण भुजंग संज्ञक होता है वृश्चिक राशि का द्वितीय द्रेष्काण पाश, मकर राशि का प्रथम द्रेष्काण निगल, सिंह का प्रथम द्रेष्काण विहंग संज्ञक होता है।

लग्ने रविमन्दकुजैः शुक्रगृहे सप्तमे शशी क्षीणः।
दृष्टो न देवगुरुणा सप्तभिरब्दैर्विनाशमेति ॥

भाषा—लग्न में सूर्य, शनि, भौम हों, वृष या तुला राशि में स्थित क्षीण चन्द्र सप्तम भाव में गुरु से अदृष्ट हो तो बालक की सात वर्ष में मृत्यु होती है। "सप्तभिरष्टभिरब्दकैर्वा स्यात्" ऐसा भी पाठ है अर्थात् पूर्वोक्त योग में सात या आठ वर्ष में मृत्यु होती है।

घटसिंहवृश्चिकोदयकृतस्थितिर्जीवितं हरति राहुः।
पापैर्निरीक्ष्यमाणः सप्तभिर्तैर्निश्चितं वर्षैः ॥

भाषा—सिंह या वृश्चिक या कुंभ राशि का राहु लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो बालक की सात वर्ष में मृत्यु होती है।

वर्षान्मारयति शशी षष्ठाष्टमराशिसंस्थितो लग्नात्।
सद्यः क्रूरैर्दृष्टः सौम्यैरब्दाष्टकाच्चैव ॥

भाषा—६ या ८ वें भाव में चन्द्र हो और उस पर यदि अशुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो शीघ्र मृत्यु होती है। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो ८ वर्ष में मृत्यु होती है।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टसु च चन्द्रमा।
वर्षेऽष्टमेऽपि मृत्युर्वा ईश्वरो रक्षिता यदि ॥

भाषा—मेष या वृश्चिक राशि में गुरु हो, ६ या ८ वें भाव में चन्द्रमा हो तो बालक की ८ वर्ष में मृत्यु होती है।

## योगारिष्ट

भास्करहिमकरसहितः शनैश्चरो मृत्युदः प्रसवकाले ।
वर्षैर्नवभिर्यातैरित्याह ब्रह्मशौण्डाख्यः ॥

भाषा—पंचम भाव में सूर्य, चन्द्र के साथ शनि हो तो बालक की ९ वर्ष में मृत्यु होती है।

शुक्रो रविशनिसहितो मारयति नरं सदा प्रसवकाले ।
दृष्टोऽपि देवगुरुणा नवभिर्वर्षैर्न सन्देहः ॥

भाषा—पंचम भाव में शुक्र के साथ सूर्य, शनि हो तो प्रसव होते ही मृत्यु होती हैं और गुरु की दृष्टि हो तो बालक की ९ वर्ष में मृत्यु होती है।

लग्नाधिपतिः पापः शशिनोंऽशे रिष्फगो यदि च चन्द्रात् ।
क्रूरैर्विलोक्यमानो मारयति शिशुं नवभिरब्दैः ॥

भाषा—लग्नेश पापग्रह हो, कर्क के नवांश में होकर चन्द्र से १२ वें भाव में क्रूरग्रहों से दृष्ट हो तो बालक की ९ वर्ष में मृत्यु होती है।

चतुर्थे च यदा राहुः केन्द्रषष्ठाष्टगः शशी ।
दशमेऽब्दे भवेन्मृत्युः सद्यो जातो न संशयः ॥

भाषा—चतुर्थ भाव में राहु हो, १।४।६।७।८।१० वें भाव में चन्द्र हो तो १० वर्ष में बालक की मृत्यु होती है।

मृगांशकस्थिते मन्दे सौम्यदृष्टिसमन्विते ।
जन्मप्रभृतिशत्रुत्वं तस्यायुर्दशवत्सरम् ॥

भाषा—मकर के नवांश में शनि बुध से दृष्ट हो तो उस बालक के शत्रु अधिक होते हैं; तथा १० वर्ष में मृत्यु होती है।

राहुर्भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती,
क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत् ।
करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं,
वदन्ति वा षोडशभिश्च केचित् ॥

भाषा—क्रूरग्रहों से दृष्ट लग्न या दशम भाव में राहु हो तो १० या १६ वर्ष में बालक की मृत्यु होती है।

नोट—अन्य केन्द्रों में राहु इतना अरिष्ट नहीं करेगा जितना कि लग्न, दशम में; अतः 'लग्न या दशम में राहु' अर्थ किया गया है।

रविणा युक्तः शशिजः सौम्यैर्दृष्टो विनाशयति नूनम्।
एकादशभिर्वर्षैर्देवाङ्केऽपि स्थितं जातम्॥

भाषा—बुध सूर्य से युक्त और शुभग्रह से दृष्ट हो तो बालक की ११ वर्ष में मृत्यु होती है

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे हि बृहस्पतिः।
वर्षैर्द्वादशभिर्मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः॥

भाषा—जन्म लग्न में भौम हो; अष्टम भाव में गुरु हो तो १२ वर्ष में बालक की मृत्यु होती है।

राहुः सप्तमभवने शशिसूर्यनिरीक्षितो न शुभदृष्टः।
दशभिर्द्वाभ्यां सहितैरब्दैर्जातं विनाशयति॥

भाषा—सप्तम भाव में राहु हो और सूर्य चन्द्र से दृष्ट एवं शुभग्रहों से अदृष्ट हो तो बालक की १२ वर्ष में मृत्यु होती है।

चन्द्रलग्नाधिपः सूर्यः स्वपुत्रेण समन्वितः।
लग्नादष्टमराशिस्थो द्वादशाब्दे सितेक्षितः॥

भाषा—सिंह राशि में चन्द्र हो, सूर्य शनि एक साथ होकर शुक्र से दृष्ट अष्टम भाव में हो तो बालक की १२ वर्ष में मृत्यु होती है।

शनिक्षेत्रगते भानुः सूर्यक्षेत्रे यदा शनिः।
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि॥

भाषा—मकर या कुंभ राशि में सूर्य तथा सिंह राशि में शनि हो तो बालक की १२ वर्ष में मृत्यु होती है।

अल्पांशकस्थिते मन्दे सूर्येणैव निरीक्षिते।
पितृद्वेषसमायुक्तो द्वादशाब्दं च जीवति॥

भाषा—वृश्चिक के नवांश में शनि सूर्य से दृष्ट हो तो बालक की १२ वर्ष में मृत्यु होती है।

तुलांशकस्थिते मन्दे जीवदृष्टिसमन्विते।
त्रयोदशाब्दे मरणं जातस्य पितृवैरिणः॥

भाषा—तुला के नवांश में शनि हो, गुरु की दृष्टि हो तो बालक पिता का वैरी तथा १३ वर्ष में मृत्यु होती है।

कन्यांशकस्थिते मन्दे सौम्यदृष्टिसमन्विते।
चतुर्दशाब्दे मरणं जातः कोपी समेति च॥

भाषा—कन्या के नवांश में शनि बुध से दृष्ट हो तो बालक क्रोधी तथा १४ वर्ष में मृत्यु होती है।

सिंहांशकस्थिते मन्दे राहुणा च निरीक्षिते।
शस्त्रपीडा भवेत्तस्य चायुः पंचदशाब्दकम्॥

भाषा—सिंह के नवांश में शनि राहु से दृष्ट हो तो शस्त्रघात तथा १५ वर्ष में मृत्यु होती है।

कर्कांशकस्थिते मन्दे जीवदृष्टिसमन्विते।
सर्पपीडा भवेत्तस्य षोडशाब्दान्मृतिर्भवेत्॥

भाषा—कर्क के नवांश में शनि गुरु से दृष्ट हो तो बालक को सर्प भय तथा १६ वर्ष में मृत्यु होती है।

युग्मांशकस्थिते मन्दे लग्ननाथेन वीक्षिते।
रणशूरो महाभोगी मृतः सप्तदशाब्दके॥

भाषा—मिथुन के नवांश में शनि लग्नेश से दृष्ट हो तो वह बालक ऐश्वर्यवान्, रणशूर तथा १७ वर्ष में मृत्यु होती है।

परस्परक्षेत्रसमन्वितौ वा,
रन्ध्रेशलग्नाधिपतो न सौम्यौ।
रिष्फारिभे वा गुरुणा वियुक्ते,
त्वष्टादशाब्दे निधनं प्रयाति॥

भाषा—लग्नेश अष्टम में, अष्टमेश लग्न में हो अथवा लग्नेश, अष्टमेश पापग्रह हों अथवा ६ या १२ वें भाव में लग्नेश या अष्टमेश हों, गुरु से युक्त न हो तो वालक की १८ वर्ष में मृत्यु होती है।

जीवांशकस्थिते मन्दे राहुणा च निरीक्षिते।
देहाधिपे यदा दृष्टे जातः सद्यो विनश्यति॥

भाषा—धनु या मकर के नवांश में शनि राहु से दृष्ट हो और लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो वालक की शीघ्र मृत्यु होती है

तदीशस्तुंगभागश्चेदायुरेकोनविंशतिः॥

भाषा—पूर्वोक्त योग हो अथवा लग्नेश उच्च राशि का हो तो वालक की १९ वर्ष में मृत्यु होती है।

शनिक्षेत्रगते भानुः सूर्यक्षेत्रगतः शशी।
विंशाद्वर्षे वदेन्नाशो रक्षितो यदि शंकरः॥

भाषा—मकर या कुंभ राशि में सूर्य तथा सिंह राशि में चन्द्र हो तो वालक की २० वर्ष में मृत्यु होती है।

केन्द्रेषु पापेषु निशाकरेण,
सौम्यग्रहैरीक्षणवर्जितेषु।
षष्ठाष्टमे वा यदि शीतरश्मौ,
जातः सुखी विंशतिवत्सरान्तरम्॥

भाषा—केन्द्र में पापग्रह हों; चन्द्र या शुभ ग्रह की दृष्टि न हो अथवा ६ या ८ वें भाव में चन्द्र हो तो वालक की २० वर्ष में मृत्यु होती है।

## स्वल्पायुयोग

जीवेन सहितः सूर्यो लग्नस्थः कीटराशिगः।
अष्टमाधिपतौ केन्द्रे द्वाविंशत्यब्दके मृतिः॥

भाषा—वृश्चिक का सूर्य गुरु के साथ लग्न में हो; अष्टमेश केन्द्र में हो तो २२ वर्ष में मृत्यु होती है।

मन्दोदये शत्रुराशौ सौम्यैरापोक्लिमोपगैः।
षड्विंशत्यब्दके वा स्यात्सप्तविंशतिवत्सरे॥

भाषा—शत्रु राशि (१।४।५।८) का शनि लग्न में हो; शुभ ग्रह (चं. बु. गु. शु.) आपोक्लिम (३।६।९।१२वें भाव) में हों तो २६ या २७ वर्ष में मृत्यु होती है।

रन्ध्रेशजीवसंदृष्टे पापे पापनिरीक्षिते।
रन्ध्रस्थे जन्मपे मृत्युरष्टाविंशतिवत्सरे॥

भाषा—रन्ध्रेश पापग्रह हो और गुरु या पापग्रह से दृष्ट हो; लग्नेश अष्टम भाव हो में तो २८ वर्ष में मृत्यु होती है।

चन्द्रमन्दसहायस्तु सूर्यश्चाष्टमसंस्थितः।
एकोनत्रिंशके वर्षे जातो यमपुरं व्रजेत्॥

भाषा—चन्द्र या शनि से युक्त सूर्य अष्टम भाव में हो तो २९ वर्ष में मृत्यु होती है।

जन्मरन्ध्रपयोर्मध्ये निशानाथे व्यये गुरौ।
सप्तविंशतिवर्षे वा त्रिंशद्वयसि वा मृतिः॥

भाषा—चन्द्रलग्नेश और रन्ध्रेश के मध्य में चन्द्र हो; व्यय भाव में गुरु हो तो २७ या ३० वर्ष में मृत्यु होती है।

अष्टमाधिपतौ केन्द्रे लग्नेशे बलवर्जिते।
त्रिंशद्वर्षमितायुष्मान् द्वात्रिंशद्वत्सरे मृतिः॥

भाषा—रन्ध्रेश केन्द्र में हो और लग्नेश निर्बली हो तो ३० या ३२ वर्ष में मृत्यु होती है। 'विंशतिवर्षाणि सो जीवेद्द्वात्रिंशत्परमायुषम्' ऐसा भी पाठ है।

क्षीणे शशांके यदि पापयुक्ते,
रन्ध्राधिपे केन्द्रगतेऽष्टमे वा।
पापान्विते हीनबले विलग्ने,
द्वात्रिंशदब्दे निधनं प्रयाति ।

भाषा—चन्द्र क्षीण हो; अष्टमेश पापयुक्त केन्द्र या अष्टम भाव में हो; लग्न पापयुक्त निर्बल हो तो ३२ वर्ष में मृत्यु होती है ।

षष्ठाष्टमव्यये पापे लग्नेशो दुर्बले सति।
अल्पायुरनपत्यो वा शुभदृग्योगवर्जिते ॥

भाषा—६।८।१२ वें भाव में पापग्रह हो; लग्नेश निर्बली हो, शुभग्रह से दृष्ट व युक्त न हो तो अल्पायु या सन्ततिहीन होता है ।

क्रूरषष्ट्यंशके वापि रन्ध्रेशे भानुजेऽपि वा ।
पापान्विते पापखेटे चाल्पमायुर्विनिर्दिशेत् ॥

भाषा—अष्टमेश शनि या पापग्रह हो अथवा अष्टमेश पापग्रह से युक्त या षष्ट्यंश के क्रूरांश में हो तो अल्पायु होती है ।

व्ययार्थौ पापसंयुक्तौ शुभदृष्टिविवर्जितौ ।
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तौ चाल्पमायुर्विनिर्दिशेत् ॥

भाषा—व्यय, धन भाव में पापग्रह हों; शुभग्रह की दृष्टि न हो; धन, व्ययस्थ पापग्रह षष्ट्यंश के क्रूरांश में हों तो अल्पायु होती है ।

## अरिष्टभंगयोग

अत्यन्तसत्वे यदि लग्ननाथे,
सौम्यान्विते तादृशदृष्टियोगे ।
केन्द्रस्थिते पापदृशाविहीने,
सद्भाग्ययुग् जीवति दीर्घमायुः ॥

भाषा—शुभग्रह से दृष्ट या युक्त बलवान् लग्नेश केन्द्र में पापदृष्टि से रहित हो तो बालक भाग्यवान् एवं दीर्घायु होता है ।

चन्द्रः सम्पूर्णगात्रस्तु सौम्यक्षेत्रांशगोऽपि वा।
सर्वारिष्टनिहन्ता स्याद्विशेषाच्छुक्रवीक्षितः॥

भाषा—पूर्ण चन्द्र शुभग्रह की राशि में या शुभग्रह के नवांश में हो और शुक्र की दृष्टि हो तो सब अरिष्ट नाश होते हैं।

नोट—सौम्य का अर्थ 'बुध' भी है। 'शुभवीक्षितः' ऐसा भी पाठ है।

त्रिषडेकादशे भौमस्त्रिषडेकादशे शनिः।
त्रिषडेकादशे राहुः सर्वारिष्टनिवारकः॥

भाषा—३।६।११ वें भाव में भौम, शनि, राहु एकत्र या दो या एक ही हो तो सब अरिष्ट दूर होते हैं।

जीवभार्गवसौम्यानामेकः केन्द्रगतो वली।
पापदृग्योगहीनश्चेत् सद्योऽरिष्टस्य भंगकृत्॥

भाषा—बुध, गुरु, शुक्र इन तीनों में एक भी बलवान् होकर केन्द्र में हो और पापग्रह से दृष्ट व युक्त न हो तो अरिष्ट का नाश होता है।

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्लपक्षेऽथवा निशि।
रिष्फारिरन्ध्रगश्चन्द्रो मातृवत्परिपालकः॥

भाषा—कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो अथवा शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो और ऐसे योग में ६।८।१२ वें भावस्थ चन्द्र माता की तरह पुत्र का पालन करता है अर्थात् अरिष्ट दूर होता है। 'शुभाशुभदृष्टमूर्तिः' ऐसा भी पाठ उक्त योग के साथ है। अर्थात् त्रिकस्थ चन्द्र को शुभाशुभ ग्रह देखते हों तो भी अरिष्ट दूर होता है।

"केन्द्रपगोऽतिवलवान् स्फुरदंशुमाली,
स्वर्लोकराजिसचिवः शमयेदवश्यम्।"

भाषा—बलवान् गुरु केन्द्र में हो तो अनेकों अरिष्ट दूर होते हैं।

लग्नेशो वलयुक्तश्चेत्त्रिकोणे वा चतुष्टये।
अरिष्टयोगजातोऽपि वालो जीवति निश्चयः॥

भाषा—बलवान् लग्नेश १।४।५।७।९।१० वें भाव में हो तो अरिष्टयोग होने पर भी बालक की चिरायु होती है ।

यस्य जन्मनि तुंगस्थाः स्वक्षेत्रस्थानमाश्रिताः ।
चिरायुषं शिशुं जातं कुर्वन्त्यत्र न संशयः ॥

भाषा—जिसकी कुण्डली में अधिक ग्रह उच्च या स्वगृही हों उसकी चिरायु होती है ।

"अजवृषकर्किविलग्ने रक्षति राहुर्निरन्तरं बालम्"

भाषा—मेष या वृष या कर्क राशि का राहु लग्न में हो तो चिरायु होती है ।

चन्द्राधिष्ठितराशीशो लग्नस्थे शुभवीक्षिते ।
भृगुणा वीक्षिते चन्द्रे स्वोच्चेऽरिष्टं हरेत्तदा ॥

भाषा—चन्द्रलग्नेश शुभग्रह से दृष्ट लग्न में हो अथवा उच्च राशि का चन्द्र शुक्र से दृष्ट हो तो अरिष्ट का नाश होता है ।

निशाकरः शोभनवर्गयुक्तः,
शुभेक्षितः पूरितदीप्तिजालः ।
जातस्य निःशेषमरिष्टमाशु,
निर्हन्ति यद्वद्‌द्रुमं गरुत्मान् ॥

भाषा—पूर्ण चन्द्र शुभग्रह के वर्ग में तथा शुभग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट नाश होता है ।

स्वोच्चस्थे स्वगृहेऽथवापि सुहृदां वर्गे च सौम्यस्य वा,
सम्पूर्णे शुभवीक्षिते शशिधरे वर्गे स्वकीयेऽपि वा ।
शत्रूणामवलोकनादिरहिते पापैरयुक्तेक्षिते,
रिष्टं हन्ति सुदुस्तरं दिनमणिः प्रालेयराशिं यथा ॥

भाषा—चन्द्र अपने उच्च में अथवा स्वगृही अथवा मित्र या शुभ ग्रह के वर्ग में, पूर्ण, शुभ दृष्ट अथवा अपने वर्ग में हो एवं पापग्रह से युक्त व दृष्ट न हो, अथवा शत्रुग्रह से दृष्ट व युक्त न हो तो अरिष्ट का नाश होता है ।

## आयुर्योग

लग्नाधीशोऽतिवीर्यो यदि शुभविहगैरीक्षितः केन्द्रयातै-,
र्दद्यादायुः सुदीर्घं गुणगणसहितं श्रीयुतं मानवानाम् ।
सौम्याः केन्द्रालयस्था जनुषि च रजनीनायके स्वोच्चतुंगे,
वीर्य्याढ्ये लग्ननाथे वपुषि च शरदां षष्टिरायुर्नराणाम् ॥

भाषा—बलवान् लग्नेश केन्द्र में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो दीर्घायु, शुभगुण एवं लक्ष्मीवान् होता है। शुभग्रह केन्द्र में हों, चन्द्र उच्चराशि का हो, बलवान् लग्नेश लग्न में हो तो ६० वर्ष को आयु होती है।

सौम्याः केन्द्रालयस्था वपुषि सुरगुरौ लग्नतो वा सुधांशो-,
रायुर्युक्तं न दृष्टं न च गगनगतैः सप्ततिर्वत्सराणाम् ।
याता मूलत्रिकोणे शुभगगनचराः स्वोच्चतुंगे सुरेज्ये,
लग्नाधीशोऽतिवीर्य्ये गगनवसुसमास्तुल्यमायुर्नराणाम् ॥

भाषा—शुभ ग्रह केन्द्र में हों, गुरु लग्न में हों, दशमस्थ शुभग्रह पापग्रह से दृष्ट व युक्त न हो तो ७० वर्ष की आयु होती है। शुभग्रह मूलत्रिकोण में हो, गुरु उच्चराशि का हो, लग्नेश बलवान् हो तो ८० वर्ष की आयु होती है।

सौम्ये केन्द्रेऽतिवीर्ये यदि निधनपदं खेटहीनं समाः स्यु-,
स्त्रिंशत्सौम्येक्षितश्चेद् गगनहिमकरैः संयुतोऽथ स्वभे चेत् ।
स्वत्र्यंशे चामरेज्ये मुनिनयनमितं स्वर्क्षगे लग्नगे वा,
चन्द्रे द्यूने शुभश्चेद्गगनरसमितं कोणगाः सौम्यखेटाः ॥

भाषा—बलवान् बुध केन्द्र में हो, अष्टम भाव में ग्रह न हो तो ३० वर्ष की आयु होती है। यदि अष्टम भाव शुभग्रह से दृष्ट हो तो

४० वर्ष की आयु होती है। गुरु अपनी राशि या अपने द्रेष्काण में हो तो २७ वर्ष की आयु की होती है। स्वराशि या लग्न में चन्द्र हो, सप्तम भाव में शुभग्रह हो तो ६० वर्ष की आयु होती है।

कीटे लग्ने सुरेज्ये यदि भवति तदा खाष्टतुल्यं लयेशो,
धर्मेऽङ्गे चाङ्गनाथे निधनभवनगे क्रूरदृष्टेऽब्धिहस्ताः।
लग्नाधीशाष्टनाथौ लयभवनगतौ सप्तविंशद्विलग्ने,
क्रूरेज्यौ चन्द्रदृष्टौ यदि निधनगतःकश्चनास्ते द्विपक्षाः॥

भाषा—शुभ ग्रह त्रिकोण (५।९) में हों, उच्च का गुरु लग्न में हो तो ८० वर्ष की आयु होती है। अष्टमेश नवम भाव में हो, लग्नेश पापग्रह से दृष्ट अष्टम भाव में हो तो २४ वर्ष की आयु होती है। लग्नेश, अष्टमेश दोनों अष्टम भाव में हो तो २७ वर्ष की आयु होती है। गुरु पापग्रह के साथ लग्न में चन्द्र से दृष्ट हो और अष्टम भाव में कोई भी ग्रह हो तो २२ वर्ष की आयु होती है।

लग्नेन्दू क्रूरहीनौ वपुषि सुरगुरौ रन्ध्रभं खेटहीनं,
केन्द्रे सौम्ये खशैलाः स्मितविबुधगुरू स्याच्छतं केन्द्रगौ चेत्।
वागीशे कर्कलग्ने शतमिह भृगुजे केन्द्रगेऽथार्कसूनौ,
धर्माङ्गस्थे सुधांशौ व्ययनवमगतो हायनानां शतं स्यात्॥

भाषा—लग्न और चन्द्र दोनों पापग्रह से दृष्ट व युक्त न हों, गुरु लग्न में हो, अष्टमभाव में ग्रह न हो, केन्द्र में शुभग्रह हो तो ७० वर्ष की आयु होती है। यदि शुक्र, गुरु केन्द्र में हो तो १०० वर्ष की आयु होती है। गुरु उच्च का हो, शुक्र केन्द्र में हो तो भी १०० वर्ष की आयु होती है। शनि लग्न या नवम

भाव में हो, चन्द्र नवम या व्यय भाव में हो तो १०० वर्ष की आयु होती है।

धीकेन्द्रायुर्नवस्था यदि खलखचरा नो गुरोर्भे विलग्ने,
केन्द्रे काव्ये गुरौ वा शुभमपि निधनं सौम्यदृष्टं शतं स्यात्।
लग्नादिन्दोर्न खेटा यदि निधनगता वीर्यभाजौ सितेज्यौ,
पूर्णायुःस्वीयराशौ शुभगगनचराःषष्टिरंऽगोच्चगेऽब्जे ॥

भाषा—१।४।५।७।८।९।१० वें भाव में पाप ग्रह न हो, लग्न में धनु या मीन राशि हो, केन्द्र में गुरु या शुक्र हो अष्टम और नवम भाव पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो १०० वर्ष की आयु होती है। लग्न और चन्द्र से अष्टम भाव में कोई ग्रह न हो, गुरु एवं शुक्र बलवान् हो तो पूर्णायु (१२० वर्ष) होती है। यदि शुभग्रह अपनी २ राशि में हो, वृष राशि में चन्द्र हो तो ६० वर्ष की आयु होती है।

कोदण्डान्त्यार्धमङ्गं यदि सकलखगाः स्वोच्चगा ज्ञे जिनांशैं-,
गोंऽस्थे पूर्णे च केन्द्रे सुरपतिभृगुजौ लाभगेऽब्जे परायुः।
शुक्रे मीने तनुस्थे निधनगृहगते सौम्यदृष्टेऽसुधांशौ,
जीवे केन्द्रे शतं स्यादथ तनुगृहपे छिद्रगे पुष्करेऽब्जे ॥

भाषा—लग्न में धनु राशि हो एवं चन्द्र का होरा हो, बुध २४ अंश से वृष राशि में हो, और सम्पूर्ण ग्रह उच्च राशि के हों तो पूर्णायु होती है। अथवा गुरु, शुक्र केन्द्र में हो चन्द्र लाभ भाव में हो तो भी पूर्णायु होती है। मीन राशि का शुक्र लग्न में हो, अष्टम भाव में चन्द्र शुभ ग्रह से दृष्ट हो गुरु केन्द्र में हो तो १०० वर्ष की आयु होती है।

वागीशो वीर्ययुक्ते नवमभवनगाः सर्वखेटाः शतायुः,
कर्केऽङ्गे जीव चन्द्रौ सहजरिपुभवे सत्कविज्ञौ च केन्द्रे ।
केन्द्रे सूर्यारमन्दा गुरुनवलवगा वाक्पतौ लग्नयाते,
व्यष्टस्थानेषु शेषाः शरगजतुलितं स्यान्नराणां तदायुः ॥

भाषा—लग्नेश अष्टम भाव में हो, चन्द्र दशम भाव में हो, गुरु बलवान् हो, अन्य ग्रह नवम भाव में हों तो १०० वर्ष की आयु होती है। कर्क राशि में चन्द्र गुरु एक साथ ३ या ६ या ११ वें भाव में हों, बुध शुक्र केन्द्र में हों तो १०० वर्ष की आयु होती है। सूर्य, भौम, शनि तीनों गुरु के नवांश में स्थित केन्द्र में हों, गुरु लग्न में हो, अन्य ग्रह अष्टम भाव को छोड़कर किसी भाव में हों तो ८५ वर्ष की आयु होती है।

क्रूराः सौम्यांशयाता उपचयगृहगाः कातराः कण्टकस्थाः,
सौम्या व्योमार्कसंख्या यदि तनुपकुजौ रंध्रगौ नो परायुः।
केन्द्रे लग्नेशजीवौ नवसुतनिधने कंटके नो खलाख्याः,
संपूर्णाःपापखेटा यदि गुरुजलगा जीवभावे च सौम्याः ।

भाषा—पाप ग्रह ३।६।१०।११ वें भाव में शुभग्रह के नवांश में हों तथा युद्ध में पराजित हों शुभग्रह केन्द्र में हों तो पूर्णायु (१२०) होती है यदि इसी योग में लग्नेश और भौम अष्टम भाव में हों तो पूर्णायु नहीं होती। लग्नेश, गुरु केन्द्र में हो, १।४।५।७।८।९।१० वें भाव में पापग्रह न हो तो पूर्णायु (१२०) होती है। सब पापग्रह ४।५।९ वें भाव में हों, शुभग्रह, गुरु के नवांश या सम राशि के नवांश में द्वादश या धन भाव में हों तो धनवान् एवं १०० वर्ष की आयु होती है।

युग्मर्क्षांशे गता वा व्ययधनगृहगाश्चेच्छुभाः शीतभानुः,
सम्पूर्णो लग्नयायी शतमिह जनिमानिन्दिरामन्दिरं स्यात् ॥
लग्नेशो सौम्ययुक्तो वपुषि च लयपे रन्ध्रगे नान्यदृष्टे,
विंशत्केन्द्रे लयेशो बलवियुजि तथा लग्नपे त्रिंशदायुः ।

भाषा—पूर्वार्ध श्लोक का अर्थ पूर्व श्लोक के साथ है। लग्नेश शुभग्रह से युक्त लग्न में हो, अन्य ग्रहों की दृष्टि न हो, अष्टमेश अष्टम भाव में हो तो २० वर्ष की आयु होती है। निर्बली अष्टमेश और लग्नेश केन्द्र में हो तो ३० वर्ष की आयु होती है।

इन्दावापोक्लिमस्थे तदनु तनुपतौ निर्बले पापदृष्टे,
दन्तैस्तुल्यं ततोऽर्कः खलखगविवरे लग्नगोऽब्ज.स्त्रिसंख्यम् ॥
रिष्फे केन्द्रे सुरेज्ये गुरुरिपुसहजे स्यात्सपापेंऽगनाथे,
रामाब्दं कर्कलग्ने कुजतुहिनकरे केन्द्ररन्ध्रं ग्रहोनम् ।

भाषा—निर्बली चन्द्र और लग्नेश पापग्रह से दृष्ट ३।६।९।१२ वें भाव में हो तो ३२ वर्ष की आयु होती है। यदि सूर्य पापग्रह के साथ लग्न में हो तो ३१ वर्ष की आयु होती है। गुरु केन्द्र या व्यय भाव में अथवा पापयुक्त लग्नेश ३।६।९ वें भाव में हो तो ३ वर्ष की आयु होती है। चन्द्र,भौम दोनों कर्क लग्न में हों, केन्द्र तथा अष्टमभाव में ग्रह न हों तो तीन वर्ष की आयु होती है।

रामाब्दं स्याल्लयेशो वपुषि च निधनं सौम्यहीनं खवेदा,
लग्नेशो रन्ध्रयातो वपुषि निधनपः स्यान्नृणां बाणसंख्यम् ।
नक्रे तिग्मांशुमन्दौ सहजरिपगतौ कंटके रन्ध्रनाथे,
पारावाराब्धिसंख्यां तदनु शुभखगाः सल्लवर्क्षेऽत्र खाग्निः ॥

भाषा—रन्ध्रेश लग्न में हो, अष्टम भाव में शुभ ग्रह न हो तो ४० वर्ष की आयु होती है। लग्नेश अष्टम में, अष्टमेश लग्न में हो तो ५ वर्ष की आयु होती है। मकर राशि में शनि और सूर्य ३ या ६ भाव में हो, अष्टमेश केन्द्र में हो तो ४४ वर्ष की आयु होती है। शुभग्रह यदि शुभग्रह के घर में या शुभग्रह के नवांश में हो तो ३० वर्ष की आयु होती है।

क्रूरैर्दृष्टेऽङ्गनाथे यदि शुभविहगा वीर्यवंतः सुधांशौ,
संस्थे सौम्ये गणे चेद्‌ गुणमुनितुलितं रन्ध्रगैर्मध्यमायुः।
स्याच्चन्द्रादन्हि पापैरथ तपनसुते द्व्यङ्गलग्ने हि याते,
रिष्फेशो रन्ध्रनाथे यदि बलरहिते कंकपत्राक्षसंख्यम्॥

भाषा—लग्नेश पापग्रह से दृष्ट हो, शुभग्रह बलवान् हों, चन्द्र शुभग्रह के वर्ग में किसी भाव में हो तो ७३ वर्ष की आयु होती है। चन्द्र से अष्टम भाव में पापग्रह हो, दिन में जन्म हो तो मध्यमायु (६४) होती है। द्विस्वभाव राशि का शनि लग्न में हो, व्ययेश, अष्टमेश निर्बल हो तो २५ वर्ष की आयु होती है।

कर्केऽङ्गे सप्तसप्तौ खलविहगयुते पुष्करस्थे द्विजेशो,
केन्द्रे याते सुरेज्ये शरविशिखमितं पुष्करे नीरगे वा।
सौम्ये पीयूषभानौ व्ययनिधनगते देहगे वा कवीज्या-,
वेकर्क्षे व्योमबाणैर्व्ययरिपुनिधने लग्ननाथाढ्यचन्द्रे॥

भाषा—पापग्रह के साथ कर्क राशि का सूर्य लग्न में हो, चन्द्र दशम भाव में हो, केन्द्र में गुरु हो तो ५५ वर्ष की आयु होती है। बुध ४ या १० वें भाव में हो, चन्द्र लग्न या रन्ध्र या व्यय भाव में हो, गुरु और शुक्र एक साथ हों तो ५० वर्ष की आयु होती है। लग्नेश के साथ चन्द्र ६।८।१२ वें भाव में हो, लग्नेश शनि के नवांश में हो तो ५८ वर्ष की आयु होती है।

शन्यंशे लग्ननाथे भुजगशरमितं स्यादथो सौम्यखेटा,
रन्ध्रोना देहनाथो व्ययरिपुनिधने पापयुक् षष्टिरायुः।

राशीशो लग्ननाथो दिनमणिसहितो मृत्युगो वाक्पतिश्चे-,
न्नो केन्द्रे षष्टिरायुर्वपुषि दिनपतिः शत्रुभौमान्वितश्चेत् ॥

भाषा—अष्टमभाव में शुभग्रह न हो, लग्नेश पापग्रह के साथ ६।८।
१२ वें भाव में हो तो ६० वर्ष की आयु होती है। चन्द्रलग्नेश
के साथ सूर्य और लग्नेश अष्टमभाव में हो, गुरु केन्द्र में न हो
तो ६० वर्ष की आयु होती है। लग्न में सूर्य भौम और शुक्र या
शनि एक साथ हों, गुरु निर्बली हो, चन्द्र ५ या १२ वें भाव
में हो तो७० वर्ष की आयु होती है।

वागीशे हीनवीर्ये व्ययतनुजगते यामिनीशे खशैला,
धर्मे सर्वैः परायुःखलखगलवगैः केन्द्रयातैरशीतिः।
क्रूरैःक्रूरर्क्षयातैः शुभभवनगतैः सौम्यखेटैःसवीर्यै,
लग्नेशे स्यात्परायुः सुतभवनगतैः षष्टिरायुर्नराणाम् ॥

भाषा—सब ग्रह नवम भाव में हों तो दीर्घायु होती है। सब ग्रह पाप
ग्रह के नवांश में केन्द्र में हों तो ८० वर्ष की आयु होती
है। पापग्रह; पापग्रह की राशि में, शुभग्रह; शुभग्रह की
राशि में हों, लग्नेश वलवान् हो तो पूर्णायु (१२० वर्ष) होती
है। सब ग्रह पंचमभाव में हो तो ६० वर्ष की आयु होती है।

सारंगस्यान्त्यभागे यदि वपुषि गते चाद्यभागे च केन्द्रे,
सौम्यैः खेटैःशतं स्याद्वसुसहजसुखे स्याच्चिरायुःसमस्तैः।
लग्नात्प्रालेयभानोर्निधनसदनपे रिष्फकेन्द्रेऽष्टविंशत्,
केन्द्रे सौम्यग्रहोने यदि मृतिभवने कश्चिदास्ते खरामाः ॥

भाषा—धनु राशि लग्न में एवं लग्न वर्गोत्तम हो अर्थात् धनु का नवांश
भी हो तथा मेष राशि के नवांश में शुभग्रह केन्द्र में हों तो
१०० वर्ष की आयु होती है। सब ग्रह ३।४।८ वें भाव में हों
तो दीर्घायु होती है।लग्न या चन्द्र से अष्टमभाव का स्वामी केन्द्र
में या व्यय में हों तो २८ वर्ष की आयु होती है। केन्द्र में

शुभग्रह न हो, अष्टमभाव कोई भी ग्रह से युक्त हो तो २० वर्ष की आयु होती है।

क्षीणे प्रालेयभानौ यदि खलखचरो मृत्युगो मृत्युनाथः,
केन्द्रस्थो लग्ननाथो निजबलरहितःखाशिवतुल्यं तदायुः।
सौम्यैरापोक्लिमस्थैर्दिनमणिजविधू वैरिरन्ध्रालयस्थौ,
तुल्यं कामांकुशैःस्यादथ धनमृतिगौ रिष्फगौ पापखेटौ ॥

भाषा—चन्द्र क्षीण हो, 'अष्टमभाव में पापग्रह हो, अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश निर्बल हो तो २० वर्ष की आयु होती है। शुभग्रह आपोक्लिम में हों, शनि और चन्द्र ६ या ८ वें भाव में हों तो २० वर्ष की आयु होती है।

हीनौ स्वर्भानुना वा यदि हिममहसा व्योमनेत्रप्रमाणं,
केन्द्रस्थौ सूर्यमंदौ यदि वपुषि कुजः पुष्पबाणांकुशं स्यात्।
शुक्रेज्यावङ्गजातौ तनयभवनगौ भौमपापावनायु-,
र्जन्मेशः सार्कलग्ने खलशुभसहितश्चेक्षितः स्यादनायुः॥

भाषा—राहु और चन्द्र को छोड़कर अन्य पापग्रह २।८।१२ वें भाव में हो तो २० वर्ष की आयु होती है। सूर्य, शनि केन्द्र में हों लग्न में भौम हो तो २० वर्ष की आयु होती है। शुक्र, गुरु लग्न में हों, भौम पापग्रह के साथ पंचमभाव में हो अथवा चन्द्र-लग्नेश सूर्य के साथ लग्न में हो और किसी (शुभाशुभ) ग्रह से दृष्ट व युक्त हो तो अल्पायु होती है।

## जैमिनिमतायु

महर्षि जैमिनि के मत से आयु के तीन भेद हैं, अल्पायु, मध्यायु, दीर्घायु।

'आयुः पितृदिनेशाभ्याम्' (जै. सू.)

भाषा—आयु का विचार लग्नेश, अष्टमेश से करना चाहिए।

## दीर्घायुयोग

'प्रथमयोरुत्तरयोर्वा दीर्घम्'

भाषा—लग्नेशाष्टमेश चर राशि में हों तो दीर्घायु; अथवा एक स्थिर में, दूसरा द्विस्वभाव में हो तो भी दीर्घायु होती है।

## मध्यायुयोग

'प्रथमद्वितीययोरन्त्ययोर्वा मध्यम्'

भाषा—लग्नेशाष्टमेश में एक चर में, दूसरा स्थिर में हो तो मध्यायु; अथवा दोनों द्विस्वभाव में हों तो भी मध्यायु होती है।

## अल्पायुयोग

'मध्ययोराद्यन्त्ययोर्वा हीनम्'

भाषा—लग्नेशाष्टमेश दोनों स्थिर में तो अल्पायु; अथवा एक चर में, दूसरा द्विस्वभाव में हो तो भी अल्पायु होती है। स्पष्टता के लिये आगे आयुर्बोधकचक्र लिखा जाता है।

## आयुर्बोधकचक्र

| दीर्घायु | | मध्यायु | | अल्पायु | |
|---|---|---|---|---|---|
| लग्नेश | रन्ध्रेश | लग्नेश | रन्ध्रेश | लग्नेश | रन्ध्रेश |
| चर | चर | चर | स्थिर | चर | द्विस्व. |
| स्थिर | द्विस्व. | स्थिर | चर | स्थिर | स्थिर |
| द्विस्व. | स्थिर | द्विस्व. | द्विस्व. | द्विस्व. | चर |

'एवं मन्दचन्द्राभ्याम्'

भाषा—लग्नेशाष्टमेश की तरह शनि, चन्द्र से भी आयु का विचार करना चाहिए। कहां पर मन्द, चन्द्र से और कहां पर लग्न चन्द्र से विचार करना चाहिए। यह आगे लिखा जाता है।

'पितृलाभगेचन्द्रे लग्नचन्द्राभ्याम्'

भाषा—लग्न या सप्तम भाव में चन्द्र हो तो लग्न चन्द्र से आयु का

विचार करना चाहिये। यदि लग्न या सप्तम भाव में चन्द्र न हो तो शनि, चन्द्र से आयु का विचार करना चाहिए।

'पितृकालतश्च'

भाषा—लग्नेश अष्टमेश की तरह लग्न तथा होरालग्न से भी आयु का विचार करना चाहिये।

## होरालग्न-साधन

उपपत्ति—

सूर्योदय काल में सूर्यराश्यादि ही होरा लग्न है। सूर्योदय से ढाई घटी व्यतीत होने पर होरालग्न की १ राशि=३० अंश होते हैं। इसका अनुपात किया तो—

$$= \frac{३० \times इ.घ.}{२ + \frac{१}{२}} = \frac{३० \times इ.घ.}{\frac{५}{२}}$$ "छेदं लवञ्च परिवर्त्य…"

के अनुसार— $= \frac{३० \times २ \times इ.घ.}{५} = \frac{६० \times इ.घ.}{५} =$ फल अं.=१२ $\times$ इ.घ.। अथवा- $\frac{३० \times इ.प.}{१५०} = \frac{इ.प.}{५} =$ अंश होते हैं इस प्रकार होरालग्न स्पष्ट करना चाहिए।

स्पष्टीकरण—इष्ट काल की घट्यादिकों को २ से गुणा करे; घटी में ५ से भाग दे तो लब्धि में राशि, शेष में ६० का गुणा कर पल जोड़ १० से भाग दे तो लब्धि में अंश प्राप्त होंगे इस लब्धि को सूर्यराश्यादि में जोड़ने से होरालग्न स्पष्ट होती है।

किसी दीर्घदर्शी आचार्य का मत है कि—

'समे लग्नभाद्विषमे सूर्यभात्'

अर्थात् समलग्न में जन्म हो तो लग्नराश्यादि में जोड़े; विषम लग्न में जन्म हो तो सूर्यराश्यादि में जोड़ना चाहिए। इस पर फलित मर्मज्ञ किसी दूसरे आचार्य का यह मत है कि—

"तनूः समा वा विषमा प्रजायतां,
तस्यां विदध्यात्फलयोजनं सदा।"

अर्थात् लग्न सम हो या विषम; पर लग्नराश्यादि में ही जोड़ना चाहिए।

इस सब मतभेदों में प्रथम मत (सूर्य में जोड़ना) ही युक्ति युक्त होने से विशेष ग्राह्य है। क्योंकि प्रत्येक लग्न की प्रवृत्ति सूर्य से है; सूर्योदय काल में सूर्यराश्यादि ही लग्न होती है। अतएव सूर्य में ही जोड़ना चाहिए।

उदाहरण—इष्टकाल ७।३५ ( पृष्ट ६३ )
=७।३५×२=१५।१०÷५=लब्धि ३ (राशि) पल १०÷१०=लब्धि १ (अंश) हुए। इनको सूर्य राश्यादि २।१९।३२।२३ में जोड़ा तो ५।२०।३२।२३ स्पष्ट होरालग्न हुई।

'संवादात् प्रामाण्यम्'

भाषा—पूर्वोक्त (लग्नेशाष्टमेश; शनिचन्द्र; लग्नहोरालग्न) तीनों प्रकार या दो प्रकार से जो आयु आवे; उसी को ग्रहण करना चाहिए।

'विसंवादे पितृकालतश्च'

भाषा—पूर्वोक्त तीनों प्रकार से यदि भिन्न २ आयु अर्थात् एक से दीर्घ, एक से मध्य, एक से अल्प आवे तो लग्न तथा होरालग्न से ही प्राप्त आयु का ग्रहण करना चाहिए।

## दीर्घायुरादि के भेद

रसांकैर्गजाभ्रेन्दुभिः शून्यमासै-,
स्त्रिधा दीर्घमायुःकलौ संप्रदिष्टम्।
चतुःषष्टिवाह्वद्रयशीतिप्रमाणै-,
र्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात्॥
तथा द्वित्रिषड्वह्निशून्याब्धिवर्षै-
र्भवेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते। ( वृद्धवाक्य )

भाषा—९६, १०८, १२०वर्षकी दीर्घायु; ६४, ७२, ८० वर्षकी मध्यायु; ३२, ३६, ४० वर्ष की अल्पायु होती है। इस प्रकार प्रत्येक के तीन २ खण्ड हैं इसी को आगे के चक्र में स्पष्ट किया गया है।

## आयुखण्डचक्र

| आयु | प्रकार | खण्ड | वर्ष |
|---|---|---|---|
| दीर्घायु | तीनों प्रकार से | १ | १२० |
| | दो प्रकार से | २ | १०८ |
| | एक प्रकार से | ३ | ९६ |
| मध्यायु | तीनों प्रकार से | १ | ८० |
| | दो प्रकार से | | ७२ |
| | एक प्रकार से | ३ | ६४ |
| अल्पायु | एक प्रकार से | १ | ४० |
| | दो प्रकार से | २ | ३६ |
| | तीन [illegible]ार से | ३ | ३२ |

## आयुर्वर्ष–साधन

आयुकारक योगकर्ताओं को जोड़कर अर्ध (२ से भाग) करे। लब्धि में योगज खण्डवर्ष (प्रथम ४० वर्ष, द्वितीय ३६ वर्ष, तृतीय ३२ वर्ष) का गुणाकर ३०से भाग दे;तो लब्धि में वर्षादि प्राप्त होते हैं। इन वर्षादिकों को दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु, के क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्डों (प्राप्तायुर्वर्षखण्ड) में घटाने से शेष स्पष्टायुर्वर्षादि होते हैं।

### प्रथमखंड

यदि दीर्घायु या मध्यायु या अल्पायु का प्रथम खण्ड प्राप्त हो तो योगार्ध में प्रथम खण्ड (४० वर्ष) का गुणा कर ३० से भाग दे;

लब्धि को दीर्घायु (१२० वर्ष) मध्यायु (८० वर्ष) अल्पायु (४० वर्ष) में घटावे; शेष स्पष्टायुर्वर्षादि होते हैं।

## द्वितीयखंड

यदि दीर्घायु या मध्यायु या अल्पायु का द्वितीयखण्ड प्राप्त हो तो योगार्ध में द्वितीयखण्ड (३६ वर्ष) का गुणाकर ३० से भाग दे; लब्धि को दीर्घायु (१०८ वर्ष), मध्यायु (७२ वर्ष), अल्पायु (३६ वर्ष) में घटावे; शेष स्पष्टायुर्वर्षादि होते हैं।

## तृतीयखंड

यदि दीर्घायु या मध्यायु या अल्पायु का तृतीयखण्ड प्राप्त हो तो योगार्ध में तृतीयखण्ड (३२ वर्ष) का गुणाकर ३० से भाग दे; लब्धि को दीर्घायु (९६ वर्ष) मध्यायु (६४ वर्ष) अल्पायु (३२ वर्ष) में घटावे; शेष स्पष्टायुर्वर्षादि होते हैं।

## योगार्ध

यदि दो योगकर्ता हों तो दोनों को जोड़कर २ से भाग दे। यदि चार योगकर्ता हों तो चारों को जोड़ कर ४ से भाग दे। यदि ६ योगकर्ता हों तो सबों को जोड़कर ६ से भाग दे। राशि को छोड़कर अंशादिकों को जोड़ना चाहिये।

उदाहरण—जन्म लग्न चक्र (पृष्ट ९७) आयुर्बोधकचक्र (पृष्ट २७६)

लग्नेश चन्द्र स्थिर (८) में<br>
रन्ध्रेश शनि चर (१०) में } = मध्यायु

शनि चर (१०) में<br>
चन्द्र स्थिर (८) में } = मध्यायु

जन्मलग्न चर (४) में<br>
(पृष्ट२७८) होरालग्न द्विस्व. (६) में } = अल्पायु

'संवादात् प्रामाण्यम्' (पृष्ट २७८) के अनुसार दो प्रकार से मध्यायु; तथा 'आयुखण्डचक्र (पृष्ट २७९)' के अनुसार मध्यायु का द्वितीय खण्ड (७२ वर्ष) हुआ।

उदाहरण—

| | | |
|---|---|---|
| लग्नेश चन्द्र | १७।२९।४८ | योगकर्ता ४ हैं। अतः सभी योगकर्ताओं का योग किया गया है। ग्रहस्पष्टचक्र (पृष्ठ ८५) |
| रन्ध्रेश शनि | १५।१३।५५ | |
| शनि | १५।१३।५५ | |
| चन्द्र | १७।२९।४८ | |

६५।२७।२६ ÷ ४ = १६।२१।५१।३० (योगार्ध)

= अंशादि १६।२१।५१।३० × ३६ (द्वितीयखण्ड पृष्ठ २८०)

३० ) ५८९।६।५४।० ( १९ (वर्ष)
३०
२८९
२७०
१९ × १२
२२८
६
३० ) २२४ ( ७ (मास)
२१०
१४ × ३०
४२०
५४
३० ) ४७४ ( १५ (दिन)
३०
१७४
१५०
२४ × ६०
३० ) १४४० ( ४८ (घटी)
१२०
२४०
२४०
×

= लब्धिवर्षादि १९।७।१५।४८

मध्यायु द्वितीयखण्डवर्षादि ७२।०। ०। ० में

लब्धिवर्षादि १९।७।१५।४८ घटाया

स्पष्टायुर्वर्षादि ५२।४।१४।१२

## कक्ष्याह्रास

'शनियोगहेतौ कक्ष्याह्रासः'

भाषा—प्राप्तायुर्योग में यदि शनि योगकर्ता हो तो कक्ष्या का ह्रास अर्थात् दीर्घायु हो तो मध्यायु; मध्यायु हो तो अल्पायु; अल्पायु हो तो अनायु ( शून्यायु ) होती है । इसमें अन्य आचार्यों का मत यह है कि—

'विपरीतमन्ये'

भाषा—यदि शनि योग कारक हो तो विपरीत कक्ष्या का ह्रास नहीं होता । तो फिर कैसी अवस्था में ह्रास होना चाहिये; इसके लिये ग्रन्थकार ने लिखा है कि—

"न स्वर्क्षतुंगगे सौरे"

"केवलपापदृग्योगिनि च"

भाषा—शनि यदि स्वराशि का या उच्च का हो तो कक्ष्या का ह्रास नहीं होता । यदि नीच राशि में अथवा शत्रु राशि में हो तो कक्ष्या का ह्रास होता है ।

## कक्ष्यावृद्धि

'पितृलाभगे गुरौ केवलशुभदृग्योगिनि च कक्ष्यावृद्धिः"

भाषा—लग्न या सप्तम में गुरु स्वगृही या उच्च का हो तो कक्ष्यावृद्धि (अल्पायु हो तो मध्यायु; मध्यायु हो तो दीर्घायु; दीर्घायु हो तो परायु) होती है अन्यथा नहीं ।

नोटः—इस जैमिनिमतायु निर्णय में अनायु एवं परायु का वर्णन नहीं किया गया । कई आचार्यों का मत ह्रास एवं वृद्धि में ऐसा है कि दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु में जो तीन २ खण्ड बताये गये हैं । उनमें यदि ह्रास करना हो तो प्रथमखण्ड की प्राप्ति

हो तो द्वितीय खण्ड; एवं द्वितीयखण्ड की प्राप्ति में तृतीयखण्ड ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार यदि वृद्धि करना हो तो तृतीय खण्ड की प्राप्ति में द्वितीय खण्ड, द्वितीयखण्ड की प्राप्ति में प्रथमखण्ड ग्रहण करना चाहिए। इसी प्रकार ह्रास करने में यदि दीर्घायु का तृतीयखण्ड प्राप्त हो तो मध्यायु का प्रथमखण्ड और 'वृद्धि' में विपरीत ग्रहण करना चाहिए।

## गणितागतायु

केशवी जातक में चार भेद गणितागतायु ( नियतायु ) साधन के लिये लिखे गये हैं। सत्याचार्य के मत से अंशायु (१) मयादि मत से पिण्डायु (२) पराशरादि मत से नैसर्गिकायु (३) जीवशर्मोक्तायु (४) यही ४ प्रकार की गणितायु विभिन्न आचार्यों से सम्पादित एवं अनेक आचार्यों को सम्मति होने से विशेष ग्राह्य हैं। कब किस प्रकार से आयु साधन करना चाहिए ? इसके लिये केशव दैवज्ञ ने लिखा है कि—

अंशायुश्च तनाविनेऽधिकवले पैण्डं निसर्गं विधौ,
स्याच्चेत्तुल्यवलं द्वयोर्युतिदलं तज्ज्ञायुषोश्चेत्त्रयः।
त्र्यायुंषि त्रिबलैर्निहत्य च युतिर्वीर्यैक्यहृद्वा त्रिजा-,
द्युर्युत्यास्त्रिलवोऽथ जैवमुदितं चेद्धीनवीर्यास्त्रयः॥

भाषा—लग्न, सूर्य, और चन्द्र इन तीनों में यदि लग्न का वल अधिक हो तो अंशायु, यदि सूर्य अधिक वली हो तो पिण्डायु, यदि चन्द्रमा अधिक वली हो तो निसर्गायु साधन करना चाहिए। यदि पूर्वोक्त तीनों में से दो का वल समान हो तो आयुर्योगार्ध (सूर्य, लग्न का समान बल हो तो अंशायु, पिण्डायु का योगार्ध; यदि सूर्य, चन्द्र का समान वल हो तो पिण्डायु, निसर्गायु का योगार्ध; यदि लग्न, चन्द्र का समान वल हो तो अंशायु, निसर्गायु का योगार्ध) साधन कर गणितागतायु ग्रहण करना

चाहिए। यदि तीनों का समान वल हो तो अंशायु, पिण्डायु, निसर्गायु को जोड़कर तीन से भाग दे; लब्धिगत वर्षादि स्पष्टायु के ग्रहण करना चाहिये। यदि तीनों वलहीन हों तो जीवशर्मोक्त आयु का साधन करना चाहिये।

नोट— यहाँ वल जानने के लिये षड्वल ग्रहण करना चाहिए। यदि दोनों या तीनों अल्पवली हों तो समान वल; दोनों या तीनों मध्यवली हों तो समान वल; दोनों या तीनों पूर्णवली हों तो भी समान वल जानना चाहिए। अल्प या मध्य या पूर्णवल कितना होता है। यह षड्वल विवेक में लिखा जायगा।

## अंशायु

लग्न की प्रधानता एवं अनेक आचार्यों से सुसम्मानित सत्याचार्य का मत विशेष ग्राह्य होने से 'अंशायु' का ही साधन प्रथम लिखा जाता है।

राश्यंशकला गुणिता द्वादशनवभिर्ग्रहस्य भगणेभ्यः।
द्वादशहृतावशेषेऽब्दमासदिननाडिकाःक्रमशः॥

भाषा—लग्न सहित सूर्यादि सप्त ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला में १०८ का गुणाकर १२ से भाग देने पर शेष में वर्ष, मास, दिन, घटी, पल प्राप्त होते हैं।

स्पष्टीकरण—ग्रह के राशि, अंश, कला, विकला में १०८ का गुणाकर पृथक् २ रखे। विकला के गुणनफल में ६० से भाग दे, शेष को 'पल' जाने; लब्धि को कला के गुणनफल में जोड़कर ६० से भाग दे, शेष को 'घटी' जाने; लब्धि को अंश के गुणनफल में जोड़कर ३० से भाग दे, शेष को 'दिन' जाने; लब्धि को राशि के गुणनफल में जोड़कर १२ से भाग दे, शेष को 'मास' जाने। लब्धि में श्लोकोक्त 'द्वादशहृतावशेषेऽब्द…' के अनुसार १२ से भाग देकर शेष को 'वर्ष' जाने। और लब्धि का त्याग

करना चाहिये। इसी प्रकार सलग्न सूर्यादि सप्तग्रहों को आयुर्दाय साधन करना चाहिये।

## लग्नायु में वृद्धि

लग्नराशिसमाश्चाब्दास्तन्मासाद्यनुपाततः।
लग्नायुर्दायमिच्छन्ति होराशास्त्रविशारदाः॥

भाषा—यदि लग्न बलवान् हो तो लग्न राशि तुल्य वर्ष; एवं त्रैराशिक द्वारा अंशादिकों से मासादि स्पष्ट करना। इन वर्षादिकों को पूर्वोक्त (अंशायुवत्) लग्नायु में जोड़ने से स्पष्टलग्नायु-वर्षादि प्राप्त होते हैं।

## मासादिसाधन

त्रैराशिक द्वारा—

∵ १ राशि = १ वर्ष
∴ ३० अंश = १२ मास
∴ १ मास = $\frac{३०}{१२}$ अंश = २$\frac{१}{२}$ अंश
∵ २$\frac{१}{२}$ अंश = १ मास = ३० दिन
∴ १ अंश = $\frac{३० \times २}{५}$ = १२ दिन
∵ १ अंश = ६० कला = १२ दिन
∴ १ दिन = $\frac{६०}{१२}$ कला = ५ कला
∵ ५ कला = १ दिन = ६० घटी
∴ १ कला = $\frac{६०}{५}$ घटी = १२ घटी
∵ १२ घटी = १ कला = ६० विकला
∴ १ घटी = $\frac{६०}{१२}$ विकला = ५ विकला
∵ ५ विकला = १ घटी = ६० पल
∴ १ विकला = $\frac{६०}{५}$ = १२ पल

अतः— १ राशि = १२ मास
१ अंश = १२ दिन
१ कला = १२ घटी
१ विकला = १२ पल

स्पष्टीकरण— अंश में १२ का गुणा कर ३० से भाग देने से लब्धि में मास, शेष में दिन प्राप्त होते हैं। कला में १२ का गुणाकर ६० से भाग देने पर लब्धि में दिन शेष में घटी प्राप्त होती हैं। विकला में १२ का गुणाकर ६० भाग देने पर लब्धि में घटी शेष में पल प्राप्त होते हैं। अथवा अंश में २ का गुणाकर ५ से भाग देने पर लब्धि में मास, शेष में ६ का गुणाकर दिन जानना कला में २ का गुणाकर १० से भाग देने पर लब्धि में दिन, शेष में ६ का गुणाकर घटी जानना। विकला में २ का गुणाकर १० से भाग देने पर लब्धि में घटी, शेष में ६ का गुणाकर पल जानना। इस प्रकार अंशादि से त्रैराशिक द्वारा मासादि एवं लग्नराशितुल्यवर्ष पूर्वोक्त (अंशायुवत्) लग्नायु में जोड़ना चाहिये।

## चक्रार्धहानि

सर्वार्धत्रिचरणपञ्चषष्ठभागाः,
क्षीयन्ते व्ययभवनाद्सत्सु वामम्।
सत्स्वर्धं ह्रसति तथैकराशिगाना–,
मेकोंऽशं हरति बली तथाह सत्यः॥

भाषा—व्ययस्थ जो पापग्रह हो तो उसके गणितागतवर्ष सम्पूर्ण हरण होते हैं। लाभस्थ जो पापग्रह हो उसके गणितागतवर्षों में आधा ($\frac{1}{2}$) हिस्सा हरण (न्यून) होता है। दशमस्थ जो पाप–ग्रह हो उसके गणितागतवर्षों में तिहाई ($\frac{1}{3}$) हिस्सा हरण (न्यून) होता है। नवमस्थ जो पापग्रह हो उसके गणितागत वर्षों में चौथाई ($\frac{1}{4}$) हिस्सा हरण (न्यून) होता है। अष्टमस्थ

जो पापग्रह हो तो उसके गणितागतवर्षों में पांचवां (१/५) हिस्सा हरण (न्यून) होता है। सप्तमस्थ जो पापग्रह हो तो उसके गणितागतवर्षों में छठवां (१/६) हिस्सा हरण होता है।

यदि पूर्वोक्त भावों में पापग्रह के साथ शुभग्रह हो तो व्ययादि वामभाग में क्रमशः १/२, १/४, १/६, १/८, १/१०, १/१२ हिस्सा ही हरण होता है।

यदि एक से अधिक ग्रह पूर्वोक्त भावों में हों तो उनमें जो अधिक वलवान् हो (चाहे शुभग्रह हो या पापग्रह) उसी वलवान् ग्रह में शुभाशुभ के अनुसार हरण होता है।

नोट—इस चक्रार्धहानि को सभी प्रकार के आयुसाधन में करना चाहिए।

## शत्रुक्षेत्रनीचास्तंगतहानि

क्षोणीपुत्रं वर्जयित्वा रिपुस्था-,
स्त्र्यंशं नीचस्थानगास्ते तदर्धम्।
अस्तं याता सर्व एवार्धहानिं,
कुर्युर्हित्वा शुक्रमार्तण्डपुत्रौ॥

भाषा—भौम को छोड़कर अन्य जो ग्रह शत्रुराशि में हो; उस ग्रह की गणितागतायु में १/३ हरण करना (गणितागतायु में ३ का भाग भाग देकर लब्धि वर्षादि को गणितागतायुवर्षादिकों में घटाना चाहिए)।

जो ग्रह नीचराशि में हो; तो उसकी गणितागतायु में आधा (१/२) हरण करना चाहिये।

शुक्र और शनि को छोड़कर जो ग्रह सूर्य सानिध्य से अस्त हो; उस ग्रह की गणितागतायु में १/२ हीन करना चाहिए।

नोट—शत्रुक्षेत्रादि (नैसर्गिक मैत्री द्वारा) हानि सभी प्रकार के आयुसाधन में करना चाहिए।

## उच्चादिवृद्धि

'स्वतुंगवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणं,
द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः ।

भाषा—जो ग्रह उच्च राशि का तथा वक्री हो तो उसकी गणितागतायु को त्रिगुणित करना चाहिए ।

जो ग्रह स्वराशि या वर्गोत्तम या स्वनवांश या स्वद्रेष्काण में हो तो उसकी गणितागतायु को द्विगुणित करना चाहिए ।

नोट—यह वृद्धि केवल 'अंशायु' साधन में ही करना चाहिए । अन्य में नहीं ।

## विशेषनियम

सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु,
कुर्वन्त्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः ।
आचार्यकत्वं च बहुघ्नताया-,
मेकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम् ॥

भाषा—यद्यपि मयमणित्थादि मतों से सत्याचार्य का मत विशेष अनुकरणीय है । परन्तु अनेक वार द्विगुणित, त्रिगुणित करने का 'सत्याचार्य मत' अग्राह्य है । इसी पर वराहमिहिर ने 'आचार्यकत्वम्' कह कर आगे लिखे ५ नियमों का उल्लेख किया है । यथा—

( १ )—जिस ग्रह के आयुर्दाय में वारम्वार 'द्विगुणित' या 'त्रिगुणित' करना प्राप्त हो तो एक ही वार 'द्विगुणित' या 'त्रिगुणित' करना चाहिये ।

( २ )—जिसमें 'द्विगुणित' या 'त्रिगुणित' करना एक हो साथ प्राप्त हो ; उसमें अधिक अर्थात् 'त्रिगुणित' ही करना चाहिए ।

( ३ )—यदि एक प्रकार की 'हानि' कई बार प्राप्त हो ; तो एक ही बार करना चाहिए ।

(४)—यदि एक प्रकार की 'हानि' करने के बाद दूसरी प्रकार की 'हानि' करना प्राप्त हो ; तो दूसरी भी हानि करना चाहिये। यदि कई प्रकार की 'हानि' प्राप्त हो तो कई प्रकार की 'हानि' एक ही एक बार प्रत्येक को करना चाहिए।

(५)—हानि कर लेने के बाद वृद्धि करना चाहिए।

## अंशायुसाधन

उदाहरण—ग्रहस्पष्टचक्र (पृष्ठ ८५) सूर्य २।१९।३२।२३ है।

| = २, | १९. | ३२, | २३ × १०८ |
|---|---|---|---|
| २१६, | ९७२, | २१६, | ३२४ |
| | १०८ | ३२४ | २१६ |
| २१६, | २०५२, | ३४५६, | २४८४ ÷ ६० |
| ७० | ५८ | ४१ | २४ शेष |

२३ ÷ १२, २८६ ÷ १२, २११० ÷ ३०, ३४९७ ÷ ६०
११ शेष, १० शेष, १० शेष, १७ शेष,

= ११।१०।१०।१७।२४ सूर्यायुर्दायवर्षादि

इसी प्रकार चक्रार्धहान्याद्यसंस्कृतग्रहायु स्पष्ट कर नीचे 'असंस्कृतांशायुचक्र' लिखा जाता है।

## असंस्कृतांशायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ८ | १० | ७ | ८ | ६ | १ | ११ | वर्ष |
| १० | २ | ७ | ४ | ५ | ९ | ६ | १० | मास |
| १० | २९ | ४ | २३ | १८ | २३ | २५ | २६ | दिन |
| १७ | ३४ | १९ | ४५ | ४३ | ५४ | ३ | २४ | घटी |
| २४ | ४८ | १२ | ३६ | १२ | ३६ | ० | ० | पल |

# व्ययादिहरण

उदाहरण—जन्म लग्न चक्र (पृष्ट ९७)

सूर्य—व्ययभाव में है अतः सम्पूर्ण आयुर्दाय हरण होने सेशून्यायु हुई।

चन्द्र—नीचराशि (वृश्चिक) में है अतः चन्द्रायुर्वर्षादि ८।३।२९। ३४।४८ ÷ २ = ४।१।१४।४७।२४ लब्धि वर्षादि हुए। अन्य हानि एवं वृद्धि का योग न होने से स्पष्ट चन्द्रायुर्वर्षादि ४।१।१४।४७।२४ हुए।

भौम—में हानि एवं वृद्धि के कोई योग न होने के कारण स्पष्ट भौमायुर्वर्षादि १०।७।४।१९।१२ हुए।

बुध—शत्रु राशि (कर्क) में है अतः बुधायुर्वर्षादि ७।४।२३।४५।३६ ÷ ३ =२।५।१७।५५।१२ लब्धि वर्षादि हुए। इस लब्धि को बुधायु

७।४।२३।४५।३६ में

लब्धि २।५।१७।५५।१२ घटाया

=स्पष्ट बुधायुवर्षादि ४।११।५।५०।२४ हुए

गुरु—में हानि का कोई योग नहीं; गुरु स्वनवांश में होने से वृद्धि (×२) होना चाहिए। अतः गुर्वायुर्वर्षादि ८।५।१८।४३।१२ × २=१६। ११।७।२६।२४ स्पष्टगुर्वायुर्वर्षादि हुए।

शुक्र—शत्रु राशि (कर्क) में होने से तिहाई हरण होना चाहिए। अतः शुक्रायुवर्षादि ६।९।२३।५४।३६ ÷ ३ =२।३।७।५८।१२ × २ = स्पष्ट शुक्रायुर्वर्षादि ४।६।१५।५६।२४ हुए।

शनि—सप्तम भाव में होने से 'छठवां हिस्सा' कम (हरण) होना चाहिए। अतः शन्यायुर्वर्षादि १।६।२५।३।० ÷ ६=०।३।४।१०।३० लब्धि वर्षादि हुए। इसको शन्यायुर्वर्षादि १।६।२५।३।० में

लब्धि ०।३।४।१०।३० घटाया। तो

शेष १।३।२०।५२।३० वर्षादि हुए

यह शनि 'स्वराशि' का है अतः हानिकृतशन्यायुर्वर्षादि १।३। २०।५२।३० × २ =२।७।११।४५।० स्पष्टशन्यायुर्वर्षादि हुए।

लग्न—लग्न बलवान् है या नहीं ; यह आगे षड्बल साधन करने पर ज्ञात होगा। परन्तु लग्न की बलवत्ता पर 'अंशायु' का साधन लिखा गया है। तत्त्व यह कि 'अंशायु' साधन में अवश्य ही लग्नायु में वृद्धि करना चाहिए। अतः लग्नराश्यादि ३।२९।४१।२० ( पृष्ठ ६४ ) है ; तो राशितुल्य ३ वर्ष ; एवं लग्नांशादि २९।४१।२० शेष रहे। त्रैराशिक द्वारा ( पृष्ठ २८६ ) मासादि साधन—

=अंश २९ × २ = ५८ ÷ ५ = लब्धि ११ मास, शेष ३ × ६ = १८ ( दिन )

=कला ४१ × २ + ८२ ÷ १० = लब्धि ८ ( दिन ), शेष २ × ६ = १२ ( घटी )

=विकला २० × २ = ४० ÷ १० = लब्धि ४ (घटी), शेष शून्य (०)

| | |
|---|---|
| राशितुल्यवर्षादि | ३। ०। ०। ० |
| अंशतुल्यमासादि | ०।११।१८। ० |
| कलातुल्यदिनादि | ०। ०। ८।१२ |
| विकलातुल्यघट्यादि | ०। ०। ०। ४ |
| योगफल | ३।११।२६।१६ में |
| पूर्वोक्त लग्नायु | ११।१०।२६।२४ जोड़ा |
| स्पष्ट लग्नायुवर्षादि | १५।१०।२२।४० हुए |

## संस्कृतांशायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | योग | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ४ | १० | ४ | १६ | ४ | २ | १५ | ५९ | वर्ष |
| ० | १ | ७ | ११ | ११ | ६ | ७ | १० | ७ | मास |
| ० | १४ | ४ | ५ | ७ | १५ | ११ | २२ | २२ | दिन |
| ० | ४७ | १९ | ५० | २६ | ५६ | ४५ | ४० | ४४ | घटी |
| ० | २४ | १२ | २४ | २४ | २४ | ० | ० | ४८ | पल |

## पिण्डायु, निसर्गायु

नवेन्द्वोबाणयमाः शरक्ष्मा,
दिवाकराः पंचभुवः कुपक्षाः ।
नखाश्च भास्वत्प्रमुखग्रहाणां,
पिण्डायुषोऽब्दा निजतुंगगानाम् ॥

भाषा—पिण्डायु का दूसरा नाम उच्चांशायु भी है । सूर्यादि ग्रह अपने २ उच्चांश में निम्न लिखित वर्षायु देते हैं । सूर्य १९ वर्ष, चन्द्र २५ वर्ष, भौम १५ वर्ष, बुध १२ वर्ष, गुरु १५ वर्ष, शुक्र २१ वर्ष, शनि २० वर्ष की आयु देता है । यह मययवनादि के मत से है ।

नखाः शशो द्वौ नवकं धृतिश्च,
कृतिः खवाणा रविपूर्वकाणाम् ।
इमा निरुक्ताः क्रमशो ग्रहाणां,
नैसर्गिके ह्यायुषि वर्षसंख्याः ॥

भाषा—पराशरादि के मत से नैसर्गिक आयु होती है सूर्य २० वर्ष, चन्द्र १ वर्ष, भौम २ वर्ष, बुध ९ वर्ष, गुरु १८ वर्ष, शुक्र २० वर्ष, शनि ५० वर्ष अपने २ उच्चांश में आयु देता है ।

## उच्चांशायु साधन

निजोच्चशुद्धः खचरो विशोध्यो,
भमण्डलात्षड्भवनोनकश्चेत् ।
यथा स्थितः षड्भवनाधिकश्चेत्,
लिप्तीकृतः संगुणितो निजाब्दैः ॥

तत्र खाभ्ररसचन्द्रलोचनै-,
रुद्धृते सति यदाप्यते फलम् ।
वर्षमासदिननाडिकादिकं,
तद्धि पिण्डभवमायुरुच्यते ॥

भाषा—जिस ग्रह की आयु साधन करना हो तो उसके राश्यादि को अपने परमोच्चराश्यादि में घटावे; शेष राश्यादि की कला बनावे; उस कला, में ग्रहवर्षसंख्या (पिण्डायु साधन में पिण्डायु ग्रह वर्ष; निसर्गायु साधन में में नैसर्गिकग्रहवर्ष ) से गुणाकर २१६०० से भाग देने से लब्धि में वर्षादि प्राप्त होते हैं। यही वर्षादि पिण्डायु या निसर्गायु के होते हैं।

## पिण्डायु, निसर्गायु साधन की सरल पद्धति

अपने २ परमोच्चांशान्तर के राशि-अंश-कला-विकला में वर्ष संख्या (पिण्डायु) या निसर्गायु वर्ष का गुणा करके पृथक् २ रखे। राशि गुणनफल को 'मास' और अंश गुणनफल को 'दिन' और कला गुणनफल को 'घटी' विकला गुणनफल को 'पल' जानना चाहिये।

विशेष सूचना—यदि मास १२ से अधिक हों तो १२ से भाग देकर 'वर्षादि' दिन ३० से अधिक हों तो ३० से भाग देकर 'मासादि' घटी ६० से अधिक हो तो ६० से भाग देकर 'दिनादि' पल ६० से अधिक हों तो ६० से भाग देकर 'घट्यादि' जानना। सबों को जोड़ने से वर्ष. मास, दिन, घटी, पल पिण्डग्रहायु या निसर्गग्रहायु के प्राप्त होंगे।

## परमोच्चांशान्तर साधन

"स्वोच्चोनमिष्टखचरं यदि षड्ग्रहोनं,
चक्राद्विशोध्य..........................।"

भाषा—ग्रह को अपने उच्चराश्यादि में घटावे। यदि शेष ६ राशि से कम हो तो शेष को १२ राशि में घटाने से 'चक्रशुद्धपरमोच्चांशान्तर होता है।

उदाहरण—उच्चादिचक्र (पृष्ठ १४४) सूर्य २।१९।३२।२३ है

=सूर्योच्चांशराश्यादि ०।१०। ०। ० में

सूर्य २।१९।३२।२३

उच्चांशान्तर ९।२०।२७।३७ हुआ

नोट—इसमें ६ राशि से अधिक शेष है अतः १२ राशि में नहीं घटाया गया। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रहों का चक्रशुद्ध उच्चांशान्तरचक्र नीचे लिखा जाता है।

## चक्रशुद्धग्रहोच्चांशान्तर चक्र

(ग्रहस्पष्टचक्र पृष्ठ ८५)

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६ | ७ | ९ | १० | ८ | ९ | राशि |
| २० | १४ | ७ | २९ | ६ | १४ | ४ | अंश |
| २७ | २९ | १९ | ३९ | ४६ | १६ | ४६ | कला |
| ३७ | ४६ | ४ | ५२ | १६ | ४३ | ५ | विकला |

## सूर्यपिण्डायु

उदाहरण—परमोच्चांशान्तर ९।२०।१७।३७ पिण्डायु वर्ष १९

=राशि ९ × १९ = मास १७१ ÷ १२ = वर्षादि १४।३

=अंश २० × १९ = दिन ३८० ÷ ३० = मासादि १२।२०

=कला २७ × १९ = घटी ५१३ ÷ ६० = दिनादि ८।३३

=विकला ३७ × १९ = पल ७०३ ÷ ६० = घट्यादि ११।४३

=वर्षादि १४। ३। ०। ०। ०
=मासादि ०।१२।२०। ०। ०
=दिनादि ०। ०। ८।३३। ०
=घटकादि ०। ०। ०।११।४३
सूर्यायुर्वर्षादि १५। ३ ।२८।४४।४३

इस प्रकार पिण्डायु एवं निसर्गायु स्पष्ट कर नीचे 'असंस्कृतपिण्डायुचक्र और 'असंस्कृतनिसर्गायुचक्र' लिखा जाता है।

## असंस्कृतपिण्डायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ | १३ | ९ | ९ | १२ | १४ | १५ | वर्ष |
| ३ | ६ | ० | ११ | ९ | ९ | ३ | मास |
| २८ | २ | १९ | २५ | ११ | २९ | ५ | दिन |
| ४४ | २४ | ४६ | ५८ | ३४ | ५१ | ३१ | घटी |
| ४३ | १० | ० | २४ | ० | ३ | ४० | पल |

## असंस्कृतनिसर्गायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६ | ० | १ | ७ | १५ | १४ | ३८ | वर्ष |
| १ | ६ | २ | ५ | ४ | १ | १ | मास |
| १९ | १४ | १४ | २६ | १ | १५ | २७ | दिन |
| १२ | २९ | ३८ | ५८ | ५२ | ३४ | २४ | घटी |
| २० | ४६ | ८ | ४८ | ४८ | २० | १० | पल |

## पिण्डायु में हरण

सूर्य—व्यय में है अतः सम्पूर्ण हरण होने से शून्य पिण्डायु हुई।

चन्द्र—नीच राशि (वृश्चिक) में हरण $\frac{1}{2}$ होता है अतः चन्द्रपिण्डायुवर्षादि १३।६।२।२४।१० ÷ २ = ६।९।१।१२।५ लब्धि चन्द्रपिण्डायुर्वर्षादि वर्षादि हुए।

भौम—में हानि का कोई योग न होने के कारण भौमपिण्डायुर्वर्षादि ९।०।१९।४६।० हुए।

बुध—शत्रु राशि (कर्क) में है अतः बुधपिण्डायुर्वर्षादि ९।११।२५।५८।२४ ÷ ३ = लब्धि ३।३।२८।३९।२८ × २ = ६।७।२७।१८।५६ बुधपिण्डायुर्वर्षादि हुए।

गुरु—में हानि का कोई योग नहीं है अतः गुरुपिण्डायुर्वर्षादि १२।९।११।३४।० हुए।

शुक्र—शत्रु राशि (कर्क) में है अतः शुक्र पिण्डायुर्वर्षादि १४।९।२९।५१।३ ÷ ३ = लब्धि ४।११।९।५७।१ × २ = ९।१०।१९।५४।२ शुक्रपिण्डायुर्वर्षादि हुए।

शनि—सप्तम भाव में है अतः शनिपिण्डायुर्वर्षादि १५।३।५।२१।४० ÷ ६ = लब्धि २।६।१५।५३।३६।४० × ५ = लब्धि १[illegible]।८।१९।२८।३।२० शनि पिण्डायुर्वर्षादि हुए।

## लग्नायु (२)

आयुस्तथैतेषु वलाढ्यलग्ने,
विहाय राशीन् कृतलिप्तिकेऽत्र।
भक्ते द्विशत्या फलमब्दपूर्वं,
यत्स्याद्धि लग्नायुषि तच्च योज्यम्॥

भाषा—लग्न की राशि को छोड़कर अंशादि की कला बनाकर २०० से भाग दे; लब्धि में जो वर्षादि प्राप्त हों; वही पिण्डादित्रिकायु (पिण्डायु, निसर्गायु, जीवायु) में लग्नायुर्वर्षादि प्राप्त होते हैं।

उदाहरण—सरलता से पिण्डत्रिकायु में लग्न का साधन इस प्रकार है कि लग्न की राशि को छोड़कर अंशादिकों को विकला बनाकर २०० × ६० = १२००० से भाग दे; लब्धि में वर्षादि प्राप्त होंगे। यथा—

लग्नांशादि २९।४१।२० है तो अंश २९ × ६० = १७४० + ४१ = १७८१ × ६० = १०६८६० + २० = १०६८८० ÷ १२००० = लब्धि ८ (वर्ष), शेष १०८८० × १२ = १३०५६० ÷ १२००० = लब्धि १० (मास), शेष १०५६० × ३० = ३१६८०० ÷ १२००० = लब्धि २६ (दिन), शेष ४८०० × ६० = २८८००० ÷ १२००० = लब्धि २४ (घटी) लग्नायु हुई।

## क्रूरोदयहरण

सार्धोदितोदितनवांशहतात् समस्ता-,<br>
द्भागोष्टयुक्तशतसंख्यमुपैति नाशम्।<br>
क्रूरे विलग्नसहिते विधिना त्वनेन,<br>
सौम्येक्षिते दलमतः प्रलयं प्रयाति ॥

भाषा—यदि क्रूरग्रह लग्न में हो तो उस क्रूर (पापग्रह) की आयुर्दाय में हरण होगा। लग्न की जो नवांशसंख्या (एक से नव तक) उदित (वर्तमान) हो; उस नवांशसंख्या से पूर्वोक्त लग्न स्थित क्रूरग्रह की गणितागतायुर्दाय में गुणाकर १०८ से भाग दे, तो वर्षादि प्राप्त होते हैं।

यदि लग्नस्थित क्रूरग्रह पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो उस क्रूरग्रह की गणितागतायुर्दाय में लग्न के उदित (वर्तमान) नवांश संख्या से गुणाकर २१६ से भाग दे; लब्धि वर्षादि को पूर्वोक्त लग्नस्थ शुभ दृष्ट क्रूरग्रह की गणितागतायु में घटावे। शेष उस क्रूरग्रह की स्पष्टायु पिण्डादित्रिकायुरानयन में होती है।

नोट—'तनुपेऽस्मिन्नांशजेऽसौ क्रिया' (केशवदैवज्ञ) के कथनानुसार यदि पूर्वोक्त लग्नस्थ क्रूरग्रह लग्नेश हो तो 'क्रूरोदयहानि'

नहीं करना चाहिये; एवं अंशायुर्दाय (सत्योक्तायु) में भी क्रूरो-दय हानि नहीं करना चाहिये।

नोट—क्रूर ग्रह लग्न में नहीं है। अतः क्रूरोदय हरण संस्कार इस उदाहरण में नहीं होगा।

उदाहरणार्थ नीचे 'संस्कृत पिण्डायुचक्र' लिखा जाता है।

## संस्कृतपिण्डायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | योग | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ६ | ९ | ६ | १२ | ९ | १२ | ८ | ६६ | वर्ष |
| ० | ९ | ० | ७ | ९ | १० | ८ | १० | ९ | मास |
| ० | १ | १९ | २७ | ११ | १९ | १९ | २६ | ५ | दिन |
| ० | १२ | ४६ | १८ | ३४ | ५४ | २८ | २४ | २७ | घटी |
| ० | ५ | ० | ५६ | ० | २ | ३ | ० | ६ | पल |

## निसर्गायुमें हरण

सूर्य—व्यय भाव में है; अतः सम्पूर्ण आयुर्दाय हरण होने से शून्यायु हुई।

चन्द्र—नीच राशि (वृश्चिक) में है। अतः चन्द्रनिसर्गायुर्वर्षादि ०।६।१४।२९।४६ ÷ २ = लब्धि ०।३।७।१४।५३ चन्द्रनिसर्गायु-र्वर्षादि हुए।

भौम—में हानि का कोई योग नहीं है; अतः भौमनिसर्गायुर्वर्षादि १।२।१४।३८।८ हुए।

बुध—शत्रु राशि (कर्क) में है अतः बुधनिसर्गायुर्वर्षादि ७।५।२६।५८।४८ ÷ ३ = लब्धि २।५।२८।५९।३६ × २ = ४।११।२६।५९।१२ बुधनिसर्गायुर्वर्षादि हुए।

गुरु—में हानि न होने से गुरुनिसर्गायुर्वर्षादि १५।४।१।५२।४८ हुए।

शुक्र—शत्रु राशि (कर्क) में है। अतः शुक्र निसर्गायुर्वर्षादि १४।१।१५। ३४।२० ÷ ३ = लब्धि ४।८।१५।११।१३।४० × २ = ९।५।०।२२-२७।२० शुक्रनिसर्गायुर्वर्षादि हुए।

शनि—सप्तम भाव में है अतः शनिनिसर्गायुर्वर्षादि ३८।१।२८।२४।१० ÷ ६ = लब्धि ६।४।९।४४।१।२० × ५ = ३१।९।१८।४०।६।४० शनिनिसर्गायुर्वर्षादि हुए।

लग्न—पूर्वोक्त ८।१०।२६।२४।० लग्ननिसर्गायुर्वर्षादि हुए।

## सस्कृतनिसर्गायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | योग | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | १ | ४ | १५ | ९ | ३१ | ८ | ७१ | वर्ष |
| ० | ३ | २ | ११ | ४ | ५ | ९ | १० | ११ | मास |
| ० | ७ | १४ | २६ | १ | ० | १८ | २६ | १६ | दिन |
| ० | १४ | ३८ | ५९ | ५२ | २२ | ४० | २४ | ११ | घटी |
| ० | ५३ | ८ | १२ | ४८ | २७ | ७ | ० | ३५ | पल |

## जीवशर्मोक्तायु

"स्वमतेन किलाह जीवशर्मा,
ग्रहदायः परमायुषः स्वरांशम्।"

भाषा—जीवशर्मा ने अपने मत से प्रत्येक ग्रहों की आयु अपने २ परमोच्चांश पर १२० वर्ष ५ दिन का सप्तमांश अर्थात् १७ वर्ष, १ मास, २२ दिन, ८ घटी, ३४ पल की कहा है।

स्पष्टीकरण—परमोच्चांशान्तर की राशि, अंश, कला विकला में ग्रहायु वर्ष (१७), मास (१), दिन (२२), घटी (८), पल (३४)

गोमूत्रिका द्वारा गुणा करे। तो गुणनफल मासादि प्राप्त होते हैं।

घट्यादिकों में ६० से भाग; दिन में ३० से भाग; मास में १२ से भाग देकर वर्षादि बनाने से अभीष्ट ग्रहायुर्वर्षादि प्राप्त होते हैं।

उदाहरण—गोमूत्रिका द्वारा; सूर्यपरमोच्चांशान्तर ९।२०।२७।३७ (पृष्ट २९४) जीवशर्मोक्तायुर्वर्षादि १७।१।२२।८।३४ हैं।

| | रा. अं. क. वि. |
|---|---|
| व. १७ | ९ ,२० ,२७ , ३७ |
| मा. १ | १५३,३४०,४५९, ६२९ |
| दि. २२ | ९, २०, २७, ३७ |
| घ. ८ | १९८, ४४०, ५९४, ८१४ |
| प. ३४ | ७२, १६०, २१६, २९६ |
| | ३०६, ६८०, २३८, २३८ |
| | ६८ ,१०२ |
| | १५३, ३४९, ६७७, ११६८, १०९७, १७१०, १२१४, १२५८ |
| | मास, दिन, घटी, पल, विपल, अनु.. प्र., सू. |
| | १२ ११ १९ १८ २९ २० २१ ÷ ६० |
| वर्ष १३ | १६५, ३६०, ६९६ ११८६, ११२६, १७३०, १२३५ ÷ ६० |
| | ९शेष, ०शेष, ३६शेष, ४६शेष |

=सूर्यायुर्वर्षादि १३।९।०।३६।४६

इसी प्रकार सभी ग्रहों की आयुर्दाय साधन कर आगे 'असंस्कृत-जीवायुचक्र' लिखा जाता है।

## असंस्कृतजीवायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १३ | ९ | १० | १४ | १४ | १२ | १३ | वर्ष |
| ९ | २ | ३ | २ | ६ | ० | ० | मास |
| ० | १५ | १४ | ७ | ८ | १३ | ३ | दिन |
| ३६ | ४ | ९ | १७ | ५७ | ५९ | ३९ | घटी |
| ५६ | २१ | ९ | ३७ | ८ | ४२ | ८ | पल |

## जीवायु में हरण

सूर्य—व्यय भाव में है अतः आयुर्दाय में सम्पूर्ण हरण होने से शून्यायु हुई।

चन्द्र—नीच राशि (वृश्चिक) में है अतः चन्द्रजीवायुर्वर्षादि ।९।२।१५। ४।२१ ÷ २ = लब्धि ४।७।७।३२।१०।३० चन्द्रजीवायुर्वर्षादि हुए।

भौम—में हानि का योग नहीं है अतः भौम जीवायुर्वर्षादि १०।३। १४।९।९ हुए।

बुध—शत्रु राशि (कर्क) में है अतः बुधजीवायुर्वर्षादि १४।२।७। १७।३७ ÷ ३ = लब्धि ४।८।२२।२५।५२ × २ = ९।५।१४।२५। ४४ बुधजीवायुर्वर्षादि हुए।

गुरु—में हानि का योग न होने गुरुजीवायुर्वर्षादि १४।६।८।५७।८ हुए।

शुक्र—शत्रुराशि (कर्क) में है अतः शुक्रजीवायुर्वर्षादि १२।०।१३ ५९।४२ ÷ ३ = लब्धि ४।०।४।३९।५१ × २ = ८।०।९।१९।४२ शुक्रजीवायुर्वर्षादि हुए।

शनि—सप्तमभाव में है अतः शनिजीवायुर्वर्षादि १३।०।३।३९।८ ÷ ६

=लब्धि २।२।०।३६।३१ × ५ = १०।१०।३।२।३५ शनि जीवायुर्वर्षादि हुए।

लग्न—पूर्वोक्त ( पिण्डायुवत् ) ८।१०।२६।२४।० लग्नजीवायुर्वर्षादि हुए।

## संस्कृतजीवायुचक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | योग | ग्रहायु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ४ | १० | ९ | १४ | ८ | १० | ८ | ६६ | वर्ष |
| ० | ७ | ३ | ५ | ६ | ० | १० | १० | ७ | मास |
| ० | ७ | १४ | १४ | ८ | ९ | ३ | २६ | २३ | दिन |
| ० | ३२ | ९ | २५ | ५७ | १९ | २ | २४ | ४० | घटी |
| ० | ११ | ९ | ४४ | ८ | ४२ | ३५ | ० | २९ | पल |

## अनियतायु

"क्रूरग्रहदशान्तर्दशादिषु मरणमनियतायुरिति"

क्रूरग्रह की दशान्तर्दशा में जो मृत्यु होती है वह अनियतायु ( अनिश्चितायु ) है।

"रसायनं तथा द्रव्ययोगयुक्तैर्महात्मभिः।
कालमृत्युरपि प्राज्ञैर्जीयते नालसैर्नरैः॥"

कालमृत्यु का भी प्रतीकार महर्षियों ने यह बताया है कि रसायिनिक औषधि से; द्रव्य-यज्ञ से; महात्मा के वाक्यों से कालमृत्यु भी निवारण हो सकती है। 'गणितागतायु (नियतायु) समाप्त्या मरणं कालमृत्युस्तत्र प्रतीकाराभावः नियतत्वात्' जब कालमृत्यु का भी प्रतीकार बताया गया है तो अधिकांश सम्भव है कि 'अनियतायु' में भी 'मन्त्रौषधि एवं योगीजन के आशीर्वचन' प्रतीकार कर सकते हैं इत्यादि आगे 'दशाफलविवेक' में अनियतायु के योग लिखे जांयगे।

इत्यायुर्विवेकः

## षड्बल-विवेक

स्थानबल, दिग्बल, कालबल, चेष्टाबल, नैसर्गिक बल, दृग्बल यही ६ षड्बल हैं।

## स्थानबल

उच्चबल, युग्मायुग्मबल, सप्तवर्गैक्यबल, केन्द्रबल, द्रेकाणबल इन पाँच बलों के योग करने से 'स्थानबल' होता है।

## उच्चबल

स्पष्ट ग्रह में से नीचांश को घटावे; शेष ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में घटावे; यदि ६ राशि से अल्प हो तो १२ राशि में न घटावे; शेष की विकला बनावे; उन विकलाओं में १०८०० से भाग दे; लब्धि में कला तथा शेष में ६० का गुणाकर १०८०० से भाग दे; लब्धि में विकला तथा शेष का त्याग करे। यही कला, विकलात्मक; ग्रह का उच्चबल होता है।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ नीच राशि ६।१०।०।० है।

स्पष्ट सूर्य २।१९।३२।२३ में से

नीच राशि ६।१०। ०। ० घटाया

शेष ८। ९।३२।२३ (६ राशि) से अधिक है अतः—

राशि १२। ०। ०। ० में से

शेष ८। ९।३२।२३ घटाया

३।२०।२७।३७

= राशि ३ × ३० = ९० + २० = ११० × ६० = ६६०० + २७ = ६६२७ × ६० = ३९७६२० + ३७ = ३७७६५७ विकला ÷ १०८०० = लब्धि ३६ (कला), शेष ८८५० × ६० = ५३१००० ÷ १०८०० = लब्धि ४९ (विकला), शेष १८०० का त्याग किया; तो अंशादि ०।३६।४९ सूर्योच्च बल हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों का उच्चबल साधन कर आगे 'ग्रहोच्चबलचक्र' लिखा जाता है।

## ग्रहोच्च वल—चक्र

(उच्चांशादि चक्र पृष्ठ १४४)

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| ३६ | ५५ | ४७ | २० | ११ | ३५ | ३१ | कला |
| ४९ | १० | ३२ | ६ | १५ | १४ | ३५ | विकला |

## युग्मायुग्मवल

"शुक्रेन्दू समभांशके हि विषमेऽन्ये द्युरङ्घ्रिवलम्"

भाषा—चन्द्र और शुक्र समराशि या समराशि के नवांश में हो तो १ चरण अर्थात् १५ कला वल होता है। यदि समराशि और समनवांश दोनों में हो तो दो चरण अर्थात् ३० कला वल होता है। यदि दोनों में न हो तो शून्य (०) कला युग्मायुग्म वल होता है।

अन्य अर्थात् सूर्य, भौम, बुध, गुरु, शनि विषमराशि या विषमनवांश में हों तो १ चरण अर्थात् १५ कला वल होता है। यदि विषमराशि और विषमनवांश दोनों में हो तो दो चरण अर्थात् ३० कला वल होता है। यदि दोनों में न हो तो युग्मायुग्म वल शून्य होता है।

उदाहरणार्थ नीचे 'युग्मायुग्मवल' चक्र लिखा जाता है।

## युग्मायुग्म वल—चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| १५ | १५ | १५ | ० | ३० | १५ | ० | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

स्पष्टीकरण—

सूर्य—विषमराशि में होने से १ चरण अर्थात् १५ कला बल हुआ।

चन्द्र—समराशि में होने से १५ कला बल हुआ।

भौम—विषमनवांश में होने से १५ कला बल हुआ।

बुध—विषमराशि और विषमनवांश; एक में भी न होने से शून्य (०) बल हुआ।

गुरु—विषमराशि, विषमनवांश; दोनों में होने से २ चरण अर्थात् ३० कला बल हुआ।

शुक्र—समराशि में होने से १५ कला बल हुआ।

शनि—विषमराशि, विषमनवांश; दोनों में न होने से शून्य (०) बल हुआ।

## (घ) केन्द्रादिबल

'केन्द्राद्येषु च रूपकार्धचरणान् यच्छन्ति खेटाः क्रमात्"

भाषा—केन्द्र में स्थित ग्रह का बल १ अंश, पणफर में स्थित ग्रह का बल ३० कला; आपोक्लिम में स्थित ग्रह का बल १५ कला होता है इसी प्रकार साधन कर उदाहरणार्थ आगे 'केन्द्रादिबल चक्र' लिखा जाता है।

### केन्द्रादिबल-चक्र

( लग्नचक्र पृष्ठ ९७ )

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | ० | १ | १ | अंश |
| १५ | ३० | १५ | ० | ३० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

## (ङ) द्रेष्काणबल

स्त्रीखेटौ चरमे नराः प्रथमके क्लीबौ च मध्ये तथा।
द्रेष्काणे वितरन्ति पादमुदितं स्यात्स्थानवीर्यन्त्विदम् ॥

भाषा—स्त्रीग्रह (शुक्र, चन्द्र) का तृतीय द्रेष्काण में १५ कला बल, नपुंसक ग्रह (बुध, शनि) का द्वितीय द्रेष्काण में १५ कला बल, पुरुष ग्रह (सूर्य, भौम, गुरु) का प्रथम द्रेष्काण में १५ कला बल; अन्यथा शून्य (०) कला बल होता है। उदाहरणार्थ नीचे 'द्रेष्काणबल' चक्र लिखा जाता है।

### द्रेष्काणबल-चक्र

( ग्रहस्पष्टचक्र पृष्ठ ८५ )

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| ० | ० | १५ | १५ | ० | ० | १५ | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

पूर्वोक्त उच्चबल, सप्तवर्गजबल, युग्मायुग्मबल, केन्द्रादिबल, द्रेष्काणबल; इन पांचों बलों के योग कर के उदाहरणार्थ नीचे 'स्थानबलचक्र' लिखा जाता है।

### स्थानबल-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | ३ | २ | ३ | ३ | २ | अंश |
| २३ | ५८ | २१ | ५३ | २२ | २३ | ५२ | कला |
| ४१ | ५५ | १८ | ५१ | ३० | ५९ | १२ | विकला |

## (२) दिग्बल

मन्दाल्लग्नमिनात् कुजाच्च हिबुकं शोध्यं विधोर्भार्गवा-,
न्माध्यं ज्ञाद् गुरुतोऽस्तमत्र खभात् पुष्टं त्यजेच्चक्रतः।
दिग्वीर्यं रसहृत्.........................................

भाषा—शनैश्चर में से लग्न को, सूर्य और मंगल में से चतुर्थभाव को, चन्द्रमा और शुक्र में से दशम भाव को, बुध गुरु में से सप्तम भाव को घटाकर शेष में ६ का भाग देवे; यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो १२ में घटा कर ६ का भाग देने से ग्रहों का दिग्बल होता है। अथवा क्रिया लाघवार्थ शेष की विकला में ६ राशि =कला १०८०० से भाग देने पर भी वही आता है।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ में से चतुर्थभाव ६।२८।०।१७ (पृष्ठ ९७) को घटाने पर शेष ७।२१।३२।६ (६ राशि से अधिक है) अतः १२ राशि में घटा कर ४।८।२७।५४ बचा। इसकी विकला बनाया तो—४ × ३० + ८ = १२८

१२८ × ६० + २७ = ७७०७

७७०७ × ६० + ५४ = ४६२४७४

विकला हुई। इसमें ६ राशि की कला १०८०० से भाग देने पर लब्धि ४२ कला, शेष × ६० ÷ १०८०० = ८८७४ × ६० ÷ १०८०० = लब्धि ४९ विकला सूर्य का 'दिग्बल' हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों का 'दिग्बल' साधन कर उदाहरणार्थ नीचे 'दिग्बल-चक्र' लिखा जाता है।

## दिग्बल-चक्र

( स्पष्टद्वादशभाव पृष्ठ ९७ )

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अंश |
| ४२ | ५३ | १७ | ५४ | ५० | २४ | ५५ | कला |
| ४९ | ३० | ३३ | ५९ | २९ | ५४ | १० | विकला |

## (३) कालबल

नतोन्नतबल, पक्षबल, अहोरात्रत्रिभागबल, वर्षेशादिबल; इन चारों बलों का योग करने से कालबल होता है।

### (क) नतोन्नतबल-साधन

शशाङ्कभौममन्दानां नतं द्विघ्नं कलादिकम्।
षष्टिशुद्धं तदन्येषां सदा रूपं बुधस्य तु॥

भाषा—नत घट्यादिकों को दूना करने से चन्द्र, भौम, शनि का कलादि 'नतोन्नतबल' होता है। उन्नत घट्यादिकों को दूना करने से सूर्य, गुरु, शुक्र का कलादि 'नतोन्नतबल' होता है। बुध का सर्वदा १ अंश 'नतोन्नतबल' होता है।

नत-साधन (पृष्ट ८६ में) लिखा जा चुका है। इस नत को ३० घटी में घटाने से उन्नत (पूर्व नत हो तो पूर्वोन्नत; पश्चिमनत हो तो पश्चिमोन्नत) होता है।

उदाहरण—नत ९।७।३०
घटी ३०।०।० में से
नत ९।७।३० घटाया
उन्नत २०।५२।३० हुआ

सूर्य का 'नतोन्नतबल' उन्नत द्वारा साधन किया जाता है अतः—

उन्नतघट्यादि २०।५२।३० × २ = कलादि ४१।४५।० सूर्य, गुरु, शुक्र का 'नतोन्नतबल' हुआ। चन्द्र का 'नतोन्नतबल' नत द्वारा साधन किया जाता है अतः—

नतघट्यादि ९।७।३० × २ = कलादि १८।१५ चन्द्र, भौम, शनि का 'नतोन्नतबल' हुआ। एवं बुध का १ अंश बल हुआ। इसी को नीचे 'चक्र' में लिखा जाता है।

## नतोन्नतबल—चक्र

| सू | चं. | मं. | बु | गु. | शु | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | ० | ० | ० | अंश |
| ४१ | १८ | १८ | ० | ४१ | ४१ | १८ | कला |
| ४५ | १५ | १५ | ० | ४५ | ४५ | १५ | विकला |

## (ख) पक्ष-बल

अर्केन्द्वोरन्तरादंशाद्भामाप्तं पक्षजं बलम्।
शुभानां तद्बलं ज्ञेयं पापानां षष्टितश्च्युतम्॥

भाषा—सूर्य चन्द्रमा के अन्तर के अंशों में ३ का भाग देने से शुभ ग्रहों (चं. बु. गु. शु.) का पक्षबल होता है। इसी को ६० कला में घटाने से पापग्रहों (सू. मं. श. पापयुक्त बुध) का पक्षबल होता है।

उदाहरण—चन्द्र ७।१७।२९।४६ में सूर्य २।१९।३२।२३ को घटाया; शेष ४।२७।५७।२३ के अंशादि =४×३०+२७=१४७। ५७।२३ में ३ का भाग दिया तो प्रथम लब्धि ४९ (कला); शेष ×६०+५७÷३=१९ (विकला) दूसरी लब्धि हुई। अतः शुभग्रहों का पक्षबल कलादि ४९।१९ हुआ। इसको ६० में घटाया तो पापग्रहों का बल १०।४१ हुआ। यथा—

पक्षबल-चक्र

| र. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १० | ४९ | १० | ४९ | ४९ | ४९ | १० |
| ४१ | १९ | ४१ | १९ | १९ | १९ | ४१ |

## (ग) दिवारात्रित्रिभागबल ( त्र्यंशबल )

"अथाह्नस्त्र्यंशकेषुक्रमात् सौम्यार्कार्किभुत्रां निशः।
शशिसितारारणां ,च रूपं सदेज्यस्य ..........॥"

भाषा—दिन का जन्म हो तो दिनमान का त्रिभाग करे; रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान का त्रिभाग करे। यदि दिन के प्रथम भाग में जन्म हो तो बुध का; दूसरे भाग में सूर्य का; तीसरे भाग में शनिका १ अंश बल होता है। रात्रि के प्रथम भाग में चन्द्र का; द्वितीय भाग में शुक्र का; तृतीय भाग में भौम का तथा गुरु का सर्वदा १ अंश बल होता है। अन्यथा शून्यबल होता है।

उदाहरण—दिनमान ३३।२५ (दिन में जन्म) है। अतः ३३।२५÷३= ११।८।२० दिन का प्रथम त्रिभाग हुआ; एवं दिन के प्रथम भाग ( इष्ट ७।३५ ) में जन्म है अतः बुध का तथा गुरु का १ अंश बल हुआ। इसीको उदाहरणार्थ आगे 'दिवारात्रित्रिभागबलचक्र' में लिखा जाता है।

## दिवारात्रित्रिभागबल–चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | १ | १ | ० | ० | अंश |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | कला |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | विकला |

## (घ) वर्षेशादिबल

### वर्षेशसाधन

कलिगतदिनवृन्दः त्र्यद्रिरामैर्विहीनो,
नखशरकरतष्टो द्विःस्थितोऽभ्राङ्गरामैः।
खशिखिभिरथ लब्धे त्रिद्विनिघ्ने सरूपे,
तदिनु तुरगतष्टे वर्षमासाधिपौ स्तः॥

(नीलकण्ठपद्धति)

भाषा—कलियुगादि से इष्ट दिन का अहर्गण लाकर उसमें ३७३ घटावे; शेष में २५२० का भाग देने पर जो शेष बचे उसको २ जगहों में स्थापित करे, प्रथम जगह में ३६० का और दूसरे जगह में ३० का भाग देवे। दोनों लब्धियों को क्रमशः तीन और दो से गुण देवे; एक जोड़ देवे, फिर ७ से भाग देने पर जो शेष बचे वह क्रमशः पहला वर्षपति और दूसरा मासपति होता है।

उदाहरण—सं० १९९० शाके १८५५ आषाढ़ शुक्ल १२ बुधवार को कलियुगादि से अहर्गण १८३८७९४ हैं। इसमें ३७३ घटाने पर १८३८४३१ बचा। इसमें २५२० का भाग दिया तो लब्धि ७२९ और शेष १३४१ बचा। यहां लब्धि की आवश्यकता न होने से शेष को २ जगहों में रखकर क्रमशः ३६० और ३० का भाग दिया तो प्रथम लब्धि ३ और

दूसरी लब्धि ४४ हुई। तब सूत्रानुसार वर्षेश, मासेश निम्न प्रकार से हुआ।

(१) वर्षेश—३ × ३ = ९
९ + १ = १०
१० ÷ ७ = ल. १ शे. ३ वर्षेश मङ्गल

(२) मासेश—४४ × २ = ८८
८८ + १ = ८९
८९ ÷ १२ = ल. ७ शे. ५ मासेश वृहस्पति

## दिनेश-साधन

१—जिस दिन का जन्मकाल या इष्टकाल हो वही दिनेश होता है अतः प्रस्तुत उदाहरण में दिनपति बुध हुआ।

## कालहोरेश-साधन

स्वर्णं कृत्वेष्टकाले चरदलविघटी याम्यसौम्यार्कगोले,
रेखायाः प्राक् परस्ताद्दणमथ च धनं स्वस्वदेशान्तरं हि।
शिष्टा वारप्रवृत्तेरिह गतघटिकास्ता द्विनिघ्नाः शराप्ता,
वारेशात् कालहोरा रविसितशशिजेन्दार्किजीवारनाथाः॥

(नीलकण्ठपद्धति)

भाषा—सूर्य दक्षिणोत्तर गोल में हो तो क्रमशः इष्टकाल में चरघटी को जोड़ने घटाने से एवं पूर्व पश्चिम देशान्तर को उसमें ऋण और धन करने से शेष बार प्रवृत्ति के समय से इष्टकाल होता है। उसको २ से गुणकर ५ का भाग देने से लब्धि तुल्य रवि. सित. शशिज इत्यादि सूत्रोक्त नियम से गत होरापति होता है। वर्तमान होरापति उसके आगे का होता है। जैसे रविवार को १ लब्धि होने से रविगत शुक्र वर्तमान; एवं शुक्रवार को १ लब्धि में शुक्रगत बुध वर्तमान; एवं तत्तद्दिन में

लब्धि संख्या तुल्य गत; एवं उसके आगे का वर्तमान होरा पति होता है ।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ उत्तरगोल में है । इसलिये इष्ट ७।३५ में चरघटी १।४२ को घटाकर शेष ५।५३ में जबलपुर का पूर्वदेशान्तर ४४ प. को घटाया तो ५।९ बारप्रवृत्ति से इष्ट हुआ । अब इष्ट ५।९ × २ ÷ ५ = २ ल. हुई । यहाँ पर दिनपति बुध से दूसरा चन्द्रमा गत और तीसरा शनैश्चर वर्तमान कालहोरेश हुआ ।

## वारप्रवृत्ति-साधन

पादोनरेखा परपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयोदिनार्धतः ।
ऊनाधिकास्तद् विवरोद्भवैः पलैरुर्ध्वं तथाधो दिनपप्रवेशनम् ॥

(मु. चि.)

## कालहोरेश लाने का दूसरा नियम

वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षह्रच्छेषवर्जिताः ।
सैकास्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात् ॥

(मु. चि.)

उदाहरण—वारप्रवृत्ति से इष्टघटी ५।९

∴ ५।९ × २ = १०।१८

१०।१८ ÷ ५ = २ ल. शे ०।१८

∴ १०।१८ — ०।१८ = १०

१० + १ ÷ ७ = १ ल. ४ शे० दिनपतिबुध है अतः बुध से चौथा शनैश्चर कालहोरेश हुआ ।

## वर्षेशादिबल

" अथाङ्घ्रिचयाद्बली किल समा मासद्युहोरेश्वरः ।"

भाषा—वर्षपति, मासपति, दिनपति, कालहोरापति ये क्रमशः चरण वृद्धि से बलवान होते हैं । जैसे वर्षपति का बल १५ कला

मासपति का ३० कला, दिनपति का ४५ कला एवं कालहोरा-पति का १ अंश बल होता है।

उदाहरण—प्रस्तुत उदाहरण में वर्षपति मंगल, मासपति गुरु, दिनपति बुध और कालहोरापति शनैश्चर है। इन सबों का बल चरण वृद्धि के क्रम से चक्र में नीचे दिया जाता है।

## वर्षेशादिबल-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| ० | ० | १५ | ४५ | ३० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

नतोन्नतबल + पक्षबल + त्र्यंशबल + वर्षेशादिबल = कालबल

## कालबल-चक्र

| सू | चं | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | ० | ३ | ३ | १ | १ |
| ५२ | ७ | ४३ | ३४ | १ | ३१ | २८ |
| २६ | ३४ | ५६ | १९ | ४ | ४ | ५६ |

## आयनबल

नोट—आयनबल का साधन ग्रहों के क्रान्त्यंश पर से होता है इसलिये पहले सूक्ष्मक्रान्तिसाधन लिखा जाता है।

## क्रान्ति-साधन

चत्वारिंशदशीतिरद्रिकुभुवः कक्षेन्दवोभूधृती,
षट् खाक्षीणि जिनाश्विनोऽङ्कविकृती खाध्यश्विनः सायनात्।
खेटाद्दोलवदिग्लवप्रमगतोऽङ्कोऽसौ तदूना गताच्छे,
षघ्नाद् दशलब्धियुग् दशहृतोंशाद्योपमः स्यात् स्वदिक्॥

(ग्र. ला.)

भाषा—तीन राशि वा ९० अंशों के बीच प्रति १० अंशों का ध्रुवा और ध्रुवान्तर नीचे दिया जाता है।

## ध्रुवांक-चक्र

| अंश | १० (१) | २० (२) | ३० (३) | ४० (४) | ५० (५) | ६० (६) | ७० (७) | ८० (८) | ९० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रुवक | ४० | ८० | ११७ | १५१ | १८१ | २०६ | २२४ | २३६ | |
| ध्रुवांतर | ४० | ४० | ३७ | ३४ | ३० | २५ | १८ | १२ | ४ |

सायन ग्रह के भुजांशों में १० का भाग देने से जो लब्धि हो तत् प्रमित गतक्रान्तिखण्ड होता है। अंशादि शेष को ध्रुवान्तर से गुणकर १० का भाग देकर जो लब्धि हो उसे गतखण्ड में जोड़कर पुनः १० का भाग देने पर अंशादि क्रान्ति स्पष्ट होती है। सायन ग्रह जिस गोल ( उत्तर वा दक्षिण ) में हो उसी दिशा की क्रान्ति होती है।

उदाहरण—सूर्य २।१९।३२।२३ में अयनांश २२।४८।२९ जोड़ने से ३।१२।२०।५२ सायन सूर्य हुआ; इसके भुजांश ७७।३९।८ में १० का भाग देने पर ७ लब्धि हुई; अतः गतखंड २२४ हुआ। आगामी खण्ड २३६ है। दोनों का १२ ध्रुवान्तर हुआ। अंशादि शेष ७।३९।८ को ध्रुवान्तर १२ से गुणकर १० का भाग देने पर ( ७।३९।८ ) × १२ ÷ १० = ९।१०।५७ लब्धि हुई; इसको गतखण्ड २२४ में जोड़कर पुनः १० का भाग दिया तो २२४ + ९।१०।५७ = २३३।१०।५७ ÷ १० = २३°।१९′।५″ अंशादि क्रान्ति सूर्य की हुई। सायनसूर्य मेषादि होने से उत्तरगोल में है अतः उत्तराक्रान्ति हुई। इसी प्रकार चन्द्रादि ग्रहों की क्रान्ति स्पष्ट कर आगे 'चक्र' में दी जाती है।

## क्रान्ति-चक्र

| ग्र. | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रां. | २३<br>१९<br>२४ | २२<br>२६<br>११ | ०<br>२४<br>२१ | १८<br>४३<br>५५ | ३<br>१२<br>२३ | १९<br>१३<br>३ | १८<br>३५<br>२४ |
| दिशा | उ. | द. | उ. | उ. | उ. | उ. | द. |

## आयनबल-साधन

सदा क्रान्तिभागैर्युता ज्ञस्य सिद्धाः,
शनीन्द्वोर्युतोनाः क्रमाद्याम्यसौम्यैः ।
विलोमं परेषां गजाम्भोधिभक्ता,
भवेदायनं वीर्यमर्कस्य द्विघ्नम् ॥ (के. जा. प.)

भाषा—बुध की क्रान्ति उत्तर या दक्षिण हो उसको सर्वदा २४ में जोड़े। शनि, चन्द्र की क्रान्ति दक्षिण हो तो २४ में जोड़े, उत्तर हो तो २४ में घटा देवे। अन्य ग्रहों (सू. मं. बृ. शु.) में विलोम; अर्थात् इनकी क्रान्ति दक्षिण हो तो २४ में घटावे, उत्तर हो तो जोड़े। इस प्रकार सिद्ध क्रान्ति में ४८ का भाग देने से ग्रहों का अयनबल होता है। सूर्य के अयनबल को द्विगुणित करने से उसका चेष्टाबल होता है।

उदाहरण—सूर्य की क्रान्ति २३।१९।५ उत्तर होने से २४ में जोड़कर ४७।१९।५ हुआ। इसमें ४८ का भाग दिया तो प्रथम लब्धि (०) हुई। पुनः ४७ × ६० + १९ ÷ ४८ = ५९ दूसरी लब्धि हुई फिर शेष ७ × ६० + ५ ÷ ४८ = ९ तीसरी लब्धि हुई। इस प्रकार ०।५९।९ सूर्य का अंशादि अयनबल हुआ। उदाहरणार्थ आगे सभी ग्रहों का 'अयनबल-चक्र' लिखा जाता है।

## अयनबल—चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | ५८ | ३० | ५३ | ३४ | ५४ | ५३ |
| ९ | ३ | ३० | २४ | ० | १ | १४ |

## चेष्टाकेन्द्र-साधन

$$\text{चेष्टाकेन्द्र} = \text{शी. उ.} - \frac{\text{म. ग्र} + \text{स्प. ग्र.}}{२}$$

## चेष्टाकेन्द्रसाधन

"मध्यस्पष्टयुतेर्दलोनितचलं चेष्टाख्यकेन्द्रं कुजात्।"

भा॰—इष्टकालिक मध्यमग्रह और स्पष्ट ग्रह के योगार्ध को शीघ्रोच्च में घटाने से भौमादि ५ ग्रहों का चेष्टाकेन्द्र होता है।

उदाहरण—सं॰ १९९० आषाढ़ शुक्ल १२ बुधवार का निशीथ कालिक अहर्गण १८३८७९४ वल्ली ८।३०।४६।३४ मिश्रमान ४७।५३ इष्ट ७।३५ मिश्रेष्टान्तर चालन ऋण ४०।१८ कर इष्ट कालिक मध्यमग्रह चक्र में नीचे लिखे जाते हैं।

मध्यमग्रह—चक्र

| मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|
| ६ | २ | ५ | २ | ९ |
| २३ | १९ | ७ | १९ | १७ |
| २० | ३५ | ० | ३५ | ५८ |
| १६ | ८ | ० | ८ | ३५ |

शीघ्रोच्च—चक्र

| मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|
| २ | १० | २ | ० | २ |
| १९ | ७ | १९ | २२ | १९ |
| ३५ | ५२ | ३५ | १५ | ३५ |
| ८ | ४९ | ८ | २५ | ८ |

म. मं. ६।२३।२०।१६
स्प. मं. ५। ५।१९। ४ (पृ. ८५)
योग ११।२८।३९।२०
योगार्ध ५।२९।१९।४०

मं. शीउ २।१९।३५।८ में से
योगार्ध ५ २९।१९।४० घटाया
शेष ८।२०।१५।२८ चेष्टा केन्द्र-

मंगल का हुआ। इसी प्रकार बुधादि ग्रहों का चेष्टाकेन्द्र लाकर उदाहरणार्थ 'चक्र' में दिया जाता है।

## चेष्टाकेन्द्र-चक्र

| मं. | बु | बृ. | शु | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ७ | ९ | ९ | ५ | चेष्टाकेन्द्र |
| २० | ५ | १६ | २१ | २ | |
| ५ | ४५ | ७८ | ६ | ५८ | |
| २८ | १९ | १६ | १३ | ५३ | |

## चेष्टाकेन्द्रबल-साधन

"स्यात् तच्चेद् भगणाच्च्युतं षडधिकं षदुच्चचेष्टाबलम्।"

भाषा—चेष्टा केन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो उसको १२ राशि में घटाकर शेष में ६ का भाग देने से ग्रहों का चेष्टाबल होता है।

नोट—चेष्टाकेन्द्र में ६ का भाग देने के लिये उसके अंशादि को द्विगुणित करके ६ का भाग देने से लाघव क्रिया होगी।

उदाहरण—मंगल का चेष्टाकेन्द्र ८।२०।१५।२८ (६ राशि से अधिक है) अतः १२ में घटाया तो ३।९।४४।३२ हुआ। यहां राशि स्थान में ६ का भाग दिया तो (०) प्रथम लब्धि हुई। शेष के अंशादिक ३ × ३० + ९°।४४′।३२″ = ९९°।४४′।३२″ को २ से गुणने पर १९८°।८८′।६४″ = १९९°।२९′।४″ हुआ। इसमें ६ का भाग दिया तो ३३ (कला) दूसरी लब्धि हुई। फिर शेष १ × ६० + २९ ÷ ६ = $\frac{८९}{६}$ = १४ + $\frac{५}{६}$ = १५ तीसरी लब्धि हुई। अतः मंगल का अंशादि चेष्टाबल ०।३३।१५ हुआ। इसी प्रकार बुधादि ४ ग्रहों के चेष्टाबल लाकर चक्र में दिए जाते हैं।

नोट—सूर्य का चेष्टाबल पूर्वानीत अयनबल के तुल्य और चन्द्रमा का पक्षबल तुल्य होता है।

## मध्यम चेष्टाबल—चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | ४९ | ३३ | ४८ | २४ | २२ | ४१ |
| ९ | १९ | १५ | ५ | २१ | ५८ | ० |

## स्पष्टचेष्टाबल—साधन

आयनबल + मध्यम चेष्टाबल = स्पष्टचेष्टाबल

## स्पष्टचेष्टाबल—चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | १ | १ | ० | १ | १ |
| ५८ | ४७ | ३ | ४१ | ५८ | १६ | ४४ |
| १८ | २२ | ४५ | २९ | २१ | ५९ | १४ |

## नैसर्गिकबल—साधन

"स्यादेकोत्तररूपमद्रिविहृतं नैसर्गिकं स्याद्बलम्,
मन्दारज्ञसुरेज्यशुक्रशशभृत्तीक्ष्णद्युतीनां क्रमात् ।"

भाषा—एकोत्तर (एक से ७ तक) अङ्कों में अलग २ सात का भाग देने से क्रमशः—शनि. १ मंगल. २ बुध ३ गुरु ४ शुक्र ५ चन्द्र ६ सूर्य ७ इन ग्रहों का नैसर्गिकबल होता है।

उदाहरण—जैसे १ में ७ का भाग देने से १ ÷ ७ = ० ल., शे. १ × ६० ÷ ७ = ८ ल., शे. ४ × ६० ÷ ७ = ३४ ल. अतः ०।८।३४ शनैश्चर का बल हुआ एवं सभी ग्रहों का बल आगे 'चक्र' में देखो।

## नैसर्गिकबल-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ५१ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ८ |
| ० | २६ | ९ | ४३ | १७ | ५१ | ३४ |

## दृग्बल (दृष्टिबल)

" सद् दृष्ट्यंघ्रियुगुग्रदृष्टिचरणोनं खेटवीर्यं भवेत् । "

भाषा—ग्रहों के पूर्वानीत बल पंचक (स्था. ब. १, दि. ब. २, का. ब. ३, चे. ब. ४, नै. ब. ५) के योग में शुभदृष्टि चतुर्थांश को जोड़ने एवं पापदृष्टि चतुर्थांश को घटाने से षड्बलैक्यबल होता है। तात्पर्य यह कि जिस ग्रह पर जितने शुभ ग्रहों की दृष्टि हो; उनके योग का चतुर्थांश धन एवं पापदृष्टि योग चतुर्थांश ऋण होता है । अतः " धनर्णयोरन्तरमेव योगः " इस बीज क्रिया से दोनों के अन्तररूप दृग्बल होता है। जिसको पूर्वानीत बल योग में संस्कार करने से ग्रहबल होता है—दृग्बल-साधन के लिये पहले दृष्टि-साधन लिखा जाता है।

## ग्रहोपरि ग्रहदृष्टि–साधन

खैकाग्निद्विखवेदरामयमभू खाभ्राभ्रमेकादिभे,
द्रष्ट्रावर्जितदृश्यकस्य गुरुणा चेदष्टवेदेकृताः ।
मन्देनाङ्कयमेऽसृजानगगुणेऽङ्काभादिजाः संस्कृता,
भागघ्नत्र्यवृद्धिखानललवेनाऽभ्युद्धृता दृग् भवेत् ॥

(के. जा. प.)

भाषा—देखनेवाला ग्रह द्रष्टा और जिसको देखे वह दृश्य कहलाता है।

द्रष्टा को दृश्य में घटाने से एकादि (१—१२) शेष बचने पर निम्नलिखित ध्रुवाङ्क होते हैं।

## दृष्टि-ध्रुवाङ्क-चक्र

| शेष | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध्रुवांक | ० | १ | ३ | २ | ० | ४ | ३ | २ | १ | ० | ० | ० |

अंशादि शेष को ध्रुवाङ्कान्तर (गत और आगे का अन्तर) से गुणकर ३० का भाग देकर लब्धि को गत ध्रुवा में संस्कार (गत से ऐष्य अधिक हो तो धन, अल्प हो तो ऋण) करके ४ का भाग देने पर लब्धि रूपादि ग्रहदृष्टि होती है—गुरु, शनि, मंगल द्रष्टा हो तो क्रमशः गुरु के लिये ४।८ के नीचे
शनि के लिये ९।२ ,, ,,
मंगल के लिये ७।३ ,, ,, चार स्थापित करना

उदाहरण—चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि लाना है; तो दृश्य चन्द्रमा ७।१७।२९।४६ में द्रष्टा सूर्य २।२९।३२।२३ को घटाया, शेष ४।१७।२९।४६ की राशि ४ हैं; अतः ध्रुवाङ्क चक्र में ४ के नीचे ध्रुवांक २ मिला। आगे का ध्रुवांक (०) है अतः दोनों के अन्तर २ क्षयात्मक हुआ। अब अंशादि शेष (१७।२९।४६) को ध्रुवान्तर से गुणकर ३० का भाग देने से लब्धि १।९।५९ हुई। इसको गत खण्ड २ में क्षयात्मक होने से घटाया २—१।९।५९=०।५०।१ इसमें ४ का भाग दिया; तो ०।१२।३० सूर्य की दृष्टि चन्द्रमा पर हुई। इसी क्रम से 'दृष्टि-चक्र' बनाकर उदाहरणार्थ आगे खिला जाता है।

( दृश्यग्रह )

## दृष्टिचक्र ( द्रष्टाग्रह )

| ग्र. | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ०।०।० | ०।४४।० | ०।७।५४ | ०।०।० | ०।४।२१ | ०।०।० | ०।८।३६ |
| चं. | ० १२।३० | ०।०।० | ०।३३।१६ | ०।३१।२५ | ०।३४।१६ | ०।२५।१४ | ०।०।० |
| मं. | ०।३०।४६ | ०।६।४ | ०।०।० | ०।१०।२० | ०।०।० | ०।११।१८ | ०।३३।५८ |
| बु. | ०।०।० | ०।३१।२५ | ०।०।० | ०।०।० | ०।०।० | ०।०।० | ०।५८।३१ |
| बृ. | ०।२३।४१ | ०।९।३८ | ०।०।० | ०।६।४६ | ०।०।० | ०।७।४५ | ०।३८।३० |
| शु. | ०।०।० | ०।३२।२४ | ०।०।० | ०।०।० | ०।०।० | ०।०।० | ०।५४।५८ |
| श. | ०।४७।१० | ०।१३।८ | ०।२०।५ | ०।५९।४३ | ०।२६।० | ०।५८।४५ | ०।०।० |

## दृग्वल साधन (दृष्टि चक्र पृ.३२४)

सूर्य का—शुभ दृष्टि योग     पापदृष्टियोग

| चतुर्थांश धन | चतुर्थांशऋण |
|---|---|
| चं. ०।४४। ० | सू. ०।०।० |
| बु. ०। ०। ० | मं. ०।७।५४ |
| बृ. ०। ४।२१ | श. ०।८।३६ |
| शु. ०। ०। ० | यो. ०।१६।३०÷४= ०। ४।७ ऋण |
| यो. ०।४८।२१÷४ | |

=०।१२। ५ धनात्मक

∴ +०।१२।५—०।४।७= +०।७।५८

∴ सूर्य का दृग्बल धनात्मक हुआ। इसी प्रकार सभी ग्रहों का 'दृग्बल' चक्र में देखो।

### दृग्बल-चक्र (ऋणधन-चक्र)

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | ११ | ९ | ६ | ९ | ५ | २२ |
| ५८ | २४ | १६ | ४७ | ३१ | ३८ | ३५ |
| + | + | — | — | — | — | + |

### षड्बलैक्य-बल

सूर्यका···(१) स्थानबल —२।२३।४१<br>
,, (२) दिग्बल —०।४२।४९<br>
,, (३) कालबल —०।५२।२६<br>
,, (४) चेष्टाबल —१।५८।१८<br>
,, (५) निसर्गबल —१। ०। ०

योग ६।२७।१४ में

सूर्य का दृग्बल धनात्मक होने से +०। ७।५८ जोड़ा

षड्बलैक्यबल ६।३५।१२ सूर्य का हुआ। इसी

प्रकार सभी ग्रहों का बल 'चक्र' में उदाहरणार्थ दिया जाता है ।

## षड्बलैक्य-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ७ | ५ | ९ | ८ | ७ | ७ |
| ३५ | ५३ | ३४ | २३ | ३७ | ४ | ३१ |
| १२ | ११ | २५ | ३४ | १० | ८ | ४१ |

## युद्धबल-संस्कार

नोट—यदि जन्मकाल या इष्ट काल में भौमादि ५ ग्रहों में किसी दो ग्रहों का परस्पर युद्ध होता हो; तो उन दोनों के पूर्वानीत षड्बलैक्य में युद्धबल भी संस्कार करना चाहिये । जिन ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला तुल्य होते हैं; उन्हीं ग्रहों में युद्ध होता है ।

## युद्धबल-साधन

"युद्धे बाणवियोगहृत् खचरयोर्वीर्यैक्ययोरन्तरं,
स्वं सौम्यस्थखगे क्षयश्च यमदिक् संस्थस्य कुर्याद्बले ।"

भाषा—जिन दो ग्रहों में युद्ध का लक्षण हो; उनके बलान्तर में उन्हीं दोनों के शरान्तर से भाग देने पर जो लब्धि हो; वह युद्धबल होता है । उसको उत्तर शर वाले ग्रह के बल में धन और दक्षिण शर वाले ग्रह के बल में ऋण करने से वास्तविक बल होता है ।

नोट—यहां युद्ध का लक्षण नहीं होने से युद्धबल संस्कार नहीं किया गया ।

## वलावल-निर्णय

" त्र्यल्पे हीनवलो वली षडधिके वीर्ये ग्रहश्चोदय: "

भाषा—ग्रह अथवा लग्न का वलयोग ३ से अल्प हो तो निर्वल, ६ से अधिक हो तो वलवान् होता है। (३, ६) के मध्य में हो तो मध्यवली होता है।

इति ग्रहवलविवेकः

---

## अवस्था-विवेक

### १—वालाद्यवस्था

"वालो रसांशै रसमे प्रदिष्टस्ततः कुमारो हि युवाथ वृद्धः।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे वालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहणाम् ॥
फलन्तु किञ्चिद्वितनोति वालश्चार्धं कुमारो यतते च पुंसाम्।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः फलं च दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥
(भा. कु.)

भाषा—प्रत्येक राशि में ५ अवस्थायें होती हैं। प्रत्येक अवस्था ६ अंश की होती है। विषम राशि में ६ अंश तक ग्रह बालक रहता है। फिर उसके ऊपर १२ अंशतक कुमार, १८ अंशतक युवा, २४ अंशतक वृद्ध, ३० अंश तक मृत रहता है। समराशि में इसके विपरीतअर्थात ६ अंश तक मृत, १२ अंश तक वृद्ध, १८ अंश तकयुवा, २४ अंशतक कुमार, ३० अंश तक बालक रहता है। बालक ग्रह स्वल्प फल दायक एवं कुमारादि अवस्था वाला ग्रह क्रमशः-अर्ध-समस्त-अनिष्ट-मृत्युफल को देता है। उदाहरणार्थ आगे चक्र लिखा जाता है।

## बालाद्यवस्था-चक्र (स्प. ग्र. पृ ८५)

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ग्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वृद्ध. | युवा. | मृत. | युवा. | मृत. | युवा. | युवा. | अवस्था |

## शयनादि-अवस्था

प्रथमं शयनं ज्ञेय द्वितीयमुपवेशनम् ।
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने तथा ॥
समायां च ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ।
नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्था नभः सदाम् ॥

## इष्ट काल में अवस्था-साधन

ग्रहर्त्तसंख्या खगमाननिघ्नी खेटांशसंख्यागुणिता ग्रहाणाम् ।
निजेष्टजन्मर्क्षतनुप्रमाणैर्युताऽर्कतष्टा शयनाद्यवस्था ॥

(भा. कु.)

भाषा—जिस नक्षत्र में ग्रह हो, अश्विन्यादि गणना से उस नक्षत्र की जो संख्या हो ; उसको ग्रह संख्या से और ग्रहों की अंश संख्या से गुणकर उसमें इष्ट घटी (केवल दण्डमात्र) जन्म नक्षत्र और जन्म लग्न की संख्या जोड़ कर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उतनी संख्या की अवस्था होती है। यथा—

## शयनाद्यवस्था—चक्र

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रहों को न. संख्या | आ. ४ च. सं. ६ | ज्ये. १ च. सं. १८ | उ. फा. २, च सं. १२ | पु. ४ च. सं. ८ | उ. फा. १ च. सं. १२ | पु. ३ च. सं. ८ | श्र. २ च. सं. २२ | श. २ च सं. २४ | म. ४ च. सं १० |
| ग्रहों की अं. संख्या | १९ | १७ | ५ | १४ | २८ | १२ | १५ | १२ | १२ |
| ग्रहसंख्या | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
| न. × अं. × ग्र. = गु. फ. | ११४ | ६१२ | १८० | ४४८ | ३९२० | ५७६ | ५५० | २३०४ | १०८० |
| क्षेपः=ज.न. +इ.+ लग्न =२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ | +२९ |
| योग | १४३ | ६४१ | २०९ | ४७७ | ३९४९ | ६०५ | ५७९ | २३३३ | ११०९ |
| योग ÷ १२ =ल. शेषाऽवस्था | शे. ११ कौतुक | ,, ५ गमन | ,, ५ गमन | ,, ९ भोजन | ,, १ शयन | ,, ५ गमन | ,, ३ नेत्रपा. | ,, ५ गमन | ,, ५ गमन |

## दीप्ताद्यवस्था

दीप्तः स्वस्थः प्रमुदितः शान्तो दीनोऽतिदुःखितः ।
विकलश्च खलः कोपी नवधा खेचरो भवेत् ॥
उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वर्क्षेऽधिमित्रभे ।
मुदितो मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते ॥

शत्रुभे दुःखितोऽतीव विकलः पापसंयुतः ।
खलः खलगृहे ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः ।।

भाषा—अपने उच्च में ग्रह हो तो दीप्त, स्वक्षेत्र में हो तो स्वस्थ, अतिमित्र के घर में हो तो मुदित, मित्र के घर में हो तो शान्त, सम के गृह में हो तो दीन, शत्रु के घर में हो तो दुःखित पापग्रह के साथ हो तो विकल, पापग्रह के घर में हो तो खल और सूर्य के साथ होने से कोपी होता है। इन सब अवस्थाओं का फल नामानुरूप ही होता है।

## लज्जिताद्यवस्था

लज्जितो गर्वितश्चैव क्षुधितस्तृषितस्तथा ।
मुदितः क्षोभितश्चैव ग्रहभावाः प्रकीर्तिताः ।।
पुत्रगेहगतः खेटो राहुकेतुयुतो भवेत् ।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितोग्रह एव च ।।
तुङ्गस्थानगतो वापि त्रिकोणेऽपि भवेत् पुनः ।
गर्वितः सोऽपि कथितो निर्विशङ्कं द्विजोत्तम ।।
शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदि ।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा ।।
जलराशौ यदा खेटः शत्रुणा चावलोकितः ।
शुभग्रहा न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः ।।
मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण यदि वीक्षितः ।
गुरुणा-सहितो यश्च मुदितः स प्रकीर्तितः ।।
रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा ।
क्षोभितं तं विजानीयात् शत्रुणा यदि वीक्षितः ।।
येषु येषु च भावेषु ग्रहास्तिष्ठन्ति सर्वथा ।
क्षुधिताः क्षोभिता वापि स नरो दुःखभाजनः ।।
एवं क्रमेण वोद्धव्यं सर्वभावेषु पण्डितैः ।
वलावलविचारेण वक्तव्यः फलनिर्णयः ।।

भाषा—लज्जित, गर्वित, क्षुधित, तृषित, मुदित और क्षोभित ये छः प्रकार ग्रहों के भाव होते हैं।

१—लज्जित–जो ग्रह पंचम स्थान में राहु, केतु, सूर्य, मङ्गल और शनैश्चर से युक्त हो तो वह 'लज्जित' कहलाता है।

२—गर्वित–उच्चस्थान अथवा अपने मूलत्रिकोण में ग्रह 'गर्वित' होता है।

३—क्षुधित--शत्रु के घर में या शत्रु से युक्त वा दृष्ट ग्रह 'क्षुधित' कहलाता है।

४—तृषित–जो ग्रह जलचर राशि में स्थित होकर केवल शत्रु से दृष्ट हो कोई भी शुभ ग्रह उसको न देखे तो वह 'तृषित' होता है।

५—मुदित—मित्र के घर में मित्र से युक्त वा दृष्ट अथवा गुरु से युक्त ग्रह 'मुदित' कहलाता है।

६—क्षोभित–जो ग्रह सूर्य के साथ होकर केवल पापग्रहों से दृष्ट हो उसको 'क्षोभित' कहते हैं।

जिन जिन भावों में क्षुधित या क्षोभित ग्रह होता है उस भाव को नाश करके दुःख देने वाला होता है इस प्रकार प्रत्येक भावों का वलावलविचार करके फल-निर्णय करना चाहिये।

## जाग्रदाद्यवस्था

त्रिंशदंशं त्रिभागञ्च कल्पयित्वा पृथक् पृथक्।
विषमादिक्रमेणैव समे वै विपरीतक्रम्॥
विज्ञाय प्रथमं पुंसां जाग्रत् स्वप्नसुषुप्तिकाः।
विशेषतः परीक्ष्यः स्याज्जागरः कार्यसाधकः॥
स्वप्न वस्था मध्यफला उपदेष्टा गुरुर्यदि।
निष्फला चरमावस्था ज्ञातव्या मुनिसत्तम॥

भाषा—प्रत्येक राशि के ३० अंशो के त्रिभाग करे, विषम राशि में पहला त्रिभाग १० अंश तक जाग्रत अवस्था, फिर दूसरा

त्रिभाग २० अंश तक स्वप्नावस्था, फिर अन्तिम त्रिभाग ३० अंश तक सुषुप्ति अवस्था होती है समराशि में विपरीत अर्थात् पहला भाग सुषुप्ति, दूसरा स्वप्न और तीसरा जाग्रत अवस्था जानना चाहिये। जाग्रत अवस्था कार्यसिद्धि करने वाली स्वप्नावस्था मध्यम फल देने वाली, सुषुप्ति अवस्था निष्फल होती है। इसका विचार हर एक ग्रहों में करना चाहिये।

इत्यवस्थाविवेकः

---

## सिद्धान्त-विवेक

सूर्य सिद्धान्त रीति से स्पष्ट ग्रह साधन ही प्रथम लिखा जाता है। सूक्ष्म ग्रहसाधन का प्रयोजन यह है कि—

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ,<br>
खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।<br>
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां,<br>
स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या ॥

भाषा—यात्रा, विवाह, उत्सव जातक प्रश्न, वर्ष आदि सर्वत्र सूक्ष्म ग्रह साधन से ही फल घटित होता है। इसलिए स्पष्टग्रह-साधन सूर्य सिद्धान्तद्वारा लिखा जाता है। सूक्ष्म ग्रह साधन में मूलांक अहर्गण है; इसलिये सर्व प्रथम मूलावश्यकतावशात् सृष्ट्यादि अहर्गण का उदाहरण भी दिखाया जाता है।

### अहर्गण-साधन

उदाहरण—संवत् १९९५ शके १८६० चैत्र शु. १ शुक्रवार का अहर्गण साधन—

सृष्ट्यादि से इष्टदिन तक गत सौर वर्ष १९५५८८५०३९

ग. सौ. व. × १२=ग. सौ. मा.=२३४७०६२०४६८

$$\frac{\text{सौ. मा.} \times \text{क. अधि मास}}{\text{क. सौ. मा.}} = \text{इ. अ. मा.} = ७२१३८४७३२$$

ग. सौ. मा.+इ. अ. मा.=इ. चां. मा.=२४१९२००५२००

इ. चां. मा. × ३०+ग. ति.=इ. चां. दि.=७२५७६०१५६०००

$$\frac{\text{इ. चां. दि.} \times \text{क. क्ष. दि.}}{\text{क. चां. दि.}} = \text{इ. अ दि.} = ११३५६०१८८४९$$

इ. चां. दि.—इ. अ. दि.=इ. सा. अ.=७१४४०४१३७१५१

'अहर्गणस्य वारो नियामकः' इस नियम से अहर्गण में ७ से भाग देने पर शेष में (५) बचता है जो 'सूर्याद्यो वासरेश्वरः' के नियम से गुरुवार आता है किन्तु अभीष्टवार 'शुक्र' है अतः

'अभीष्टवारार्थमहर्गणश्चेत्सैको निरेकः ।'

भास्कराचार्योक्त इस नियम से पूर्वानीत अहर्गण में (१) जोड़ने से इष्टदिन (शुक्र) का सृष्ट्यादि अहर्गण (७१४४०४१३७१५२) सिद्ध हुआ।

अस्मिन्कृतयुगस्यान्ते सर्वे मध्यगता ग्रहाः ।
विनेन्दुपातमंदोच्चान् मेषादौ तुल्यतामिताः ॥
मकरादौ शशाङ्कोच्चं तत्पातस्तु तुलादिगः ।
निरंशत्वं गताश्चान्ये नोक्तास्ते मन्दचारिणः ॥

(सू. सि.)

भाषा—सत्ययुगान्त (त्रेतादि) काल में सूर्यादि सप्त ग्रहों के ध्रुवा मेषादि विन्दु में होने से शून्य थे और चन्द्रपात (राहु) का ध्रुवा ६।०।०।० था। एवं चन्द्रोच्च का ध्रुवा ९।०।०।० था। अन्य ग्रह के पात और मन्दोच्च निरंश नहीं थे। अतः उन सबों का ध्रुवा पठित नहीं किया गया।

त्रेतायुगादि कालिक अहर्गण द्वारा उन सबों का साधन सुगम है। इस प्रकार मध्यम ध्रुवाओं के निश्चय हो जाने पर सूर्य सिद्धान्तीय स्पष्ट ग्रह साधन मार्ग निम्न लिखित निश्चय हुआ।

मध्ये शीघ्रफलस्यार्धं मान्दमर्धफलन्तथा ।
मध्यग्रहे मन्दफलं सकलं शैघ्र्यमेव च ॥

(सू. सि.)

उपर्युक्त चतुर्विध संस्कार द्वारा सभी ग्रह दृक्तुल्यता को प्राप्त होते हैं। इस आर्षकथन की युक्ति 'अगम्य और अनिर्वाच्य' है। इसीलिये सिद्धान्ततत्वविवेककार भट्ट कमलाकर ने प्रकृति ग्रन्थ को वेदवत् मानते हुए लिखा है कि—

वेद एव रवितन्त्रमथास्य वासना कथनमल्पधियां हि ।
दोष एव न गुणो रविणोक्तं तेन युक्तियुतमेव सदोह्यम् ॥

अतएव प्राचीनकाल से इदानीं पर्यन्त बड़े २ सिद्धान्ततत्ववेत्ताओं ने सूर्यसिद्धान्त को ही ग्रह-साधन के लिये दृक् प्रत्ययावह समझा। अतः सूर्यसिद्धान्त रीति से स्पष्टग्रह साधनार्थ तावत् मध्यमग्रहों का साधन लिखा जाता है।

सृष्ट्यादि से अहर्गण लाकर अनुपात द्वारा मध्यम ग्रह साधन गणित में गौरव देखते हुए इष्टयुगादि से भी ग्रहानयनार्थ सूर्यसिद्धान्त में इस प्रकार आदेश किया गया है कि—

विस्तरेणैतदुदितं संक्षेपाद्व्यावहारिकम् ।
मध्यमानयनं कार्यं ग्रहाणामिष्टतो युगात् ॥

अतः कलियुगादि से ही अहर्गण लाकर मध्यमग्रह—साधन लिखा जाता है :-

## कलियुगाद्यहर्गण—साधन

"शाको नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्तः कलेर्भवेदब्दगणो व्यतीतः ।"

कल्याद्यब्दगणः प्रभाकरहतश्चैत्रादिमासैर्युतः,
त्रिष्ठः खाद्रिहृदाप्तयुक् सुरहतैर्लब्धाधिमासैर्युतः ।
खत्रिघ्नः सतिथिर्द्विधा शिवहतस्त्रिव्योमशैलोद्धृतः,
हीनो लब्धदिनावमैः सितनिशाद्ये सावनोऽहर्गणः ॥

भाषा—अभीष्ट शकाब्द में ३१७९ युक्त करे तो कलिगत वर्ष प्राप्त होते हैं।

भाषा—कलिगत वर्ष में १२ का गुणा कर उसमें चैत्रादि गत मास जोड़ कर तीन स्थानों में रखे; एक स्थान में ७० से भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान में जोड़कर ३३ से भाग देकर लब्धि को तृतीय स्थान में जोड़ दे; ३० का गुणाकर गत तिथि जोड़े फिर उसको दो स्थान में रखे; एक स्थान में ११ का गुणाकर ७०३ से भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान में से घटावे; शेष इष्टयुगादि ( कलियुगादि ) अहर्गण होता है।

उदाहरण—संवत् १९९५ शके १८६० चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार का अहर्गण साधन—

वर्तमान शक + ३१७९=५०३९ कलिगत वर्ष

कलिगत वर्ष × १२=६०४६८ मास

(१) ६०४६८ ÷ ७०=लब्धि ८६३

(२) ६०४६८ + ८६३ = ६१३३१

६१३३१ ÷ ३३ = लब्धि १८५८

(३) ६०४६८ + १८५८=६२३२६

६२३२६ × ३०=१८६९७८०

(१) १८६९७८० × ११= २०५६७५८०

२०५६७५८० ÷ ७०३ = लब्धि २९२५६

(२) १८६९७८०—२९२५६ = १८४०५२४

'अहर्गणस्य वारो नियामक:'

'अभीष्टवारार्थमहर्गणश्चेत्सैको निरेक:'

इस नियम से (१) जोड़ देने पर कलियुगादि अहर्गण ( १८४०५२५ ) सिद्ध हुआ। इस पर से मध्यम ग्रह साधन रीति यह है कि—

यथा स्वभगणाभ्यस्तो दिनराशि:कुवासरै:।
विभाजितो मध्यगत्या भगणादिर्ग्रहो भवेत्॥

**अनुपात—**

$$\frac{\text{यु. भ} \times \text{अह.}}{\text{यु. कु.}} = \text{भगणादि ग्रह}$$

इसी प्रकार सभी ग्रहों का साधन आगे लिखा जाता है।

## मध्यमसूर्य-साधन

'युगे सूर्यज्ञशुक्राणां खचतुष्करदार्णवाः।'

$$\frac{४३२०००० \times १८४०५२५}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण } ५०३८ + \frac{१५१७९८२५३६}{१५७७९१७८२८}$$

भगणों को प्रयोजनाभाव से छोड़कर भगण शेष द्वारा मध्यम सूर्य का साधन प्रकार यह है कि—

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु कु.}} = \text{राशि} = \frac{१५१७९८२५३६ \times १२}{\text{यु. कु.}} = ११ \text{ राशि} \cdots$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{८५८६९४३२४ \times ३०}{\text{यु. कु.}} = १६ \text{ अंश} \cdots$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{५१४१४४४७२ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = १९ \text{ कला} \cdots$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{८६८२२९५८८ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = २३ \text{ विकला}$$

शेष $\frac{२२४८६९५६}{१५७७९१७८२८}$ रहा। विकला शेष को छोड़ कर राश्यादि मध्यम सूर्य, बुध, शुक्र (११।१६।१९।२३) हुए।

## मध्यमचन्द्र-साधन

'इन्दो रसाग्नित्रित्रीषु सप्तभूधरमार्गणाः।'

$$\frac{१८४०५२५ \times ५७७५३३३६}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण} ६७३६५ + \frac{\text{भगण शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{२४२५८१८० \times १२}{\text{यु. कु.}} = ० \text{ राशि} \cdots$$

$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{२९१०९८१६० \times ३०}{\text{यु. कु.}} = ५ \text{ अंश} \cdots$

$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{८४३३५५६६०}{\text{यु. कु.}} = ३२ \text{ कला} \cdots$

$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{२२६३८०४७६० \times ६०}{\text{यु. कु.}} = ४ \text{ विकला} \cdots$

शेष त्याग कर राश्यादि मध्यम चन्द्र ( ०।५।३२।४ ) हुआ।

## चन्द्रोच्च-साधन

'चन्द्रोच्चस्याग्निशून्याश्विवसुसर्पार्णवा युगे।'

$\frac{१८४०५२५ \times ४८८२०३}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण } ५६९ + \frac{\text{म. शे.}}{\text{यु. कु.}}$

$\frac{\text{म. शे.} \times १२}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{७१४५८२४४३ \times १२}{\text{यु. कु.}} = ५ \text{ राशि} \cdots$

$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{६८५४००१७६ \times ३०}{\text{यु. कु.}} = १३ \text{अंश} \cdots$

$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{४९०७३५१६ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = १ \text{ कला} \cdots$

$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{१३६६४९३१३२ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = ५२ \text{ विकला} \cdots$

चन्द्रोच्च का क्षेपक (३) राशि जोड़ देने से चन्द्रोच्च (८।१३।१। ५२ ) हुआ।

## चन्द्रपात (राहु) साधन

'वामं पातस्य वस्वग्नियमाश्विशिखदस्रकाः।'

$\frac{१८४०५२५ \times २३२२३८}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण } २७० + \frac{\text{म. शे.}}{\text{यु. कु.}}$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{१४०२०३१९० \times १२}{\text{यु. कु.}} = १० \text{ राशि}\cdots$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{१०४५१९८४०० \times ३०}{\text{यु. कु.}} = १९ \text{ अंश}\cdots$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{१३७५५१३२६८ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = ५२ \text{ कला}\cdots$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{४७९०६९०२४ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = १८ \text{ विकला}\cdots$$

'विलोमगतयः पातास्तद्वच्चक्राद्विशोधिताः।'

अतएव (१२) राशि में घटाने से मध्यम राहु (१।१०।७।४२) हुआ। राहु का क्षेपक ६ राशि जोड़ देने पर (७।१०।७।४२) हुआ। राहु से सप्तम केतु होता है अतः (१।१०।७।४२) केतु हुआ।

## मध्यम भौम--साधन

'दस्रत्र्यष्टरसाङ्काक्षिलोचनानि कुजस्य तु'।

$$\frac{२२९६८३२ \times १८४०५२५}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण } २६७९ + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{१३४८५५५८८ \times १२}{\text{यु. कु.}} = १ \text{ राशि}\cdots$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{४०३४९२२८ \times ३०}{\text{यु. कु.}} = ० \text{ अंश}\cdots$$

$$\frac{\text{अं शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{१२१०४७६८४० \times ६०}{\text{यु. कु.}} = ४६ \text{ कला}\cdots$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{४४३९०३१२ \times ६०}{\text{यु. कु.}} = १ \text{ विकला}\cdots$$

शेष त्यागकर मध्यम भौमराश्यादि (१।०।४६।१) हुए।

## बुधशीघ्रोच्च–साधन

'बुधशीघ्रस्य शून्यर्तुखाद्रित्र्यङ्कनगेन्दवः' ।

$$\frac{\text{१७९३७०६०} \times \text{१८४०५२५}}{\text{१५७७९१७८२८}} = \text{भगण२०९२२} + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{\text{४१०५५९०८४} \times \text{१२}}{\text{यु कु.}} = \text{३ राशि...}$$

$$\frac{\text{रा.शे.} \times \text{३०}}{\text{यु कु.}} = \text{अंश} = \frac{\text{१९२९५५५२४} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{३ अंश ...}$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{\text{१०५४९१२२३६} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{४० कला...}$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{\text{१७८०२१०४} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{७ विकला ...}$$

शेष त्यागकर शीघ्रोच्चबुधराश्यादि ( ३।३।४०।७ ) हुए ।

## मध्यमगुरु-साधन

'बृहस्पतेः खदस्राक्षिवेदषड् वह्नयस्तथा' ।

$$\frac{\text{२६४२२०} \times \text{१८४०५२५}}{\text{१५७७९१७८२८}} = \text{भगण ४२४} + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{\text{२६३७७१२८५६} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{१० राशि ...}$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{\text{४७०९८८५६} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{० अंश...}$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{\text{१४१२९६५६८०} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{५३ कला ...}$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{\text{११४८२९५९१६} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{४३ विकला...}$$

शेष त्याग कर मध्यमगुरुराश्यादि ( १०।०।५३।४३ ) हुए ।

## शुक्रशीघ्रोच्च–साधन

'सितशीघ्रस्य षट्सप्तत्रियमाश्विखभूधराः' ।

$$\frac{\text{७०२२३७६} \times \text{१८४०५२५}}{\text{१५७७९१७८२८}} = \text{भगण ८१९१} + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{\text{१२३६५८२५२} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{१ राशि...}$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{\text{२५९८११९६} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{० अंश...}$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{\text{७७९४३५८८०} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{२९ कला...}$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{\text{१००६५३५७८८} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{३८ विकला...}$$

शेष त्याग कर शीघ्रोच्चशुक्रराश्यादि (१।०।२९।३८) हुए ।

## मध्यमशनि–साधन

'शनेर्भुजङ्गषट् पञ्चरसवेदनिशाकराः' ।

$$\frac{\text{१४६५६८} \times \text{१८४०५२५}}{\text{१५७७९१७८२८}} = \text{भगण १७०} + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{राशि} = \frac{\text{१५११६०३७४४०} \times \text{१२}}{\text{यु. कु.}} = \text{११ राशि...}$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{अंश} = \frac{\text{८३५३५३१७२} \times \text{३०}}{\text{यु. कु.}} = \text{१५ अंश...}$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{कला} = \frac{\text{१३९१८२७७४०} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{५२ विकला...}$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{\text{१४५७९३७३४४} \times \text{६०}}{\text{यु. कु.}} = \text{५५ विकला...}$$

शेष त्यागकर मध्यमशनिराश्यादि (११।१५।५२।५५) हुए ।

## सूर्यसिद्धान्त-द्वारा

| | मध्यमग्रह | मध्यमगति |
|---|---|---|
| सू. | ११।१६।१९।३३ | ५८।९ |
| चं. | ०। ५।३२। ४ | ७९०।३५ |
| चं. उ. | ८।१३। १।५२ | ६।४१ |
| मं. | ११ ०।४६।१ | ३१।२६ |
| बु. कें. | ३। ३।४०। ७ | १८६।२४ |
| गु. | १०। ०।५३।४३ | ५।० |
| शु. कें. | ११ ०।२९।३८ | ३७।० |
| श. | ११।१५।५२।५५ | २।० |
| रा. | ७।१०। ७।४२ | ३।११ |
| के. | ११।१०। ७।२४ | ३।११ |

## मकरन्द-द्वारा

अहर्गण १८४०५२५ वल्ली ८।३११५।२५

मध्यम ग्रह

| | | | |
|---|---|---|---|
| सू. | ११।१६।१९।३३ | गु. | १०। ०।५३।४३ |
| चं. | ०। ५।३२। ४ | शु. के. | ११ ०।२९।३८ |
| चं. उ. | ८।११।२१। ५ | श. | ११।१५।५२।५५ |
| मं. | ११ ०।४६। १ | रा. | ७। ८।२६।५५ |
| बु. के. | ३। ३।४०। ७ | के. | ११ ८।२६।५५ |

सूर्यसिद्धान्तीय तथा मकरन्द-द्वारा साधित ग्रहों की तुलना करने पर चन्द्रोच्च एवं चन्द्र पात (राहु) में अंशादि १।४०।४७ का अन्तर आता है। यह अन्तर क्यों है ?

## वीज की आवश्यकता

चन्द्रोच्च एवं राहु के सूर्यसिद्धान्तोक्त भगण में ४ भगण कम करके मकरन्द सारणी निर्मित की गई है। अतएव मकरन्दानुसार

साधित चन्द्रोच्च एवं राहु में अन्तर आता है यथानुपात किया तो—

$$\frac{४ \times १}{४३२००००} = \frac{४}{\text{यु. सौ. व.}} = \text{भगण } ० + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. सौ. व.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु. सौ. व.}} = \text{राशि} = \frac{४ \times १२}{\text{यु. सौ. व.}} = ० \text{ राशि...}$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु सौ. व.}} = \text{अंश} = \frac{४८ \times ३०}{\text{यु. सौ. व.}} = ० \text{ अंश...}$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. सौ. व.}} = \text{कला} = \frac{१४४० \times ६०}{\text{यु. सौ. व.}} = ० \text{ कला...}$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. सौ. व.}} = \text{विकला} = \frac{८६४०० \times ६०}{\text{यु. सौ व.}} = १ \text{ विकला...}$$

$$\frac{\text{विक शे.} \times ६०}{\text{यु. सौ व.}} = \text{प्र. वि.} = \frac{८६४००० \times ६०}{\text{यु. सौ व.}} = १२ \text{ प्र. विक.}$$

=लब्धि १।१२ विकलादि हुए।

इस नियम से एक वर्ष में १।१२ विकलादि अन्तर होता है। जो कि ५० वर्ष में १ कला हो जाता है। अतः गत वर्ष को ५० से भाग देकर लब्धि को मकरन्दीय चन्द्रोच्च एवं राहु में जोड़ देने से सूर्यसिद्धान्तीय हो जाता है।

इसी विषय को 'रविसिद्धान्तमंजरी–निर्माता पंडित मथुरानाथजी ने इस प्रकार स्थिर करके लिखा है, कि —

रूपं युगाग्नी रविरंशकाद्यमब्दात्खवाणाप्तकलादियुक्तम्।
बीजं भवेदेतदनेन गण्या ग्रहा यतो दृष्टिषु संवदन्ति॥
बीजं बुधोच्चेऽब्धिगुणं गुणघ्नं योज्यं शनावप्यथ शोधनीयम्।
गुरौ भुजघ्नं त्रिगुणं सितोच्चे राहौ विधूच्चे च निशाकरघ्नम्॥

यथा—

वर्तमान शकाब्द १८६० में से

मकरन्दारम्भ शकाब्द १५३१ घटाया

गत वर्ष ३२९

गतवर्ष ३२९ ÷ ५० = लब्धि = ६।३५

लब्धि + ध्रुवांक १।३४।१२ = १।४०।४७ अंशादि को मकरन्दीय चन्द्रोच्च एवं राहु में जोड़ देने से (चं.उ.८।१३।१५२ चन्द्र पात ७।१०।७।४२) सूर्यसिद्धान्त के तुल्य हो जाते हैं। इसी संस्कार को वीज- संस्कार कहते हैं।

नोट—भारत के भिन्न २ प्रान्तों में मकरन्दसारणी मनमानी देखी जाती है। इसीलिये पं० मथुरानाथ या अन्य आचार्यों ने चन्द्रोच्च एवं राहु से अन्य ग्रहों के भी वीज संस्कार पठित किए हैं। किन्तु प्रचलित मकरन्द सारणी द्वारा केवल चन्द्रोच्च एवं राहु में ही अन्तर आता है। इसीलिये इन्हीं दो ग्रहों में वीज संस्कार किया गया है।

अनुपातागत या मकरन्दसारणी द्वारा साधित मध्यम ग्रह भूमध्यरेखा देश के होते हैं। इन ग्रहों में देशान्तर संस्कार करने से स्वदेशीय ग्रह हो जाते हैं। किन्तु वह देशान्तरसंस्कार यदि तत्तद्देशीय मिश्रकाल में ही किया जाय, तो संस्कृत मिश्रकाल के ग्रह हो जायँगे। अतः मध्यम ग्रहों में देशान्तर संस्कार नहीं किया गया।

## ग्रह-स्पष्टीकरण

### (१) सूर्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यमसूर्य | ११।१६।१९।३३ | सूर्यमन्दोच्च | २।१७।१७।३३ |
| मन्दकेन्द्र | ३।०।५८।० | भुज | २।२९।२।० |
| भुजकला | ५३४२।० | भुजज्या | ३४३६।० |
| मन्दपरिध्यंश | १३।४० | मान्दफलज्या | १३०।२७ |
| मन्दफल | २।१०।२७ | स्पष्टसूर्य | ११।१८।३०।० |

## (२) चन्द्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम चन्द्र | ०।५।३२।४ | चन्द्रोच्च | ८।१३।१।५२ |
| चन्द्रकेन्द्र | ८।७।२९।४८ | भुज | २।७।२९।४८ |
| भुजकला | ४०४९।४८ | भुजज्या | ३१७६।५५ |
| मन्द परिध्यंश | ३१।४१।३१ | मान्दफलज्या | २७९।४० |
| मन्द फल | ४।३९।४५ | स्पष्ट चन्द्र | ०।०।५२।१० |

## गणितोपकरण

(१) $\dfrac{\text{स्पष्ट परिधि} \times \text{भुजज्या}}{३६०}$ = ज्या (भुजफल) कलात्मिका

(२) $\dfrac{\text{स्पष्ट परिधि} \times \text{कोटिज्या}}{३६०}$ = ज्या (कोटिफल) कलात्मिका

(३) शीघ्रकर्ण $= \sqrt{(\text{त्रि.} = \text{को. फ.})^{२} + (\text{शी. भु. फ.})^{२}}$

(४) $\dfrac{\text{शी. भु. फ.} \times \text{त्रि}}{\text{शी. क.}}$ = ज्या ( शीघ्रफल ) कलादि...

(५) मध्यमग्रह (+,−) शीघ्रफलार्ध = संस्कृतग्रह (प्रथम संस्कार)

(६) संस्कृतग्रह (+,−) मन्दफलार्ध = द्वितीयसंस्कृतग्रह (द्वितीयसंस्कार)

(७) मध्यमग्रह (+,−) मान्दफलसकल = मन्दस्पष्टग्रह (तृतीयसंस्कार)

(८) मन्दस्पष्टग्रह (+,−) द्वितीयशी.फ.सकल = स्पष्टग्रह (चतुर्थसंस्कार)

मध्येशीघ्रफलस्यार्धं मान्दमर्धफलं तथा ।
मध्यग्रहे मन्दफलं सकलं शैघ्र्यमेव च ॥

( सू. सि. )

## (३) भौम

### प्रथमसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यम भौम | १।०।४६।१ | भुज | १।१४।२६।२८ |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | अंश | ४४।२६।२८ |
| शीघ्रकेन्द्र | १०।१५।३३।३२ | भुजज्या | २४०६।३३ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| कोट्यंश | ४५।३३।३२ | भुजफलवर्ग | २४२३९३७।३६।३६ |
| कोटिज्या | २४५३।५७ | शीघ्रकर्णवर्ग | २७६२३१६६।१७।२५ |
| स्फुटपरिध्यंश | २३२।५४।१ | शीघ्रकर्ण | ५२५५।४६ |
| भुजफलज्या | १५५६।५४ | शीघ्रफलज्या | १०१८।२५ |
| कोटिफलज्या | १५८१।५३ | शीघ्रफलचाप | १९।१४।२४ |
| स्पष्टकोटिवर्ग | २५१९९२२८।४०।४९ | शीघ्रफलार्ध | ८।३७।१२ |
| | | संस्कृतग्रह | ०।२२।८।४९ |

## द्वितीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| संस्कृतग्रह | ०।२२।८।४९ | मन्दपरिध्यंश | ७२।८।४१ |
| मन्दोच्च | ४।१०।२।४४ | मन्दभुजफलज्या | ६५५।२९ |
| मन्दकेन्द्र | ३।१७।५३।५५ | मन्दफल | १०।५६।१६ |
| भुज | २।१२।६।५ | फलार्ध | ५।२९।३८ |
| मन्दकेन्द्रभुजज्या | ३२७०।४५ | द्वितीयसंस्कृतग्रह | ०।२७।३८।२७ |

## तृतीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | ०।२७।३८।२७ | मन्दकेन्द्रज्या | ३३५६।१८ |
| मन्दोच्च | ४।१०।२।४४ | मन्दभुजफलज्या | ६७१।५३ |
| मन्दकेन्द्र | ३।१२।२४।१७ | मन्दफल | ११।१५।१ |
| भुज | २।१७।३५।४३ | मन्दस्पष्टग्रह | १।१२।१।१२ |

## चतुर्थसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्दस्पष्टग्रह | १।१२।१।१२ | शीघ्रभुजफलज्या | १८३४।० |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | कोटिफलज्या | १२५१।१० |
| शीघ्रकेन्द्र | १०।४।१८।२९ | शीघ्रकर्ण | ५०३५।३ |
| भुज | १।२५।४१।३१ | शीघ्रफलज्या | १२५२।१७ |
| भुजज्या | २८३९।२९ | शीघ्रफल | २१।२२।४८ |
| | | स्पष्टभौम | ०।२०।३८।१४ |

## (४) बुध

### प्रथमसंस्कार

| | |
|---|---|
| मध्यमबुध | ११।१६।१९।३३ |
| शीघ्रोच्च | ३।३।४०।७ |
| शीघ्रकेन्द्र | ३।१७।२०।३४ |
| भुज | २।१२।३९।२६ |
| भुजज्या | ३२८०।२३ |
| कोटिज्या | १०२४।७ |
| शीघ्रभुजफलज्या | १२०३।१४ |
| कोटिफलज्या | ३७५।३८ |
| शीघ्रकर्णवर्ग | १०८२५८६०।३ |
| शीघ्रकर्ण | ३२९०।१६ |
| शीघ्रफलज्या | १२५७।१५ |
| शीघ्रफल | १२८८।७ |
| शीघ्रफलार्ध | १०।४४।३ |
| संस्कृतग्रह | ११।२७।३।३६ |

### द्वितीयसंस्कार

| | |
|---|---|
| संस्कृतग्रह | ११।२७।३।३६ |
| मन्दोच्च | ७।१०।२८।३५ |
| मन्दकेन्द्र | ७।१३।२४।५९ |
| भुज | १।१३।२४।५९ |
| मन्दकेन्द्रज्या | २३६१।४५ |
| मन्दफलज्या | १८७।४७ |
| मन्दफल | ३।७।४७ |
| फलार्ध | १।३३।५४ |
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।२५।२९।४२ |

### तृतीयसंस्कार

| | |
|---|---|
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।२५।२९।४२ |
| मन्दोच्च | ७।१०।२८।३५ |
| मन्दकेन्द्र | ७।१४।५८।५३ |
| भुज | १।१४।५८।५३ |
| भुजज्या | २४३०।११ |
| भुजफलज्या | १९२।५८ |
| मन्दफल | ३।१२।५८ |
| मन्दस्पष्टग्रह | ११।१३।६।३५ |

### चतुर्थसंस्कार

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टग्रह | ११।१३।६।३५ |
| शीघ्रोच्च | ३।३।४०।७ |
| शीघ्रकेन्द्र | ३।२०।३३।३२ |
| भुज | २।९।२६।२८ |
| कोटि | ०।२०।३३।३२ |
| भुजज्या | ३२१७।५३ |
| स्पष्टपरिधि | १३२।३।५१ |
| कोटिज्या | १२०६।१८ |
| शीघ्रकर्णवर्ग | १०३६६०४९।१६ |
| शीघ्रकर्ण | ३२१९।३८ |

शीघ्रफलज्या १२६०।३१

शीघ्रफलचाप २१।३१।३७
स्पष्टबुध ०।४।३८।१२

## (५) बृहस्पति

### प्रथमसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यमगुरु | १०।०।५३।४३ | स्फुटपरिध्यंश | ७१।२५।२८ |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | शीघ्रभुजफलज्या | ४८५।४९ |
| शीघ्रकेन्द्र | १।१५।२५।५० | शीघ्रकोटिफलज्या | ४७८।३४ |
| भुज | १।१५।२५।५० | $\text{स्प.को.}^2 + \text{भु. फ}^2 = \text{शीघ्रकर्ण}^2$ | |
| कोटि | १।१४।३४।१० | | = १५५७५५१२।१५ |
| भुजकला | २७२५।५० | शीघ्रकर्ण | २९४६।३५ |
| भुजज्या | २४४८।४१ | शीघ्रफलज्या | ४२३।१४ |
| कोटिज्या | ३४१२।१० | शीघ्रफल | ७।४।७ |
| परिध्यन्तर | २ | फलार्ध | ३।३२।३ |
| | | संस्कृतग्रह | १०।४।२५।४६ |

### द्वितीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| संस्कृतग्रह | १०।४।२५।४६ | स्फुटपरिध्यंश | ३२।१६।११ |
| मन्दोच्च | ५।२१।२२।४० | मन्दफल | २२५।५ |
| मन्दकेन्द्र | ७।१६।५६।५४ | फलार्ध | १।५।२।३२ |
| भुज | २८१६।५४ | द्वितीयसंस्कृतग्रह | १०।२।३३।१४ |
| मन्दकेन्द्रभुजज्या | २५११।१ | | |

### तृतीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | १०।२।३३।१४ | केन्द्रज्या | २५८७।४९ |
| मन्दोच्च | ५।२१।२२।४० | स्फुटमंदपरिध्यंश | ३२।१४।५१ |
| मन्दकेन्द्र | ७।१८।४९।२६ | मन्दफलज्या | २३१।४९ |
| भुज | १।१८।४९।२६ | मन्दस्पष्टग्रह | ९।२७।१।५४ |

### चतुर्थसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्दस्पष्टग्रह | ९।२७।१।५४ | स्पष्टपरिध्यंश | ७१।३०।५७ |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | भुजफलज्या | ५१७।३९ |
| शीघ्रकेन्द्र | १।१९।१७।३९ | कोटिफलज्या | ४४५।२० |
| भुज | १।१९।१७।३९ | स्पष्टकोटि | ३८८३।२० |
| कोटि | १।१०।४२।२१ | शीघ्रकर्णवर्ग | १५३४८२३९।१७ |
| भुजज्या | २६०५।४४ | शीघ्रकर्ण | ३९१७।४१ |
| कोटिज्या | २२४१।४५ | शीघ्रफलज्या | ४५४।१६ |
| परिध्यन्तर | २ | शीघ्रफल | ७।३५।२० |
| | | स्पष्टगुरु | १०।४।३७।१४ |

## (६) शुक्र

### प्रथमसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यमशुक्र | ११।१६।१९।३३ | कोटिफलज्या | १७८[illegible]।३३ |
| शीघ्रोच्च | १।८।२९।३८ | स्पष्टकोटि | ५२२२।३३ |
| शीघ्रकेन्द्र | १।१४।१०।५ | कोटिवर्ग | २७२७५०२८।३० |
| भुज | १।१४।१०।५ | भुजफलवर्ग | ३००४९०६।४१ |
| कोटि | १।१५।४९।५५ | शीघ्रकर्णवर्ग | ३०५७९९३५।११ |
| भुजज्या | २३९४।३७ | शीघ्रकर्ण | ५५०२।४३ |
| कोटिज्या | २४६५।१३ | शीघ्रफलज्या | १०८३।४ |
| स्पष्टपरिध्यंश | २६०।३६।२५ | शीघ्रफल | १८।२२।२ |
| भुजफलज्या | १७३३।२८ | फलार्ध | ९।११।१ |
| | | संस्कृतग्रह | ११।२५।३०।३४ |

### द्वितीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| संस्कृतग्रह | ११।२५।३०।३५ | भुज | २।२४।२१।५५ |
| मन्दोच्च | २।१९।५२।२९ | भुजज्या | ३४१९।५७ |
| मन्दकेन्द्र | २।२४।२१।५५ | मन्दपरिध्यंश | ११।०।१९ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्दफलज्या | १०७।३० | मन्दफलर्ध | ०।५३।४५ |
| | | द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।२६।२४।१९ |

## तृतीयसंकार

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।२६।२४।१९ | परिध्यंश | ११।०।२६ |
| मन्दोच्च | २।१९।४२।२९ | मान्दफलज्या | १०३।२४ |
| मन्दकेन्द्र | २।२३।२८।१० | मन्दफल | १।४४।२४ |
| केन्द्रज्या | ३४१४।४१ | मन्दस्पष्टग्रह | ११।१८।३।५७ |

## चतुर्थसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्दस्पष्टग्रह | ११।१८।३।५७ | शीघ्रपरिध्यंश | २६०।३९।५ |
| शीघ्रोच्च | १।०।२९।३८ | शीघ्रभुजफलज्या | १६७८।४० |
| शीघ्रकेन्द्र | १।१२।२५।४१ | कोटिफलज्या | १८३६।३५ |
| भुज | १।१२।२५।४१ | स्पष्टकोटि | ५२७४।३५ |
| कोटि | १।१७।३४।१९ | शीघ्रकर्ण | ५५३५।१५ |
| भुजज्या | २३१८।२१ | शीलफलज्या | १०४२।४१ |
| कोटिज्या | २५३६।३७ | शीघ्रफल | १७।३९।४४ |
| | | स्पष्टशुक्र | ०।५।४३।४१ |

# (७) शनि

## प्रथमसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मध्यमशनि | ११।१५।५२।५५ | स्पष्टपरिधि | ३९।०।२८ |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | भुजफलज्या | २।५७ |
| शीघ्रकेन्द्र | ०।०।२६।३८ | कोटिफलज्या | ३६९।३९ |
| भुज | ०।०।२६।३८ | शीघ्रकर्ण | ३८०७।३९ |
| कोटि | २।२९।३३।२२ | शीघ्रफलज्या | २।४०।० |
| भुजज्या | २६।३८ | शीघ्रफलार्ध | ०।१।२० |
| कोटिज्या | ३४३७।१० | संस्कृतग्रह | ११।१५।५४।१५ |

## द्वितीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| संस्कृतग्रह | ११।१५।५४।१५ | भुजज्या | ३२४४।५३ |
| मन्दोच्च | ७।२६।३७।३६ | भुजफलज्या | ४३३।९ |
| मन्दकेन्द्र | ८।१०।४३।२१ | मन्दफल | ७।१४।५ |
| भुज | २।१०।४३।२१ | फलार्ध | ३।३७।२ |
| परिधि | ४८।३।२२ | द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।१२।१७।१३ |

## तृतीयसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्वितीयसंस्कृतग्रह | ११।१२।१७।१३ | परिधि | ४८।२।१५ |
| मन्दोच्च | ७।२६।३७।२६ | भुजज्या | ३३०९।३२ |
| मन्दकेन्द्र | ८।१४।२०।२३ | मन्दफलज्या | ४४१।३७ |
| भुज | २।१४।२०।२३ | मन्दफल | ७।२२।३५ |
| | | मन्दस्पष्टग्रह | ११।८।३०।२० |

## चतुर्थसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| मन्दस्पष्टग्रह | ११।८।३०।२० | भुजफलज्या | २०।५४ |
| शीघ्रोच्च | ११।१६।१९।३३ | कोटिफलज्या | ३७०।१५ |
| शीघ्रकेन्द्र | ०।७।४९।१३ | स्पष्टपरिध्यंश | ३६।८।१० |
| भुज | ०।७।४९।१३ | शीघ्रकर्णवर्ग | १४५०५३५८।५२ |
| कोटि | २।२२।१०।४७ | शीघ्रकर्ण | ३८०८।३५ |
| भुजज्या | ४६८।७ | शीघ्रफलज्या | ४५।५७ |
| कोटिज्या | ३४०५।५० | स्पष्टग्रह | ११।९।१६।२७ |

| | सूर्यसिद्धान्त-द्वारा स्पष्टग्रह | मकरन्द-द्वारा स्पष्टग्रह | अन्तर क. वि. |
|---|---|---|---|
| सू. | ११।१८।३०।० | ११।१८।३०।० | ०।० |
| चं. | ०।०।५२।१० | ०।०।५२।११ | ०।१ |
| मं. | ०।२०।३८।१४ | ०।२०।४७।१३ | ८।५९ |
| बु. | ०।४।३८।१२ | ०।४।३२।२७ | ६।१५ |
| गु. | १०।४।३७।१४ | १०।४।३१।३० | ५।४४ |
| शु. | ०।५।४३।४१ | ०।५।४४।३५ | ०।५४ |
| श. | ११।९।१६।१७ | ११।९।८।५० | ७।२७ |
| रा. | ७।१०।७।४२ | ७।८।२६।५५ | बीजसंस्कृत |
| के. | १।१०।७।४२ | १।८।२६।५५ | १।४०।४७ |

नोट—मकरन्द सारणी द्वारा शीघ्रफल एवं मान्दफल लेकर पूर्वदर्शित चतुर्विधसंस्कार द्वारा स्पष्ट किये गये हैं ।

उपरोक्त अन्तर मान्दफल के स्थूलत्व से आता है। शीघ्रफल की अपेक्षा मान्दफल का साधन स्थूल है। मकरन्दसारणी के मान्दफल सूर्यसिद्धान्तीय गणितागत मन्दफल से आन्तरित आता है। कारण यह कि सारणी का अंक गणितागत सूक्ष्माङ्क की अपेक्षा स्थूल है। शीघ्रफल में अनिर्वाच्य ( अत्यन्त अल्प ) अन्तर आता है। व्यवहारार्थ यह स्वल्पान्तर ग्राह्य है। अतः मकरन्दसारिणी के फल लेकर चतुः संस्कार द्वारा ग्रह साधन उचित है। मान्दफल के विषय में भास्कराचार्य का मत इस प्रकार है कि—

स्वल्पान्तरत्वान्मृदुकर्मणीह कर्णः कृतो नेति वदन्ति केचित् ।
त्रिज्योद्धृतः कर्णगुणः कृतेऽपि कर्णोऽस्फुटः स्यात्परिधिर्यतोऽत्र ॥
तेनाढ्यतुल्यं फलमेति तस्मात् कर्णः कृतो नेति च केचिदूचुः ।
नाशंकनीयं न चले किमित्थं यतो विचित्रा फलवासनात्र ॥

(सि. शि.)

## केतकीद्वारा-ग्रह-साधन

संवत् १९९५ शकः १८६० चैत्र शुक्ल १ शुक्रवार अहर्गण १०९२ चक्र ३

### (१) सूर्य

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ९८५.६०९१ |
| ९० | ८८.७०४८१९ |
| २ | १.९७१२१८२ |
| १०९२ | १०७६.२८५१३७२ |

२८५१३७२ × ६० = १७.१०८२३२०
१०८२३२० × ६० = ६.४९३९२००

अहर्गणोत्पन्नमध्यमसूर्य ११|२६|१७|६

" क्षेपश्चक्रहतध्रुवेण सहितोऽहः संघगत्यन्वितो,
कर्षप्रस्फुटितश्च मध्यमखगोऽवन्त्यर्कमध्योदये ।"

(मध्यमाध्याय पृ. ८२)

क्षेप + ३ × ध्रुवांक = (११|१९|५|०) + ३ (०|०|७|३८) = ११|१९|२७|५४ ।

मध्यमसूर्य + ११।१९।२७।५४ = ११।१५।४५।०

अवन्ति (उज्जैन) में प्रातःकालिक मध्यम सूर्य हुआ । उस दिन जबलपुर का मिश्रकाल ४५।५२ है; इसी इष्ट द्वारा चालन करने से रात्रि में मध्यमसूर्य ११।१६।३०।११ हुआ ।

### (२) चन्द्र

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | १३१७६.३५८३ |
| ९० | ११८५.८७२२४७ |
| २ | २६ ३५२७१६६ |
| १०९२ | १४३८८.५८३१६३६ |

अहर्गणोत्पन्न मध्यमचन्द्र ११|१८|३४|५९

क्षेप + ३ × ध्रुवक = (११।२५।१७।०) + ३(०।३।५५।३६) = ०।७।३।४८ । मध्यम चन्द्र + ०।७।३।४८ = ११।२५।३८।४७ प्रातःकाल में मध्यमचन्द्र हुआ ।

विशेषसंस्कार

| | | | |
|---|---|---|---|
| (१) देशान्तरसंस्कार— | कलादि | १०।० | (रेखाग्रामविशेषेति) |
| (२) चरसंस्कार— | ,, | ४।० | (मध्येन्द्राविति) |
| (३) भुजान्तरसंस्कार— | ,, | ७।० | (भूपाहमिति) |
| (४) उदयान्तरसंस्कार— | ,, | २।० | (शून्यद्वयमिति) |
| योग = | ,, | २३।१० | |

११।२५।३८।४७—२३।१० = ११।२५।१५।३७ जबलपुर में प्रातःकाल का मध्यमचन्द्र हुआ।

(५) च्युतिसंस्कार (निज तुंगेति)

| | | |
|---|---|---|
| मध्यमचन्द्र | ११।२५।१५।३७ | में |
| चन्द्रोच्च | ८।७।३७।१७ | जोड़ा |
| योग | ८।२।५२।५४ | में से |
| द्विगुणित सूर्य | ११।१।३०।० | घटाया |
| च्युतिकेन्द्र | ९।१।२२।५४ | हुआ |

च्युतिकेन्द्र से साधित च्युतिसंस्कार कलादि ७३।५१ धनात्मक हुआ ।

(६) तिथिसंस्कार (धनं खं चेति)

| | | |
|---|---|---|
| मध्यमचन्द्र | ११।२५।१५।३७ | में से |
| मध्यमसूर्य | ११।१५।४५।० | घटाया |
| तिथिकेन्द्र | ०।९।३०।३७ | |

तिथिकेन्द्र-द्वारा साधित तिथिसंस्कार कलादि ११।२० धनात्मक हुआ ।

च्युतिसंस्कार (७३।५१) + तिथि संस्कार (११।२०) = ८५।११

मध्यमचन्द्र ११।२५।१५।३७ + ८५।११ = ११।२६।४०।४८ (४५।५२) घटीगति अंशादि १०|४|२१

११।२६।४०।४८ + १०।४।२१ = ०।६।४५ ९ जबलपुर में रात्रि का मध्यमचन्द्र हुआ।

## (३) चन्द्रोच्च

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | १११ ३६६३ |
| ९० | १०. ०२२९६९ |
| २ | ०. २२२७२२६ |
| १०९२ | १२१.६११९९१६ |

| | |
|---|---|
| अहर्गणोत्पन्न मध्यम चन्द्रोच्च | ४।११।३६।४३ |
| चन्द्रोच्च क्षेप + ३ + ध्रुवक = | ४।६। ०।४८ |
| प्राःकालिक चन्द्रोच्च | ८।७।३७।३१ में से |
| चन्द्रोच्च का कर्षसंस्कार | ०|१४ घटाया |
| | ८|७|३७|१७ |
| (४५|२२) घटीगति + | ५| ६ |
| जबलपुर में रात्रि का चन्द्रोच्च | ८|७|४२|२३ |

## (४) चन्द्रपात (राहु)

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ००५२.९९२४ |
| ९० | ४.७६९३१४ |
| २ | ०.१०५९८४८ |
| १०९२ | ५८.८६७६९८८ |

अहर्गणोत्पन्न राहु १।२७।५२।३; चक्रशुद्धराहु १०।२।७।५७ क्षेप ९।२७।३७।० ध्रुवक ११।२२।१३।५८ औदयिकराहु ७।६।२६।५१

अथवा 'नवकुभिररिवेदैरित्यादिना, मध्यमाधिकारोक्त ७।६।२६।४५ आकर्षणसंस्कार ०।३ कलादि धनात्मक (शकाल्खाभ्रेत्यादिना) हुआ। (४५।५५) घटीगति ऋण करने से जबलपुर में रात्रि का राहु ७।६।२४।१७ हुआ।

## (५) भौम

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ५२४.०३२९९ |
| ९० | ४७.१६२९६९४ |
| २ | १.०४८०६५९९ |
| १०९२ | ५७२.२४४०२५३९. |

अहर्गणोत्पन्न भौम ७।२।१४।३८

क्षेपक + ३ × भ्रुवक =(२।९।१।२।०)+३×(१।६।४७।२०) =५।२९।३४।०

५।२९।३४।० + ७।२।१४।३८ = १।१।४८।३८ प्रातः कालिक भौम हुआ।

(४५।५२) घटी गति + कलादि २४।१

१।१।४८।३८ + २४।१ = १।२।१२।३९ जबलपुर में रात्रि का मध्यम भौम हुआ।

## (६) बुध

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ४०९२.३३८७१ |
| ९० | ३६८.३१०४८४१ |
| २ | ८.१८४६७७४२ |
| १०९२ | ४४६८.८३३८७१५२ |

अहर्गणोत्पन्न बुध ४।२८।५०।१

क्षेप + ३ × ध्रुवक = (१|२२|३०|०) + ३ × (१०|२०|४९|५०)
= ९|२४|५९|३०

४|२८|५०|१ + ९|२४|५९|३० = २|२३|४९|३१

(४५|५२) घटी गति अंशादि ३|९|२८

२|२३|४९|३१ + ३|९|२८ = २|२६|५८|५९ जबलपुर में रात्रि का मध्यम बुध हुआ।

(७) गुरु

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ०८३.०९१२७ |
| ९० | ०७.४७८२१४७ |
| २ | ०.१६६१८२५५ |
| १०९२ | ०९०.७३५६६७२५ |

अहर्गणोत्पन्न गुरु ३|०|४४|८

क्षेप + ३ × ध्रुवक = (९|५|४०|०) + ३ × (७|६|३९|१२)
= ६|२५|३७|३६

६|२५|३७|३६ + ३|०|४४|८ = ९|२६|२१|४४

'भूनागेन्दुविवर्जिता इति, गुरु का आकर्षण संस्कार + ११|४०

(४५|५२) घटी गति + ३|४९

१५|२९

९|२६|२१|४४ + १५|२९ = ९|२६|३७|१३ जबलपुर में रात्रि का मध्यम गुरु हुआ।

(८) शुक्र

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | १६०२.१३०५७ |
| ९० | १४४.१९१७५१४ |
| २ | ३.२०४२६११४ |
| १०९२ | १७४९.५२६५८२५४ |

अहर्गणोत्पन्न शुक्र १०|९|३१|३५

क्षेप + ३ × ध्रुवक = (६|१५|२८|०) + ३ × (१०|१८|४७|१०)
= २|११|४९|३०

१०|९|३१|३५ + २|११|४९|३० = ०|२१|२१|५

(४५|५२) घटी गति ७३|२९

जबलपुर में रात्रि का मध्यम शुक्र ०|२२|३४|३४

## (९) शनि

| अहर्गण | अंश |
|---|---|
| १००० | ०३३ . ४५९६७ |
| ९० | ३ . ०११३७०७ |
| २ | ० . ०६६९११९३५ |
| १०९२ | ०३६.५३७९६००५ |

अहर्गणोत्पन्न शनि १|६|३२|१६

क्षेप + ३ × ध्रुवक = (११|८|२१|०) + ३ × (७|२२|१२|३७)
= १०|१४|५८|३१

१०|१४|५८|३१ + १|६|३२|१२ = ११|२१|३१|७

आकर्षणसंस्कार — २९|१६

११|२१|१|५१

(४५|५२) घटी गति + १|३१

जबलपुर में रात्रि का मध्यम शनि ११|२१|३|२२

## केतकीद्वारा—मध्यमग्रह

### ( दृश्यगणना से )

| | | | |
|---|---|---|---|
| सूर्य | ११|१६|३०|११ | गुरु | ९|२६|३७|१३ |
| चन्द्र | ०|६|४५|९ | शुक्र | ०|२२|३४|३४ |
| चन्द्रोच्च | ८|७|४२|२३ | शनि | ११|२१|३|२२ |
| भौम | १|२|१२|३९ | राहु | ७|६|२४|१७ |
| बुध | २|२६|५८|५९ | केतु | ७|६|२४|१७ |

## मन्दफल—साधन

('मन्दोच्चोनितखेचरो निगदित' इत्यादिना)

(१) सूर्य

मध्यम सूर्य 11|16|30|11
मन्दोच्च 2|18|41| 0
मन्दकेन्द्र 8|27|49|11
चक्रशुद्ध 3|2|10|49
मन्दफल 1|54|47 धनात्मक
स्पष्टसूर्य 11|18|24|58

(२) चन्द्र

मध्यम चन्द्र 0।6।45।9
चन्द्रोच्च 8।7।42।23
चन्द्रकेन्द्र 3।29।2।46
मन्दफल 5।41।18 ऋणात्मक
स्पष्टचन्द्र 0।1।3।51 जबलपुर में रात्रि का विक्षेप-वृत्त में हुआ।

क्रान्ति-वृत्त में चन्द्रभोग साधनार्थ संस्कार (व्यगुविधुकरणे-नेत्यादिना)—

चन्द्र 0।1।3 51
राहु 7।6।24।17
व्यगुविधु 4।24।39।24
भुज 1।5।20।16
संस्कारकलादि 6।32 धनात्मक
क्रान्तिवृत्तीय स्पष्टचन्द्र 0।1।10।23

## पञ्चतारा-साधन

(१) भौम

मध्यमभौम 1|2|12|39
मन्दोच्च 4|11|41|0

| | |
|---|---|
| मन्दकेन्द्र | ८\|२०\|३१\|३९ |
| चक्रशुद्ध | ३\|९\|२८\|२१ |
| अंशादि | ९९\|२८\|२१ |
| मन्दफल | १०\|४१\|४१ धनात्मक |
| मन्दस्पष्टभौम | १\|१२\|५४\|५० |

(२) बुध

| | |
|---|---|
| मध्यमबुध | २\|२६\|५८\|५६ |
| मन्दोच्च | ७\|२३\|२६\|० |
| मन्दकेन्द्र | ७\|३\|२२\|५६ |
| चक्रशुद्ध | ४\|२६\|२७\|४ |
| अंशादि | १४६\|२७\|४ |
| मन्दफल | १६\|१०\|३९ धनात्मक |
| मन्दस्पष्टबुध | ३\|१३\|९\|३५ |

(३) गुरु

| | |
|---|---|
| मध्यमगुरु | ९\|२६\|३७\|१३ |
| मन्दोच्च | ५\|२०\|१३\|० |
| मन्दकेन्द्र | ४\|६\|२४\|१३ |
| अंशादि | १२६\|२४\|१३ |
| मन्दफल | ४\|३४\|४७ ऋणात्मक |
| मन्दस्पष्टगुरु | ९\|२२\|२\|२६ |

(४) शुक्र

| | |
|---|---|
| मध्यमशुक्र | ०\|२२\|३४\|३४ |
| मन्दोच्च | ९\|१७\|४०\|० |
| मन्दकेन्द्र | ३\|४\|५४\|३४ |
| अंशादि | ९४\|५४\|३४ |
| मन्द फल | ०\|४८\|० ऋणात्मक |
| मन्दस्पष्टशुक्र | ०\|२१\|४६\|३४ |

## (५) शनि

| | |
|---|---|
| मध्यमशनि | ११\|२१\|३\|२२ |
| मन्दोच्च | ८\|८\|२७\|० |
| मन्दकेन्द्र | ३\|१२\|३६\|२२ |
| अंशादि | १०२\|३६\|२२ |
| मन्दफल | ६\|२०\|५२ ऋणात्मक |
| मन्दस्पष्टशनि | ११\|१४\|४२\|३० |

### शीघ्रफल-साधन

'मन्दस्पष्टखगेत्यादिना' ( केतकी )

## (१) भौम

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टभौम | १\|१२\|५४\|२० |
| स्पष्टसूर्य | ११\|१८\|२४\|५८ |
| शीघ्रकेन्द्र | १\|२४\|२९\|२२ |
| अंशादि | ५४\|२९\|२२ |
| शीघ्रफल | २१\|९\|३९ ऋणात्मक |

## (२) बुध

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टबुध | ३\|१३\|९\|३५ |
| स्पष्टसूर्य | ११\|१८\|२४\|५८ |
| शीघ्रकेन्द्र | ३\|२४\|४४\|३७ |
| अंशादि | ११४\|४४\|३७ |
| शीघ्रफल | २२\|३९\| ९ धनात्मक |

## (३) गुरु

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टगुरु | ९\|२२\| २\|२६ |
| स्पष्टसूर्य | ११\|१८\|२४\|५८ |
| शीघ्रकेन्द्र | १०\| ३\|३७\|२८ |
| चक्रशुद्ध | १\|२६\|२२\|३२ |
| अंशादि | ५६\|२२\|३२ |
| शीघ्रफल | ८\|१२\| ४ धनात्मक |

## (४) शुक्र

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टशुक्र | ०\|२१\|४६\|३४ |
| स्पष्टसूर्य | ११\|१८\|२४\|५८ |
| शीघ्रकेन्द्र | १\|३\|२१\|३६ |
| अंशादि | ३३\|२१\|३६ |
| शीघ्रफल | १३\|५४\|४० धनात्मक |

## (५) शनि

| | |
|---|---|
| मन्दस्पष्टशनि | ११\|१४\|४२\|३० |
| स्पष्टसूर्य | ११\|१८\|२४\|५८ |
| शीघ्रकेन्द्र | ११\|२६\|१७\|३२ |
| चक्रशुद्ध | ०\|३\|४२\|२८ |
| अंशादि | ३\|४२\|२८ |
| शीघ्र फल | ३\|२०\|१३ धनात्मक |

नोट—भौम ५ बुध के सूक्ष्म शीघ्रफल और शीघ्रकर्ण साधनार्थ आगे केतकी ग्रह गणित के दो श्लोक उद्धृत किये जाते हैं।

कौजं शीघ्रफलं स्वकीयचलकर्णाघ्नं स्वमध्यश्रवो,
हीनस्पष्टमृदुश्रवोऽन्वितचलश्रुत्या हृतं स्यात्स्फुटम् ।
बौधं तु स्फुटमन्दकर्णनिहतं मध्याख्यकर्णाहतं,
स्पष्टं स्यादुभयोश्च मन्दफलवैपुल्याद्विशेषो ह्ययम् ॥
शताढ्यमध्याभिधमन्दकर्णो द्राक् केन्द्रजद्राक् श्रवणाङ्कहीनः ।
शीघ्रश्रवाः स्यात्स तु भूमिमध्याद् ग्रहावधि ह्यन्तरमध्यकाले ॥

## (१) भौम

भौमशीघ्रकेन्द्र १|२४|२९|२२

शीघ्रकर्णाङ्क २६.

१५२ + १००–२६ = २२६ = भौमशीघ्रकर्ण

चक्रशुद्धमन्दकेन्द्र ३।९।२८।२१

स्पष्ट मन्दकर्ण १५१

शीघ्रफल × शीघ्रकर्ण = २१।९।३९ × २२६ = ४७८२।२०।५४ = आदि संज्ञक

स्पष्टमन्दकर्ण + शीघ्रकर्ण – मध्यम मन्दकर्ण = १५१ + २२६ – १५२ = २२५ = पर संज्ञक

आदि ÷ पर = ४७८२।२०।५४ ÷ २२५ = २१।१५।१७ भौम का वास्तविक (स्पष्ट) शीघ्रफल हुआ।

## (२) बुध

मध्यम मन्दकर्ण ३९

स्पष्ट मन्दकर्ण ३२

$$\frac{\text{शीघ्रफल} \times \text{स्प. म. क.}}{\text{मध्यम म. क.}} = \frac{(२२।३९।९) \times ३२}{३९}$$

$$= \frac{७२४।५२।४८}{३९}$$ = १८।३५।१२ बुध का सूक्ष्म शीघ्रफल हुआ।

इसके बाद मन्द स्पष्ट भौमादि ग्रहों में शीघ्रफल संस्कार किया जाता है।

"......ज्ञशुक्र खगयोर्मेषादि षट्के धनम्।
जूकाद्ये त्रयगं कुजेज्यरविजानां तद्विलोमं भवेत्।
देयं स्पष्टरवौ द्वयोरितरखेटानां तु तेष्वेव हि"॥

(केतकीग्रहगणित)

(१) मं. स्प. मं.–सू. शी. फ. = स्प. मं. = (१।१२।५४।२०)–(२१।१५।१७) = ०।२०।३९।३ हुआ।

(२) स्प. सू. + बु. शी. फ. = स्पष्ट बुध = (११।१८।२४।५८) + (१८।३५।१२) = ०।७।०।१० हुआ।

(३) मं. स्प. वृ. + गु. शी. फ. = स्पष्ट गुरु = (९|२२|२६) + (८|१२|४) = १०|०|१४|३० हुआ।

(४) स्प. सू. + शु. शी. फ. = स्पष्ट शुक्र = (११|१८|२४|५८) + (१२|५४|४०) = ०|२|१९|३८ हुआ।

(५) म. स्प श. + श. शी. फ. = स्पष्ट शनि = (११|१४|४२|३०) + (३|२०|१३) = ११|१८|२|४३ हुआ।

| | केतकीद्वारा स्पष्टग्रह | सूर्यसिद्धान्तद्वारा स्पष्टग्रह | अन्तर अं. | क. | वि. |
|---|---|---|---|---|---|
| सू. | ११|१८|२४|५८ | ११|१८|३०|० | +० | ५ | २ |
| चं. | ०|१|१०|२३ | ०|०|५२|१० | —० | १८ | १३ |
| मं. | ०|२०|३९|३ | ०|२०|३८|१४ | —० | ० | ४९ |
| बु. | ०|७|९|१० | ०|४|३८|१२ | —२ | २१ | ५८ |
| गु. | १०|०|१४|३० | १०|४|३७|१४ | +४ | २२ | ४४ |
| शु. | ०|२|१९|३८ | ०|५|४३|४१ | +३ | २४ | ३ |
| श. | ११|१८|२|४३ | ११|९|१६|१७ | —९ | ४६ | २६ |
| रा. | ७|६|२४|१७ | ७|१०|७|४२ | +३ | ४३ | २५ |

## समालोचना

(१) केतकी (दृश्य) गणना द्वारा एवं सूर्य सिद्धान्त (आर्ष) गणना द्वारा साधित ग्रहों में जो न्यूनाधिकता का अन्तर दिखलाया गया है। उनमें गुरु, शनि में महान् अन्तर है; इसको आगे लिखा जायगा।

(२) जब कि ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट कमलाकर, मकरन्द, गणेशदैवज्ञ आदि सभी आचार्यों के मत से भगणभेद के कारण ग्रहों में अन्तर आता ही है; तो दृश्य गणना से अन्तर होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

( ३ ) अयनांश-भेद की तरह ग्रह-साधन पद्धतियों में भी मतभेद होने से 'दृग्गणितैक्य' विषयक विसंवाद प्राचीन काल से ह उपस्थित है; सभी आचार्य एक स्वर से यही कहते हैं कि—

यान्ति संसाधिताः खेटा येन दृग्गणितैक्यम् ।
तेन पक्षेण ते कार्याः स्फुटास्तत्समयोद्भवाः ॥
(दामोदरपद्धति)

'स्फुटाः खेटा यत्पक्षे घटन्ते तत्पक्षे साध्याः ।' (केशवाचार्य)

तत्तद्गतिवशान्नित्यं यथा दृक् तुल्यतां ग्रहाः ।
प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरात् ॥ (सू. सि.))

भास्कराचार्य के मत का श्लोक 'यात्रा विवाहेति' सिद्धांतविवेक (पृ. ३३०) के प्रारम्भ ही में लिखा जा चुका है। इत्यादि आचार्यवाक्य से तात्पर्य यही निकलता है कि ग्रह-साधन-गणित दृक् प्रत्ययावह होना चाहिये।

अन्यथा—

किं तेनापि सुवर्णेन कर्णघातं करोति यः ।
तथा किं तेन शास्त्रेण यन्न प्रत्यक्षतः स्फुटम् ॥

( ४ ) अतएव सभी आचार्यों ने अपने २ समय में या सिद्धांत-ग्रन्थों में या करण-ग्रंथों में दृक् प्रत्ययावह गणित का ही सूक्ष्ममार्ग निर्णय करके मूलाङ्क का निश्चय किया। किन्तु यह मूलाङ्क उसी समय के लिये वास्तव था; कालान्तर के लिये नहीं। कालान्तर में शिथिलता होने के सन्देह पर 'भास्कराचार्य' अपने गोलाध्याय के गोलबन्धाधिकार के वासना भाष्य में लिखते हैं कि—"यदा पुनर्महता कालेन महदन्तरं भविष्यति; तदा महामतिमन्तो ब्रह्मगुप्तादीनां समानधर्माण एव उत्पत्स्यन्ते। ते तदुपलब्ध्यनुसारिणीङ्गतिमुररीकृत्य शास्त्राणि करिष्यन्ति। अतएवायं महामतिमद्भिर्धृतः सन्नताद्यनन्तकालेऽपि खिलत्वन्न यातीति"।

इत्थं माण्डव्यसंक्षेपादुक्तं शास्त्रं मयोत्तमम् ।
विस्रस्ती रविचन्द्राद्यैर्भविष्यति युगे युगे ॥

(वशिष्ठ-सिद्धांत)

विस्रसनं विस्रस्तिः शिथिलत्वमित्यर्थः ।

(५) उपरोक्त वाक्यों से यही सिद्ध होता है कि कालान्तर में मूलाङ्क के शैथिल्य होने से उसमें 'अन्तर' का संस्कार करना आवश्यक है। किन्तु—

मुनिप्रणीतैर्मनुजैः कचिच्चेद् दृश्यतेऽन्तरम् ।
तदा तदेव संसाध्यं न कार्यं सर्वमन्यथा ॥

(सिद्धांत-सुन्दर)

(६) अब प्रश्न यह उठता है कि वह अन्तर क्या है? जिसका संशोधन परम्परागत इस प्रकार कहा है कि—

ब्रह्माचार्यवशिष्ठकश्यपमुखैर्यत्खेटकर्मोदितं,
तत्तत्कालजमेव तथ्यमथ तद्भूरिक्षणेऽभूच्छ्लथम् ।
प्रापातोऽथ मयासुरः कृतयुगान्तेऽर्कात् स्फुटं तोषिता,
तच्चाति स्म कलौ तु सान्तरमथाभूच्चात्र पाराशरम् ॥
तज् ज्ञात्वार्यभटः खिलं बहुतिथे काले करोत्प्रस्फुटं,
तत्स्रस्तं किल दुर्गसिंहमिहिराद्यैस्तन्निवद्धं स्फुटम् ।
तच्चाभूच्छिथिलन्तु जिष्णुतनयेनाकारि वेधात्स्फुटं,
ब्रह्मोक्त्याश्रितमेतदप्यथ वहौ कालेऽभवत्सान्तरम् ॥
श्री केशवः स्फुटतरं कृतवान्हिसौरा-,
र्यान्नमेतदपि षष्टिमिते गताब्दे ।
दृष्ट्वा श्लथं किमपि तत्तनयो गणेशः,
स्पष्टं यथा ह्यक्‌तद्दग्गणितैक्यमत्र ॥

(७) उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि ग्रह चार में समय २ पर जो 'अन्तर' होता आया है। उसको तत्तकालीन आचार्यों ने

'नलिकायन्त्र' द्वारा स्थिर करके परस्परागत मुनि-प्रणीत संग्रहों में संस्कार किया है उसी संस्कार को 'वीजसंस्कार' कहते हैं। उसको जानने के लिये 'ब्रह्मसिद्धान्त' का आदेश यह है कि—

संसाध्य स्पष्टतरं वीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः।
तत्संस्कृतग्रहेभ्यः कर्तव्यौ निर्णयादेशौ॥

इसी प्रकार ब्रह्मगुप्त, लल्ल, श्रीपति, भास्कर आदि आचार्यों ने अपने २ सिद्धान्तों में 'वीज संस्कार' का आदेश किया है।

(८) उपरोक्त दिग्दर्शन से ज्ञात होता है कि गणितगत ग्रह के साथ वेधसिद्ध ग्रह में जो 'अंतर' दिखता है उसी को 'वीज' कहते हैं उसको 'दृक् प्रत्ययार्थ' ग्रहों में संस्कार करना ही चाहिए। अन्यथा ग्रहणादि का ठीक २ ज्ञान नहीं हो सकता; इसीलिये कहा गया है कि—

प्रत्यहं तिथिनक्षत्रयोगस्यानयने विधुः।
अवीजसंस्कृतो ग्राह्यो ग्रहणादौ सवीजकः॥

(९) वीज संस्कार के एक मात्र विरोधी कमलाकरभट्ट अपने सिद्धान्ततत्त्वविवेक के मध्यमाधिकार में वीज-संस्कार पर लिखते हैं कि—

दिग्देशकालैर्बहुधान्तराणि स्थूलानुपातैर्जनितानि यानि।
मध्यस्फुटीयाम्बरगोलशैघ्रा मन्दोच्चपातादिविचित्रगत्या॥
सूक्ष्मस्थूलया स्युर्गणितोद्भवानि सर्वाणि तन्मिश्रितमेकमेव।
कस्यान्तरं कुत्र च तत्प्रदेयं न ज्ञायते तन्नलिकोक्तितोऽपि॥
लोकेऽभिमानात्कथयन्ति मूढाःकालान्तरं वीजमहो न सत्तत्।
ब्रह्मार्कचन्द्रैः स्थिरसृष्टिरुक्ता प्रतिक्षणं ताञ्च विलक्षणाञ्च॥
मत्वा स्ववीजस्य गतिं वदन्ति ज्ञातञ्च किं तैस्तदहं न वेद्मि॥

उपरोक्त कथन केवल भास्कराचार्य के प्रति आक्षेपमात्र है। यह सभी सिद्धांतमर्मज्ञों को विदित ही है। देश, काल, दिशा, अनुपात की

स्थूलता, ग्रहकक्षा, शीघोच्च, मन्दोच्च, पात इत्यादिकों की गति से ग्रहों में अन्तर मानते हुए भी 'भट्ट' के कथन में खण्डन का सार यही निकलता है कि नलिका-यन्त्र से उस अन्तर का ज्ञान नहीं हो सकता। इस निश्चय से यही ज्ञात होता है कि नलिका-यन्त्र के सिवाय अन्य 'यन्त्रविशेष' का अनुभव भट्ट महाशय को नहीं था; या स्वपक्षपोषण के लिये ही खण्डन किया हो। अन्यथा जब 'अन्तर' का होना निश्चित है तो उसका 'संस्कार' भी होना अनिवार्य है।

वीजसंस्कार करना 'भट्टकमलाकर' को भी अभोष्ट था। जो कि उन्हीं के लेखों से स्पष्ट होता है—

रविणाल्पान्तरास्त्यक्तं तद्बीजं विधिनाहतम्।
यन्त्रश्चबहुभिस्तज्ज स्फुटखेटोदितौ च यौ॥
दृष्टार्थं निर्णयादेशाद्दृष्टार्थं न तौ यतः।
अदृष्टफलसिद्धयर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि॥
प्रमाणं श्रुतिवद् ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः।

(१०) वीजसंस्कार से पंचांगों का परस्पर मतभेद भी मिट सकता है। काशी जैसे प्रसिद्ध नगर में ग्रहलाघव, मकरन्द, सूर्य-सिद्धान्त, केतकी आदि मत से कई पंचांग बनते हैं। पर विसंबाद यही उपस्थित होता है कि एक में यदि मीन का शनि है तो दूसरे में कुम्भ का; यदि वीजसंस्कार किया जाय; तो सबों में एकवाक्यता हो सकती है। इसीलिये कहा भी गया है कि—

संसाध्य स्पष्टतरं वीजं नलिकादियन्त्रेभ्यः।
तत्संस्कृतास्तु सर्वे पक्षाः साम्यं भजन्त्येव॥

उदाहरण—संवत् १९९५ शके १८६० चैत्रशुक्ल १ शुक्रवार मिश्रकाल ४५|५२ (मकरन्द या सूर्यसिद्धान्त) से मध्यम गुरु १०|०|५३|४३ मध्यम शनि ११|१५|५२|५५ है।

| | | |
|---|---|---|
| गुरु वीज | ३\|२१\|३४ | ऋणात्मक |
| शनि वीज | ५\| २\|२१ | धनात्मक |
| वीज संस्कृत | ९\|२७\|३२\|१९ | मध्यम गुरु |
| | ११\|२०\|५५\|१६ | मध्यम शनि |

गुरु एवं शनि का शीघ्रोच्च ११|१६|१९|३३ गुरुमन्दोच्च ५|२१|२२|५६ शनि मन्दोच्च ७|२६|३७|३५ हैं सूर्य सिद्धान्तोक्त चतुः संस्कार द्वारा साधित स्पष्ट गुरु १०|१|२६|२९ स्पष्ट शनि ११|१३|५२|८ हुआ। शनि यदि मकरन्दानुसार 'संस्कारत्रय' द्वारा साधित करें; तो ११|१३|५९|५९ होता है जो कि पूर्वोक्त के ही सदृश है।

(११) वीज संस्कार करने पर भी जो 'अन्तर' रहता है वह क्या है ?
यथा पूर्व दिन में —

| | केतकी द्वारा | सू. सि. द्वारा | | अन्तर |
|---|---|---|---|---|
| स्प. गु. | १०\| ०\|१४\|३० | १०\| १\|२६\|२९ | + | १\|११\|५९ |
| स्प. श. | ११\|१८\| २\|४३ | ११\|१३\|५२\| ८ | — | ४\|१०\|३५ |

यह अन्तर परस्पराकर्षण संस्कार एवं कक्षाच्युति के भेद से उत्पन्न होता है जो कि सूर्य सिद्धान्तादि आर्षग्रन्थोक्त पद्धति के लिये अनावश्यक है।

कक्षा-भेद के विषय में ज्यौतिर्गणित में लिखा है कि—

ग्रहकक्षास्वरूपस्य मिथ्याकल्पनमेव; प्राचीनग्रन्थेषु दृग्गणित-विसंवादे प्रधानं कारणम्। ग्रह कक्षा सुदीर्घवर्तुल रूपिणीषु कथं वर्तुलोपन्याससिद्ध निग्रहस्थानानि दृकतुल्यानि भवेयुः"।

वर्तुल कक्षा और दीर्घवर्तुल कक्षा के भेद से जो अन्तर उत्पन्न होता है; वह उदयान्तर संस्कार की तरह अत्यल्प होने से आर्ष-ग्रन्थों में छोड़ दिया गया है। यथा उदयान्तरादि कतिपय लघु संस्कारों को 'केतकी ग्रहगणित' में गौणदृष्ट्या ही देखा गया है।

"चरोदयान्तरभुजान्तरेति संस्कारत्रयमप्रासंगिकत्वादुपेक्ष-णीयम्" ( केतकी ग्रहगणित पृष्ठ १२१ )

अथवा स्वल्पान्तर के लिये ही विशेष प्रयास व्यर्थ होता है। यथा—

स्वल्पान्तरत्वाद्वहूपयोगात्प्रसिद्धभावाच्च वहुप्रयासात्।
ग्रन्थस्य तज्ज्ञैर्गुरुताभयेन यस्त्यज्यतोऽर्थो न स दूषणाय ॥

अब रह गया; आकर्षण संस्कार ? वह तो शीघ्रोच्च, मन्दोच्च पात इत्यादि देवताओं द्वारा जो ग्रह आकर्षित होते हैं। उसी से शीघ्र, मान्दादि फल उत्पन्न होते हैं। जिसका सविस्तर संस्कार आर्षग्रन्थों में ही है। अतः यहां केवल वीज-संस्कार ही पर्याप्त हैं जिसकी चर्चा परम्परागत होने से युक्तियुक्त भी है।

## वर्षमान

(पृष्ठ १९७ के नोट का शेषांश)

इस समय दो प्रकार के वर्ष विशेष प्रचलित हैं। (१) नाक्षत्र (सौर) वर्ष (२) साम्पातिक (सायन) वर्ष ।

नक्षत्र रेवत्यन्त पर आकर पुनः उसी स्थान तक आने में जो काल सूर्य को लगता है, वह नाक्षत्र वर्ष (सौर वर्ष) कहलाता है।

संपात से निकलकर पुनः उसी संपात तक आने में जो काल सूर्य को लगता है, वह साम्पातिक (आर्तव व सायन) वर्ष कहलाता है।

भारतीय गणना नक्षत्र–प्रधान अर्थात् निरयण होने से यहां नाक्षत्र (सौर) वर्ष ही प्रधानतः प्रचलित है।

एक महायुग में १५७७९१७८२८ सूर्य सावन दिन होते हैं। "वसुद्व्यष्टाद्रिरूपांकसप्ताद्रितिथयो युगे।" सू० सि० म० ३७ किन्तु वराहमिहिर–कृत पंचसिद्धान्तिका में १५७७९१७८०० संख्या मानी गयी है।

४३२०००० महायुगीय वर्षों में (युगीय) सूर्यसावनदिन १५७७९१७८०० होते हैं; तो एक वर्ष में $\frac{१५७७९१७८००}{४३२०००}$ = ३६५ दिन १५ घ०, ३१ पल, ३० विपल होंगे। यही आर्य सूर्यसिद्धान्तानुसार (वराहमिहिराचार्य सम्मत) वर्षमान आया। आधुनिक सूर्य सिद्धान्तानुसार $\frac{१५७७९१७८२८}{४३२००००}$ = ३६५ दिन, १५ घ०, ३१ पल, ३१ विपल, २४ प्र० वि० है। पितामहसिद्धान्तानुसार वर्षमान ३६५ दिन २१ घ० २५ पल है। रोमक और पौलिश सिद्धान्तानुसार--वर्षमान ३६५ दिन, १४ घ०, ४८ पल और ३६५ दिन, १५ घ, ३० प० है। प्र. आर्यसिद्धान्तानुसार–३६५ दिन, १५ घ., ३१ प., १५ विपल है। ब्रह्मगुप्तसिद्धान्तानुसार-३६५ दि., १५घ.,३० प., २२ वि. ३० प्र० वि. है। सिद्धान्तशिरोमणि के अनुसार ३६५ दि., १५ घ., ३० प., २२ वि., ३० प्र. वि. है ग्रहलाघवानुसार–३६५ दि., १५ घ., ३१ प., ३० विपल है। आधुनिक शोधानुसार–३६५ दिन १५ घ. २२ पल ५६·८७ विपल है।

## भगणारंभ–स्थान

यह तो हमें स्वीकार करना ही चाहिए कि भगणारंभ स्थान कोई तारा नहीं, एक सूक्ष्म !बिन्दु ही है, जिसकी न कोई लम्बाई है- और न चौड़ाई। जैसे भारतवर्ष का स्टेण्डर्ड टाइम ८२°।३०′ देशान्तर का माना गया है। इसे कोई काशी का टाइम कहने लगे, जो ८३° पू० देशान्तर पर स्टेन्डर्ड से दो मिनट पूर्व है, तो इसे गणितज्ञ कभी स्वीकार नहीं कर सकते।

यह राशि-चक्रारंभ-स्थान सूर्य सिद्धान्तानुसार रेवती से पृथक् १० कला दूर है। नहीं तो; रेवती का भोग सूर्यसिद्धान्त अं ३५९-५० क. कभी न मानकर उसे वह शून्य ही मानता। 'पौष्णान्ते भगणः स्मृतः' का तात्पर्य यही है कि रेवती नक्षत्र के अन्त में और अश्विनी के बीच में भगणारंभ बिन्दु की स्थिति है। सिद्धान्तशिरोमणिकर्त्ता भास्कराचार्य

और ग्रहलाघवकर्त्ता गणेश दैवज्ञ ने ग्रहों का जो भगणारंभ-स्थान लिया है, उससे रेवती योग तारा से सम्बन्ध नहीं दिखाई देता। सूर्य सिद्धान्त के टीकाकार रंगनाथ ने स्पष्ट लिखा है कि कदंब का मेल अश्विनी के ध्रुवक अं ८ से मिलाओ। रेवती से तो अश्विनी का सापेक्ष अन्तर अं १०।५१'२ क. है इसलिए वह अं. २–५१'२ क. आगे है।

जिस रेवती को झ़ीटा कहकर नाटिकल एलमनाक Nautical Almanac का आश्रय लिया जा रहा है, वह झीटा ही है, यह निश्चयात्मक कदापि नहीं कहा जा सकता। झीटा का शर Latitude १३' कला दक्षिण है और सूर्यसिद्धान्त के अनुसार रेवती का शर शून्य होते हुए भी उसे क्रान्तिवृत से (Ecliptic) उत्तर माना है। वसिष्ठ सिद्धान्त भी स्वीकार करता है, 'उदग् दिशस्ते च शराः सपूष्णाम्'।

उज्जयिनी वेधशाला के प्रोफेसर आपटे ही ने स्वीकार किया है,– 'The latitude of रेवती is to be a little to the north of the Ecliptic. The only drawback in this is that the latitude of Zeta lies to the South of the Ecliptic though its magnitude is only 13'

फिर, रेवती को झीटा बतलाकर और उसे भगणारंभ स्थान मानकर उससे वसंत संपात के अंतर को अयनांश मानना, कैसे सिद्ध हो सकता है। इसके द्वारा आज १८॥। अयनांश मानने से हमारे प्राचीन ज्यौतिषसिद्धान्त ग्रन्थों की एक वाक्यता होना तो दूर रहा, इससे वे सर्वथा निरर्थक सिद्ध होंगे।

अतः, भगणारंभ स्थान चित्राभिमुख निश्चल बिन्दु लेने से सिद्धान्तग्रन्थों की एकवाक्यता होती है।

ऐसे मार्ग अवलंबन, जिसमें प्राचीन सिद्धान्तग्रन्थों की एक वाक्यता रहे और कालजन्य आवश्यक संस्कार भी हम अपनी गणना में कर सकें, अवश्य ही हमारे लिए परम आवश्यक और योग्य है।

स्मरण रहे कि यदि हम कालजन्य संस्कार अपनी गणना में नहीं करते, तो आगे ऐसा समय आयेगा, जब हम वसन्त पंचमी मनायँगे शरद ऋतु में। मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू' कहने के हम कदापि अधिकारी नहीं रहेंगे। दृक् प्रत्यय से इतनी विभिन्नता बढ़ जायगी कि हमारी सिद्धान्त गणना बिलकुल निरर्थक हो जायगी।

इति सिद्धान्तविवेकः

---

## अयनांश-विवेक

### (१) ग्रहलाघव-द्वारा

"वेदाब्ध्यब्ध्यूनः खरसहृतः शकोऽयनांशाः"।

भाषा—इष्ट शकवर्ष में ४४४ घटाकर शेष में ६० का भाग देने से अयनांश होता है।

उदाहरण—

शक १८३९
४४४
६०) १३९५ (२३
१२०
१९५
१८०
१५

= अयनांश २३|१५|०

### (२) मकरन्द-द्वारा

शाकमेकाब्धिवेदोनं द्विः कृत्वा दशभिर्हरेत्।
लब्धं हीनञ्च तत्रैव षष्ट्याप्ताश्चायनांशकाः॥
लवीकृतोऽर्कस्त्रिगुणो नखाप्त-,
स्तावन्मिताभिर्विकलाभिराद्याः।

भाषा—इष्ट शक वर्ष में ४२१ घटाकर शेष को दो जगहों में रखे; एक में १० से भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान में से घटावे, शेष में ६० से भाग देने से अयनांश होता है। यह अयनांश वर्षारम्भ काल का होता है।

तात्कालिक सूर्यांशों को ३ का गुणाकर २० से भाग देवे; लब्धि को पूर्वानीत अयनांश की विकला में जोड़ने से तात्कालिक अयनांश होता है।

उदाहरण—

शक १८३९
−४२१
१४१८ शे.

(१) १०) १४१८ (१४१
१०
४१
४०
१८
१०
८ × ६०
१०) ४८० (४८
४०
८०
८०
×

(२) १४१८।०
१४१।४८
१२७६।१२

१२७६।१२ ÷ ६० = अयनांश
= २१।१६।१२ वर्षारम्भ में हुआ।

## तात्कालिक अयनांश-साधन

उदाहरण—

सूर्य १।२१।४।१५ = अंशादि ५१।४।१५
५१।४।१५ × ३ = १५३।१२।४५
१५३।१२।४५ ÷ २० = ७।३९ विकला

पूर्वानीतायनांश २१।१६।१२+८=ता. अय. २१।१६।२० हुआ ।

उपपत्ति—

अयनगति = प्रतिविकला ९ = १ दिन में

$$\therefore \frac{९ \times ३६०}{१} = \text{वार्षिक अयनगति} = ३२४० \text{ प्रतिविकला}$$

$$\frac{३२४०}{६०} = ५४ \text{ विकला}$$

$$६० - ६ = ५४$$

(क) $$\therefore \frac{६० - ६}{६०} = १ - \frac{१}{१०} = \text{कला}$$

इष्टशक वर्ष−४२१=गत वर्ष

$$\frac{(१ - \frac{१}{१०}) \times \text{गतवर्ष}}{१ \text{ वर्ष}} = \text{गतवर्ष} - \frac{\text{ग. व.}}{१०} = \text{कला}$$

कला ÷ ६० = अयनांश

(ख) $$\frac{५४ \times \text{इ. अं.}}{३६०} = \frac{\text{इ. अं.} \times ३}{२०} = \text{विकला}$$

## ( ३ ) केतकी-द्वारा

खखाष्टभूम्यनशकात्खशैलैःखपञ्चभिर्भागकलादिलब्ध्योः ।
यदन्तरं तत्सहिता द्विहस्ता अष्टौ सुरास्तेऽयनभागसंज्ञाः ॥

भाषा— इष्ट शकवर्ष में १८०० घटाकर शेष को दो स्थानों में रखे; ७० से भाग देने पर लब्धि अंशादि होगी, दूसरे स्थान में ५० से भाग देने पर कलादि लब्धि होगी । दोनों का अन्तर करके क्षेपक ( २२।८:३३ ) में जोड़ देने से अयनांश होता है ।

उदाहरण—

शक १८३९
   १८००
   ३९ शे.

( अ ) $\frac{३९}{७०}$ = ०।३३।२६

( ब ) $\frac{३९}{५०}$ = $\frac{०।\ ०।४७\ शेष}{०।३२।३९}$

क्षेपक + शेष = अयनांश = ( २२।८।३३ ) + ( ०।३२।३९ ) = २२|४१|१२ हुआ।

## (४) सिद्धान्तसम्राट-द्वारा

गजाश्विनेत्रै रहिता शकाब्दाः ,
खसप्तभक्ता अयनांशकाः स्युः ।
प्रत्यब्दजातायनजा गतिस्तु,
रूपाक्षतुल्या विकला प्रदिष्टाः ॥ ( यन्त्राध्याय )

भाषा—इष्ट शकवर्ष में २७८ घटाकर शेष में ७० से भाग देने पर अंशादिक अयनांश होता है। इस नियम से ५१ विकला वार्षिक अयनांश गति होती है।

उदाहरण—

इष्टशक १८३९
−२७८
१५६१

$\frac{१५६१}{७०}$ = २२,१८|० अयनांश हुआ।

## (५) सूर्यसिद्धान्त-द्वारा

त्रिंशत्कृत्यो युगे भानां चक्रं प्राक् परिलम्बते।
तद्गुणाद्भूदिनैर्भक्ताद् द्युगणाद्यदवाप्यते ॥
तद्दोस्त्रिघ्ना दशाप्तांशा विज्ञया अयनाभिधा ।

भाषा—एक महायुग में अयनांश का भगण ६०० = ३० × २० होता है। अहर्गण को अयनांश भगण से गुणा कर युगकुदिन से भाग देने पर जो लब्ध राश्यादिक हों; उनका भुज बनाकर ३ का गुणा और १० से भाग देने पर इष्टकालिक अयनांश होता है।

उदाहरण—संवत् १९७४ शके १८३९ ज्येष्ठ शुक्ल १४ चन्द्रवार को रात्रि का कलिगत अहर्गण १८३२९१९ हैं।

$$\frac{१८३२९१९ \times ६००}{१५७७९१७८२८} = \text{भगण } ० + \frac{\text{भ. शे.}}{\text{यु. कु.}}$$

$$\frac{\text{भ. शे.} \times १२}{\text{यु. कु}} = \text{रा.} = \frac{१०९९७५१४०० \times १२}{१५७७९१७८२८} = ८ \text{ राशि}\cdots$$

$$\frac{\text{रा. शे.} \times ३०}{\text{यु. कु.}} = \text{अं.} = \frac{५७३६७४१७६४३०}{१५७७९१७८२८} = १० \text{ अंश}\cdots$$

$$\frac{\text{अं. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{क.} = \frac{१४३१०४७००० \times ६०}{१५७७९१७८२८} = ५४ \text{कला}\cdots$$

$$\frac{\text{क. शे.} \times ६०}{\text{यु. कु.}} = \text{विकला} = \frac{६५५२५७२८८ \times ६०}{१५७७९१७८२८} = २४ \text{ विकला}\cdots$$

राश्यादि ८।१०।५४।२४

'तद्दोस्त्रिघ्ना दशाप्तांशाः' इत्यादिना भुजांश = ७०|५४|२४

७०|५४|२४ × ३ = २१२|४३|१२

२१२|४३|१२ ÷ १० = २१|१६|१९ अयनांश हुआ।

विशेष—शालिवाहन शकारम्भ के बाद ४२१ वर्ष व्यतीत होनेपर अयनांश की पुनः प्रवृत्ति मानकर 'शाकमेकाक्षि' विधि से अयनांश साधन का प्रकार कहा गया है। कलियुगादि से इष्ट दिनका अहर्गण लाकर पूर्वदर्शित अनुपात युक्तिसे भी वही अयनांश आता है। किन्तु त्रैराशिक में प्रमाण और इच्छा एकवेगरूप का लेने पर सूर्यसिद्धान्तोक्त अयनांश मकरन्द-प्रकाशोक्त अयनांश से भिन्न आता है जो कि अग्रिम उदाहरण से स्पष्ट होगा।

उदाहरण—संवत् १९८४ शके १८४९ फाल्गुन कृष्ण ३० सौम्यवस्रे (ता. २१|२|२९ ई.) सूर्यसिद्धान्तरीत्या अयनांशसाधनम्

युगभगणाः = ६००० इष्टदिवसे युगारम्भादहर्गणाः ११८५२७५२३२

$$\frac{६००० \times ११८५२७५२३२}{१५७७९१७८२८} = \text{भगणाद्याः}$$

= ४५० भ. २ रा. १५ अं. २६ क० ३ वि०

भगणानां प्रयोजनाभावात्केवलं राश्यादिः २|१५|२६|३

भुजांशाः ७५|२६|३

त्रिघ्ना……दशाप्ताः……

$$\frac{३ \times (७५|२६|३)}{१०} = २२|३७|४९ = \text{अयनांशाः}—$$

( रिपोर्ट पंचांग संशोधन कमेटी इन्दौर से उद्धृत )

## आलोचना—

पूर्वोक्त दिवस में मकरन्द-द्वारा साधित अयनांश २१|२५|२० आता है; सूर्य सिद्धान्तोक्त ९ प्रतिविकला दैनिक अयनगति स्वीकार करने पर भी मकरन्दीय नियम स्थूल सिद्ध होता है। और स्थूलता का कारण शाकारम्भ के पश्चात् ४२१ वर्ष में अयनांशाभाव की कल्पना ही प्रतीत होती है।

## वेधयुक्त्यायनांश--साधन

स्फुटं दृक्तुल्यतां गच्छेदयने विषुवद्द्वये।
प्राक् चक्रं चलितं हीने छायार्कात्करणागते।
अन्तरांशैरथावृत्य पश्चाच्छेषैस्तथाधिके॥

( सू. सि. )

उपरोक्त पद्य से गणितागत अयनांश की प्रतीति और धनर्ण संज्ञा सूचित की गई है। यथा दोनों अयनसंक्रान्ति ( सायन कर्क, सायनमकर ) एवं दोनों विषुवसंक्रान्ति ( सायन मेष, सायन तुला ) के समय स्पष्ट सूर्य की राश्यादि क्रमशः ३|०|०|०, ९|०|०|०, ०|०|०|०, ६|०|०|० संपात स्थान से इस प्रकार निश्चित रहेगी और इन्ही उपरोक्त दिनों में तत्तत् संक्रान्ति काल में ग्रन्थस्थ लिखित प्रकार से

जो स्पष्ट सूर्य का राश्यादिक उपलब्ध होगा ; वह निरयणमान (रेवत्यन्त-विन्दु ) से होगा। अतः दोनों सूर्य के अन्तर तुल्य अयनांश एवं चक्र का पूर्वापर चलन आकाश में स्पष्ट प्रतीत होगा। ग्रन्थस्थ प्रकार सिद्ध सूर्य के उपरोक्त सूर्य से न्यून होकर अयनचक्र का चलन पूर्व (धन) और पश्चिम (ऋण) समझा जायगा। इस तरह संक्रान्ति के अतिरिक्त दिनों में छायार्क ( छाया द्वारा साधित सूर्य ) और करणार्क ( ग्रन्थस्थ रीति से साधित सूर्य ) दोनों का अन्तर तुल्य अयनांश होगा। उदाहरणार्थ दोनों प्रकार नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

## छायार्क-साधन

(१) संवत् १९८४ शके १८५४ फा. कृ. ३० बुधवार ता० २१-३-२९ ई०

(१)—१२ अं० शं० कोटि

(२)—छायाभुज ( ४|५९ अंगुल )

(३)—छायाकर्ण ( ११|५९ अंगुल )

'तत्कृत्योर्योगपदमिति' पाटीगणित-द्वारा—

छायाकर्ण वर्ग = $१२^२ + छा^२$ = क० = ( १४४ + २४|५०|१ ) = १६८|५०|१

$\sqrt{१६८|२०|१}$ = क० = १२|५९|३६

सूर्यनतांशज्या = $\dfrac{\text{छा० भु० × त्रिज्या}}{\text{छा० क०}}$ = १३१८|३४ इसका

सूर्य नतांश चाप = २२|३४

अक्षांश—नतांश = क्रान्त्यंश। इन्दौर अक्षांश २२|४२

२२|४२-२२|३४ = ०|८ = सूर्य क्रान्ति उत्तरा

रविभुजज्या = $\dfrac{\text{त्रि. × इ. क्रां. ज्या}}{\text{प. क्रा. ज्या}} = \dfrac{\text{३४३८ × ( ०|८ )}}{\text{१३९७}}$

= ०|०|१९|४१ छायार्क प्रथमपद में हुआ।

## (२) करणार्क-साधन

कल्पादि अहर्गण ७१४४०४१३३४८८

अनुपात द्वारा मध्यम सूर्य $=\frac{\text{क. र. भ.} \times \text{इ. सा. दि.}}{\text{क. सा. दि.}}$

$=$ भगण १९५५८८५०२८ $+\frac{\text{भ. शे.}}{\text{क. सा. दि}}$

मध्यम सूर्य ११|५| ४|३९ मध्य रात्रि में

,, ,, ११|५|३४|३९ मध्याह्न में

सूर्यमन्दोच्च भगण २१९ राश्यादि २|१७|५८|०

मन्दकेन्द्र ३|१२|२३|४५ भुज २|१७|३६|१५

भुजज्या ३३५६ परिध्यन्तर ०|२०

$\frac{\text{प. अ.} \times \text{भु. ज्या}}{\text{त्रिज्या}}$ $=$ १९|३१

स्पष्टपरिधि १४–( १९|३१ ) $=$ १३|४०|२९

मान्दफलज्या $=\frac{\text{३३५६} \times (\text{१३|४०|२९})}{\text{३६०}}$ $=$ १२७|२८|४४

मन्दफल २|७|२८ धनात्मक

स्पष्ट सूर्य ११|७|४१|४३ मध्य दिन में ( करणार्क )

छायार्क–करणार्क=अयनांश=(०|०|१९|४१)–(११|७|४१|४३)

$=$ २२|३७|५८ वेधसिद्ध हुआ।

गणितागत अयनांश २२।३७।४९ है। केवल ९ विकला स्वल्पान्तर होने से उपेक्ष्य है।

( रिपोर्ट पंचांग संशोधन कमिटी से उद्धृत )

## समालोचना

पूर्वदर्शित अयनांश सम्बन्धी सभी अनुसन्धानों से तत्त्व यह निकलता है कि वेधसिद्ध सूर्यसिद्धान्तीय अयनांश से स्वल्प अन्तर

केवल केतकीग्रहगणितसिद्ध अयनांश में ही है यथा—( ता० २१–३–२९ ई० ) को सूर्य सिद्धान्तीय अयनांश २२|३७|५८ है और इसी दिन केतकी द्वारा अयनांश २२|५१|३२ आता है। यहां इन दोनों का अन्तर कलादि १३।३४ ही है एवं ग्रहलाघवादि अन्यग्रन्थों से महान् अन्तर आता है। अतः गणितलाघवार्थ और सूक्ष्मार्थ केतकीपद्धतिसिद्ध अयनांश ही व्यवहार योग्य है।

इत्ययनांश–विवेकः

---

# भूगोल–विवेक

भारतीय ज्योतिष के सभी आर्षग्रन्थों एवं पौरुषग्रन्थों में भूगोल को वर्तुलाकार और अचल सिद्ध किया है यथा सूर्यसिद्धान्त के भूगोलाध्याय में लिखा है कि—

मध्ये समन्ताद्ण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति।
विभ्राणः परमां शक्तिं ब्रह्मणो धारणात्मिकाम्॥

भाषा—ब्रह्माण्डगोल के बीच (केन्द्र) में ब्रह्म की धारणात्मिका शक्ति से भूगोल निराधार आकाश में स्थिर है।

इसी प्रकार सिद्धान्तशिरोमणि के गोलाध्याय 'भुवनकोष' में लिखा है कि—

"भूमेः पिण्डः शशाङ्कज्ञकविरविकुजेज्यार्किनक्षत्रकक्षावृत्तै-र्वृत्तोवृतः सन् मृदनिलसलिलव्योमतेजोमयोऽयम् ; नान्याधारः स्वशक्त्यैव वियतिनियतं तिष्ठति···"

वर्तुल (गोल) एवं पाञ्चभौतिक भूपिण्ड वर्तुलाकार ग्रह नक्षत्र कक्षाओं से घिरा हुआ अपनी शक्ति से आकाश में स्थिर है। यह प्राचीनग्रन्थों में कहा गया है।

भूपिण्ड के गोलरूप होने में सिद्धान्ततत्त्वविवेक में इस प्रकार लिखा है कि —

"यथा यथोत्तरदिशं नरः स्वस्थानतः किल ।
याति भूमौ ध्रुवं चोच्चं पश्यतीह तथा तथा ॥
वर्तुलत्वं तु निर्णीतं तज्ज्ञैस्तेन कुगोलके"–।...

भाषा—मनुष्य अपने स्थान से जैसे २ उत्तर दिशा को जाता है; उसी तरह ध्रुवविन्दु की उंचाई को बढ़ता हुआ देखता है।

इसी से प्राचीन तत्त्ववेत्ताओं ने भूपिण्ड को गोल समझा। किन्तु आधुनिक गवेषकों द्वारा भूगोल या ग्रहगोल पूर्ण वर्तुल नहीं है। क्योंकि सूर्य सिद्धान्त के भूगोलाध्याय श्लोक ४५ की टीका में महा-महोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी लिखते हैं कि—

"समुद्रयात्रादिकरणेन वेधसौक्ष्म्याच्चेयं भूमिर्दीर्घवर्तुलाभा नव्यैर्निर्णीता यस्या बृहद् व्यासः=७९२६ अर्धक्रोशाः=(मील)। लघुव्यासः=७८९९ अर्धक्रोशाः=(मील)।

उपरोक्त लेख में दीर्घवृत्त नहीं कहके 'दीर्घवर्तुलाभा" कहा है।

एवं केतकीग्रहगणित में लिखा है कि—

"ग्रहमार्गा वर्तुलाः सन्तीति पूर्वमुक्तम्, परन्तु ते वर्तुला न सन्ति। किन्तु वर्तुलासन्नाः सन्ति"।

उपरोक्त दिग्दर्शन से भूगोल एवं ग्रहगोल के वर्तुलासन्न होने से 'वर्तुल और दीर्घवर्तुल' दोनों में अत्यल्प अन्तर होने से पूर्वाचार्यों ने गोलरूप ही स्थिर किया है। किन्तु सर्व सम्मति से पृथ्वी के गोल रूप होने पर भी प्राचीन सिद्धान्तों में 'भूपरिधिमान' में परस्पर भेद देखा जाता है। यथा—

(१) योजनानि शतान्यष्टौ भूकर्णो द्विगुणानि तु।
तद्वर्गतो दशगुणात्पदं भूपरिधिर्भवेत् ॥
(सूर्य सिद्धान्त)

भूव्यास = ८०० × १६०० योजन

$\sqrt{\text{भू. व्या.}^2 \times 10}$ = भूपरिधि

$= \sqrt{2560000 \times 10}$ = ५०५९।३८ = भूपरिधि

यही गणित सिद्धान्ततत्त्वविवेक में इस प्रकार किया गया है ।

"रामानन्दाऽध्यऽध्ययोर्काः दशानां मूलमुच्यते ।
रूपव्यासे तु परिधिर्दशमूलमतः स तु ॥
इष्टव्यासेन गुणितः स्वेष्टव्यासे प्रजायते" ।

( ३|९|४४|१२ ) × १६०० = ५०५९|३८ नन्देषुखेषवश्चाष्टा-नयो भूपरिधिर्भवेत् ।

(२) प्रोक्तो योजनसंख्यया कुपरिधिः सप्ताङ्गनन्दाऽधयः ।
तद्व्यासः कुभुजङ्गसायकभुवः सिद्धांशकेनाधिकाः ॥
( सिद्धान्तशिरोमणि )

भूपरिधि = ४९६७ योजन

भूव्यास = १५८१ + ३/४ योजन

(३) योजनैः खखखवाणसंमितैः, भूमिगोलपरिधिः प्रकीर्तितः ।
तस्य योजनमयी च विस्तृतिः, भूभुजङ्गविषयामृतांशवः ॥
( सिद्धान्तशेखर )

भूपरिधि = ५००० योजन

भूव्यास = १५८१ योजन

(४) नवीन मत से दीर्घवृत्ताकार भूपिण्ड के—

वृहद्व्यास = ७९२६ मील

लघुव्यास = ७८९९ मील

स्वल्पान्तर से दोनों के योगार्धतुल्य व्यवहारार्थ भूव्यास = ७९१२ + १/२ मील सिद्ध होता है । इसका क्रोशात्मकमान ३९५६ और योजनात्मक ९८९ होता है ।

(५) पुरान्तरं-सूक्ष्मतरं सुयन्त्रैर्विद्वद्वरैराधुनिकैः प्रमाय ।
शून्याभ्रतत्त्वोन्मितयोजनानि विनिश्चितं भूपरिधेः प्रमाणम् ॥
प्रोक्तो योजनसंख्यया कुपरिधिः शून्याभ्रतत्त्वानि च ।
तद्व्यासः खखनागयोजनमितः स्थूलः सुखार्थं धृतः ॥
( केतकीग्रहगणित )

प्राचीन सिद्धान्तों के परिधि, व्यास में परस्पर भेद होते हुए भी अन्तर स्वल्प ही देखा जाता है। किन्तु नवीन मत से जो भूव्यास-कहा गया है वह सूर्यसिद्धान्तोक्त भूव्यास १६०० योजन के आधा (८००) है, एवं परिधि भी।

(६) अब प्रश्न यह उठता है कि विविध प्रकार से दिखलाये हुए भूव्यासमानों में कौन ठीक है? इसका विवेक एक पुराण के आधार पर किया जाता है। 'शिवपुराण' में पृथिवी वर्णन के प्रसंग में लिखा है कि—

"पञ्चाशत्कोटिविस्तीर्णा,
सशैलवनकानना"।

(शि. पु. अ. १२)

शिवपुराण के वचन में पृथिवी ५० करोड़ योजनों में जो फैलाव बताया गया है। वह भूगोल का घन फल है। जो एक सहस्र (१०००) योजन भूव्यास मान पर से सिद्ध होता है यथा—

भूव्यास = १००० योजन

'द्वाविंशतिघ्ने विहृतेऽथशैलैः'

स्थूलोऽथवा स्याद् व्यवहारयोग्यः।

(लीलावती)

$$\text{स्थूलपरिधियोजन} = \frac{१००० \times २२}{७} = \text{स्थूलपरिधि}$$

"वृत्तक्षेत्रे परिधिगुणितव्यासपादः फलम्"

$$\frac{१००० \times २२ \times १०००}{७ \times ४} = \text{क्षेत्रफल}$$

"तत्फलं वेदैः क्षुण्णं पृष्ठफलम्"

$$\frac{१००० \times २२ \times १००० \times ४}{७ \times ४} = \text{पृष्ठफल}$$

"पृष्ठफलं व्यासनिघ्नं षड्भिर्भक्तं गोलघनफलं भवति"

$$\text{गोलघनफल} = \frac{१००० \times २२ \times १००० \times ४ \times १०००}{७ \times ४ \times ६}$$

$$= \frac{१००० \times १००० \times १००० \times २२}{७ \times ६}$$

( स्वल्पान्तर से ७ से २२ को घात किया तो ३ रहा )

$$= \frac{५०० \times १००० \times १०००}{२}$$

=५०० × १००० × १०००=५०००००००=पञ्चाशत्कोटि ।

उपरोक्त घन फल एक सहस्र (१०००) भूव्यास मान से सिद्ध हुआ है। और नवीनमत से जो वृहद्व्यास दिखलाया गया है। उसका योजनात्मक मान ९९० + $\frac{३}{४}$ है। जो महर्षि कल्पित भूव्यास (१०००) के लगभग पहुँचता है। पुराणोक्त भूव्यास योजन महर्षियों की कल्पना है और वृहद्व्यास योजन आधुनिक गवेषकों द्वारा सिद्ध किया गया है। दोनों में कौन ठीक है ? इसका विवेक विज्ञजन स्वयं कर लेंगे क्योंकि—

अतीन्द्रियायार्थविज्ञानं प्रमाणं श्रुतिरेव हि ।<br>
श्रुतिर्यत्र प्रमाणं स्याद्युक्तिः का तत्र नारद ॥

अतएव सिद्ध हुआ कि एक ही भूव्यास का मान अनेक तरह की कल्पना में गौरव है और पुराणोक्त भूव्यास जो आज के सूक्ष्म यन्त्रादि द्वारा प्राप्त भूव्यास के स्वल्पान्तर से 'तुल्य' है। उसकी कल्पना में लाघव है। कहा भी है कि—

संसारे सकलं वस्तु लाघवेनैव निर्मितम् ।<br>
जगदीशेन कुत्रापि गौरवं नहि लक्ष्यते ॥

संसार के सभी पदार्थों की रचना में जब लाघव होना संगत है। अतएव भूव्यास योजन पुराणोक्त ही ठीक है।

भूपरिधिविवेक के बाद अब यह प्रसंग उपस्थित होता है कि पृथ्वी चल है या अचल ? इस विषय में मतभेद जो आज है वही प्राचीन काल में भी था।

प्राचीन समय के आर्य भट्ट अपने सिद्धान्तग्रन्थ में पृथिवी को चल' माना है यथा—

"भपञ्जरः स्थिरः भूरेव आवर्त्य आवर्त्य
उदयास्तं सम्पादयति सनक्षत्राणाम्"

(आ. भ. सि.)

तात्पर्य यह कि आकाश गोल स्थिर है। पृथिवी भ्रमण करती है। उसके ही भ्रमण से नक्षत्रादिकों का उदय, अस्त सम्पादित होता है। इस विषय-पर आर्यभट्ट का दूसरा प्रमाण यह है कि—

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत् सम पश्चिमगानि लङ्कायाम् ॥

भाषा—जैसे नाव पर चढ़े हुए को क्रम गति से चलती हुई नौका स्थिर और नदी तट के अचल वृक्षादि नौका की विपरीत दिशा में चलते हुए प्रतीत होते है। वैसे ही भूपृष्ठ वासी मनुष्यों को पृथ्वी स्थिर; और नक्षत्र मण्डल जो अचल है पूर्व से पश्चिम की ओर जाता हुआ प्रतीत होता है। वास्तव में में पृथ्वी भ्रमण करती है और नक्षत्र मण्डल स्थिर है।

सूर्य सिद्धान्त पृष्ठ २६२ श्लोक ३२ की टीका में महामहोपाध्याय पं. सुधाकर द्विवेदी लिखते हैं कि—

"यस्य गोलस्य पृष्ठे द्रष्टा तिष्ठति तं गोलमचलं मन्यते, अन्ये च गोलास्तद्वशतो भ्रमन्त इव भान्ति। अतोऽत्राचार्यैर्भूगोलपृष्ठवास्यभिप्रायेण 'भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति' इत्युक्तमिति नवीनानां कल्पना युक्तियुक्ता"

इस कथन से भी यही सिद्ध होता है कि पृथ्वी चलीत है। किन्तु भूपृष्ठवासी को उस चलन का ज्ञान नहीं होता। जैसे पृथ्वी का आकार गोल है किन्तु मनुष्यों को समान प्रतीत होती है। यथा सूर्य सिद्धान्त में लिखा है कि—

अल्पकायतया लोकाः स्वस्थानात्सर्वतो मुखम्।
पश्यन्ति वृत्तामप्येतां चक्राकारां वसुन्धराम्॥

तात्पर्य यह कि पृथ्वी ५० करोड़ योजनों में फैली हुई है और मानव शरीर छोटा है वह भूपृष्ठ के किसी विन्दु पर खड़ा होकर चारों तरफ देखता है तो उसको गोलाकार भी 'भूगोल' समतल दिखाई देता है। इसका कारण यह है कि मानव दृष्टि के सामने किसी प्रकार का व्यवधान न होने पर भी वह पृथ्वी के अत्यल्प भाग को ही देख सकता है। जो कि गणित से मनुष्य की दृष्टि ४ मील तक की है। किसी भी वृत्त का ९६ समान भाग कर देने पर उसका एक हिस्सा सरल दिखता है यथा—

"वृत्तस्य षण्णवत्यंशो दण्डवत्परिदृश्यते"।

उपरोक्त नियम से भूपरिधि योजन का शतांश भी २५ योजन के करीब होता है अतः मनुष्य को समत्व का भास होता है। वास्तव में पृथ्वी समान नहीं है। इसी प्रकार चलती हुई पृथ्वी को मनुष्य स्थिर मानता है। इसलिये भूगोल पृष्ठवासी मनुष्य के अभिप्राय से सूर्य सिद्धान्त में 'तिष्ठति' कहा गया है। वास्तव में पृथ्वी चल है।

इति भूगोलविवेकः

# अष्टकवर्ग-विवेक

भारतवर्ष एवं अन्यान्य प्रदेशों में 'ग्रह-फल' कहने की ३ विधियाँ प्रचलित हैं; (१) जन्मलग्न-द्वारा, (२) चन्द्रलग्न-द्वारा, (३) नवांश लग्न-द्वारा।

'लग्नं देहः' ... 'मनश्चन्द्रः'

लग्न द्वारा शारीरिक विचार होता है, चन्द्र द्वारा मानसिक विचार होता है। मन ही की प्रधानता में ऐहिक, पारलौकिक सभी कार्य सम्पदित होते हैं। जन्म समय जिस राशि पर चन्द्र रहता है; वह राशि जातक के जीवन में प्रत्येक मानसिक-कार्यों की सफलता एवं असफलता का दिग्दर्शन कराती है; इसी राशिके आधार पर महर्षियों ने 'गोचर-फल' का उल्लेख किया है। वस्तुतः 'गोचर-फल' गौण है; क्योंकि जीवमात्र का चन्द्र केवल द्वादश राशि में से किसी एक में रहता है; और एक राशि के आधार पर 'फल-वर्णन' कितनेक मनुष्यों का एकसा होना असम्भव सा है। मुख्यतः इस 'गोचर-फल' को सूक्ष्मता 'अष्टक-वर्ग' द्वारा विधान करने से महर्षियों ने त्रुटि को पूर्ण कर दिया है। यथा—

तावद्गोचरमन्वेष्यं यावन्न प्राप्यतेऽष्टकम्।
अष्टवर्गे तु सम्प्राप्ते गोचरं विफलं भवेत्॥

सूर्यादि एवं लग्न इन आठों के द्वारा जो 'फल' कथन की प्रणाली कोई विन्दु द्वारा, कोई रेखा द्वारा करते हैं; इसमें कोई विशेषता नहीं; चाहे जिसके द्वारा 'शुभफल-संकेत' किया जा सकता है। सूर्यादि सप्त ग्रह एवं लग्न जिस २ भावों में 'शुभफल' कारक हैं। उन्हीं २ भावों का संकेत किया गया है यथा सूर्य १-२-४ आदि स्थानों में शुभ फल देता है; और सूर्य जन्मचक्र में पंचमभाव में बैठा है तो ५-६-८ आदि भावों पर रेखा द्वारा 'शुभफल' कारक संकेत किया जा सकता है; जो कि आगे के उदाहरणों से स्पष्ट होगा। प्रथमतः सलग्न प्रत्येक ग्रह की शुभदा रेखा अंकित करना लिखा जाता है। विस्तारभय से 'श्लोक' न देकर केवल सूर्यादि अष्टक-वर्ग के चक्र ही उद्धृत किये जाते हैं।

### रविरेखा ४८

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | १ | ३ | ५ | ६ | १ | ३ |
| २ | ६ | २ | ५ | ६ | ७ | २ | ४ |
| ४ | १० | ४ | ६ | ९ | १२ | ४ | ६ |
| ७ | ११ | ७ | ९ | ११ | | ७ | १० |
| ८ | | ८ | १० | | | ८ | ११ |
| ९ | | ९ | ११ | | | ९ | १२ |
| १० | | १० | १२ | | | १० | |
| ११ | | ११ | | | | ११ | |

### चंद्ररेखा ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ |
| ७ | ६ | ५ | ४ | ७ | ५ | ६ | १० |
| ८ | ७ | ६ | ५ | ८ | ७ | ११ | ११ |
| १० | १० | ९ | ७ | १० | ९ | | |
| ११ | ११ | १० | ८ | ११ | १० | | |
| | | ११ | १० | १२ | ११ | | |
| | | | ११ | | | | |

### भौमरेखा ३९

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | ३ | ६ | ६ | १ | १ |
| ५ | ६ | २ | ५ | १० | ८ | ४ | ३ |
| ६ | ११ | ४ | ६ | ११ | ११ | ७ | ६ |
| १० | | ७ | ११ | १२ | १२ | ८ | १० |
| ११ | | ८ | | | | ९ | ११ |
| | | १० | | | | १० | |
| | | ११ | | | | ११ | |

### बुधरेखा ५४

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | १ | १ | ६ | १ | १ | १ |
| ६ | ४ | २ | ३ | ८ | २ | २ | २ |
| ९ | ६ | ४ | ५ | ११ | ३ | ४ | ४ |
| ११ | ८ | ७ | ६ | १२ | ४ | ७ | ६ |
| १२ | १० | ८ | ९ | | ५ | ८ | ८ |
| | ११ | ९ | १० | | ८ | ९ | १० |
| | | १० | ११ | | ९ | १० | ११ |
| | | ११ | १२ | | ११ | ११ | |

### गुरुरेखा ५६

| सू. | चं. | मं | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १ | १ | १ | २ | ३ | १ |
| २ | ५ | २ | २ | २ | ५ | ५ | २ |
| ३ | ७ | ४ | ४ | ३ | ६ | ६ | ४ |
| ४ | ९ | ७ | ५ | ४ | ९ | १२ | ५ |
| ७ | ११ | ८ | ६ | ७ | १० | | ६ |
| ८ | | १० | ९ | ८ | ११ | | ७ |
| ९ | | ११ | १० | १० | | | ९ |
| १० | | | ११ | ११ | | | १० |
| ११ | | | | | | | ११ |

### भृगु. ५२.

| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | १ | ३ | ३ | ५ | १ | ३ | १ |
| ११ | २ | ५ | ५ | ८ | २ | ४ | २ |
| १२ | ३ | ६ | ६ | ९ | ३ | ५ | ३ |
| | ४ | ९ | ९ | १० | ४ | ८ | ४ |
| | ५ | ११ | ११ | ११ | ५ | ९ | ५ |
| | ८ | १२ | | | ८ | १० | ८ |
| | ९ | | | | ९ | ११ | ९ |
| | ११ | | | | १० | | ११ |
| | १२ | | | | ११ | | |

| शनि ३९ | | | | | | | | लग्नरेखा ४९ | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | ल. |
| १ | ३ | ३ | ६ | ५ | ६ | ३ | १ | ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ |
| २ | ६ | ५ | ८ | ६ | ११ | ५ | ३ | ४ | ६ | ३ | २ | २ | २ | ३ | ६ |
| ४ | ११ | ६ | ९ | ११ | १२ | ६ | ४ | ६ | १० | ६ | ४ | ४ | ३ | ४ | १० |
| ७ | | १० | १० | १२ | | ११ | ६ | १० | ११ | १० | ६ | ५ | ४ | ६ | ११ |
| ८ | | ११ | ११ | | | | १० | ११ | | ११ | ८ | ६ | ५ | १० | |
| १० | | १२ | १२ | | | | ११ | २१ | | | १० | ७ | ८ | ११ | |
| ११ | | | | | | | | | | | ११ | ९ | ९ | | |
| | | | | | | | | | | | | १० | ११ | | |
| | | | | | | | | | | | | ११ | | | |

## अष्टकवर्ग–साधन

सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य अपने स्थान से ( जन्म चक्र में जिस राशि में स्थित हो ) १–२–४–७–८–९–१०–११ वें स्थानों में शुभ फल; अन्यत्र अशुभ फल देता है। यथा सूर्य पंचम भाव में हो तो ५–६–८–११–१२–१–२–३ रे भाव में 'शुभसूचक' रेखा बनावे। इसी प्रकार सूर्याष्टकवर्ग में चन्द्र अपने स्थान से (जिस राशि पर चन्द्र स्थित हो) ३-६-१०-११ वें स्थानों में शुभफल अन्यत्र अशुभफल देता है। यथा चन्द्र द्वादश भाव में है ; तो २–५–९–१० वें भाव में 'शुभसूचक' रेखा बनावें। इसी प्रकार सभीअष्टक वर्गों को बनाना चाहिए। उदाहरणार्थ पृष्ट ९७ की कुण्डली के द्वारा साधित अष्टकवर्ग-चक्र लिखे जाते हैं।

### सूर्याष्टकवर्ग (४८)

| प्र. | सू. | चं. | मं | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ३ | ८ | ६ | ४ | ५ | ४ | १० | ४ | |
| ३ | 1 | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ६ |
| ४ | 1 | ० | 1 | ० | ० | ० | 1 | ० | ३ |
| ५ | ० | 1 | ० | ० | ० | ० | 1 | ० | २ |
| ६ | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | ० | 1 | 1 | ६ |
| ७ | ० | ० | 1 | ० | ० | ० | 1 | 1 | ३ |
| ८ | ० | ० | ० | 1 | ० | ० | 1 | ० | २ |
| ९ | 1 | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ६ |
| १० | 1 | 1 | ० | ० | 1 | 1 | 1 | ० | ५ |
| ११ | 1 | ० | ० | ० | ० | ० | 1 | ० | २ |
| १२ | 1 | ० | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | ३ |
| १ | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | 1 | ७ |
| २ | ० | ० | 1 | 1 | ० | ० | ० | 1 | ३ |

### चन्द्राष्टकवर्ग (४९)

| प्र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | सू. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ८ | ६ | ४ | ५ | ४ | १० | ४ | ३ | |
| ८ | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ७ |
| ९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 1 | 1 | २ |
| १० | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ० | ० | 1 | ५ |
| ११ | ० | 1 | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | ३ |
| १२ | ० | ० | ० | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ४ |
| १ | 1 | ० | 1 | ० | 1 | ० | 1 | 1 | ५ |
| २ | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | ७ |
| ३ | ० | 1 | ० | 1 | ० | 1 | ० | ० | ३ |
| ४ | ० | 1 | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | ३ |
| ५ | 1 | ० | ० | 1 | ० | ० | ० | 1 | ३ |
| ६ | 1 | ० | 1 | ० | 1 | ० | 1 | ० | ४ |
| ७ | ० | 1 | 1 | ० | 1 | ० | ० | ० | ३ |

### भौमाष्टकवर्ग (३९)

| प्र. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | सू. | चं. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ६ | ४ | ५ | ४ | १० | ४ | ३ | ८ | |
| ६ | 1 | 1 | ० | ० | 1 | 1 | ० | 1 | ५ |
| ७ | 1 | ० | ० | ० | 1 | ० | 1 | ० | ३ |
| ८ | ० | 1 | ० | ० | 1 | ० | 1 | ० | ३ |
| ९ | 1 | 1 | ० | 1 | ० | 1 | ० | ० | ४ |
| १० | ० | ० | 1 | ० | 1 | ० | ० | 1 | ३ |
| ११ | ० | ० | ० | 1 | ० | ० | ० | ० | १ |
| १२ | 1 | ० | ० | ० | ० | ० | 1 | ० | २ |
| १ | 1 | ० | ० | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | ५ |
| २ | ० | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ० | ० | ४ |
| ३ | 1 | ० | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | ३ |
| ४ | 1 | ० | 1 | ० | 1 | 1 | ० | ० | ४ |
| ५ | ० | ० | ० | ० | 1 | ० | 1 | ० | २ |

### बुधाष्टकवर्ग (५४)

| प्र. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. | सू. | चं० | मं० | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | ५ | ४ | १० | ४ | ३ | ८ | ६ | |
| ४ | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | ० | 1 | ६ |
| ५ | ० | ० | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ० | ४ |
| ६ | 1 | ० | 1 | 1 | ० | ० | 1 | 1 | ५ |
| ७ | ० | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | 1 | ५ |
| ८ | 1 | ० | 1 | 1 | ० | 1 | ० | ० | ४ |
| ९ | 1 | ० | ० | ० | 1 | ० | 1 | 1 | ४ |
| १० | ० | 1 | ० | 1 | ० | ० | ० | ० | २ |
| ११ | ० | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | ० | ५ |
| १२ | 1 | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | 1 | ४ |
| १ | 1 | ० | ० | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | ६ |
| २ | 1 | ० | 1 | ० | 1 | 1 | ० | 1 | ५ |
| ३ | 1 | 1 | ० | ० | ० | ० | 1 | 1 | ४ |

## गुर्वष्टकवर्ग (५६)

| ग्र. | गु. | शु. | श. | ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ५ | ४ | १० | ४ | ३ | ८ | ६ | ४ | |
| ५ | । | । | ० | । | । | ० | ० | । | ५ |
| ६ | । | ० | ० | ० | । | । | । | ० | ४ |
| ७ | । | ० | ० | । | ० | ० | । | । | ४ |
| ८ | । | । | ० | । | ० | ० | ० | । | ४ |
| ९ | ० | । | । | । | । | । | । | । | ७ |
| १० | ० | ० | ० | । | । | ० | ० | ० | २ |
| ११ | । | ० | ० | ० | । | ० | ० | ० | २ |
| १२ | । | । | । | । | । | । | । | । | ८ |
| १ | ० | । | ० | । | । | ० | । | । | ५ |
| २ | । | । | । | । | ० | । | ० | । | ६ |
| ३ | । | ० | [illegible] | ० | । | ० | । | ० | ४ |
| ४ | ० | ० | ० | । | । | । | । | । | ५ |

## शुक्राष्टकवर्ग (५२)

| ग्र. | शु. | श. | ल. | सू | चं. | मं. | बु. | गु. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र . | ४ | १० | ४ | ३ | ८ | ६ | ४ | ५ | |
| ४ | । | ० | । | ० | । | । | ० | ० | ४ |
| ५ | । | । | । | ० | ० | । | ० | ० | ४ |
| ६ | । | । | । | ० | । | ० | । | ० | ५ |
| ७ | । | । | । | ० | । | ० | ० | ० | ४ |
| ८ | । | । | । | ० | । | । | । | ० | ६ |
| ९ | ० | ० | ० | ० | । | ० | । | । | ३ |
| १० | ० | ० | ० | । | । | । | ० | ० | ३ |
| ११ | । | ० | । | ० | । | । | ० | ० | ४ |
| १२ | । | । | । | ० | । | ० | । | । | ६ |
| १ | । | । | ० | । | ० | ० | ० | । | ४ |
| २ | । | । | । | । | ० | । | । | । | ७ |
| ३ | ० | ० | ० | ० | । | ० | ० | । | २ |

## शन्यष्टकवर्ग (३९)

| ग्र. | श. | ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | १० | ४ | ३ | ८ | ६ | ४ | ५ | ४ | |
| १० | ० | ० | । | । | । | ० | । | ० | ४ |
| ११ | ० | ० | ० | ० | । | । | ० | ० | २ |
| १२ | । | ० | । | ० | ० | । | ० | ० | ३ |
| १ | ० | । | । | । | ० | । | ० | ० | ४ |
| २ | । | । | ० | ० | ० | । | ० | । | ४ |
| ३ | । | ० | । | ० | । | । | । | । | ६ |
| ४ | ० | । | । | ० | । | ० | । | ० | ४ |
| ५ | ० | ० | ० | ० | । | ० | ० | ० | १ |
| ६ | ० | । | । | । | ० | ० | ० | ० | ३ |
| ७ | ० | । | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| ८ | । | ० | ० | ० | । | ० | ० | ० | २ |
| ९ | ० | । | ० | ० | ० | । | । | । | ५ |

## लग्नाष्टकवर्ग (४६)

| ग्र. | ल. | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रा. | ४ | ३ | ८ | ६ | ४ | ५ | ४ | १० | |
| ४ | ० | ० | ० | । | । | ० | । | ० | ३ |
| ५ | ० | । | । | ० | । | । | । | ० | ५ |
| ६ | । | । | । | । | ० | । | । | ० | ६ |
| ७ | ० | ० | ० | ० | । | ० | । | । | ३ |
| ८ | ० | । | ० | । | ० | । | । | । | ५ |
| ९ | । | ० | ० | ० | । | । | ० | ० | ३ |
| १० | ० | ० | । | ० | ० | । | ० | । | ३ |
| ११ | ० | ० | ० | । | । | । | । | ० | ४ |
| १२ | ० | । | ० | ० | ० | ० | । | । | ३ |
| १ | । | । | । | ० | । | । | ० | । | ६ |
| २ | । | । | ० | ० | । | । | । | ० | ५ |
| ३ | ० | ० | ० | । | ० | । | ० | । | ३ |

## स्पष्टीकररण

सूर्याष्टकवर्ग पृष्ठ ३८८ में देखिये। सूर्य मिथुन राशि में है और सूर्याष्टकवर्ग में सूर्य की शुभ सूचक रेखा १-२-४-७-८-९-१०-११ हैं। अतः मिथुन, कर्क, कन्या, धन, मकर, कुंभ, मीन, मेष पर शुभसूचक-रेखा लगाई गयी हैं। सूर्याष्टकवर्ग में चन्द्र को शुभसूचक-रेखा ३-६-१०-११ हैं और चन्द्र वृश्चिक में है। अतः मकर, मेष, सिंह, कन्या पर शुभ-सूचक-रेखा लगाई गयीं हैं। सूर्याष्टकवर्ग में भौम की शुभसूचक-रेखा १-२-४-७-८-९-१०-११ हैं और भौम कन्या राशि में है। अतः कन्या, तुला, धन, मीन, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क राशिपर शुभसूचक-रेखा लगाई गयीं हैं। सूर्याष्टक वर्ग में बुध की 'शुभ-सूचक' रेखा ३-५-६-९-१०-११-१२ हैं और बुध कर्क राशि में हैं अतः कन्या, वृश्चिक, धन, मीन, मेष, वृष, मिथुन राशि पर रेखा लगाई गई हैं। गुरु-रेखा ५-६-९-११ शुभ-सूचक है और गुरु सिंह राशि का है अतः धन, मकर, मेष, मिथुन पर रेखा लगाई गयीं है। इसी प्रकार शुक्र की कर्क से, शनि की मकर से, लग्न की कर्क से रेखायें लगाई गयीं हैं। इसी प्रकार सभी ग्रहों का अष्टकवर्ग वनाना चाहिये।

## अष्टकवर्ग–शोधन

अष्टकवर्ग-शोधन करने की २ विधियां हैं (१) त्रिकोण-शोधन (२) एकाधिपत्य शोधन। प्रथम त्रिकोण-शोधन-प्रकार लिखा जाता है।

### (१) त्रिकोण–शोधन

राशि–चक्र ४ त्रिकोणों में है। त्रिकोण काअर्थ प्रथम, पंचम, नवम राशि। प्रत्येक त्रिकोण की प्रथम राशि क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क है।

त्रिकोण— { मेष— १-५-९ राशि / वृषभ— २-६-१० " / मिथुन—३-७-११ " / कर्क— ४-८-१२ " } —हैं

त्रिकोणेषु च यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषु शोधयेत् ।
एकस्मिन् भवने शून्ये तत्त्रिकोणं न शोधयेत् ॥
समत्वे सर्वगेहेषु सर्वं संशोधयेत्तदा ।

(पराशर)

भाषा—(१) त्रिकोण की तीन राशियों में से जिस राशि की रेखा-संख्या कम हो; इस राशि संख्या को त्रिकोण की अन्य दो राशि सख्या में से घटावे;शेष को इसी राशि के नीचे स्थापित करे; अल्पसंख्या के स्थान में शून्य रखना चाहिये ।

(२) यदि त्रिकोण की एक राशिमें शून्य हो तो अन्य दो राशियों की वैसी हो रेखा संख्या स्थापित करो ।

(३) यदि त्रिकोण की तीनों राशियों में रेखा बराबर हों तो त्रिकोण की तीनों राशियों के नीचे शून्य (०) स्थापित करो ।

नोट—होरा-रत्न में बलभद्र जी ने इसी त्रिकोण-शोधन में यह लिखा है; कि ' त्रिकोण की तीनों राशियों में अल्परेखा वाली रेखा के समान अन्य दोनों राशियों की रेखाओं को करना चाहिये ' परञ्च अनेक भारतीय विद्वानों ने पूर्वोक्त पराशरजी के ही मत को विशेष ग्राह्य किया है । अतएव इसी आधार पर त्रिकोण-शोधन लिखा जाता है ।

## (२) एकाधिपत्य–शोधन

त्रिकोण शोधन करके फिर एकाधिपत्य-शोधन करना चाहिए । सूर्य, चन्द्र की एक ही एक राशि [सूर्य (५) चन्द्र (४)] है । अतः

इन दोनों राशियों का एकाधिपत्य-शोधन नहीं किया जाता। अन्य भौमादि पंचग्रहों की दो २राशियाँ हैं। यथा 'धराजशुक्रज्ञ' (पृष्ठ १३० श्लोक) में लिखा गया है।

जातकपारिजात में एकाधिपत्य-शोधन में पराशर से मतभेद है। उसमें पूर्वोक्त त्रिकोण की तरह ही विपरीत उल्लेख किया गया है। पर इस प्रस्तुत पुस्तक में विशेष सम्मति के कारण पराशर ही के मत से एकाधिपत्य-शोधन-प्रकार लिखा जाता है। इसके ७ नियम हैं। यथा:—

(१) 'क्षीणेन सह चान्यस्मिन् शोधयेद् ग्रहवर्जितम्

भाषा— यदि दोनों राशियों में कोई ग्रह न हो तो अल्पसंख्या को अधिक संख्या में घटाकर शेष को अधिक संख्या के नीचे रखे; और अल्प संख्या को तद्वत् रखना चाहिये। यथा– मेष में ३ रेखा हैं और वृश्चिक में ५; तो मेष में ३ अंक तथा वृश्चिक में २ अंक रखना चाहिये।

(२)—ग्रहयुक्ते फले हीने ग्रहाभावे फलाधिके।
अनेन सह चान्यस्मिञ्छोधयेद् ग्रहवर्जिते ॥

भाषा—यदि एक राशि में ग्रह हो और दूसरी राशि में ग्रह न हो और जिस राशि में ग्रह हो उसकी संख्या ग्रहहीनराशि से अल्प हो; तो अल्पसंख्या तद्वत् रहेगी; एवं ग्रहहीनराशि संख्या में अल्पसंख्या घटाकर शेष संख्या ग्रहहीनराशि के नीचे रखना चाहिये। यथा वृष की (४) संख्या तथा ग्रहरहित हो; और तुला ग्रहयुक्त तथा (२) संख्या हो; तो वृष के नीचे (२) संख्या एवं तुला के नीचे (२) संख्या रखना चाहिये।

(३)—'फलाधिके ग्रहैर्युक्ते चान्यस्मिन्सर्वमुत्सृजेत्।'

भाषा—यदि ग्रहयुक्तराशि में संख्या अधिक हो और ग्रहहीनराशि में संख्या कम हो; तो ग्रहहीनराशि में शून्य तथा ग्रहयुक्त

राशि की संख्या तद्वत् रहेगी। यथा मकर ग्रहयुक्त और ४ संख्या है; कुंभ ग्रहरहित और २ संख्या है; तो कुंभ में शून्य और मकर में ४ संख्या रहेगी।

(४)—'उभयोर्ग्रहसंयुक्ते न संशोध्यः कदाचन'।

भाषा—यदि दोनों में ग्रह हों तो तद्वत् रखना चाहिये।

(५)—'उभयोर्ग्रहहीनाभ्यां समत्वे सकलं त्यजेत्'।

भाषा—यदि दोनों राशियों में ग्रह न हों और संख्या भी वरावर हो तो दोनों राशियों में शून्य रखना चाहिये।

(६)—'सग्रहा ग्रहतुल्यत्वात्सर्वं संशोध्यमग्रहात्।'

भाषा—यदि एक ग्रहयुक्त, एक ग्रहहीन हों और समान संख्या भी हो; तो ग्रहहीन संख्या के स्थान में शून्य एवं ग्रहयुक्त राशि की संख्या तद्वत् रहेगी।

(७)—'एकत्र नास्ति चेत्सर्वहानिरन्यत्र कीर्तिता'।

भाषा—यदि दोनों ग्रहयुक्त हों या दोनों ग्रहहीन हों या दोनों में एक ग्रहयुक्त, एक ग्रहहीन हो। परन्तु त्रिकोण-शोधन के बाद किसी एक में शून्यसंख्या हो; तो दोनो में शून्य ही संख्या रहेगी।

नोट—त्रिकोण–शोधन के उपरांत एकाधिपत्य-शोधन करना चाहिये। उदाहरणार्थ आगे त्रिकोण–शोधन और एकाधिपत्य–शोधन के चक्र लिखे जाते हैं।

## सूर्याष्टकवर्ग--शोधन

| ग्रह | सू. | बु. शु. | गु. | मं. | | चं. | | श. | | | | | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | | |
| रेखा | ६ | ३ | २ | ६ | ३ | २ | ६ | ५ | २ | ३ | ७ | ३ | ४८ | |
| त्रि. शो. | ४ | १ | ० | ३ | १ | ० | ४ | २ | ० | १ | ५ | ० | २१ | |
| एका. शो. | ४ | १ | ० | ३ | ० | ० | ३ | ० | ० | १ | ० | ० | १२ | |
| रा. गु. | ३२ | ४ | | १५ | | | २७ | | | १२ | | | ९० | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | २० | १२ | | २४ | | | | | | | | | ५६ | १४६ग्र.पि.यो. |

## चन्द्राष्टकवर्ग--शोधन

| ग्रह | चं. | | श. | | | | | सू. | बु. शु. | गु. | मं. | | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | | |
| रेखा | ७ | २ | ५ | ३ | ४ | ५ | ७ | ३ | ३ | ३ | ४ | ३ | ४९ | |
| त्रि. शो. | ४ | ० | १ | ० | १ | ३ | ३ | ० | ० | १ | ० | ० | १३ | |
| एका. शो. | ४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० | ० | ५ | |
| रा. गु. | ३२ | | | | | | | | | १० | | | ४२ | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | २० | | | | | | | | | १० | | | ३० | ७२ ग्र. योग |

## भौमाष्टकवर्ग--शोधन

| ग्रह | मं. | | चं. | | श. | | | | | सू. | बु. शु. | गु. | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | | |
| रेखा | ५ | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ५ | ४ | ३ | ४ | २ | ३९ | |
| त्रि. शो. | २ | २ | १ | २ | ० | ० | ० | ३ | १ | २ | २ | ० | १५ | |
| एका. शो. | २ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | २ | १ | २ | २ | ० | ११ | |
| रा. गु. | १० | ७ | ८ | | | | | १४ | १० | १६ | ८ | | ७३ | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | १६ | | ५ | | | | | | | १० | २४ | | ५५ | १२८ ग्र. योग |

## बुधाष्टकवर्ग-शोधन

| ग्रह | बु. शु. | गु. | मं. | | चं. | | श. | | | | | सू. | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | | |
| रेखा | ६ | ४ | ५ | ५ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | ६ | ५ | ४ | ५४ | |
| त्रि. शो. | २ | ० | ३ | १ | ० | ० | ० | १ | ० | २ | ३ | ० | १२ | |
| एका. शो. | २ | ० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ | ० | ५ | |
| रा. गु. | ८ | | | | ७ | | | | | | २० | | ३५ | राशि. पण्ड |
| ग्र. गु. | २४ | | | | | | | | | | | | २४ | ५९ ग्र. योग |

## गुर्वष्टकवर्ग–शोधन

| ग्रह | गु. | मं | | चं. | | श. | | | | | सू. | बु. शु. | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | | | |
| रेखा | ५ | ४ | ४ | ४ | ७ | २ | २ | ८ | ५ | ६ | ४ | ५ | ५६ | |
| त्रि. शो. | ० | २ | २ | ० | २ | ० | ० | ४ | ० | ४ | २ | १ | १७ | |
| एका. शो. | ० | २ | २ | ० | २ | ० | ० | २ | ० | २ | २ | १ | १३ | |
| रा. गु. | | १० | १४ | | १८ | | | २४ | | २० | १६ | ४ | १०६ | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | | १६ | | | | | | | | | १० | १२ | ३८ | १४४ग्र.पि. |

## शुक्राष्टकवर्ग–शोधन

| ग्रह | शु. बु. | गु. | मं. | | चं. | | श. | | | | | सू. | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | | |
| रेखा | ४ | ४ | ५ | ४ | ६ | ३ | ३ | ४ | ६ | ४ | ७ | २ | ५२ | |
| त्रि. शो. | ० | १ | २ | २ | २ | ० | ० | २ | २ | १ | ४ | ० | १६ | |
| एका. शो. | ० | १ | ० | २ | २ | ० | ० | ० | ० | ० | २ | ० | ७ | |
| रा. गु. | | १० | | १४ | १६ | | | | | | २० | | ६० | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | | १० | | | १० | | | | | | | | २० | ८०ग्रहपिंडयो. |

## शन्यष्टकवर्ग–शोधन

| ग्रह | श. | | | | | सू. | बु. शु. | गु. | मं. | | चं. | | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | | |
| रेखा | ४ | २ | ३ | ४ | ४ | ६ | ४ | १ | ३ | १ | २ | ५ | ३९ | |
| त्रि. शो. | १ | १ | १ | ३ | १ | ५ | २ | ० | ० | ० | ० | ४ | १८ | |
| एका. शो. | १ | ० | १ | ० | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ३ | ७ | |
| रा. गु. | ५ | | १२ | | | | ८ | | | | | २७ | ५२ | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | ५ | | | | | | २४ | | | | | | २९ | ८१ग्र-पिं-यो- |

## लग्नाष्टकवर्ग-शोधन

| ग्रह | बु. शु. | गु. | मं. | | चं. | | श- | | | | | सू- | योग | योगपिण्ड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशि | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | | |
| रेखा | ३ | ५ | ६ | ३ | ५ | ३ | ३ | ४ | ३ | ६ | ५ | ३ | ४९ | |
| त्रि.शो. | ० | २ | ३ | ० | २ | ० | ० | १ | ० | ३ | २ | ० | १३ | |
| एका.शो | ० | २ | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | १ | ० | ० | ५ | |
| रा. गु. | | २० | | | १६ | | | | | ७ | | | ४३ | राशिपिण्ड |
| ग्र. गु. | | २० | | | १० | | | | | | | | ३० | ७३ ग्र.पि.योग |

एकाधिपत्य-शोधन के अनन्तर दो विधियां और करना चाहिए। (१) राशि-गुणक, (२) ग्रह-गुणक।

## राशि-गुणक-चक्र

| राशि | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं. | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुणकांक | ७ | १० | ८ | ४ | १० | ५ | ७ | ८ | ९ | ५ | ११ | १२ |

उदाहरण—सूर्याष्टकवर्ग-शोधन-चक्र में मिथुन राशि के नीचे एकाधिपत्य-शोधन के उपरान्त ४ रेखा उपलब्ध हुईं और मिथुन राशि का गुणक ८ है अतः ४ × ८ = ३२ राशि-गुणक-कोष्टक में रखा गया है। इसी प्रकार सभी के गुणक रखना चाहिये।

## ग्रह-गुणक-चक्र

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ८ | ५ | १० | ७ | ५ | गुणकांक |

उदाहरण—सूर्याष्टकवर्ग-शोधन-चक्र में सूर्य के नीचे एकाधिपत्य-शोधन के अनन्तर ४ रेखा प्राप्त हुईं हैं; और सूर्य का गुणक ५ है अतः

४ × ५ = २०-ग्रह गुणक के स्थान में सूर्य के नीचे रखा गया है।

राशि-गुणक और ग्रह-गुणक का योग करके योगपिण्ड प्रत्येक अष्टकवर्ग-चक्र में रखना चाहिये। अब आगे सर्वाष्टकवर्ग-चक्र लिखा जाता है। सभी अष्टकवर्गों में मेषादि द्वादशराशियों की कितनी २ रेखा प्राप्त हुईं; और उन सबों का योग क्या हुआ? इत्यादि आगे लिखाजाता है।

## सर्वाष्टकवर्ग-चक्र

| राशि | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | कं. | तु. | वृ. | ध. | म. | कुं | मी. | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रह | | | सू. | बु. शु. | गु. | मं. | | चं. | | श. | | | |
| र. अ. व. | ७ | ३ | ६ | ३ | २ | ६ | ३ | २ | ६ | ५ | २ | ३ | ४८ |
| चं. ,, | ५ | ७ | ३ | ३ | ३ | ४ | ३ | ७ | २ | ५ | ३ | ४ | ४९ |
| मं. ,, | ५ | ४ | ३ | ४ | २ | ५ | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | २ | ३९ |
| बु. ,, | ६ | ५ | ४ | ६ | ४ | ५ | ५ | ४ | ४ | २ | ५ | ४ | ५४ |
| गु. ,, | ५ | ६ | ४ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ७ | २ | २ | ८ | ५६ |
| शु. ,, | ४ | ७ | २ | ४ | ४ | ५ | ४ | ६ | ३ | ३ | ४ | ६ | ५२ |
| श. ,, | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ३ | १ | २ | ५ | ४ | २ | ३ | ३९ |
| ल. ,, | ६ | ५ | ३ | ३ | ५ | ६ | ३ | ५ | ३ | ३ | ४ | ३ | ४९ |
| योग | ४२ | ४१ | ३१ | ३२ | २६ | ३८ | २६ | ३३ | ३४ | २७ | २३ | ३३ | ३८६ |

## अष्टक-वग-कुण्डली
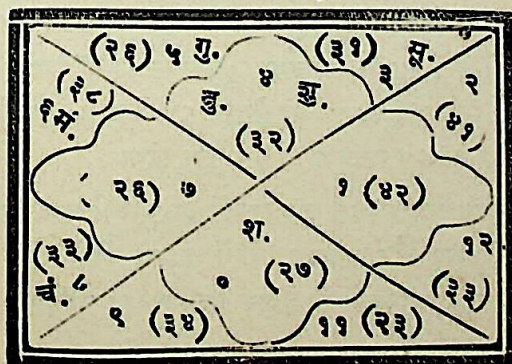
# रेखा–फल

## द्वादशभावस्थरेखा–चक्र

| ल. | ध. | स. | सु. | पु. | रि. | स्त्री. | आ. | ध. | क. | आ. | व्य. | भाव |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | २६ | ३८ | २६ | ३३ | ३४ | २७ | २३ | ३३ | ४२ | ४१ | ३१ | रेखा |

## खण्डत्रय या अवस्थात्रय

प्रथमखण्ड = बाल्यावस्था    १२ + १ + २ + ३

द्वितीय खण्ड = युवावस्था    ४ + ५ + ६ + ७

तृतीयखण्ड = अन्तिमावस्था    ८ + ९ + १० + ११

मीन राशि से चार राशियों का एक २ खण्ड होता है। इन्हीं राशियों की रेखाओं का योग करके जीवन का शुभाशुभ स्थूलतया देखा जाता है। विशेष बात यह है कि अष्टम, द्वादश भाव की राशि रेखा इस खण्डत्रय में ह्रास (योग नहीं) की जाती है।

यथा—(१) १२ + १ + २ = ३३ + ४२ + ४१ = ११६

(२) ४ + ५ + ६ + ७ = ३२ + २६ + ३८ + २६ = १२२

(३) ८ + ९ + १० = ३३ + ३४ + २७ = ९४

योग ३३२

प्रथमावस्था में ११६ रेखा हैं। अतः बाल्यावस्था सुख पूर्वक व्यतीत होगी। क्योंकि सलग्न सप्तग्रहों की सम्पूर्ण रेखा में ३३२ हैं इनके खण्डत्रय करने से ८३ रेखायें हुईं। स्थूलतः इनसे अल्प में कष्टादि होते हैं। द्वितीय अवस्था (युवावस्था) में विशेष सुख क्योंकि १२२ रेखायें हैं। तृतीयवस्था की रेखायें ९४ खण्डैक रेखाओं (८३) से अधिक हैं अतः इस अवस्था में भी सुख रहेगा।

ग्रहों के अनुसार भी इन खण्डों का फल-विधान करना चाहिये। जिस खण्ड में पाप और शुभग्रह दोनों हों तो मिश्रितफल (शुभाशुभ) शुभग्रहों से शुभ, पापग्रहों से अशुभ फल जानना चाहिए।

यथा—

नाशः सप्तेन्दुरेखायामष्टादशभिर्धनक्षयः ।
नन्देन्दुभिः कुबुद्धित्वं बन्धुपीडा च जायते ॥
विंशत्या व्ययकलहौ कुनेत्रैः हृदि दुःखदा ।
नेत्रनेत्रैः भवेतां वै सदा दैन्यपराभवौ ॥
धर्मार्थहानिस्त्रियमैः सिद्धैः धनहृतिर्भवेत् ।
पंचनेत्रैः हस्तागतं धनं नाशयति क्षणात् ॥
उत्कृत्या क्लेशमाप्नोति समता सप्तनेत्रकैः ।
अष्टाविंशतिभिर्द्रव्य-लाभं सौख्यं भवेत्सदा ॥
नन्दाक्षिभिर्धनाप्तिः स्यात्सुखं पूजां च विन्दति ।
त्रिंशत्या मानसम्प्राप्तिरत ऊर्ध्वं शुभाधिकम् ॥

भाषा—१७ रेखा में हानि, १८ रेखा में धननाश, १९ रेखा में कुबुद्धि और वन्धु पीड़ा, २० रेखा में अधिक खर्च और कलह, २१ रेखा में हृद्रोग २२ रेखा में दीनता और पराभव, २३ रेखा में धन और धर्म की हानि,२४ रेखा में धनहानि, २५ रेखा में शीघ्र ही हस्तगत धन का नाश, २६ रेखा में क्लेश, २७ रेखा में समता (शुभाशुभ), २८ रेखा में द्रव्यलाभ और सुख, २९ रेखा में धनलाभ, सुख, मान प्राप्ति, ३०रेखा में सन्मान प्राप्ति और इससे अधिक रेखा में अधिक सुख होता है।

उदाहरणः—द्वादशभावस्थ रेखा चक्र में देखिये; प्रथमावस्था(बाल्यावस्था) में धर्म, पिता, राज्य, व्यापार, लाभ शुभकार्य में व्यय आदि का पूर्ण सुख होगा । द्वितीयावस्था ( युवावस्था ) में शारीरिक सुख, आर्थिक संकट, भाई का सुख, नौकर चाकर का सुख, मित्र-सुख साधारण, जायदात सुख साधारण, मातृ क्लेश होगा। तृतीयावस्था ( वृद्धावस्था ) पुत्र सुख, शत्रु अधिक परन्तु विजय, स्त्री सुख साधारण, शारीरिक कष्ट, धन धर्म की हानि होगी ।

धन भाव में २६ रेखा हैं और धनभाव द्वितीयावस्था में आता है अतः 'उत्कृत्या क्लेशमाप्नोति' अर्थात् २६ रेखा में कष्ट। तत्त्व यह कि द्वितीयावस्था में आर्थिक संकट रहेगा। २३ रेखा में धन धर्म की हानि होती है, अष्टम भाव शरीर के कष्टाकष्ट का द्योतक होता है अतः अन्त्यावस्था में धन, और शारीरिक कष्ट होगा।

## विशेषता

यद्यद्भावे चाखिलानां ग्रहाणां,
रेखायोगोऽष्टाशिवसंख्याधिकं यत्।
तत्तद्भावानां फलं सौम्यसंज्ञं,
न्यूनं कष्टं प्रोक्तमाचार्यवर्यैः॥

भाषा—जिस भाव में सभी ग्रहों के अष्टकवर्ग रेखाओं का योग (जोड़) २८ रेखा या इससे अधिक हो; उस भाव का फल शुभ होता है और २८ रेखा से कम में कष्टादि होते हैं। ऐसा श्रेष्ठ आचार्यों ने कहा है।

पृष्ठ २९१ में अंशायु द्वारा इस जातक की आयु ५९ वर्ष ८ मास के करीब है। स्थूलतः २०, २० में उक्त खण्डत्रय (त्र्यावस्था) के फल होंगे। इसी प्रकार रेखा योगों से प्रथम शुभाशुभ परिणाम जान लेना चाहिए। अब इस अष्टक वर्ग द्वारा गोचर-फल का विधान लिखा जाता है।

कष्टं स्यादेकरेखायां द्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत्।
त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिः समतां वदेत्॥
पंचभिश्च वदेत्सौख्यं षड्भिश्चैव धनागमः।
सप्तभिः परमानन्दमष्टभिः सर्वसंपदम्॥

भाषा—१ रेखा में कष्ट; २ रेखा में धनहानि, ३ रेखा में क्लेश, ४ रेखा में समफल, ५ रेखा में सुख, ६ रेखा में धनलाभ, ७ रेखा में

परम आनन्द का समय, ८ रेखा में सर्व प्रकार का सुख होता है।

यथा गोचर में सूर्य का फल देखना है; तो पहिले यह देखना चाहिए कि सूर्य कौन राशि में है और वह राशि जन्म-चक्र में किस भाव की है। और सूर्याष्टक-वर्ग में उस राशि की कितनी रेखा हैं तो उक्त फल के अनुसार फल कहना चाहिये।

अष्टक-वर्ग के अनुसार गोचर-फल जानने के लिये संवत् १९९५ कार्तिक शुक्ल ८ चन्द्रवार का गोचर-चक्र लिखा जाता है। इस उदाहरण से प्रत्येक ग्रहों के गोचर-फल का अनुसन्धान हो जायगा। इसमें इष्टकाल की कोई आवश्यकता नहीं। केवल यह देखना चाहिये कि कौन राशि पर कौन ग्रह है।
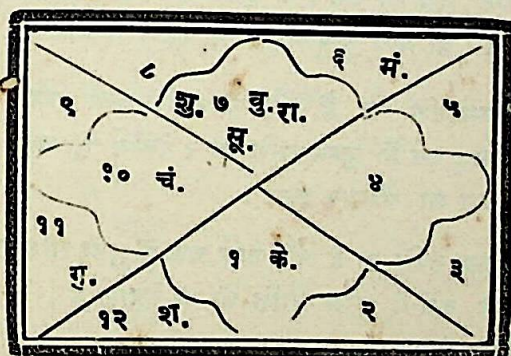
सूर्य तुला राशि का है जन्म चक्र ( पृष्ठ ९७ ) में तुला राशि सुख भाव की है। सूर्याष्टकवर्ग में सभी ग्रहों की रेखा में तुला राशि की ३ रेखा हैं 'त्रिभिः क्लेशं विजानीयात्' के अनुसार मातृकष्ट, मित्रकष्ट, सुख की हानि, सवारी कष्ट, शारीरिक कष्ट, देशाटन, मानसिक विकलता आदि होगी।

चन्द्र मकर राशि का है जन्म चक्र में मकर राशि सप्तम भाव की है चन्द्राष्टक वर्ग में मकर राशि पर सभी ग्रहों की रेखायें ५ हैं अतः वस्त्रादि की प्राप्ति, सज्जनों से प्रेम विद्या एवं धनागम, होगा।

नोट—यह जातक अभी ५॥ वर्ष का है अतः स्त्री सुख नहीं लिखा गया।

मंगल कन्याराशि का है जन्म चक्र में कन्याराशि तृतीय भाव को है। भौमाष्टक वर्ग में कन्या राशि पर सभी ग्रहों की रेखायें ५ हैं। अतः भाई का सुख, नौकर चाकर का सुख, साहस के कार्य में सफलता आदि शुभफल होंगे।

बुध तुलाराशि का है, जन्म चक्र में तुला राशि सुख भाव की है। बुधाष्टक वर्ग में तुला राशि पर सभी ग्रहों की रेखायें ५ हैं, अतः मातृसुख, मित्रसुख, शारीरिक सुख होगा।

नोट—सूर्य एवं बुध का फल एक दूसरे के विपरीत है अतः फल में शुभाशुभ या अल्प सुख और अल्प कष्ट कहा जायगा।

गुरु कुम्भराशि का है और कुम्भराशि जन्म चक्र में अष्टम भाव की है गुर्वष्टक वर्ग में कुम्भ राशि की २ रेखायें हैं, अतः शारीरिक कष्ट के कारण धन का अपव्यय होगा।

शुक्र तुला राशि का है और जन्म चक्र में तुला राशि सुख भाव की है शुक्राष्टक वर्ग में तुला राशि की ४ रेखायें हैं। अतः माता, मित्रादि का सुख होगा।

शनि मीनराशि का है और मीनराशि जन्म चक्र में धर्म स्थान की है। शन्यष्टक वर्ग में मीन राशि की ३ रेखायें हैं अतः धार्मिक एवं भाग्योदय कारक परिस्थिति में अड़चन खड़ी होगी।

इसी प्रकार गोचर फल का विधान करना चाहिये। विशेषता यह है कि यदि ग्रह, गोचर काल में उच्च, स्वगृही, केन्द्री, त्रिकोणी क्यों न हो और रेखा ४ से कम हो तो कष्ट ही होगा। यदि कोई नीच, शत्रुगृही, त्रिकस्थ क्यों न हों और रेखा ४ से अधिक हों तो शुभ ही फल होगा।

## रेखा-विस्तृतफल

१— नाना रोग, दुःख, भय देशाटन
२— मनस्ताप, राजभय, चोर से हानि
३— मानसिक विकलता, यात्रा शारीरिक कष्ट
४— सुख और दुःख, धन का लाभ और व्यय
५— सन्तान सुख, सत्संगति, धनागम, विद्या
६— यश, धन, वाहन, साहस, विजय
७— सवारीसुख, धन एवं पदवृद्धि
८— राज्यसम्मान, सुखकारक समय

## शनि--गोचर--फल

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | स्थित | भाव | से | नवम | स्थान | द्वारा | पिता |
| चन्द्र | ,, | ,, | ,, | चतुर्थ | ,, | ,, | माता |
| भौम | ,, | ,, | ,, | तृतीय | ,, | ,, | भाई |
| बुध | ,, | ,, | ,, | चतुर्थ | ,, | ,, | पुत्र, धन |
| बुध | ,, | ,, | ,, | पंचम | ,, | ,, | विद्या, वृद्धि |
| गुरु | ,, | ,, | ,, | पंचम | ,, | ,, | पुत्र, धन |
| शुक्र | ,, | ,, | ,, | सप्तम | ,, | ,, | स्त्री |
| शनि | ,, | ,, | ,, | अष्टम | ,, | ,, | आयु .... ... |

इत्यादिकों का विचार करना चाहिए।

(१) पिता के विचार करने में सूर्य से नवम स्थान (राशि) की रेखा से सूर्याष्टकवर्गयोगपिण्ड में गुणाकर २७ से भाग दे; शेष समान (अश्विन्यादि) नक्षत्र या त्रिकोण नक्षत्र पर जब गोचर में शनि का भ्रमण होता है तब पिता को कष्ट होता है।

नोट —१–१०–१९ वां नक्षत्र त्रिकोण-नक्षत्र होता है

(२) दूसरा प्रकार यह है कि स्थानस्थितराशि (नवमादि) से अष्टम (राशि) की रेखा से सूर्याष्टकवर्ग योगपिण्ड में गुणाकर १२ से भाग दे; शेष

समान राशि या त्रिकोण राशि पर जब गोचर में शनि जाता है तब पिता आदि को कष्ट होता है।

नोट—पिता आदि जीवित न हो; तब पिता आदि तुल्य अन्य विशेष सम्बन्धी को कष्ट होता है।

## उदाहरण

(१) सूर्य मिथुन राशि (पृ. ९७) का है। मिथुन से नवम कुंभ है। सूर्याष्टक वर्ग में योगपिण्ड (पृ.३९३) १४६ है और सूर्याष्टकवर्ग में कुंभ राशि की २ रेखायें हैं। अतः १४६ × २ = २९२ हुआ। २९२ ÷ २७ = शेष २२ रहा; तो अश्विन्यादि २२ वं नक्षत्र श्रवण, एवं त्रिकोण नक्षत्र रोहणी, हस्त हुआ। अतः श्रवण, रोहणी, हस्त नक्षत्र पर जब शनि आयेगा; तब पिता को शारीरिक कष्ट होगा।

(२) सूर्य मिथुनराशि का है मिथुन से नवम कुंभ राशि। कुंभ राशि से अष्टम कन्या राशि हुई। सूर्याष्टक वर्ग में कन्या राशि की रेखा में ६ हैं। अतः योगपिण्ड १४६ × ६ = ८७६ हुआ। ८७६ ÷ १२ = शेष में शून्य १२ रहा (नोट—यदि शेष में शून्य हो तो १२ मानना चाहिये) अतः मीन एवं त्रिकोण राशि कर्क, वृश्चिक राशि पर जब शनि होगा तब पिता को कष्ट होगा।

इसी प्रकार नियम (२) से प्रत्येक अष्टम राशि द्वारा माता आदि का कष्ट राशि भ्रमण शनि एवं नियम (१) से नक्षत्र-भ्रमण शनि द्वारा जानना चाहिए।

## विशेषता

भौमाष्टक वर्ग में त्रिकोण-शोधन के उपरान्त जिस राशि पर अधिक रेखायें हों उस स्थान द्वारा पृथ्वी, मकान, स्त्री तथा परिवार की वृद्धि का विचार करना चाहिये।

## उदाहरण

(१) भौमाष्टकवर्ग में मेष की सबसे अधिक (३) रेखा त्रिकोण शोधन के उपरान्त उपलब्ध हुई हैं। भौम योग पिण्ड १२८ × ३ = ३८४

हुआ । ३८४÷२७=शेष ६ रहा । अतः अश्विन्यादि छठवां नक्षत्र आर्द्रा एवं त्रिकोण नक्षत्र स्वाती, शतभिषा नक्षत्र पर जब शनि आयेगा तब भूमि प्राप्ति, मकान, स्त्री एवं कुटुम्बवृद्धि होगी ।

## लग्नाष्टकवर्ग-द्वारा

सभी भावों का फल विधान किया जा सकता है । लग्नाष्टकवर्ग योग पिण्ड में तत्तद्भाव राशि रेखा से गुणा कर २७ से भागदे; शेष तुल्य नक्षत्र पर या त्रिकोण नक्षत्र पर शनि अधोलिखितानुसार फलविधान करेगा ।

### नियम

(१)—यदि उस भाव में कोइ ग्रह न हों तो अल्प कष्ट होता है ।

(२)—यदि शुभ ग्रह हो तो कोई अनिष्ट फल नहीं होता ।

(३)—यदि पापग्रह हो तो अधिक कष्टकर फल होता है

(४)—यदि शुभाशुभ दोनों ग्रह हों तो मिश्रितफल होता है ।

### उदाहरण

लग्नभाव—लग्नाष्टक वर्ग में योगपिण्ड ७३ है । लग्नराशि जन्म चक्र में कर्क है और कर्क की रेखा ३ एवं बुध शुक्र शुभग्रह हैं । ७३×३=२१९ हुआ । २१९÷२७= ३ शेष रहा । तो कृत्तिका एवं त्रिकोण नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ में जब शनि जायेगा । तब किसी प्रकार का अनिष्ट फल न होगा ।

इसी प्रकार सभी भावों का विचार करना चाहिये । विस्तृत विचार इस पुस्तक के द्वितीय भाग में लिखा जायगा ।

इत्यष्टकवर्ग–विवेकः

---

# भाव–विवेक

तन्वादिभावेषु शुभोदयेषु तद्भावनाथोपगतेक्षितेषु ।
तदुक्तभावस्थसमृद्धिरुक्ता न पापखेटेक्षितसंयुतेषु ॥
नीचस्थो रिपुराशिस्थः खेटो भावविनाशकः ।
मूलस्वतुंगमित्रस्थो भाववृद्धिकरो भवेत् ॥

भावों के विचार में सर्व प्रथम यह देखना चाहिये; कि उस भाव की शुभता कितनी है। उस शुभता के जानने के लिये कतिपय नियम नीचे लिखे जाते हैं।

(१) भावेश से वह भाव युक्त व दृष्ट है ?
(२) भावेश षड्वर्ग से वली या स्वगृही या उच्च या मूलत्रिकोणी है ?
(३) भावेश स्वनवांश या उच्च नवांश में है ?
(४) भाव पर अन्य शुभग्रह की दृष्टि या युति है ?
(५) भावेश त्रिकस्थ या त्रिकेश भावस्थ तो नहीं है ?
(६) भाव में नीच, अस्तंगत, वक्री, पापग्रहयुत व दृष्ट, शत्रुग्रह तो नहीं हैं ?
(७) भावेश नीच, अस्तंगत, वक्री, पापयुक्त वा पापदृष्ट, शत्रुग्रह युक्त तो नहीं हैं ?
(८) भावेश केन्द्र या त्रिकोण में है ?

उपर्युक्त नियमों से उस भाव की जितनी शुभता होगी; उतना ही उस भाव सम्बन्धी सुख होगा; अन्यथा कष्ट ।

## प्रथम–भाव

इस भाव—द्वारा शरीर का विचार होता है। कुछ योग शारीरिक गठन, रंग आदि के विषय में लिखे जाते हैं। और शरीर कष्ट का विवरण विंशोत्तरी महादशा के फल–विवेक तथा गोचर फल-विवेक आदि में लिखा जायगा। अस्तु; मेषादि राशि तथा सूर्यादिग्रहों के तत्त्वादि यहाँ प्रकट रूप में सूक्ष्मतया लिखे जाते हैं।

| राशि | तत्त्व | जलादि | राशि | तत्त्व | जलादि |
|---|---|---|---|---|---|
| मेष | अग्नि | पादजल | तुला | वायु | पादजल |
| वृष | पृथ्वी | अर्धजल | वृश्चिक | जल | पादजल |
| मिथुन | वायु | निर्जल | धन | अग्नि | अर्धजल |
| कर्क | जल | पूर्णजल | मकर | पृथ्वी | पूर्णजल |
| सिंह | अग्नि | निर्जल | कुम्भ | वायु | अर्धजल |
| कन्या | पृथ्वी | निर्जल | मीन | जल | पूर्णजल |

| ग्र. | तत्त्व | जलादि |
|---|---|---|
| सू. | अग्नि | शुष्क |
| चं. | जल | जल |
| मं. | अग्नि | शुष्क |
| बु. | पृथ्वी | जल |
| गु. | आकाश ( तेज ) | जल |
| शु. | जल | जल |
| श. | वायु | शुष्क |

इन राशि एवं ग्रहों के तत्त्व तथा जलादि जान कर शारीरिक गठन का अनुमान निम्न नियमों द्वारा करना चाहिये ।

(१) लग्न राशि कैसी है ? (२) लग्न में ग्रह कैसा है ?

(३) लग्नेश कैसा है ? (४) लग्नेश कैसी राशि में है ?

(५) लग्नेश के साथ कैसे ग्रह हैं ? (६) लग्न पर कैसे ग्रहों की दृष्टि है ?

(७) लग्नेश त्रिक में तो नहीं है ? (८) गुरु कैसा और लग्न से क्या सम्बन्ध है ?

नोट—सम्बन्ध चार प्रकार के हैं । अन्योन्याश्रय, परस्पर-दृष्टि, अन्यतर-दृष्टि, सहावस्थान; ये क्रमशः निर्बली होते हैं ।

अन्योन्याश्रय—एक दूसरे की राशि में। यथा लग्नेश सप्तम में, सप्तमेश लग्न में।

परस्पर-दृष्टि—एक दूसरे को पूर्णदृष्टि से देखना।

अन्यतर-दृष्टि—एक की दृष्टि हो दूसरे की न हो।

सहावस्थान—एक ही राशि में हों।

उपर्युक्त सभी बातों के अनुसन्धान से निम्न योगों द्वारा शारीरिक गठन जानना चाहिए।

(१) लग्न जलराशि, जलग्रह भी हो तो स्थूल शरीर होगा।

(२) लग्न और लग्नेश जलराशि में हो तो अतिस्थूल शरीर होगा।

(३) लग्न अग्निराशि और अग्निग्रह भी हो तो मनुष्य बली होगा; पर मोटा न होग ;।

(४) लग्न में अग्नि या वायुराशि हो, लग्नेश पृथ्वीराशि में हो तो साधारणतया हड्डी पुष्ट तथा दृढ़ होंगी।

(५) लग्न में अग्नि या वायुराशि हो तो हड्डी मोटी तो न ह गी; पर शरीर ठोस होगा।

(६) लग्न में अग्नि या वायुराशि हो, लग्नेश जलराशि में हो तो शरीर मोटा होगा।

(७) लग्न में वायुराशि और वायुग्रह भी हो तथा शनि लग्न में हो तो दुर्बल तथा तीक्ष्णबुद्धि वाला होगा।

(८) लग्न में पृथ्वीराशि, पृथ्वीग्रह भी हो तो नाटा तथा मजबूत होगा।

(९) लग्न पृथ्वीराशि तथा लग्नेश पृथ्वीराशि में हो तो हड्डी साधारणतया स्थूल तथा मजबूत होंगी।

(१०) लग्न पृथ्वीराशि, लग्नेश जलराशि में हो तो हड्डी मजबूत तथा मध्यम स्थूल शरीर होगा।

(११) लग्न पृथ्वीराशि, लग्नेश अग्नि या वायुराशि में हो तो आन्तरिक बलयुक्त, हड्डी मजबूत पर स्थूल शरीर न होगा।

(१२) लग्न में शुष्कग्रह हो तो शरीर कृश होगा ।

(१३) लग्न में निर्जलराशि हो तो शरीर कृश होगा ।

(१४) लग्नेश शुष्कग्रह के साथ या निर्जलराशि में हो तो शरीर कृश होगा ।

(१५) लग्नेश त्रिक में हो तोशरीर कृश होगा ।

(१६) लग्नेश का नवांशेश शुष्कग्रह के साथ हो तो शरीर कृश होगा ।

(१७) लग्न निर्जलराशि, पापयुक्त या दृष्ट हो तो शरीर कृश होगा ।

(१८) लग्न जलराशि, शुभग्रह हो तो शरीर स्थूल होगा ।

(१९) लग्नेश जलग्रह और बलवान् हो, शुभग्रह के साथ भी हो तो मजबूत शरीर होगा ।

(२०) लग्नेश जलग्रह तथा जलराशि में शुभग्रह से दृष्ट व युक्त हो तो मजबूत तथा मोटा शरीर होगा ।

(२१) लग्न शुभग्रह की राशि, लग्नेश का नवांशेश जलराशि में हो तो स्थूल शरीर होगा ।

(२२) लग्न में गुरु या जलराशिस्थ गुरु की दृष्टि हो या लग्न जलराशि हो या लग्न शुभदृष्ट या युक्त हो तो शरीर असाधारण स्थूल होता है ।

(२३) [क] लग्नेश शुष्कग्रह, शुष्कग्रह से युक्त, शुष्कग्रह के नवांश में [ख] या मिथुन या सिंह राशि में हो तो शुष्कदेह तथा दुर्बल शरीर होगा ।

## लग्न-नवांशेश द्वारा

यदि लग्न का नवांशेश सूर्य हो तो साधारण मोटा और चिपटा होगा ।

चन्द्र—उन्नतदेह, सुन्दरनेत्र, कुछ कृष्णवर्ण, सुन्दरकेश होंगे ।

भौम—कुछ नाटा, नेत्र कुछ लाल और मजबूत शरीर होगा ।

बुध—मध्यम उन्नत, नेत्रकोण लाल, शरीर की नसें निकली होंगी।

गुरु—कुछ पीले नेत्र, गम्भीर आवाज, छाती चौड़ी और ऊँची तथा शरीर मध्यम उन्नत होगा।

शुक्र—हाथ लम्बे, मुख स्थूल, सुन्दर चञ्चल नेत्र, विलासी, कंधा से नीचे का भाग स्थूल होता है।

शनि—आँख के नीचे का हिस्सा धँसा हुआ, दुर्बल शरीर; पर लम्बा, नसें और नख स्थूल, कमर से नीचे दुर्बलता होगी।

शुभ दृष्ट व युक्त होने से सुन्दर तथा पापदृष्ट व युक्त होने से कुरूप तथा शारीरिक कष्ट होता है।

लग्नाधिपोऽतिबलवानशुभैरदृष्टः,
केन्द्रस्थितः शुभखगैरवलोक्यमानः।
मृत्युं विधूय विदधाति स दीर्घमायुः,
सार्धं गुणैर्बहुभिरुर्जितराजलक्ष्म्या॥

लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, पापग्रहों से अदृष्ट हो, शुभग्रहों से दृष्ट हो तो दीर्घायु, गुणवान्, राजलक्ष्मी का सुख होता है।

नोट—शरीर सुखादि का विचार विंशोत्तरी-द्वारा-गोचर-द्वारा, अष्टम-भाव-द्वारा, षष्ठभाव-द्वारा, बालारिष्टादि-द्वारा, मारकेशादि-द्वारा, स्त्री की कुण्डली में भौमादि ग्रह द्वारा-पुत्र, भ्रातृ, पिता, माता आदि की कुण्डली-द्वारा प्रसंगवशात् लिखा जायगा।

## द्वितीय-भाव

इस भाव से धन सम्बन्धी विचार होता है। विशेष बात तो यह है; कि धनभाव से धन का सुख; लग्न से सौभाग्य; चतुर्थ भाव से सुख और पैतृकधन; पंचमभाव से राजा द्वारा लाभ और अकल्पित लाभ (सट्टा लाटरी आदि), सप्तम से वाणिज्य द्वारा लाभ; नवमभाव से भाग्योदय; दशम से व्यापारद्वारा लाभ; एकादश से लाभ और धनसंग्रह; गुरु से

द्रव्यसंचय, शुक्र से सांसारिक धनविषयक सुख होता है। उक्त सभी या अधिक योगों की शुभता से धनसुख; अन्यथा कष्ट होता है। प्रथम भाव-विवेक के ८ नियमों द्वारा प्रत्येक धन सुखादिकारक ग्रहों को पूर्वापर विचार कर लेना चाहिये।

यदि लाभेश दुर्बल या त्रिक या किसी अशुभ योग में हो; तो धनभाव प्रबल होने पर भी लाभ कष्ट-साध्य होता है; धनसंग्रह तो होगा; पर अनेकानेक कष्टों के साथ। इसी प्रकार एकादशभाव प्रबल हो और धनभाव निर्बल हो तो धनलाभ में सुगमता रहती है; परन्तु धनसंग्रह न होगा। प्रत्येक भावों में प्रथम भावेश की स्थिति, फिर भावस्थग्रह, फिर भाव पर दृष्टिग्रह का फल होता है। ध्यान रहे कि द्वितीय भाव में भौम, चतुर्थ में बुध, पंचम में गुरु, षष्ठ में शुक्र, सप्तम में शनि प्रायः निष्फल (अशुभ या दोषयुक्त) होते हैं। इसी प्रकार चन्द्र सूर्य के साथ; द्वितीय में भौम के साथ, चतुर्थ में बुध के साथ, पंचम में गुरु के साथ, षष्ठ में शुक्र के साथ, सप्तम में शनि के साथ निष्फल होता है। तात्पर्य यह कि यदि उक्त-ग्रह उक्त स्थानों में धनकारक होकर स्थित हों तो प्रायः निष्फल होते हैं।

धनेशे लाभसंयुक्ते लाभेशे धनलाभगे ।
तावुभौ केन्द्रगौ वापि धनवान् ख्यातिमान् भवेत् ॥

धनेश, लाभेश अन्योन्याश्रय या लाभेश लाभ में या धनेश, लाभेश केन्द्र या त्रिकोण में हों तो धनवान् एवं प्रसिद्ध होता है।

ध्यान रहे कि राजयोग होने से भी धनादि का सुख होता है। दरिद्रयोग, रेकायोगादि होने से धनसुखादि सम्बन्धी कष्ट होता है इनका विस्तृत विचार तो दूसरे भाग में लिखा जायगा। पर अल्प योग प्रस्तुत पुस्तक में भी लिख रहे हैं। अतः प्रथम दरिद्र योगादि लिखे जाते हैं क्योंकि दरिद्रयोग के न होने से एवं निर्बलता से; तथा अल्प शुभयोग धनकारक के होने से धनसुख अवश्य होता है।

# दरिद्र–योग

(१) रन्ध्रेश या लग्नेश गुरु हो, इस गुरु से भाग्येश (षड्वर्गद्वारा) निर्बली हो तथा अस्त या लाभेश केन्द्र में न हो और निर्बली हो; तो दरिद्र होगा।

(२) यदि गु., मं., बुध या शनि नीच या अस्त का होकर ५।६।८। ११।१२ वें भाव में हों तो दरिद्र होगा।

(३) शनि नवम में पाप-दृष्ट हो, सूर्य, बुध लग्न में हो, बुध नीच नवांश में हो तो दरिद्र होगा।

(४) गु. बु. शु. श. मं. ५।६।८।१०।१२ वें स्थान में किसी क्रम से हों और व्ययेश नीच या अस्त का होकर लग्नेश से बली हो तो दरिद्र होगा।

(५) शु. गु. चं. मं. नीच राशि में १।५।७।९।१०।११ इन भावों में किसी चार भावों में हों तो दरिद्र होगा। यह योग कन्या या मकर लग्न के जन्म में हो सकता है। अन्यत्र नहीं।

(६) कर्क लग्न में जन्म हो और नीच का गुरु हो; लग्न में चर नवांश हो तो दरिद्र होगा।

(७) गुरु ६।१२ वें भाव में हो पर स्वगृही न हो तो दरिद्र होगा।

(८) लग्न स्थिर, पापग्रह केन्द्र में या त्रिकोण में हों और एक भी शुभग्रह इन स्थानों में न हो तो दरिद्र होगा।

(९) रात्रि में जन्म, लग्न चरराशि, निर्बली शुभग्रह केन्द्र में, पापग्रह केन्द्र से अन्य भाव में हों तो दरिद्र होगा।

(१०) शुभग्रह केन्द्र में, पापग्रह धनभाव में हों तो दरिद्र होगा।

(११) सूर्य, चन्द्र एक ही भाव में एवं अन्योन्य नवांश में हों तो दरिद्र होगा।

(१२) रात्रि में जन्म, क्षीण चन्द्र से अष्टमभाव पापदृष्ट व पापयुक्त हो तो दरिद्र होगा।

(१३) रा. या के. से युक्त चन्द्र हो तो दरिद्र होगा।

(१४) लग्न या चन्द्र से चतुर्थ में पापग्रह हों तो दरिद्र या निर्धन होगा।

(१५) तुला का चन्द्र शत्रुनवांश में या नीच या शत्रुग्रह से दृष्ट हो तो दरिद्र होगा।

(१६) श. शु. अन्योन्य दृष्ट या एक साथ हों, नीच या शत्रुनवांश में हों तो राजा भी धन रहित होगा।

## रेका—योग

( १ ) लग्नेश निर्बल हो और उस पर अष्टमेश की दृष्टि हो, गुरु अस्त हो तो रेकायोग होता है।

( २ ) सुखेश का नवांशेश अस्त हो एवं नवांशेश पर व्ययेश की दृष्टि हो तो रेकायोग होता है।

( ३ ) सुखेश पर षष्ठेश की दृष्टि; भाग्येश, रन्ध्रेश पंचम में, लग्नेश नीच का हो तो रेकायोग होता है।

( ४ ) त्रिक में शुभग्रह, केन्द्र, त्रिकोण में पापग्रह, लाभेश निर्बली हो तो रेकायोग होता है।

( ५ ) लग्नेश पापयुक्त, गु. शु. अस्त, सुखेश पापयुक्त, अस्त हो तो रेकायोग होता है।

( ६ ) पापग्रह—१।२।३।४।५।७।९।१०।११ वें भाव में हो तथा नीच ग्रह, शत्रुग्रह, पापग्रह की दृष्टि हो तो रेकायोग होताहै। यदि उक्त नौ भावों में एक पापग्रह हो तो बाल्यावस्था में, दो पाप ग्रह हों तो मध्यावस्था में, तीन पापग्रह हों तो वृद्धावस्था में रेका-योग का फल होगा।

रेका योगमें विद्याहीन, धनहीन, दरिद्र, कामी, क्रोधी, झगड़ालू, स्त्री पुत्रादि विषयक कष्ट, कुमार्गी तथा जातिद्रोही होता है।

कुछ योग सरलता के लिये आगे लिखे जाते हैं। इनमें जिसके धनयोग या दरिद्रयोग अधिक होंगे; वैसा ही धनसुख या कष्ट होगा।

## धन-योग

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| लग्नेश | धनेश | योग | सुखेश— | पुत्रेश | योग |
| ,, | सुखेश | ,, | ,, | भाग्येश | ,, |
| ,, | पुत्रेश | ,, | ,, | राज्येश | ,, |
| ,, | भाग्येश | ,, | ,, | लाभेश | ,, |
| ,, | राज्येश | ,, | पुत्रेश | भाग्येश | ,, |
| ,, | लाभेश | ,, | ,, | राज्येश | ,, |
| धनेश | सुखेश | ,, | ,, | लाभेश | ,, |
| ,, | पुत्रेश | ,, | भाग्येश | राज्येश | ,, |
| ,, | भाग्येश | ,, | ,, | लाभेश | ,, |
| ,, | राज्येश | ,, | राज्येश | लाभेश | ,, |
| ,, | लाभेश | ,, | | | |

## दरिद्र-योग

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| षष्ठेश | लग्नेश | योग | रन्ध्रेश | व्ययेश | योग |
| ,, | धनेश | ,, | व्ययेश | लग्नेश | ,, |
| ,, | तृतीयेश | ,, | ,, | धनेश | ,, |
| ,, | सुखेश | ,, | ,, | तृतीयेश | ,, |
| ,, | पुत्रेश | ,, | ,, | सुखेश | ,, |
| ,, | सप्तमेश | ,, | ,, | पुत्रेश | ,, |
| ,, | रन्ध्रेश | ,, | ,, | सप्तमेश | ,, |
| ,, | भाग्येश | ,, | ,, | भाग्येश | ,, |
| ,, | राज्येश | ,, | ,, | राज्येश | ,, |
| ,, | लाभेश | ,, | ,, | लाभेश | ,, |
| ,, | व्ययेश | ,, | | | |

कुण्डली में उपर्युक्त धनयोग, दरिद्रयोग दोनों के योग जिसके अधिक मिलेंगे; उसका वैसा ही फल होगा। साथ २ इनका बलाबल का भी (षड्वर्ग द्वारा) विचार कर लेना चाहिये।

## विशेषधन-योग

लग्नायधनभाग्येशाः परमोच्चांशसंयुताः।
वैशेषिकांशगा वापि तदा कोटीश्वरो भवेत् ॥

(१) लग्नेश, धनेश, भाग्येश, लाभेश परमोच्चांश में हों या वैशेषिकांश में हों तो करोड़पति होगा।

दिनेश्वरकरच्छन्ने धनेशे नीचराशिगे।
पापषष्ट्यंशसंयुक्ते ऋणग्रस्तो भवेन्नरः ॥

(२) धनेश नीच तथा सूर्य से अस्त हो, पापषष्ट्यंश में हो तो ऋणग्रस्त होता है।

(३) धनेश धनस्थ या दशमस्थ होकर बली हो तो धन का सुख होता है।

(४) सुखेश—भाग्येश धनभाव में हो तो आजन्म सुखी और धनी होता है।

धर्मेशलाभेशधनेश्वराणामेकोऽपि शातद्युतिकेन्द्रवर्ती।
स्वयं च लाभाधिपतिः गुरुश्चेदखण्डसाम्राज्यपतित्वमेति ॥

(५) धनेश, भाग्येश, लाभेश चन्द्र से केन्द्र में हों तथा इस योग में लाभेश गुरु हो तो उत्तम धन सुख होता है यह योग वृष, कुंभ लग्न वाले को लागू होगा।

(६) लग्न या चन्द्र से उपचय (३।६।१०।११) स्थान में बु. गु. शु. एक साथ या अलग २ तीन या दो या एक ही ग्रह हो तो न्यूनाधिकता से धनसुख अवश्य मिलेगा।

## कुटुम्ब-विचार

इस धन भाव से कुटुम्ब का भी विचार होता हैं। सरलता के लिये कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं।

( १ ) यदि दिन में जन्म हो और—

सूर्य—विषम राशि में हो तो पिता का सुख
चन्द्र—सम ,, ,, मातुलानी ,, ,,
शुक्र—सम ,, ,, माता ,, ,,
शनि—विषम ,, ,, चाचा ,, ,, ... ...
होता है अन्यथा कष्ट होता है।

( २ ) यदि रात्रि में जन्म हो और—

सूर्य—विषम राशि में हो तो चाचा का सुख
चन्द्र—सम ,, ,, माता ,, ,,
शुक्र—सम ,, ,, मातुलानी ,, ,,
शनि—विषम ,, ,, पिता ,, ,, ... ...
होता है अन्यथा कष्ट होता है।

## तृतीय-भाव

इस भाव से भाई तथा बहिन का विचार किया जाता है। परन्तु बड़े भाई व बड़ी बहिन का विचार एकादशभाव से किया जाता है। मंगल भ्रातृकारक ग्रह है।

( १ ) तृतीयभाव में शुभग्रह हो या शुभग्रह की दृष्टि हो या तृतीयेश वली हो अथवा तृतीय भाव के दूसरे बारहवें भाव में शुभग्रह हो या तृतीयेश उच्च का हो या तृतीयेश के साथ शुभग्रह हो या शुभग्रह की दृष्टि हो तो भ्रातृसुख होता है।

( २ ) तृतीयेश और भौम शुभग्रह युक्त व दृष्ट केन्द्र या त्रिकोण में हो तो कई भाई का सुख होता है।

( ३ ) तृतीयेश या भौम या दोनों युग्मराशि में हों तो कई बहिनों का सुख होता है।

( ४ ) तृतीयेश या भौम ३।६।१२ वें भाव में हो और शुभग्रह की दृष्टि न हो तो भ्रातृसुख नहीं होता।

( ५ ) तृतीयेश या भौम या दोनों के साथ श., रा., के. हों तो भ्रातृ कष्ट होता है।

( ६ ) सिंह का सूर्य नवम भाव में हो तो भ्राता का नाश होता है। यदि जीवित रहे तो वह बड़ा प्रसिद्ध होता है।

( ७ ) यदि वलवान् धनेश अष्टम में, भौम षष्ठेश के साथ पापग्रह से युक्त हो तो सौतेले भाई का योग होता है।

( ८ ) तृतीय में सूर्य हो तो ज्येष्ठभ्राता, शनि हो तो छोटे भाई को कष्ट होता है।

## भ्रातृ–जन्म–समय

भ्रातृस्थानेशतद्राशितद्भावस्थद्युचारिणाम्।
मध्ये बालसमेतस्य दशा सोदरवृद्धिदा॥

( १ ) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थराशीश की दशा में भ्रातृ-(छोटे) जन्म होता है।

( २ ) लग्नस्पष्ट में दशमभावस्पष्ट जोड़े; जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आवे तब भाई या वहिन का जन्म होता है।

## भ्रातृ–प्रेम

भ्रातृ शब्द से भाई एवं बहिन दोनों का बोध होता है। लग्नेश, तृतीयेश का एक तत्त्व या मित्रतत्त्व हो, या पञ्चधा मैत्री द्वारा लग्नेश तृतीयेश की मित्रता हो तो छोटे भाई से प्रेम रहेगा।

( २ ) लग्नेश-भाग्येश का एक तत्त्व या पञ्चधामैत्री-द्वारा लग्नेश, लाभेश का मित्रता हो तो बड़े भाई से प्रेम रहेगा।

( ३ ) लग्नेश, तृतीयेश अन्योन्य केन्द्र या त्रिकोण में हों तो भ्रातृ-प्रेम होता है। यदि अन्योन्य त्रिक में हो तो शत्रुता रहती है।

नोट—इसी प्रकार स्त्री-पुरुष का, पिता-पुत्र का, मित्र-मित्र का प्रेम विचार करना चाहिये।

( ४ ) यदि दोनों भाईयों का चन्द्रराशीश मित्र हो या मित्र तत्त्व हो तो प्रेम रहेगा।

नोट—लग्नेश-तृतीयेश की मित्रता का योग (नैसर्गिक द्वारा) किसी भी राशि में लग्न होने से नहीं होती। अतः यही कारण है कि प्रायशः भाईयों में मेल नहीं रहता।

## भ्रातृ-कष्ट-समय

लग्नेशस्फुटतो विशोध्य सहजस्थानाधिपस्य स्फुटम् ।
तन्नक्षत्रगते शनौ तु मरणं स्यात्सोदराणां वदेत् ॥
तस्माद्धि स्फुटतस्तु मानगृहपं भौमं च संशोधिते ।
राशौ भानुसुते तथैव च चतुर्योगस्फुटांशेऽथवा ॥
चतुःस्फुटाक्रान्तदृगाणराशिं गते गुरौ सोदरनाशमाहुः ॥

( १ ) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट को घटावे। शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो; उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है।

( २ ) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे ( यथा ल.—तृ. = शे. । द. + मं. = यो. शे.—यो. = शे. ) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता हैं तब भ्रातृ-कष्ट होता है।

( ३ ) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो; उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृ-कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

भूसूनुस्फुटतो विशोध्य फणिनं शेषत्रिकोणे गुरौ।
जातस्यानुजनाशनं क्षितिसुतं राहुस्फुटाच्छोधयेत्॥
तद्राशिस्थनवांशकेऽमरगुरौ तज्ज्येष्ठनाशं वदेत्।

(५) भौम में से राहु को घटावे, शेष राशि के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब छोटे भाई को या बहिन को कष्ट होता है।

(६) राहु में से भौम को घटावे, शेष राशि में और शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब बड़े भाई या बहिन को कष्ट होता है।

(७) तृतीयभाव से केन्द्रस्थ और त्रिकोणस्थ पापग्रह की दशान्तर्दशा में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(८) लग्नेश, तृतीयेश की परस्पर शत्रुता (पंचधा मैत्री द्वारा) हो तथा तृतीयस्थ ग्रह निर्वलो हो, भौम त्रिक में हो; तो इनकी दशान्तर्दशा में भ्रातृ-नाश, भ्रातृ-कलह, धननाश इत्यादि अशुभ फल होते हैं।

(९) तृतीयेश और भौम पापग्रह की राशि में पापग्रह के साथ या दोनों में हो तो भाई या बहिन को कष्ट होता है।

(१०) तृतीयेश राहु या केतु के साथ त्रिक में हो तो बाल्यकाल ही में भाईयों का नाश होता है।

## भ्रातृद्वारा-धन-लाभ

तृतीयभाव से छोटे भाई, एकादश से बड़े भाई, मंगल भ्रातृ कारक, धन, भाग्य, चतुर्थ स्थान धनकारक हैं इनमें जैसा न्यूनाधिक शुभ योग तथा बलवान हो तो भाई द्वारा धन प्राप्त होता है। उक्त भ्रातृकारक

भावों से या लग्न में उक्त धनकारक भाव एवं भावेशों का शुभ सम्बन्ध होने से भाई का धन मिलता है।

## चतुर्थ-भाव

इससे माता, सवारी, गृहसुखादि का विचार होता है। माता का विचार चतुर्थ भाव से, चतुर्थेश से, दिन में जन्म हो तो शुक्र से, रात्रि में जन्म हो तो चन्द्र से भी होता है।

शुक्रे बलिष्ठे यदि वा शशांके सौम्येक्षिते शोभनभागयुक्ते।
चतुष्टये मातृगृहे बलाढ्ये मातुश्चिरायुः समुदाहरन्ति॥

(१) चन्द्र या शुक्र शुभनवांश में हो, इन पर शुभदृष्टि या युति हो या केन्द्र में हों, सुखभाव में शुभग्रह की युति या दृष्टि हो या सुखेश उच्च का हो तो मातृसुख होता है।

## बाल्यावस्था में मातृ-कष्ट-योग

(१) चन्द्र दो पापग्रहों के बीच में हो तो माता की मृत्यु शीघ्र होती है। प्रायशः यह योग ९ मास में मातृमृत्यु करता है।

(२) शनि पापराशि में पापदृष्ट, पापयुक्त हो तो शीघ्र मातृमृत्यु होती है।

(३) क्षीणचन्द्र नीचनवांश में हो तो मातृकष्ट होता है।

(४) चन्द्र से चतुर्थ में पापग्रह हो उसको शुभग्रह न देखे तो माता की मृत्यु होती है।

(५) सूर्य, चन्द्र सुखभाव में, शनि सप्तमभाव में हो और दोनों पापग्रह से दृष्ट हों या सुखेश के साथ हो तो मातृमृत्यु होती है।

(६) चन्द्र से दशम में सूर्य पापग्रह के साथ हो तो मातृमृत्यु होती है।

(७) सूर्य भौम रन्ध्रस्थान में हों और चन्द्र क्षीण हो तथा पापग्रह की दृष्टि हो तो मातृमृत्यु होती है।

(८) यदि चन्द्र, सूर्य; भौम या शनि के साथ षष्ठभाव में हो तो माता की मृत्यु होती है

(९) सू., मं., शनि सप्तमभाव में हो तो मातृकष्ट होता है

(१०) यदि क्षीण चं. रा. या केतु के साथ सप्तम में हो तो माता को दुःख होता है।

(११) चं.; सू. या शु. के साथ चतुर्थ में हो, भौम सप्तम में हो तो माता की मृत्यु १ सप्ताह में होती है।

(१२) शनि और भौम चन्द्र से सप्तम में हो तो ७ या ८ मास में ही माता की मृत्यु होती है।

(१३) गुरु लग्न में, चन्द्र षष्ठ में हो, दोनों में या एक पर शनि की दृष्टि हो तो ३ सप्ताह में मातृमृत्यु होती है।

(१४) दिन में जन्म हो, भौम; शुक्र से त्रिकोण में हो, चन्द्र निर्बल होकर पापदृष्ट हो, शुभदृष्ट न हो; तो मातृमृत्यु होती है।

(१५) रात्रि में जन्म हो और शनि चन्द्र से त्रिकोण में हो और चन्द्र पापदृष्टियुत एवं शुभ दृष्टिहीन हो; तो माता की मृत्यु होती है।

(१६) भौम, शनि पापदृष्ट चतुर्थभाव में हों; तो मातृमृत्यु होती है।

(१७) चन्द्र से सप्तम शनि, अष्टम भाव में गुरु हो तो मातृमृत्यु होती है।

(१८) लग्न, चन्द्र पापग्रह से दृष्ट व युक्त तथा शुभग्रह से अयुक्त व अदृष्ट हो तो मातृमृत्यु होती है।

(१९) चन्द्र से ग्यारहवें पापग्रह हों तो माता को मृत्यु होती है।

(२०) रात्रि में जन्म हो और चन्द्र से त्रिकोण में शनि हो तो मातृमृत्यु होती है।

(२१) चतुर्थ या सप्तमभाव में पापग्रह हों और इनमें किसी के साथ चन्द्र हो तो मातृमृत्यु होती है।

(२२) दिन में जन्म हो और शुक्र तथा भौम पापयुक्त हो तो मातृमृत्यु होती है।

(२३) यदि चन्द्र से सप्तम, अष्टम, नवमभाव में पापग्रह हों तो मातृ-मृत्यु होती है; एवं पिता तथा बालक को भी अरिष्ट होता है।

(२४) लग्न, सप्तम, अष्टम में पापग्रह हों तो मातृमृत्यु होती है।

(२५) द्वितीय में शुभग्रह और लग्न, सप्तम, अष्टम में पापग्रह हों तो कुटुम्ब-क्षय होता है।

## मातृ-मृत्यु-समय

(१) चतुर्थभाव या चतुर्थेश या चन्द्रमा इन तीनों में से जो अधिक बली हो वह किस नवांश में है। यदि मेष के नवांश में तो १ वर्ष; वृष के नवांश में २ वर्ष; इसी प्रकार मीन के नवांश में १२ वर्ष में माता की मृत्यु होती है या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। यदि नवांशेश वक्री या वर्गोत्तम हो तो उस वर्ष के तिगुने वर्ष में माता को कष्ट या मृत्यु होती है। यदि वह वक्रीग्रह शुभदृष्ट या उच्च या मूल-त्रिकोणी हो तो नवांश अंक के चौगुने वर्ष में माता की मृत्यु होती है।

मार्तण्डस्फुटतो विशोध्य शशिनं तच्छेषराश्यंशके।
जीवे भानुसुते च मातृमरणं तत्कोणगे वा नृणाम् ॥

(२) सूर्यस्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे; तो शेष के उस राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि या गुरु होगा तब माता की मृत्यु होती है।

मातृलग्नेशपितृपाः केन्द्रकोणस्थिता यदि।
तद्दशान्तर्दशाकाले जनन्यास्त्वनुमृत्युदाः ॥

(३) 'लग्नेश, सुखेश, भाग्येश ये तीनों यदि केन्द्र या त्रिकोण या दोनों में हों तो इन ग्रहों की दशान्तर्दशा में पिता और पश्चात् माता की मृत्यु होती है।

(४) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह, सुखस्थग्रह, चतुर्थ-भावदर्शीग्रह; इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारीग्रह हो; उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है।

(५) चन्द्रराशि या चन्द्र नवांश; इनमें जो बली हो, उस राशि पर जब सूर्य आता है उसी मास में माता की मृत्यु होती है।

(६) सूर्यनवांशेश जिस नवांश में हो; उस राशि पर जब चन्द्रमा आता है। तब उसी (२$\frac{1}{4}$) दिनों में मातृमृत्यु का दिन जानना चाहिये।

(७) यदि पुत्रेश बली हो और लग्नेश, सुखेश और चन्द्रमा निर्बल हो तो दूसरे प्रसव के समय माता की मृत्यु होती है।

## वाहन-सुख

वाहनेश शुक्र होता है, सुखेश से वाहनसुख का विचार, शुक्र के चतुर्थ स्थान की शुभता से भी वाहन का विचार होता है।

(१) सुखेश, शुक्र एक साथ होने से नर-वाहन (पालकी आदि) की प्राप्ति होती है।

(२) सुखेश, लग्नेश, चन्द्रमा एक साथ हों तो अश्व की सवारी होती है।

(३) सुखेश, गुरु लग्न में हो तो अनेक प्रकार की सवारी होती हैं।

(४) धनेश लग्न में, राज्येश धनभाव में हो या सुखभाव में उच्च ग्रह हो तो उत्तमवाहन मिलता है।

(५) लग्नेश, सुखेश, भाग्येश में परस्पर केन्द्र-सम्बन्ध हो तो वाहन सुख होता है।

(६) लग्न, चतुर्थ, नवम में यदि सुखेश लग्नेश के साथ हो तो इनकी दशान्तर्दशा में वाहन-लाभ होता है।

(७) सुखेश, पुत्रेश का अन्योन्याश्रय योग हो तो अनेक सवारी का सुख होता है।

(८) सुखेश लग्नेश का अन्योन्याश्रय योग हो तो अनेक सवारी की प्राप्ति होती है।

(९) चतुर्थेश से; राज्येश या भाग्येश या धनेश का अन्योन्याश्रय का योग हो; तो मोटर आदि अच्छी सवारी मिलती है।

# पंचम-भाव

इस भाव से पुत्र का विचार होता है; पंचमस्थान, पंचमेश, गुरु शुभग्रह से दृष्ट व युक्त रहने से पुत्रसुख होता है।

(१) लग्नेश पंचम में, गुरु बलवान् हो तो पुत्रसुख होता है।

(२) पंचमभाव में वृष, कर्क, तुला राशि का शुक्र या चन्द्र हो या शुक्र, चन्द्र की दृष्टि हो परन्तु पापग्रहदृष्ट व युत न हों तो पुत्र सुख होता है।

(३) लग्न या चन्द्रमा से पंचमस्थान पर शुभग्रह हो या शुभग्रह की दृष्टि हो या अपने स्वामी से दृष्ट हो तो सन्तान योग होता है।

(४) बली गुरु लग्नेश से दृष्ट पंचम में हो तो सन्तान योग होता है।

(५) केन्द्रत्रिकोणेश शुभग्रह होकर पंचमस्थ हो तथा पुत्रेश दुर्बल न हो, त्रिक, पापयुक्त, अस्तंगत, नीच, शत्रुराशिस्थ न हो तो सन्तान योग होता है।

> पौत्रप्राप्तिरनङ्गभे सुतगृहात्सौम्यस्य राश्यंशके।
> तन्नाथे शुभखेटवीक्षितयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा॥

(६) एकादश भाव में शुभ ग्रह की राशि हो या लाभेश शुभयुक्त या दृष्ट होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो तो पौत्र (नाती) का सुख होता है।

(७) पुत्रभाव और पुत्रेश दोनों शुभग्रह के साथ या दृष्ट हो तो कई सन्तान होती हैं। यदि गुरु बली हो तो भी कई सन्तान होती हैं।

(८) लग्नेश, पुत्रेश एक साथ या दोनों की परस्पर दृष्टि हो या दोनों स्वगृही, मित्रगृही या उच्च के हों तो सन्तान अवश्य होती है।

(९) लग्नेश-पुत्रेश शुभयुक्त केन्द्र में हों और धनेश बली हो तो सन्तानयोग होता है।

(१०) लग्नेश, भाग्येश सप्तमस्थ हों या धनेश लग्न में हो तो सन्तान योग होता है।

(११) लग्न या चन्द्र इनमें जो वली हो उससे पंचम स्थान में यदि गुरु का वर्ग हो और शुभराशि भी हो या शुभदृष्ट हो तो सन्तान योग अवश्य होता है।

(१२) यदि पंचमस्थान में शुभग्रह हों या शुभग्रह से दृष्ट हो या उस भाव का स्वामी शुभग्रह हो तो द्वादश प्रकार के सन्तान में से किसी प्रकार का सन्तान सुख अवश्य होता है।

| | | |
|---|---|---|
| १ | क्षेत्रज | ( देवरादि वीर्य से ) |
| २ | गूढोत्पन्न | ( अन्य वीर्य से ) |
| ३ | सहोढ़ | ( गर्भिणी विवाहिता से ) |
| ४ | अधमप्रभव | ( अपने से नीच जाति की स्त्री से ) |
| ५ | कानीन | ( अविवाहिता से ) |
| ६ | पौनर्भव | ( विधवा से ) |
| ७ | दासीपुत्र | ( दासी से ) |
| ८ | दत्तकपुत्र | ( गोद लेने से ) |
| ९ | औरस | ( स्ववीर्य से ) |
| १० | पोष्य (अपविद्ध) | ( पड़ा हुआ मिलने से ) |
| ११ | क्रीतपुत्र | ( खरीदा हुआ ) |
| १२ | कृत्रिमपुत्र | ( माता पिता की आज्ञा बिना ) |

## सन्तान-प्रतिबन्धक-योग

(१) धन, मकर, कुंभ, मीन, कर्क का गुरु पंचम में हो तो प्रायः पुत्र का अभाव रहता है। मीन का गुरु अल्पसंतान तथा धनु का का गुरु बहुत चिन्ता के बाद १ पुत्र शुभदृष्ट या युक्त होने से होता है। कर्क और कुंभ में तो प्रायः सन्तान का अभाव ही रहता है।

(२) तृतीयेश; लग्न या धन या सहज या पुत्रभाव में हो तो सन्तान की मृत्यु होती है।

(३) पंचमेश, धनेश निर्बल हो और पंचमभाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो अनेक स्त्री होने पर भी संतान नहीं होती ।

(४) लग्नेश, सप्तमेश, पुत्रेश, और गुरु के निर्बल होने पर संतान नहीं होती ।

(५) दशम में चन्द्र, सप्तम में शुक्र, एक से अधिक पापग्रह चतुर्थ में हों तो जीवितावस्था में ही सभी संतान की मृत्यु होती है ।

(६) बुध, शुक्र सप्तम में, गुरु पंचम में, पापग्रह, चतुर्थ में चन्द्र से अष्टम में पापग्रह हो तो कुल ध्वंश योग होता है ।

लग्नसप्तमधर्मान्त्यराशिगाः पापखेचराः ।
सपत्नराशिवर्गस्थाः वंशविच्छेदकारकाः ॥

(७) लग्न, सप्तम, नवम, द्वादशभाव में पापग्रह हों और शत्रु के वर्ग में हों तो वंशविच्छेद योग होता है ।

(८) चं. गु. लग्न में, सं. श. से दृष्ट हो तो वंशविच्छेद योग होता है ।

(९) चं. पचम में हो और सभी पापग्रह १।७।१२ वें भाव में हों तो सन्तान तथा स्त्री से हीन होगा ।

## पुत्रोत्पत्ति-वेला

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते राश्यंशकोणे गुरौ,
पुत्राप्तिः ........................................ ।

(१) लग्नेश, पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े; योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोणराशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान होती है ।

जीवाच्चन्द्रमसो विलग्नभवनात्पुत्रप्रदं पंचमम्,
तस्माद्धर्मगृहं च तत्पतिदशा भुक्तौ सुताप्तिं वदेत् ॥

(२) चं., ल., गु. इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

(३) पुत्रेश, द्यूनेश को जोड़कर जो नक्षत्र आवे उसकी दशान्तर्दशा में पुत्रोत्पत्ति होती है।

(४) लग्नेश, सप्तमेश, पुत्रेश को जोड़े, उस योगफल के नक्षत्र की महादशा में जब पुत्रस्थग्रह या पंचमभाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह की अन्तर्दशा में या पुत्रेश की अन्तर्दशा में पुत्र-जन्म होता है।

(५) लग्नेश जब गोचर में पंचमेश के साथ हो तब; या लग्नेश जब उच्च का गोचर में होता है तब; या लग्नेश जब गोचर में स्वगृही होता है तब; या लग्नेश जब गोचर में पंचमभाव पर आता है तब; या पुत्रेश जन्मस्थराशि में गोचर में हो तब पुत्र-जन्म होता है।

(६) लग्नेश, सप्तमेश, पंचमेश, गुरु और जो ग्रह पंचमभाव को शुभदृष्टि से देखते हों, जो ग्रह पंचम में हो उनकी दशान्तर्दशा पुत्रोत्पत्ति होती है।

(७) पंचमेश और द्यूनेश के साथ वाले ग्रह और उन पर शुभदृष्टि डालने वाले ग्रह की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

(७) पंचमेश, पंचमस्थग्रह, गुरु, पंचमभाव पर दृष्टि वाला ग्रह। इन चारों को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में, या उस राशि के नवांश में जब गोचर का गुरु होता है तब पुत्र होता है। परन्तु यदि उस राशि या नवांशराशि का शनि गोचर में हो तो पुत्रक्लेश होता है।

(८) उक्त (नं. ७) के चारों ग्रहों की दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा में सन्तान सुख होता है। परन्तु यदि वे ग्रह त्रिकेश हों या त्रिकस्थ हों तो सन्तानकष्ट होता है।

(९) पंचमेश, गुरु, पंचमेशस्थराशिस्वामी, पंचमेश का नवांशेश,

गुरुस्थराशिस्वामी, गुरु का नवांशेश इन छह ग्रहों में जो वली (षड्वर्ग द्वारा) हो; उसकी दशान्तर्दशा में सन्तानसुख होता है।

## षष्ठ-भाव

षष्ठ भाव से शत्रु आदि का विचार होता है

पत्नी षण्ढत्वमेति क्षतभवनगतं कामपे सासुरेज्ये,
भौमे मन्देन दृष्टे रिपुभवनगतं शत्रुभार्यामुपैति।
सौम्यैर्दृष्टे युते वा न भयमरिजनाच्छत्रुभे जन्मलग्नात्,
पापैः शत्रुक्षतादिव्रणभयविपुलं जायते लाञ्छनं वा ॥

(१) सप्तमेश; शुक्र के साथ षष्ठभाव में हो तो स्त्री षण्ढ ( नपुंसक ) होती है।

(२) मंगल षष्ठभाव में शनि से दृष्ट हो तो शत्रुभार्या मिलती है।

(३) षष्ठभाव शुभग्रह युक्त व दृष्ट हो तो शत्रु से भय नहीं होता।

(४) षष्ठभाव पापग्रहयुत या दृष्ट हो तो शत्रुभय, मिथ्यापवाद, व्रणादि से शारीरिक तथा मानसिक कष्ट होता है।

(५) षष्ठेश या भौम बलवान हों और इनकी निधनेश पर दृष्टि हो और लग्नेश वली हो तो शत्रुद्वारा धनलाभ होता है।

(६) षष्ठेश भाग्येश की शत्रुता ( पंचधा मैत्री द्वारा ) हो और षष्ठेश नवम में हो तो शत्रुद्वारा धनलाभ होता है।

(७) षष्ठेश, धनेश एक साथ शुभग्रह से दृष्ट व युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोण में हों तो शत्रुद्वारा धनलाभ होता है।

(८) लग्नेश, षष्ठेश और चन्द्रमा एक साथ हो तो जलभय, हैजा, जलोदर रोग होता है। यदि भौम भी साथ में हो तो चेचक, घाव, फोड़ा या युद्ध में शारीरिक क्लेश होता है।

(९) लग्नेश, षष्ठेश के साथ गुरु हो तो मनुष्य प्रायः आरोग्य रहता है।

(१०) लग्नेश, षष्ठेश शुक्र के साथ हों तो स्त्री को शारीरिक कष्ट होता है।

(११) लग्नेश, षष्ठेश के साथ शनि हो तो वातव्याधि, उदरविकार, अनपच होती है।

(१२) लग्नेश, षष्ठेश, राहु या केतु के साथ हो तो सिरव्यथा, वातव्याधि, चोर, अग्नि, शत्रु से भय होता है। यदि उक्त योग केन्द्र में हो तो कारागार होता है।

(१३) षष्ठेश-बुध के साथ लग्न में बैठा हो तो गुह्येन्द्रियरोग होता है।

(१४) षष्ठेश शनि के साथ लग्न में हो तो किसी कठिन व्याधि से गुह्येन्द्रिय में चीर फाड़ होती है।

(१५) षष्ठेश भौम के साथ हो तो चेचक, फोड़ा आदि होता है।

(१६) षष्ठ स्थान से भौम का सम्बन्ध किसी प्रकार से हो तो आकस्मिक घटना या चीर फाड़ ( आप्रेशन ) से शारीरिक कष्ट होता है।

(१७) षष्ठ स्थान से गुरु का कोई सम्बन्ध हो तो रोगादि से शीघ्र ही छुटकारा मिलता है।

(१८) षष्ठ स्थान से शुक्र का कोई सम्बन्ध हो तो आहार विहार की असावधानी से रोग होता है।

(१९) षष्ठ स्थान से शनि का कोई सम्बन्ध हो तो उदर विकार से कष्ट होता है।

(२०) षष्ठेश किसी पापग्रह के साथ लग्न में हो तो व्रण, पंचम में हो तो पुत्र या स्वयं जातक को व्रण-कष्ट। इसी प्रकार षष्ठेश पापग्रह के साथ चतुर्थ में माता को, सप्तम में स्त्री को, नवम में मामा को, तृतीय में अनुज को, एकादश में ज्येष्ठज को व्रणादि होते हैं, अष्टम में स्वयं जातक को ही गुदारोग या व्रण (भगन्दर) होता है।

(२१) लग्नेश भौम के साथ त्रिक में हो तो गठियावात, शस्त्र व व्रण होता है। इसी प्रकार लग्नेश बुध के साथ पित्तविकार; गुरु के साथ आमाशय विकार; शुक्र के साथ क्षयरोग; शनि, रा, के, के साथ चोर या म्लेच्छादि से कष्ट होता है।

(२२) ३।६।११ वें भाव में भौम, शनि, राहु एक साथ या अलग २ हों तो शुभ एवं कष्टनिवारक योग होता है।

## सप्तम–भाव

इस भाव से प्रथम स्त्री का विचार होता है। द्वितीय स्त्री का विचार सप्तम से षष्ठभाव अर्थात् द्वादशभाव से; इसी प्रकार तृतीय स्त्री का विचार द्वादश से षष्ठ अर्थात् पंचमभाव से; चतुर्थ स्त्री का विचार पंचम से षष्ठ अर्थात् दशमभाव से; पंचम स्त्री विचार दशम से षष्ठ अर्थात् तृतीयभाव से होता है। इसी प्रकार प्रत्येक के षष्ठस्थान द्वारा ५ से अधिक स्त्रियों का भी विचार होता है।

प्रथम स्त्री के भाई का विचार नवम स्थान से, द्वितीय स्त्री के भाई का द्वितीय स्थान से इत्यादि। प्रत्येक स्त्री-स्थान से तृतीयस्थान द्वारा भाई का विचार करना चाहिए।

स्त्री रंग, रूप, स्थूलादि का विचार प्रथमभाव की तरह राशि एवं ग्रह के तत्त्वादि जान कर करना चाहिये।

## स्त्री–प्राप्ति

दुःस्थे कामपतौ तु पापगृहगे पापेक्षिते तद्युते,
तज्जायाभवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा।

(१) सप्तमेश त्रिक में हो, पापगृह में, पापयुक्त व दृष्ट, अस्त, नीच का हो तो स्त्री का पूर्ण सुख नहीं होता; अन्यथा पूर्ण सुख होता है।

(२) सप्तमेश व्यय में, लग्नेश, चन्द्रराशीश सप्तम में हो तो विवाह नहीं होता।

(३) शुक्र, चन्द्र एक साथ जिस भाव में हो उससे सप्तमभाव में शनि, भौम एक साथ हो तो विवाह नहीं होता।

(४) लग्न, सप्तम, व्यय में पापग्रह और पुत्रस्थचन्द्र निर्बली हो तो विवाह नहीं होता या स्त्री वन्ध्या होती है।

(५) व्यय और सप्तम में दो या अधिक पापग्रह बैठे हों तो स्त्री, पुत्र का सुख नहीं होता।

(६) लग्न या चन्द्र से सप्तमभाव शुभदृष्ट या युक्त या स्वामिदृष्ट हो तो विवाह का सुख होता है।

(७) शुक्र और भौम एक साथ पंचम या सप्तम या नवमभाव में हो तो विवाह नहीं होता।

## अमुक दिशा में विवाह

(१) शुक्र से सप्तमेश की जो दिशा (पृ. १६२ चक्र) हो उसी दिशा में विवाह होता है।

(२) सप्तम में यदि ग्रह हो तो उस भाव की राशि की जो दिशा हो या सप्तमभाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों की स्थिति-राशियों की दिशा में विवाह होता है। यदि वह स्थिरराशि हो तो नजदीक विवाह होगा। यदि चरराशि हो तो दूर विवाह होगा। यदि द्विस्वभाव हो तो अनतिदूर ( थोड़ा दूर ) विवाह होगा।

## विवाह-वेला

लग्नानङ्गपतिस्फुटैक्यगृहगे जीवे विवाहं वदेत्,
चन्द्राधिष्ठिततारकवधपयोरैक्यांशके वा तथा।

(१) लग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े; उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

कलत्रनाथस्थितभांकेशयोः
सितत्त्वपानायकयोर्वलीयसः।
दृशागमे द्यूनपयुक्तभांशक-,
त्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः ॥

( ३ ) सप्तमेशस्थ राशीश और सप्तमेश का नवांशेश, इन दोनों में जो वली हो; उसके त्रिकोण में गुरु गोचर में आवे तब विवाह होता है।

( ४ ) शुक्र और चन्द्र इन दोनों में जो वली हो उसकी महादशा में जब पूर्वोक्त ( नं० ३ ) का गोचर में गुरु होता है तब विवाह होता है।

( ५ ) लग्नेश जब गोचर में सप्तम राशि पर जाता है तव; गोचर में शुक्र जब सप्तमेश की राशि या लग्नेश की राशि या लग्नेश के नवांश से त्रिकोण राशि पर जाता है तब; सप्तमस्थग्रह या सप्तमभाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रह की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

( ६ ) यदि सप्तमेश शुक्र के साथ में हो तो सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

( ७ ) धनेशस्थराशीश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

( ८ ) राज्येश, भाग्येश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

( ९ ) सप्तमेश के साथ या सप्तमभावस्थग्रह की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

(१०) शु. चं. ल. सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

(११) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु, चन्द्र होते हैं तब विवाह होता हैं।

पुरुष—स्त्री के विवाह—शोधन के समय यदि निम्न निममों पर ध्यान दिया जाय; तो सम्भव हैं कि अधिकांश व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय रहे।

(१) पुरुष के सप्तमेश राशि पर यदि कन्या की कुण्डली में चन्द्र हो तो उत्तम-सुख होता हैं।

(२) यदि स्त्री को राशि (चन्द्रराशि) पुरुष की कुण्डली के सप्तमेश का उच्च स्थान हो तो उत्तम सुख होता है।

(३) पुरुष के सप्तमेश की नीच राशि पर यदि स्त्री की कुण्डली में चन्द्र हो तो उत्तम सुख होता हैं।

(४) पुरुष की कुण्डली के शुक्रस्थराशि पर यदि स्त्री की कुण्डली में चन्द्र बैठा हो तो उत्तम सुख होता हैं।

(५) पुरुष की कुण्डली के सप्तमभावस्थराशि पर यदि स्त्री की कुण्डली में चन्द्र बैठा हो तो उत्तम सुख होता हैं।

(६) पुरुष की कुण्डली के लग्नेशस्थराशि पर यदि स्त्री की कुण्डली में चन्द्र बैठा हो तो उत्तम सुख होता हैं।

(७) पुरुष की कुण्डली के चन्द्रस्थराशि में यदि स्त्री की जन्म-लग्न हो तो उत्तम सुख होता हैं।

(८) पुरुष की राशि (चन्द्रराशि) से सप्तम स्थान पर जिन ग्रहों की दृष्टि हो; वे ग्रह जिन राशियों में बैठे हों उन किसी राशि में यदि स्त्री का जन्म (लग्न) हो तो उत्तम सुख होता हैं।

पुरुष या स्त्री को कुण्डली द्वारा दाम्पत्यजीवन-सुखकारक उपर्युक्त आठों नियमों में यदि १ से जितने अधिक नियम मिलेंगे; उतना ही अधिक सुख होगा।

## कलत्र-राशि

(१) पुरुष की कुण्डली का सप्तमेश जिस नवांश में हो; वह नवांशेश जिस राशि में स्थित हो वह राशि; तथा नवांशेश (भौमादि) की अन्य दो राशियां 'कलत्र-राशि' होती हैं।

( २ ) सप्तमेश की उच्च राशि 'कलत्र-राशि' होती है।

( ३ ) उपर्युक्त राशियों की त्रिकोण राशि भी 'कलत्र-राशि' होती है। इन 'कलत्र-राशियों' में किसी भी एक राशि पर यदि स्त्री की कुण्डली में चन्द्र न हो; तो उस स्त्री से सन्तान होने की अत्यल्प सम्भावना रहेगी, या सन्तान होगी ही नहीं।

( ४ ) सप्तमेश जिस राशि में हो उस राशि पर या उससे त्रिकोण राशियों पर किसी एक में स्त्री की कुण्डली में यदि चन्द्र हो तो उत्तम सुख होगा।

( ५ ) जिस स्त्री की जन्म-राशि ( चन्द्रस्थ-राशि ) वृष, सिंह, कन्या वृश्चिक होती है तो उससे सन्तान कम होती हैं। यदि उन राशियों में शुभग्रह ( चन्द्र के सिवा अन्य ) स्थित हो, शुभ स्थान में हो तो बहु गुणी-सन्तान होती हैं।

( ६ ) पुरुष की कुण्डली के लग्नेश, सप्तमेश को जोड़े। उस योग फल की जो नवांशराशि हो उस राशि पर स्त्री की कुण्डली में चन्द्र बैठा हो तो उत्तम सुख होगा।

( ७ ) स्त्री एवं पुरुष की जो राशि हो उन राशियों का जो नवांश हो; उन दोनों नवांशेशों की परस्पर मैत्री हो तो उत्तम सुख होगा।

( ८ ) यदि स्त्री, पुरुष दोनों की राशि ( चन्द्रराशि ) एक तत्त्व या मित्रतत्त्व में हो तो परस्पर-प्रेम रहता है।

## अष्टम-भाव

इस भाव द्वारा मृत्यु का कारण, प्रबलरोगयोगादि का विचार किया जाता है।

( १ ) मं. चतुर्थ में, चन्द्र द्वितीय में, सूर्य दशम में हो तो सवारी-द्वारा मृत्यु होती है।

( २ ) कर्क या सिंह का चन्द्र राहु के साथ सप्तम व अष्टम भाव में हो तो पशु-द्वारा मृत्यु होती है।

(३) वृष या तुला का सूर्य नवम में हो और चन्द्र युत या दृष्ट हो तो सर्प से मृत्यु होती हैं

(४) राहु अष्टमभाव में पापदृष्ट हो तो सर्प से मृत्यु होती हैं।

(५) सूर्य, चन्द्र एक साथ कन्या राशि में हो और पापग्रह की दृष्टि हो तो स्वजन द्वारा-मृत्यु होती हैं।

(६) मीनराशि पर सू, चं. पापग्रह के साथ लग्न में हो और अष्टम में पापग्रह हो तो किसी स्त्री-द्वारा मृत्यु होती हैं।

(७) सप्तमभाव में कन्या राशि का चन्द्र हो, शुक्र मेष में, सूर्य मीन में हो तो किसी स्त्री-द्वारा मृत्यु होती हैं।

(८) लग्नेश, सप्तमेश, अष्टमेश एक साथ हों तो स्त्री के सहित जातक की मृत्यु होती हैं।

(९) दशम, चतुर्थ में पापग्रह, क्षीणचन्द्र षष्ठ व अष्टमभाव में हो तो षडयन्त्र से तीर्थ में मृत्यु होती हैं।

(१०) शनि और चन्द्र त्रिक में या चतुर्थ में हों, रन्ध्रेश रन्ध्र में दो पापग्रहों के बीच में हो तो नदी या समुद्र-द्वारा मृत्यु होती हैं।

(११) सूर्य, चन्द्र द्विस्वभावराशि में पापयुत या दृष्ट होने से जलाशय-द्वारा मृत्यु होती हैं।

(१२) अष्टमेश ४|७|८|१०|११| १२राशि का ४|६|१२ वें भाव में हो तो सर्प, सिंह, मृग, कुँआ, घर गिरने आदि किसी से मृत्यु होती हैं।

(१३) शनि चतुर्थ में, चन्द्र सप्तम में, मं. दशम में तो कुँआ में गिरने से मृत्यु होती हैं।

(१४) कर्क में शनि, मकर में चन्द्र हो तो जल या जलोदर रोग से मृत्यु होती हैं।

(१६) सुखेश जिस राशि में हो उस राशीश पर सुखेश की दृष्टि या युति हो तो जलाशय द्वारा मृत्यु होती है।

(१७) क्षीण चं. अष्टम में, मं. रा. या शनि के साथ हो तो जल, अग्नि, पिशाचादि दोष से मृत्यु होती है।

(१८) चं. १०।११ राशि में, पापनवांश में हो तो शस्त्र ( चीर फाड़ ) द्वारा अग्नि या ऊंचे से गिरने में मृत्यु होती है।

(१९) कन्या राशि का चन्द्र पापग्रहों से घिरा हो तो रक्त-विकार या खून की कमी से मृत्यु होती है।

(२०) चन्द्र भौमगृह ( १—८ राशि ) या शनिगृह ( १०—११ ) में हो तो शस्त्र या अग्नि से मृत्यु होती है।

(२१) क्षीण चन्द्र दशम में, मं. नवम में, शनि लग्न में हो तो धुआँ-द्वारा, अग्नि से, बन्धन से, चोट से मृत्यु होती है।

(२२) सूर्य, भौम अन्योन्यराशि में हों और रन्ध्रेश से केन्द्र में हों तो राजकोप से मृत्यु होती है।

(२३) शनि, भौम अन्योन्यराशि या अन्योन्यनवांश में हो तथा रन्ध्रेश से केन्द्र में हो तो राजकोप से मृत्यु होती है।

(२४) शनि, चन्द्र कर्क में शुभदृष्ट न हो तो पंगु होकर मृत्यु होती है।

(२५) द्वितीय में शनि, चतुर्थ में चं., दशम में मं. हो तो मुख में कृमि (कीड़ा) होने से मृत्यु होती है।

(२६) लग्ननवांशेश, दशमनवांशेश शनि के साथ या त्रिक में। धनेश, षष्ठेश शनि के साथ त्रिक में होने से विष-द्वारा मृत्यु होती है।

(२७) षष्ठेश शुक्र के साथ और शनि या सूर्य राहु के साथ पापनवांश में हो तो शिर कटने से मृत्यु होती है।

(२८) राहु कर्क में और सिंह में चन्द्र हो या राहु, चन्द्र एक साथ अष्टम में हो तो शिर कटने से मृत्यु होती है।

(२९) चन्द्र से पंचम और नवम राशि पापयुक्त व दृष्ट, लग्न से २२ वाँ द्रेष्काण सर्प, निगड, पाश हो तो सर्प, बन्धन और फाँसी लगा कर ( आत्महत्या ) मृत्यु होती है।

(३०) ४-५-९-१० वें भाव में पापग्रह हो और रन्ध्रेश भौम के साथ लग्न में हो तो आत्महत्या से मृत्यु होती है।

(३१) चन्द्र, शनि एक साथ या अलग २ वृष या तुला राशि में हो तो २८ वें वर्ष में तलवार-द्वारा मृत्यु होती है।

(३२) लग्नेशाष्टमेश पापग्रह के साथ षष्ठ में हो तो युद्ध में मृत्यु होती है। या शस्त्र से मृत्यु होती है।

(३३) चतुर्थ में भौम, दशम में सूर्य या शनि हो तो शूली या पर्वत से गिरने पर मृत्यु होती है।

(३४) त्रिकोण, एकादश में क्षीण चन्द्र पापयुक्त हो तो सूली से मृत्यु होती है।

(३५) क्षीणचन्द्र पर बली भौम की दृष्टि हो तो कृमि, घाव, गुदारोग, बवासीर, भगंदर, शस्त्र, अग्नि से मृत्यु होती है।।

(३६) सूर्य लग्न में, श० पंचम में, मं. अष्टम में, चं. नवम में हो तो वज्रपात या एलेक्ट्रिक या पर्वतादि से मृत्यु होती है।

(३७) शुक्र अष्टम में पापदृष्ट हो तो प्रमेह, वात, क्षयरोग से मृत्यु होती है।

(३८) मं., शनि षष्ठ में सूर्य, राहु से दृष्ट हो, लग्नेश अष्टम में हो तो क्षयरोग से मृत्यु होती है।

(३९) लग्नेश, अष्टमेश एक साथ तथा अन्य ग्रहों के साथ भी हो या अष्टमेश १ से अधिक ग्रहों के साथ या अष्टम में कई ग्रह होने से आकस्मिक घटना (रेल-जहाज, खान, भूकम्प) से कई व्यक्तियों के साथ मृत्यु होती है।

नोट—अष्टम भाव में शुभग्रह का विशेष सम्बन्ध होने से सुखपूर्वक मृत्यु होती है। यदि पापग्रह का सम्बन्ध हो; तो मृत्यु कष्ट से होती है।

अष्टमेश सुख या लाभ में धन कारक शुभग्रह के साथ बलवान् योग में हो, पंचमेश से भी सम्बन्ध हो तो अकल्पित लाभ (सट्टा, लाटरी से) होता हैं।

## नवम-भाव

इस भाव से भाग्य का विचार होता हैं।

चं. बु. शु. शीघ्र गति वाले ग्रह हैं। अन्य ग्रह स्थिर हैं।

(१) यदि लग्न चरराशि, लग्नेश चरराशि का होकर चरग्रह से से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्योदय होता हैं।

(२) लग्न, लग्नेश स्थिरराशि में स्थिरग्रह से दृष्ट हो तो स्वदेश में भाग्योदय होता हैं।

(३) व्ययेश पापयुक्त या व्यय में पापग्रह के सम्बन्ध होने से देशाटन होता हैं।

व्ययेश एवं शनि द्वारा दूर यात्रा का योग होता हैं। तृतीय, सप्तम नवम, द्वादश स्थान उत्तरोत्तर दूरी यात्रा के द्योतक हैं।

(४) व्यय में चरराशि, चरग्रह एवं शनि के सम्बन्ध से अनेकदेशों की यात्रा होती है या ६। ८ वें भावेश व्यय में होने से दूर की यात्रा होती है।

सप्तम भाव के सम्बन्ध से वाणिज्य या कार्यवश यात्रा होती हैं। नवम स्थान के योग में तीर्थ या पुण्य कार्य की यात्रा होती हैं।

(५) लग्नेशस्थराशि से व्ययभावेश यदि लग्नेश का शत्रु या नीच यह दुर्बल हो तो विदेश यात्रा होती हैं।

## भाग्य-योग

सौम्यस्वामियुतेक्षितं नवमभं भाग्यप्रदं प्राणिनाम् ।
तद्राशीशसमेतराशिरमणो भाग्यस्य कर्ता भवेत् ॥

(१) नवमभाव शुभग्रह या नवमेश से युक्त व दृष्ट हो तो भाग्यवान् होता हैं भाग्येशस्थराशीश भाग्य-कर्ता होता हैं ।

(२) नवमेश या भाग्य-कर्ता ग्रह और लग्नेश ये दोनों स्वगृही या उच्च में हो तो भाग्यवान् होता हैं ।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (३) | नवम में | गुरु हो, | सूर्य | से दृष्ट हो तो | राजा |
| (४) | ,, | ,, | भौम | ,, | ,, मंत्री |
| (५) | ,, | ,, | बुध | ,, | ,, धनवान् |
| (६) | ,, | ,, | शुक्र | ,, | ,, अश्वपति |
| (७) | ,, | ,, | [illegible]. श. | ,, | ,, पशु, वाहन का सुख |
| (८) | ,, | ,, | सू. चं. | ,, | ,, विद्वान्, पशुपालक |
| (९) | ,, | ,, | सू. मं. | ,, | ,, सेनापति, रत्नव्यापारी |
| (१०) | ,, | ,, | सू. बु. | ,, | ,, विनोदी, धनी |
| (११) | ,, | ,, | सू. शु. | ,, | ,, नम्रतायुक्त |
| (१२) | ,, | ,, | सू. श. | ,, | ,, गुणी, भूपति |
| (१३) | ,, | ,, | चं. मं. | ,, | ,, यशस्वी, सहायक |
| (१४) | ,, | ,, | चं. बु. | ,, | ,, उत्तमगृहसुख |
| (१५) | ,, | ,, | चं. शु. | ,, | ,, पुत्रहीन, धनी |
| (१६) | ,, | ,, | चं. श. | ,, | ,, गुणी, विदेश में पंडित |
| (१७) | ,, | ,, | बु. शु. | ,, | ,, तो विद्वन् |
| (१८) | ,, | ,, | सभी ग्रहों | ,, | , राजा |
| (१९) | ,, | चं. हो, | श. बु. या मं. | ,, | ,, राजा |
| (२०) | ,, | उच्च ग्रह ,, | शुभग्रह | ,, | ,, राजा |

(२१) नवम में सू. चं. हो तो नेत्ररोगी; धनी
(२२) ,, सू. मं. ,, दुःखी, राजप्रिय
(२३) ,, सू. बु. ,, शत्रु अधिक, सदा रोगी
(२४) ,, सू. गु. ,, पिताप्रिय, धनवान्
(२५) ,, सू. शु. ,, रोगी
(२६) ,, सू. श. ,, रोगी, पिता के कुक्षि रोग
(२७) ,, चं. मं ,, माता का विरोधी, दानी
(२८) ,, चं. बु. ,, वक्ता, शास्त्रज्ञ
(२९) ,, चं. गु. ,, गम्भीर बुद्धि, धनी
(३०) ,, चं. शु. ,, कुलटापति, द्वितीयमातृप्रिय
(३१) ,, चं. श. ,, निर्गुणी, धर्महीन
(३२) ,, मं. बु. ,, शास्त्री, भोगी
(३३) ,, मं. गु. ,, धनी, पूज्य
(३४) ,, मं. शु. ,, द्विभार्य, वादी, विदेशवासी
(३५) ,, मं. श. ,, धर्महीन
(३६) ,, बु. गु. ,, चतुर, विद्वान्, धनी
(३७) ,, बु. शु. ,, रतिप्रिय, गायक, पण्डित
(३८) ,, बु. श. ,, रोगी, धनी, कटुवक्ता
(३९) ,, गु. शु. ,, दीर्घायु, धनी
(४०) ,, गु. श. ,, रोगी, रत्नव्यापारी
(४१) ,, शु. श. ,, राजासमानसुखी

भाग्याधिपे शुभयुते शुभग्रह निरीक्षिते ।
तद्भावे शुभसम्बन्धे सत्कीर्तिधनभाग्यवान् ॥

(४२) भाग्येश शुभयुक्त या दृष्ट या नवम में शुभग्रह की राशि हो तो यशस्वी, धन एवं भाग्यवान् होता है ।

सिंहासनांशे तन्नाथे, लग्नेशेननिरीक्षिते ।
कर्माधिपेन संदृष्टे महादानकरो भवेत् ॥

(४३) भाग्येश सिंहासनांश का होकर लग्नेश व राज्येश से दृष्ट हो तो महादानी होता है ।

नोट—इस योग में यदि ब्राह्मण हो तो राजपुरोहित या दानाध्यक्ष या परोपकारी तथा अन्य वर्ण (क्षत्रियादि) दानाध्यक्ष या परोपकारी होते हैं ।

(४४) गुरु नवम में अपने नवांश में हो या शुभदृष्ट हो तो गुरुभक्त होता है ।

(४५) नवम में शुभग्रह हो या भाग्येश गुरु के नवांश में हो तो गुरु भक्त तथा सुखी होता है ।

(४६) भाग्येश बली, शुभराशि में या गुरु या शुक्र से युक्त व दृष्ट हो तो ऐसा योग चर, स्थिर, द्विस्वभाव में क्रमशः जप, ध्यान समाधि लेने वाला होता है ।

(४७) नवमेश या राज्येश शुभ ग्रह या पारावतांशादि संज्ञा में हो तो ब्रह्मोपासक होता है ।

## भाग्योदय-वेला

(१) भाग्येश केन्द्र में हो तो बाल्यावस्था में । त्रिकोण में या उच्च का हो तो मध्यावस्था में । अन्य भावों में स्वगृही या मित्र-क्षेत्री हो तो वृद्धावस्था में भाग्योदय होता है ।

नोटः—१ से ४ भाव तक प्रथमखण्ड; ५ से ८ भाव तक द्वितीयखण्ड; ९ से १२ भाव तक तृतीयखण्ड होता है ।

(२) शुभग्रह भाग्येश, गुरु, भाग्यकर्ता-ग्रह शुभता से जिस खण्ड में होंगे; उसी अवस्था में भाग्योदय होगा ।

(३) लग्न की शुभता के अनुसार भाग्योदय होता है । लग्न में दो या अधिक पापग्रह हों तो आजन्म दुःखी रहता है ।

( ४ ) [क] लग्नेश शुभ राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो [ख] लग्नेश नवम में [ग] भाग्येश पंचम में हो तो १६ वर्ष के बाद सुखी होता है।

( ५ ) लग्नेश का नवांशेश १-५-९-११ वें भाव में बली हो या उच्च का हो तो ३० वर्ष की अवस्था के बाद सुखी होता है।

( ६ ) लग्नेश द्वितीय में या लग्नेश-नवांशेश द्वितीय में या लाभेश द्वितीय में हो तो २० वर्ष के बाद सुखी होता है।

( ७ ) भाग्येश जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी यदि सूर्य हो तो २२ वर्ष; चन्द्र हो तो २४ वर्ष; भौम हो तो २८ वर्ष; बुध हो तो ३२ वर्ष; गुरु हो तो १६ वर्ष; शुक्र हो तो २५ वर्ष;शनि हो तो ३६ वर्ष की अवस्था के करीब ही भाग्योदय होता है।

नोट—उक्त वर्षों के पूर्व दशान्तर्दशा के अनुसार यदि शुभफल क्यों न हो; परन्तु विशेष शुभफल उसी समय मिलता है।

## दशम-भाव

इस भाव से पिता एवं आजीविका का विचार होता है।

## बाल्यकाल में पिता को अरिष्टयोग

( १ ) पंचम या नवमभाव में पापग्रह की राशि में सूर्य हो तो पिता की मृत्यु; चन्द्र हो तो माता की; मं. हो तो भाई की; बुध हो तो मामा की; गुरु हो तो नानी की; शुक्र हो तो नाना की; शनि हो तो स्वयं जातक की मृत्यु या कष्ट होता है।

( २ ) सू., शनि व्यय में, क्षीण चन्द्र सप्तम में, तो पिता की मृत्यु। यदि च. शुभ दृष्ट हो तो ३ वर्ष के अन्दर ही पिता की मृत्यु होती है।

( ३ ) भौ., सू. एक साथ शनि से दृष्ट हों तो १ वर्ष में पिता की मृत्यु होती है।

( ४ ) श.·मं. सू. अष्टम में हो तो पिता की मृत्यु होती है।

( ५ ) लग्न से नवम रा. या केतु हो और इसी दशा में जन्म हो तो पिता की मृत्यु होती है।

## पिता-अरिष्ट-वेला

( १ ) श. मं. रा. ९।११वें भाव में हो तो इनकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

( २ ) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटावें; शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोग-ग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यंशादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब मृत्यु होती है।

( ३ ) रन्ध्रेश, भाग्येश का योग हो या रन्ध्रेश की भाग्येश पर दृष्टि हो तो भाग्येश की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है। या रोग-ग्रस्त अवश्य होता है।

( ४ ) सूर्य से १।२।७।१२वें भाव में जो पापग्रह हों तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता को कष्ट होता है।

( ५ ) लग्न से गुरु का सम्बन्ध हो और धनभाव से सू., श, मं., बु., का सम्बन्ध हो तो जातक के विवाह समय पिता की मृत्यु होती है।

( ६ ) लग्न या चतुर्थ में राहु और शत्रुराशि में गुरु हो तो जातक के २३वें वर्ष पिता की मृत्यु होती है।

## आजीविका

लग्न से शारीरिक, चन्द्र से मानसिक; सूर्य से आत्मिक कर्म ( व्यापार या उद्योग ) की प्रवृत्ति होती है। अतः उक्त तीनों में जो बली हो, उससे विचार करना चाहिये; या तीनों से विचार करना चाहिये; क्योंकि कोई २ व्यक्ति एक से अधिक व्यापार करते हैं। उक्त तीनों में बलीग्रह के दशमभाव-द्वारा व्यापार ( आजीविका ) का विचार होता है।

(१) यदि लग्न या चंद्र से दशम स्थान में सूर्य हो तो पैतृकसम्पत्ति मिलती है यदि सूर्य उच्च या शुभयुक्त व दृष्ट हो तो पैतृक सम्पत्ति सुगमता से मिलती है । यदि पापयुक्त या दृष्ट हो तो झगड़ा करके मिलती है । अपने हाथों द्वारा धनोपार्जन करने वाला होता है । यदि दिनार्ध या निशार्ध समय (२½ घटी के बीच में) जन्म हो तो धनी या राजा होता है ।

(२) लग्न या सूर्य से दशमस्थान में चन्द्र हो तो माता-द्वारा धन प्राप्त होता है ।

(३) ल. चं. सू. इनमें बलीग्रह के दशमस्थान में भौम हो तो शत्रु-द्वारा या विजय द्वारा; बुध हो तो मित्र-द्वारा; गुरु हो तो भाई-द्वारा; शुक्र हो तो स्त्री-द्वारा; शनि हो तो सेवकादि-द्वारा धन प्राप्त होता है ।

उक्त तीनों के दशमभाव में स्थित या दशमेश के नवांशेश द्वारा भी कर्म ( आजीविका ) का विचार होता है ।

(१) दशमस्थ या राज्येश का नवांशेश यदि सूर्य हो तो सुगन्ध पदार्थों के क्रय, विक्रय से; स्वर्ण-व्यापार या स्वर्णखान में काम करना; ऊनी वस्त्रों का क्रय, विक्रय से; औषधि सम्बन्धी व्यापार; जहाज में काम करना; रत्नव्यापार; राजमन्त्री या मैनेजर या मिनिष्टर, युद्धविभाग का अधिकारी, मुसाहिब, दीवान, अदालत की हाकिमी, ठेकेदार होता है प्रायः स्वतन्त्र व्यापारी या राजकीय नौकरी करता है ।

(२) चन्द्र दशमस्थ या राज्येश का नवांशेश हो तो कृषी, जल पदार्थों के क्रय, विक्रय से, मोती मूंगा का व्यापारी, वस्त्र व्यापार प्रदर्शिनी या स्त्री द्वारा धन लाभ आदि का कर्म करता है ।

(३) यदि भौम योगकारक हो तो धातु-क्रय, विक्रय, अस्त्र, शस्त्र, कल-पुर्जे सम्बन्धी व्यापार, एलेक्ट्रिक सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी,

आतशबाजी, इन्जीनियर, ओवरसीयर, मिलिट्री (युद्ध विभाग) पुलिस-विभाग, साहसिक ( सरकस ) कार्य, फौजदारी अदालत की बैरिस्टरी, वकालत, मुख्तारी, पराये धन को सहसा लूटने वाला ( डाकू या राजा ) होता है।

(४) यदि बुध योग कारक हो तो लेखक, कवि, गणितज्ञ, ज्यौतिषी, पुरोहिती, धर्मविषयक वक्ता, चित्रकारी, शिल्पकारी आदि कर्म करता है।

(५) यदि गुरु योगकारक हो तो ऐतिहासिक, पौराणिक, धर्म-सम्बन्धी संस्था, सम्पादन-कार्य, सदराला, मुंसिफ, हाईकोर्ट, जिला-जज आदि का कर्म करता है।

(६) यदि शुक्र योगकारक हो तो रत्नपारखी, पशु-व्यापार, दूध, मक्खन (डेरी फार्म) सम्बन्धी, पुष्प, फल (फ्रूट-शाप), धनी स्त्री के संसर्ग से लाभ आदि कर्म करता है।

(७) यदि शनि योगकारक हो तो काष्ठ सम्बन्धी, मजदूर, सिपाही, शारीरिक परिश्रम सम्बन्धी कार्य, फौजदारी अदालत का डिप्टी, उत्तरदायित्व कार्य, आपस में झगड़ा कराकर स्वार्थ सिद्ध करना, वकालत, मुख्तारगिरी का कर्म करता है।

(८) यदि चरराशि में अधिक ग्रह हों तो चतुरता, युक्ति, निपुणता, मेल जोल का ढग जिस व्यापार में प्रयोग किया जाय; वही व्यापार करता है तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने का सर्वदा यत्नशील रहता है।

(९) यदि स्थिरराशि में अधिक ग्रह हों तो धैर्य, शान्ति, सहनशीलता सम्बन्धी व्यापार में, सरकारी नौकरी, डाक्टरी आदि कर्म करता है।

(१०) यदि द्विस्वभावराशि में अधिक ग्रह हों तो अध्यापक, प्रिंसपल, किराना, नौकरी, अढ़तिया, गुमास्ता, कम्पनी आदि कर्म करता है।

नोट—यदि चरादि दो राशियों (चर-स्थिर या चर-द्विस्वभाव या स्थिर-द्विस्वभाव) में बराबर ग्रह हों तो कर्म सम्बन्धी ग्रह, भाग्येश, लाभेश का जिसमें योग होगा; उसी से कर्म (व्यापार) होगा; इत्यादि खूब विचार करके व्यवसाय निश्चित करना चाहिये।

## एकादश–भाव

इस भाव-द्वारा लाभ का विचार होता है।

( १ ) यदि लाभेश सूर्य या चन्द्र हो तो राजा की नौकरी से लाभ होता है।

( २ ) लाभेश मं. हो तो राजमन्त्री या भाई या कृषि से लाभ होता है।

( ३ ) लाभेश बु. हो तो विद्या या पुत्र या कुटुम्बीय व्यक्ति से लाभ होता है।

( ४ ) लाभेश गु. हो तो धार्मिक संस्था से लाभ होता है।

( ५ ) लाभेश शु. हो तो स्त्री या रत्न या पशु-द्वारा लाभ होता है।

( ६ ) लाभेश श. हो तो कुवृत्ति या नीच व्यापार से लाभ होता है।

( ७ ) सूर्य–नवम में उच्चादिराशि या वर्गादि में हो तो राजचिन्हों के क्रय, विक्रय से; कृषि, नौकरी, दुर्जन कर्म, लिखने पढ़ने का काम, डाक्टरी, वैद्यक, रुपया बाँटने का काम, घूम २ कर क्रय, विक्रय से, विवाद सम्बन्धी; प्रेतकार्य, भ्रातृकलह सम्बन्धी कार्य आदि से लाभ होता है।

( ८ ) चन्द्र नवम में उच्चादिराशि या वर्गादि में हो तो शंख के क्रय-विक्रय, अन्यस्त्रीसंसर्ग से, राजा की मित्रता से, कृषि, वस्त्र, विप्र-विरोध आदि कार्य से लाभ होता है।

( ९ ) भौम नवम में उच्चादिराशि या वर्गादि में हो तो स्वर्ण सम्बन्धी, विजय सम्बन्धी, मित्र से, बन्धु-विवाद, शत्रु कर्म,

वल-कार्य से लाभ होता है। यदि मूलत्रिकोण में हो तो कृषि या राजा से लाभ। स्वगृही हो तो स्वर्ण, वस्त्र से लाभ। स्वगृही हो तो अन्नलाभ। शत्रुगृही हो तो अग्निद्वारा, गुल्म, संग्रहणी, कुष्ट आदि रोग, धन नाश, क्रूर-वृत्ति करता है। इसी प्रकार शनि का भी फल है।

(१०) बुध नवम में उच्च हो तो अध्यापकी कार्य से लाभ। शत्रु गृही हो तो मुकदमा द्वारा किसी स्त्री से लाभ। मित्रगृही हो तो कृषी या जमींदारी से लाभ। नीच का हो तो वन्धु विरोध, धननाश मुकदमा में होता है। स्वगृही हो तो लेखन कार्य, शिल्पकार्य से, वस्त्र से, स्वर्ण से लाभ, धनी स्त्री से लाभ होता है। अतिशत्रुराशि में हो तो विद्याहानि, व्यापार-हानि, कुष्टरोग, अश्मरी (पथरी) रोग होता है। स्व-षोडशांश में हो तो बन्धु विवाद से, विदेश में भूमि प्राप्ति, कृषी से, विद्या पढ़ाने से, नौकरी में कुशलता तथा धन धान्यादि का लाभ होता है।

(११) गुरु नवम में उच्चादिराशि या वर्ग में हो तो प्रतापी, धनी, गुणी, किसी संस्था का प्रधान होता है। शत्रुराशि में हो तो द्रव्य-नाश, पराजय होती है। मित्रराशि में हो तो अध्यापक होता है। अतिमित्रगृही हो तो पुत्र, स्त्री, मित्रादि से एवं विवाह सम्बन्धी कार्य से लाभ होता है।

(१२) शुक्र नवम में उच्चादिराशि या वर्ग में हो तो राजकार्य, सेनाध्यक्ष मन्त्री, शिक्षा सम्बन्धी कार्य, यज्ञकार्य से लाभ होता है। स्वगृही हो तो नौकरी से, सेनाधिकारी, कृषी और विद्या से जलाशय आदि से लाभ होता है।

## व्यय-भाव

इससे खर्च आदि का विचार किया जाता है।

(१) व्ययभाव में शुभग्रह हों तो शुभकार्य में, पापग्रह हों तो अशुभकार्य में, पुरुषग्रह हों तो पुरुषसम्बन्धी, स्त्रीग्रह हों तो स्त्रीसम्बन्धी कार्य में व्यय होता है।

(२) व्ययेश जिस भाव में हो तथा जिस २ भाव पर दृष्टि डालता हो उसी भावसम्बन्धी खर्च होगा। यदि व्ययेश शुभयुक्त या दृष्ट हो तो शुभता से; पापयुक्त या दृष्ट हो तो अशुभता से उस भावसम्बन्धी खर्च होगा। षष्ठेश और व्ययेश का पुत्र, माता, पिता, भाई आदि कारकग्रहों व भावों से सम्बन्ध हो तो शत्रुता द्वारा तथा रोगद्वारा खर्च एवं रन्ध्रेश व्ययेश के योग से मृत्यु समयसम्बन्धी खर्च होता है।

(३) नवम में शुभग्रह, व्ययेश की दृष्टि और लग्नेश की दृष्टि या युति हो तो तीर्थ-यात्रा विषयक खर्च होता है।

(४) पंचमेश, व्ययेश, भाग्येश, गुरु का शुभ सम्बन्ध होने से पुत्र कार्य या विद्याकार्य, परोपकार, धार्मिक कार्य विषयक व्यय होता है।

(५) व्यय भाव में गुरु हो तो जातक स्वल्पावस्था से ही गृह कार्य करने में चतुर होता है।

(६) व्ययभाव में सूर्य शुक्र, लग्नेश; इनमें दो या तीन हों तो नेत्रकष्ट होता है।

इति भाव-विवेकः

———

# दशा-फल-विवेक

दशान्तर्दशा-साधन सोदाहरण पृष्ठ १७७ से १९४ तक लिखा जा चुका है। इस विवेक में दशाफल लिखने के पूर्व यह बता देना आवश्यक है कि 'महादशाधिपति का शुभाशुभत्व जानकर' दशाफल का विधान करना चाहिये।

प्रत्येक ग्रह की दशा का शुभाशुभ फल 'जन्म-लग्न-द्वारा (पृष्ठ ४६५) फल, भावेश-द्वारा (पृष्ठ ४५१) फल, तथा दशेश-फल (पृष्ठ ४५७) का पूर्वापर विचार करके कहना चाहिये। साथ ही साथ अन्तर्दशेश, प्रत्यन्तर्दशेश का भी विचार कर दशा-फल का शुभाशुभत्व जानना चाहिये। प्रत्येक दशा के सुस्पष्ट शुभाशुभ फल जानने के लिये कुछ नियम आगे भी लिखे जाते हैं।

( १ ) जो ग्रह षड्वर्ग द्वारा बली या उच्चराशि, मित्र-राशि, स्वगृही या शुभग्रह से विशेष सम्बन्धित हो तो उसकी दशा शुभ फल कारक रहेगी।

( २ ) जो ग्रह, निर्बली, नीच, अस्तंगत, शत्रुक्षेत्र, त्रिकेश या त्रिक भाव से सम्बन्धित हो तो उसकी दशा अशुभफल कारक रहेगी।

( ३ ) आरोहिणी दशा का फल शुभ, अवरोहिणी दशा का फल अशुभ होता है।

नोट—उच्च से नीच की ओर जाने वाले ग्रह की दशा अवरोहिणी; तथा नीच से उच्च की ओर जाने वाले ग्रह की दशा आरोहिणी होती है।

( ४ ) आरोहिणी दशेश नीचांश या शत्रुनवांश में जब होगा; तब उत्कृष्ट शुभफल न देकर सामान्य शुभफल देगा। अन्यथा विपरीत फल होगा। अवरोहिणी दशेश उच्चांश या मित्रनवांश में जब होगा तब उत्कृष्ट अशुभफल न देकर सामान्य अशुभफल देगा; अन्यथा विपरीत फल होगा।

(५) जो ग्रह जन्म—चक्र में उच्च, मूलत्रिकोणादि शुभराशि में हो पर यदि नीचनवांश या शत्रुनवांश में होगा तो मिश्रफल होगा। पहिले अशुभ फल फिर शुभफल होगा।

(६) अन्तर्दशेश महादशेश का मित्र हो तो शुभफल; अन्यथा अशुभ फल होगा।

(७) यदि दशाप्रवेश काल में 'गोचर का चन्द्र' दशेश के मित्रक्षेत्र में या स्वक्षेत्र में हो तो शुभ फल होगा। तत्त्व यह कि गोचर का चन्द्र जब २ दशेश के मित्रादि शुभक्षेत्र में भ्रमण करेगा; तब २ शुभफल देगा; और जब २ 'गोचर का चन्द्र' दशेश के शत्रु आदि पाप क्षेत्र में जायगा; तब २ अशुभफल करेगा। इसके अभ्यास से दैनिक—फल की कल्पना की जा सकती है। इसी प्रकार यदि दशाप्रवेश काल में गोचर का—

चन्द्र भौमक्षेत्र (१-८) में हो तो—स्त्री कष्ट, स्वजन विरोध, वियोग, कष्ट होता है।
,, बुध ,, (३-६) ,, —बुद्धिकार्य में यश, धनलाभ, कुटुम्बसुख ,,
,, गुरु ,, (९-१२) ,, —सवारी, नौकर, धन, अधिकार आदि का सुख ,,
,, शुक्र ,, (२-७) ,, —प्रापंचिकसुख, स्थावरवृद्धि, लाभ, हर्ष, यश ,,
,, शनि ,, (१०-११) ,, —कुसंगति, स्त्रीद्वारा हानि, उद्विग्नता, कष्ट ,,
,, सूर्य ,, (५) ,, —उच्चउत्कर्ष, धनलाभ, राजसन्मान, धर्मवृत्ति ,,
,, चन्द्र ,, (४) ,, —प्रापंचिकसुख, स्थावर से सुख, जलयात्रा ,,

शुभफल का व्यापक अर्थ यह है कि शरीर आरोग्य, धन-वृद्धि शत्रु-विजय, प्रापंचिक सुख, स्त्री व सन्तानसुख, सवारीसुख, मनोत्कर्ष भाग्योदय, राज्यप्राप्ति, विद्याविषयक उन्नति, नवीन योजना, इत्यादि।

यथा लग्नेश की दशा हो और लग्नेशलग्न में हो तो कान्तिवृद्धि, बलवृद्धि; उत्कर्ष अपने पराक्रम से विजय इत्यादि शुभफल होंगे। परंतु वही लग्नेश अष्टम में सपाप पड़ा होगा तो उस दशा में अनेक संकट खड़े होंगे। इसी प्रकार सभी भावेशों की दशा का फल जानना।

## लग्नेश-फल

लग्नेश लग्न में—कान्ति वृद्धि, बल वृद्धि, उत्कर्ष तथा अपने पराक्रम से विजय।
,, धन ,,—धनसंचय, कुटुम्बीयसुख, सुभोजन की प्राप्ति, लाभ, हर्ष।
,, भ्रातृ ,,—स्वतन्त्रव्यापार, साहसवृद्धि, बन्धुसुख, सिपाहीस्वभाव।
,, सुख ,,—अनेकसुख, गृह व भूमिप्राप्ति, सवारीसुख, मातृ-सुख।
,, पुत्र ,,—धन, बुद्धि, विद्या आदि की वृद्धि, उपासना में रुचि।
,, षष्ठ ,,—शारीरिक कष्ट, शत्रुभय, अपयश, नौकर-द्वारा हानि।
,, जाया ,,—विवाद में रुचि, विदेशयात्रा, विषयेच्छा, साझे में व्यापार।
,, आयु ,,—शारीरिक क्लेश, अनेकचिन्ता, व्यसन की ओर झुकाव।
,, धर्म ,,—परोकारीबुद्धि, उत्कर्ष, कीर्ति, भक्ति, सत्संगति, तीर्थयात्रा।
,, कर्म ,,—उद्योग वृद्धि, सम्मान, पदप्राप्ति, समाज में प्रतिष्ठा।
,, लाभ ,,—मित्रअधिक, अच्छालाभ, स्त्रीसुख, सत्कार्य, सुयशप्राप्ति।
,, व्यय ,,—चतुरता के कार्य हाथ में, खर्चअधिक-ऋणचिन्ता, धूर्तकार्य।

## धनेश-फल

धनेश लग्न में—द्रव्यचिन्ता, कुटुम्बीयचिन्ता, मानसिकचिन्ता, उद्विग्नता।
,, धन ,,—ब्याज बट्टा से लाभ, बड़ों से लाभ, धनसंचय, कुटुम्बीयसुख।
,, भ्रातृ ,,—पराक्रम से लाभ, कुटुम्बपालन की चिन्ता, चतुरता।
,, सुख ,,—सम्पत्तिसुख, बाग लगाने का प्रयत्न, सवारीसुख, गृहसुख।
,, पुत्र ,,—धनसुख, सन्तानसुख, परमार्थ व विद्या विषयक यश।
,, शत्रु ,,—शत्रुद्वारा धनहानि, धनलाभ में अड़चन, नौकरों द्वारा हानि।
,, जाया ,,—विलासों में द्रव्यव्यय; स्त्रीसुख, सम्पत्ति पर झगड़ा हो।
,, आयु ,,—अकल्पितलाभ, वसीयतनामा से लाभ, सट्टा, लाटरी से लाभ।
,, धर्म ,,—धनसुख, पुण्यकार्य में व्यय, स्त्री विषयक प्रयत्न निष्फल।
,, कर्म ,,—उत्कर्ष, कीर्तिवृद्धि, राजकार्य में चतुरता, व्यापार की वृद्धि।
,, लाभ ,,—लाभ खूब; मित्रों की सहायता, अमूल्य वस्तुओं का संग्रह।
,, व्यय ,,—भोग, विलास में खर्च, राजदंड, विश्वासघात, हानि।

## तृतीयेश-फल

तृतीयेश लग्न में—लाँच घूंस का कार्य, साहस, उद्योगवृद्धि, बंधु का सुख।
,, धन ,,—कुटुम्बीयकलह, बंधु में द्रव्यव्यय, धनसंचय न हो, पापकार्य।
,, भ्रातृ ,,—साहस के कार्य, सिपाही प्रकृति, स्वतन्त्र जीविका, ख्याति।
,, सुख ,,—साहस से धन संचय, गृह, बगीचा में व्यय, ऐश्वर्य।
,, पुत्र ,,—उपासना में रुचि, उद्योग, बुद्धिप्रसिद्धि, संतानसुख, लाभ।
,, रिपु ,,—शत्रु विवाद, उन्नति के प्रयत्न, मातुलकष्ट, कार्य असफल।
,, जाया ,,—विजय, दूर की यात्रा, साहस से वैवाहिक योजना, सफलता।
,, आयु ,,—बन्धुकष्ट, शत्रुत्रास, अनेकचिन्ता, मानसिक कष्ट हो।
,, धर्म ,,—प्रसिद्धि के प्रयत्न, सत्कार्य, दूर यात्रा, स्त्री द्वारा उत्कर्ष।
,, कर्म ,,—साहस से उत्कर्ष, राजकीय पदवृद्धि, सन्मान, धनसुख।
,, लाभ ,,—व्यापार में लाभ, प्रसिद्धि, मित्रसुख, सेवाकार्य से लाभ।
,, व्यय ,,—व्यापार में धन व्यय, विलासी प्रकृति, स्त्रीद्वारा भाग्योदय।

## सुखेश—फल

सुखेश लग्न में—सुखी, धनलाभ, सवारीसुख, विद्या उन्नति, सभा में मूकता।
,, धन ,,—कुटुम्बीय सुख, आप्तसुख, व्यापारवृद्धि, संचय, सफलता।
,, भ्रातृ ,,—अपने धन से भूमिप्राप्ति, जायदात की बिक्री, नगदीसंचय।
,, सुख ,,—विलासों में व्यय, माता का सुख, बाग व मकान में खर्च।
,, पुत्र ,,—मातृ भक्ति, संतान में व्यय, धन सुख, प्रसिद्ध, सत्कार्य।
,, रिपु ,,—पशुकष्ट, घर बनाने या जायदातसंचय की इच्छायात्रा ज्यादा।
,, जाया ,,—धान्य या फल व्यापार की इच्छा, नौकरी व्यापार सदृश हो।
,, आयु ,,—भूमि, द्रव्य लाभ, शारीरिक कष्ट, धन लाभ, बड़ों से सुख।
,, धर्म ,,—मातृपितृ कष्ट, खरीद बिक्री से कम लाभ, सुख, भाग्योदय।
,, कर्म ,,—राज सम्मान, बड़ों से प्रेम, धनलाभ, अनेक सुख, प्रसन्नता।
,, लाभ ;,—अकल्पित लाभ में झगड़ा, अपयश, रोग, उदारता, सत्कार्य।
,, व्यय ,,—जायदात बनाने में अधिक खर्च, शारीरिक कष्ट, चिन्ता ग्रस्त।

## पंचमेश-फल

पुत्रेश लग्न में—विद्या उन्नति, प्रसिद्धि, चतुरता, सन्तानकष्ट, सत्कार्य ।
,, धन ,,—विद्या उन्नति, बुद्धि से लाभ एवं प्रसिद्धि, शारीरिक कष्ट ।
,, भ्रातृ ,,—मायावी कार्य, परोपकार, उपासना, पुण्यकार्य में व्यय ।
,, सुख ,,—धन लाभ अधिक, मातृ सुख, बुद्धि से प्रसिद्धि, पदवृद्धि ।
,, पुत्र ,,—पुत्र सुख, विद्या उन्नति, लाभ अधिक, उपासना कार्य, यश ।
,, रिपु ,,—बुद्धि प्रतिकूल, विद्या में हानि, पुत्र से शत्रुता, पुत्र कष्ट ।
,, जाया ,—बुद्धिमती स्त्री का सुख, विद्या में विवाद, सन्तान सुख ।
,, आयु ,,—विद्या विषयक हानि, संतान सुख अल्प, क्रोध, रोग वृद्धि।
,, धर्म ,,—शिक्षा कार्य से लाभ, ग्रन्थ रचना कार्य,धार्मिक विवेचना ।
,, कर्म ,,—उद्योगी, प्रबन्ध कुशलता, नौकरी से लाभ, राज सम्मान ।
,, लाभ ,,—धन सुख, सन्तान सुख, विद्या विषयक उन्नति, सुख, हर्ष।
,, व्यय ,,—अहंकार, संकट, आर्थिक क्लेश, संतान से शत्रुता, कष्ट ।

## षष्ठेश-फल

षष्ठेश लग्न में—अपयश, संकट, शारीरिक कष्ट, शत्रु अधिक, धन हानि ।
,, धन ,,—कुटुम्ब में कलह, जायदात पर झगड़ा, शत्रु से त्रास ।
,, भ्रातृ ,—बन्धु कलह, पराधीनता, क्रोध, धन सुख, पिशुनता ।
,, सुख ,,—धनसंचय कठिन, बड़ों से अप्रसन्नता, पशु क्लेश, कष्ट ।
,, पुत्र , —सन्तान से शत्रुता, नास्तिकता, धन संकट, मित्र कष्ट हो ।
,, रिपु ,,—प्रवल शत्रु से झगड़ा, वार २ कष्ट,मित्र सुख, धन हानि ।
,, जाया,,—स्त्री कष्ट, झगड़ा, धन सुख, साहस वृद्धि, सन्तान कष्ट ।
,, आयु ,,—शारीरिक कष्ट, झगड़ा, उत्कर्ष अल्प, रोग, हिंसावृत्ति ।
,, धर्म ,,—अपयश, अवनति,काष्ठ या पाषाण विक्रय से अल्प लाभ ।
,, कर्म ,,—बड़ों से झगड़ा, अप्रतिष्ठा, साहस विदेश में सुख, लाभ ।
,, लाभ,,—अल्प लाभ, मित्रों से बैर, धन सुख, संतान कष्ट, कीर्ति ।
,, व्यय ,,—राजदंड, द्रव्यनाश, रोग, शत्रु वृद्धि, हिंसावृत्ति, कष्ट ।

# द्यूनेश-फल

द्यूनेश लग्न में—चंचल, यात्रा, कलह, स्वतन्त्र जीविका, विलासी वृत्ति
,, धन ,,—कुटुम्बीय सुख, व्यापार में खर्च, स्त्री-द्वारा धन लाभ।
,, भ्रातृ ,,—पराक्रम, रागी वृत्ति, लाँच घूँस की इच्छा, बन्धु में खर्च।
,, सुख ,,—स्त्री सुख, विलास का सुख, गृह लाभ, दन्त रोग, सत्कार्य।
,, पुत्र ,,—स्त्री देवभक्ता, सन्तान सुख, धन लाभ, सामान्य हर्ष, सुख।
,, रिपु ,,—स्त्री द्वारा विरोध तथा धन व्यय, स्त्री कष्ट, क्रोधी वृत्ति।
,, जाया ,,—स्त्री सुख, लम्पट, विलासी वृत्ति, वात रोग, विचित्र बुद्धि।
,, आयु ,,—सत्कार्य में खर्च, स्त्री को कष्ट, क्रोधी वृत्ति, चिन्ता, धन कष्ट।
,, धर्म ,,—दूर की यात्रा, स्त्री सुख, दीर्घसूत्री वृत्ति, स्त्री द्वारा उत्कर्ष।
,, कर्म ,,—उद्योग वृद्धि, स्वतन्त्र व्यापार, धार्मिक बुद्धि, दंत रोग।
,, लाभ ,,—धन लाभ, सन्तान को सुख, मित्र द्वारा लाभ, यशवृद्धि।
,, व्यय ,,—स्त्री का अल्प सुख, विलास में खर्च, पराजय, अपयश, कष्ट।

# रन्ध्रेश-फल

रन्ध्रेश लग्न में—शारीरिक कष्ट, स्त्री कष्ट, नास्तिक बुद्धि, चित्त में व्यग्रता।
,, धन ,,—गुप्त धन लाभ, अकल्पित लाभ, चोर भय, धन हानि।
,, भ्रातृ ,,—पराधीनता, कुवृत्ति से लाभ, धन कष्ट, चोर से धन हानि।
,, सुख ,,—धन सुख, अनायास द्रव्य लाभ, बन्धु व मातृ व पितृ कष्ट।
,, पुत्र ,,—सट्टा व्यापार, दुर्गुणी पुत्र कष्ट, अनायास लाभ की इच्छा।
,, रिपु ,,—शारीरिक कष्ट, अनेक चिन्ता, जल या सर्प से भय, अयश।
,, जाया ,,—विलासीवृत्ति, गुप्त कामों में अधिक खर्च, स्त्री कष्ट, हानि।
,, आयु ,,—अधिकलाभ, तलघरा बनाने का प्रयत्न, अपयश, स्त्री कष्ट।
,, धर्म ,,—वसीयतनामा का प्रबन्ध, अधिकारप्राप्ति, नास्तिक, कुकार्य।
,, कर्म ,,—सन्मान, पदवी, नित्य लाभ की योजना, बड़ों को कष्ट।
,, लाभ ,,—एकदम लाभ, मित्रों को लाभ, सहायता, संचय कम।
,, व्यय ,,—विलास में खर्च, रोग, जल या सर्प से भय, बुद्धि भ्रष्ट।

## भाग्येश-फल

भाग्येश लग्न में—धनसुख, कीर्तिलाभ, धर्मवृद्धि, सत्कार्य, में अधिक खर्च।
,, धन ,,—कुटुम्बीय सुख, धन का सदुपयोग, उत्कर्ष की चिन्ता।
,, भ्रातृ ,,—बन्धु सहित उन्नति की ओर, उत्कर्ष चिन्ता, सम्मान।
,, सुख ,,—धनसुख, गृहसुख, बगीचे का प्रयत्न, पदवृद्धि, प्रसन्नता।
,, पुत्र ,,—ग्रन्थरचना, सत्कार्य, विद्यावृद्धि, उत्कर्ष, सम्मान, सुख।
,, रिपु ,,—अनेक कष्ट, यात्रा कष्ट, ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट, श्यालक कष्ट।
,, जाया ,,—यात्रा अधिक, स्त्री से उत्कर्ष, यश, कभी२ असफलता।
,, आयु ,,—अपयश, कष्टमय परिस्थिति, भ्रातृ कष्ट, यात्रा कष्ट हो।
,, धर्म ,,—धन सुख, उत्कर्ष, यश, सत्कार्य, धर्म वृत्ति, भ्रातृ सुख।
,, कर्म ,,—सन्मान, उत्कर्ष, मन्त्री या सेनापति कार्य, साहस वृद्धि।
,, लाभ ,,—लाभ अच्छा, गंभीर वृत्ति, विद्यावृद्धि सत्कार्य, गुरुभक्ति।
,, व्यय ,,—धन कष्ट, अपयश, मातुल कष्ट, ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट, हानि।

## राज्येश-फल

राज्येश लग्न में—महत्त्वाकांक्षा, साहस से उत्कर्ष साहित्य प्रेम, सुख।
,, धन ,,—सेवाकार्य से लाभ, धार्मिककार्य में खर्च, उत्कर्ष, सुख।
,, भ्रातृ ,—स्वतन्त्र व्यापार, साहस, महत्त्वाकांक्षा, उत्कर्ष, लाभ।
,, सुख ,,—यश, धन सुख, बड़ों से सुख, सत्कार्य, उत्कर्ष, साहस।
,, पुत्र ,,—शिक्षा से लाभ, प्रबन्ध कार्य, सन्तान सुख, प्रसन्नता।
,, रिपु ,—उद्योग में अनेक अड़चनें; शत्रु वृद्धि, राजदंड, अपयश।
,, जाया ,,—दूर की यात्रा, लाभ, साझे में व्यापार सत्कार्य, काव्यरुचि।
,, आयु ,—पितृ धनलाभ, कष्टकर समय, विरोध उद्भ्रमता, अयश।
,, धर्म ,,—स्वतन्त्र व्यापार का प्रयत्न, सत्कार्य, उत्कर्ष, धन लाभ।
,, कर्म ,,—पदवृद्धि, यश, साहसवृद्धि, राजसन्मान, उत्कर्ष, सुख।
,, लाभ ,,—साहस से लाभ, राजसन्मान, उत्कर्ष, कुटुम्बीय सुख।
,, व्यय ,,—व्यापार में खर्च, धन कष्ट, राजदंड, शत्रुवृद्धि, क्षोभ।

## लाभेश-फल

लाभेश लग्न में—द्रव्यलाभ, सात्त्विकवृत्ति, समदृष्टि, क्रीड़ावृत्ति, सुयश ।
,, धन ,,—व्यापार से लाभ, अनेकसुख, सन्तानसुख, सत्कार्य, यश ।
,, भ्रातृ ,,—साहस से संचय, स्वतन्त्र, बन्धुसहायता, तीर्थ यात्रा ।
,, सुख ,,—जायदात वृद्धि, मातृ सुख, राजसुख, उत्कर्ष, यश, हर्ष ।
,, पुत्र ,,—सन्तानसुख, विद्या वृद्धि, सत्कार्य, सफलता, हर्ष, सुख ।
,, रिपु ,,—लाभ की हानि, शत्रुअधिक,मातुल सुख, शारीरिक कष्ट ।
,, जाया ,,—स्त्री-द्वारालाभ, उत्कर्ष, स्त्री को कष्ट, सत्कार्य, बुद्धिभ्रंश ।
,, आयु ,,—अकल्पित द्रव्यलाभ,स्त्रीकष्ट, सत्कार्य,चंचलचित्त,अयश ।
,, धर्म ,,—एकदम भाग्योदय,राजसम्मान, धन-सुख, सत्कार्य में व्यय ।
,, कर्म ,,—व्यापार से लाभ, चिन्ता नाश, धन-सुख, राजसम्मान ।
,, लाभ ,,—लाभ अच्छा, वक्तृत्व कार्य, साहित्य प्रेम, हर्ष,सत्कार्य ।
,, व्यय ,,—अधिक खर्च, संचय न हो, कुसंगति, विलासी बुद्धि ।

## व्ययेश-फल

व्ययेश लग्न में—मूर्खता से अधिक खर्च, पश्चात्ताप, संकट, स्त्री कष्ट ।
,, धन ,,—कुटुम्बीय खर्च अधिक, ऋण चिन्ता, सत्कार्य यशवृद्धि ।
,, भ्रातृ ,,—स्त्री तथा बड़ों से बिरोध, बन्धुकष्ट, विचित्र व्यापार करे ।
,, सुख ,,—सवारी में अधिक खर्च, बड़ों से हानि, मातृ विरोध हो ।
,, पुत्र ,,—बुद्धिभ्रंश, ऋण चिन्ता, कलह, सन्तानकष्ट, विद्या ह्रास ।
,, रिपु ,,—शत्रु या चोर या नौकरों से हानि, कष्ट, मातृविरोध ।
,, जाया ,—झगड़ा में हानि, विलासी खर्च स्त्री की शौकीनता से कष्ट ।
,, आयु ,,—जूआ या सट्टे में धनहानि, शरीरकष्ट, अनेक चिन्ता ।
,, धर्म ,,—परोपकार में या सत्कार्य में ज्यादा खर्च, स्त्री विरोध ।
,, कर्म ,,—सन्तान कष्ट, व्यापार में खर्च, संकट, अनेक चिन्ता ।
,, लाभ ,,—सन्तानकष्ट, मित्रों से सहायता,लाभकम, धन का सुख ।
,, व्यय ,,—मातृ विरोध, क्रोधी वृत्ति, सन्तान कष्ट, विलास में खर्च ।

# सूर्य-दशा-फल

सूर्य लग्न में–यात्रा, रोग, अस्थिर, नेत्र रोग, धन हानि, राजकोप।
,, धन ,–शरीरकष्ट, धनकष्ट, कलह, भ्रातृ कष्ट, राजभय, चिन्ता, क्षोभ।
,, भ्रातृ ,,–साहसी कार्य में यश, बन्धु पीड़ा, कर्ण रोग, राजसम्मान।
,, सुख ,,–मातृ कष्ट, हृद्रोग, स्थावर, वित्त की चिन्ता, शस्त्रभय।
,, पुत्र ,,–सन्तान चिन्ता, शरीर कष्ट, चंचल, संचय का मौका।
,, रिपु ,,–व्रण कष्ट, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, रक्त विकार, बड़ों से क्लेश।
,, जाया ,,–स्त्री व शरीर कष्ट, उद्विग्नता, प्रपंचिक कष्ट, व्यग्रता।
,, आयु ,,–शरीर कष्ट, व्यापार हानि, नेत्र कष्ट, उष्ण विकार।
,, धर्म ,,–पश्चात्ताप, बुद्धि भ्रंश, नास्तिकता, शारीरिक कष्ट, यात्रा।
,, कर्म ,,–व्यापार में लाभ, यश, पद वृद्धि, सन्मान, सन्तान सुख।
,, लाभ ,,–अनेक लाभ, व्यापार उन्नति, सन्तान सुख, मित्र सुख।
,, व्यय ,,–शरीर कष्ट, ऋण चिन्ता, शत्रु अधिक, अपयश, शोक।

,, मेष ,,–धार्मिक अभिमान, लाभ, महत्त्वाकांक्षा, कुटुम्बीय सुख।
,, वृष ,,–स्त्री व सन्तान कष्ट, स्थावर क्लेश, घरू चिन्ता, हृद्रोग।
,, मिथुन ,,–साहित्य प्रेम, प्राचीन संस्कृति में श्रद्धा, धन सुख, यश।
,, कर्क ,,–मित्रों से विरोध, अधिकारियों से प्रेम, क्रोध, स्त्री चिन्ता।
,, सिंह ,–सफलता, प्रभाव, साहस वृद्धि, राजा सन्मान, द्रव्य लाभ।
,, कन्या ,–सत्कार्य, देव भक्ति, द्रव्य लाभ, स्त्री सुख, यश, हर्ष, यात्रा।
,, तुला ,,–चोर या अग्नि भय, स्त्री व धन कष्ट, स्त्री द्वारा अपमान।
,, वृश्चिक ,,–विषैली वस्तु से हानि, अग्नि भय, शस्त्र भय, अपमान।
,, धनु ,,–उत्कर्ष, द्रव्य लाभ, सुख, सन्मान, कुटुम्बीय सुख, यश।
,, मकर ,,–असफलता, दुःख, अपमान; उद्विग्नता, अनेक चिन्ता, भय।
,, कुंभ ,,–प्रसन्नता, हृद्रोग, धन व स्त्री व सन्तान से त्रास, अपयश।
,, मीन ,,–रक्तदोष, पित्तादि से शारीरिक कष्ट, प्राप्ति में अड़चन।

# चन्द्र-दशाफल

चन्द्र लग्न में-शरीर कष्ट, निरुत्साह, धनकष्ट, चंचलता, दुर्बलता, भय।
,, धन ,,-द्रव्य संचय, स्त्री पुत्र सुख, कुटुम्बीय उत्कर्ष, सुयश।
,, भ्रातृ ,,-बन्धुओं का उत्कर्ष, प्रवास में सुख, साहसी काय में यश।
,, सुख ,,-धनसुख, सवारीसुख, कुटुम्बीयसुख, पदलाभ, यश।
,, पुत्र ,,-प्रतिष्ठा, सन्तान सुख, पदवृद्धि, विद्या वृद्धि, मैत्री सुख।
,, रिपु ,,-शत्रुभय, अपमान, द्रव्य हानि, संकट, पराधीनता, भय।
,, जाया,,-स्त्री सुख, व्यापार में लाभ, विदेशों से व्यवहार, प्रवास।
,, आयु,,-कष्ट, यात्रा, मातृकष्ट, जल से भय, धन चिन्ता, विरोध।
,, धर्म ,,-उत्कर्ष, सम्मान, द्रव्यलाभ, पद वृद्धि, प्रसन्नता, यात्रा।
,, कर्म ,,-उत्कर्ष, व्यापार में लाभ, पदवृद्धि, माता, पिता का सुख।
,, लाभ ,,-अनेक प्रकार से लाभ-स्त्री, पुत्र, सवारी सुख, धनसंचय।
,, व्यय ,,-संकट, अपयश, जलभय, शत्रुत्रास, भाग्य का ह्रास, हानि।

,, मेष ,,-ईश्वराराधना, देवभक्ति, चंचलता, यात्रा, सुयश, उत्कर्ष।
,, वृष ,,-राज्य सुख, उत्कर्ष, स्त्री पुत्र सुख, सवारी सुख, लाभ।
,, मिथुन ,-परदेश की इच्छा, सुख, सत्कार्य, मातृ पितृ भक्ति, यश।
,, कर्क ,,-भूमि, सवारी सुख, नवीन योजना, रोग, सत्कार्य में हर्ष।
,, सिंह ,,-शरीरकष्ट, उत्कर्ष, यश, द्रव्यलाभ, सत्तात्मक समय,।
,, कन्या ,,-स्त्रीसुख, पाप बुद्धि, उत्तावली, यात्रा, द्रव्य लाभ सामान्य।
,, तुला ,,-धन की कमी, निरुत्साह, कुसंगति, विवाद, स्त्री चिन्तना।
,, वृश्चिक,,-संकट, अपयश, पराधीनता, शत्रु, वृद्धि, राजविरोध।
,, धनु ,,-धन कष्ट, साहस से उत्कर्ष, चिन्ता, राज विरोध, यात्रा।
,,मकर,,-प्रवास, व्यापार में अस्थिरता, गुप्त चिन्ता, सन्तान सुख।
,,कुंभ ,,-द्रव्य की कमी, ऋण चिन्ता, कुसंगति, ,पाप बुद्धि, अयश।
,,मीन,,-खर्च अधिक, शत्रुनाश. स्त्री पुत्र सुख, जल द्रव्य अधिक।

# भौम-दशा फल

भौम लग्न में—मस्तक पीड़ा, उद्वेग, द्रव्य हानि, शरीर कष्ट, संकट।
,, धन ,,—धन की कमी, नेत्रकष्ट, व्यर्थ खर्च, संतान चिन्ता उष्णता।
,, भ्रातृ ,,—साहसी कार्य में यश, सत्ताप्राप्ति बन्धु कष्ट, प्रसन्नता।
,, सुख ,,—जायदाद की खराबी, शस्त्राघातभय, संतान चिन्ता, रोग।
,, पुत्र ,,—बुद्धि भ्रंश, पाप कार्य में अपयश, नेत्र रोग, अधिक खर्च।
,, रिपु ,,—साहसी कार्य में यश, धनकष्ट, शत्रुविजय, रक्त-दोष।
,, जाया,,—स्त्री कष्ट, व्यापार में हानि, दूर की यात्रा, शत्रु से हानि।
,, आयु ,,—शरीर कष्ट, रक्त विकार, मूल व्याधि से त्रास, संकट।
,, धर्म ,,—उत्कर्ष में विघ्न, नास्तिकता, अपयश, हानि, बड़ों को कष्ट।
,, कर्म ,,—पदप्राप्ति, बड़ों से मित्रता, व्यापार में लाभ, शत्रु नाश।
,, लाभ ,,—लाभ, स्त्रीसुख, भूमिप्राप्ति, शत्रुनाश, सन्तानचिंता, यश।
,, व्यय ,,—धन हानि, स्त्री को कष्ट, संकट, राजकोप, शत्रु से हानि।

,, मेष ,,—शरीर कष्ट, विजय, लाभ, पदप्राप्ति, सम्मान, वस्त्रलाभ।
,, वृष ,,—देवभक्ति, सत्कर्म में द्रव्य, स्त्री कष्ट, रक्त कफ दोष।
,, मिथुन ,,—यात्रा, पितृविरोध, बड़ों से विरोध, खर्च अधिक, शत्रुता।
,, कर्क ,,—भूमि, सवारी की प्राप्ति, स्त्री पुत्र व स्वजन वियोग, उद्वेग।
,, सिंह ,,—मुखियापना, धनसुख, सत्याग्रही, स्त्री पुत्र चिन्ता, यश।
,, कन्या ,,—सत्कार्य में श्रद्धा, स्त्री चिन्तन, लाभ में कठिनता, उद्वेग।
,, तुला ,,—व्यापार में लाभ, स्त्री द्वारा लाभ, सुयश, सत्तात्मक समय।
,, वृश्चिक ,,—कृषि व्यापार से लाभ, शत्रुता, पराजय, प्रसन्नता, सुयश।
,, धनु ,,—धार्मिक उन्नति, वादविवाद में प्रसन्नता, लाभ, सुख।
,, मकर ,,—पदप्राप्ति, विजय, सुख, मुखियापना, राजसन्मान, हर्ष।
,, कुंभ ,,—पापवृत्ति, सन्तान से कष्ट, अधिक खर्च, भ्रमित चित्त।
,, मीन ,,—सन्तान चिन्ता, ऋणग्रस्त, प्रवास, हृद्रोग, उष्णविकार।

## राहु-दशा-फल

राहु लग्न में—शरीर कष्ट, असंतोष, विषैली वस्तु से भय, विरोध।
,, धन ,,—धननाश, पराधीनता, कलह, वियोग, स्त्रीकष्ट, अयश।
,, भातृ ,,—साहसी कार्य में यश, बड़ों से मित्रता, प्रापंचिक सुख।
,, सुख ,,—मातृकष्ट, वियोग, स्थावर की हानि, राजकोप, संकट।
,, पुत्र ,,—पदहानि, व्यग्रता विद्या में अपयश, मनोभंग, शत्रुहानि।
,, रिपु ,—शत्रुनाश, यश, धनलाभ, अग्निभय, प्रमेह रोग से कष्ट।
,, जाया ,,—स्त्री को कष्ट, प्रवास, शरीरकष्ट, द्रव्यहानि, सर्पभय।
,, आयु ,—शारीरिक संकट, अपयश, धनहानि, दुःख, विरोध।
,, धर्म ,—बड़ों से दुःख, बन्धुवियोग, समुद्र या तीर्थ यात्रा।
,, कर्म ,—सत्कार्य में यश, तीर्थयात्रा, राजसन्मान, गंगाप्राप्ति, हर्ष।
,, लाभ ,,—स्त्री संतानसुख, द्रव्यलाभ, सुयश, विलासीवृत्ति, हर्ष।
,, व्यय ,,—प्रापंचिक कष्ट, स्त्री सन्तान कष्ट, राजकोप, शत्रुत्रास।

## गुरु-दशा-फल

गुरु लग्न में—शरीर सुख, यश, सन्तान सुख, उत्कर्ष, विद्या बुद्धि, लाभ।
,, धन ,,—बड़ों से मैत्री, लाभ, विजय, राजसम्मान, कुटुम्बीय सुख।
,, भ्रातृ ,,—बन्धु उत्कर्ष, साहस से लाभ, बन्धु सुख, यात्रा सुख, हर्ष।
,, सुख ,,—सुख, प्रापंचिक औद्योगिक, शारीरिक उन्नति, सम्मान।
,, पुत्र ,,—धार्मिक उन्नति, यश, महत्त्वाकांक्षा में सफलता, लाभ।
,, रिपु ,,—स्त्री पुत्र सुख, लाभ। अन्त में रोग, शत्रुत्रास, चोर भय।
,, जाया ,,—स्त्री पुत्र सुख, तीर्थ यात्रा या प्रवास, व्यापार में सफलता।
,, आयु ,,—प्रापंचिक कष्ट, विरोध, कुटुम्बीय कष्ट, यात्रा, हानि, कष्ट।
,, धर्म ,,—पद वृद्धि, स्त्री सन्तान सुख, धार्मिक उत्कर्ष लाभ, यश।
,, कर्म ,,—पद वृद्धि, राजसन्मान, कुटुम्बीय सुख, सत्तात्मक वृत्ति।
,, लाभ ,,—उत्कर्ष, लाभ, सवारीसुख, राजविरोध, बड़ों से मित्रता।
,, व्यय ,,—शरीरकष्ट, संकट, स्थावर वस्तु, सवारी का लाभ, व्यय।

गुरु मेष में–कुटुम्बीय सुख, मुखियापना, उत्कर्ष, राजसन्मान, लाभ।
,, वृष ,,–लाभ, जोखिम का कार्य, कुटुम्बीय कष्ट, शत्रुपीड़ा, कष्ट।
,, मिथुन ,,–साहस से सफलता, सुख, स्वजनों से त्रास, हार्दिक दुःख।
,, कर्क ,,–राजसुख, मन्त्रीकार्य, यश, लाभ, हर्ष, उत्कर्ष, सफलता।
,, सिंह ,,–लाभ, यश, विद्याउन्नति, सन्तानसुख, सम्मान, सुख, हर्ष।
,, कन्या ,,–लाभ, अपमान, बड़ों से मैत्री, पदवृद्धि, कुटुम्बीय सुख।
,, तुला ,,–बुद्धिभ्रंश, स्वजनों से विरोध, अपयश, स्त्री पुत्र से त्रास।
,, वृश्चिक ,,–स्थावर सुख, बुद्धि कार्य में यश, जायदात में सत्ता, हर्ष।
,, धनु ,,–सवारीसुख, नौकर का सुख, परोपकार में यश, धर्मवृत्ति।
,, मकर ,,–प्रवास, गुप्तरोग, कुटुम्बीय चिन्ता, शरीरकष्ट, हानि।
,, कुंभ ,,–विद्या में यश, राजसन्मान, कुटुम्बीय उत्कर्ष, हर्ष, लाभ।
,, मीन ,,–प्रतिष्ठा, उद्योग में उन्नति, विजय, लाभ, पदवृद्धि, हर्ष।

## शनि-दशा-फल

शनि लग्न में–शरीर कष्ट, वात विकार, द्रव्य की कमी, राजभय, रोग।
,, धन ,,–कुटुम्बीय चिन्ता, संकट, उष्ण विकार, नेत्र कष्ट, हानि।
,, भ्रात ,,–बन्धुपीड़ा, राजभय बुद्धिभ्रंश लाभसामान्य, बड़ों में सत्ता।
,, सुख ,,–मातृ कष्ट, शत्रु उपद्रव, गृह हानि, अपयश, राजकोप।
,, पुत्र ,,–कुटुम्बीय चिन्ता, बुद्धिभ्रंश, विद्या में विघ्न, शत्रु त्रास कष्ट।
,, रिपु ,,–संकट, द्रव्य लाभ, व्याधि, यात्रा कष्ट किसी की सहायता।
,, जाया,,–शत्रुभय स्त्री पीड़ा, उत्कर्ष में अड़चन मूत्रकृच्छ्र से रोग।
,, आयु ,,–शरीर कष्ट, धन हानि, अपमान, कुटुम्बीय कष्ट, त्रास।
,, धर्म ,,–बड़ों को कष्ट, प्रवास लाभ शत्रुनाश धर्म, वृत्ति में व्यय।
,, कर्म ,,–कलह. उद्योग में विघ्न, पितृ का, राजकोप, अयश।
,, लाभ ,, द्रव्यलाभ, बड़ों से मित्रता सत्तात्मक वृत्ति, राजसन्मान।
,, व्यय ,, नाश, द्रव्य नाश, राज संकट, अपयश ऋण चिन्ता राजदंड।

शनि मेष में–रोगवृद्धि, रक्तदोष, भ्रमण, विरोध, धनहानि कष्ट।
,, वृष ,,–बुद्धिद्वारा यश, विजय, स्त्रीसुख, धनलाभ, हर्ष, उत्कर्ष।
,, मिथुन ,,–विलासी वृत्ति, स्त्री द्वारा लाभ, सत्तात्मक वृत्ति, सुख, हर्ष।
,, कर्क ,,–शरीर कष्ट, संकट, नेत्र कष्ट, चंचल वृत्ति, मित्रता।
,, सिंह ,,–कुटुम्बीय कलह, वियोग, अपयश, धन की कमी, दुःख।
,, कन्या ,,–द्रव्यसुख, मित्रवृद्धि, सफलता, उत्कर्ष, हर्ष, सुयश।
,, तुला ,,–पदवृद्धि, धनलाभ, स्वर्णलाभ, स्थावर वृद्धि, प्रसन्नता।
,, वृश्चिक,,–महत्वकार्य में यश, भ्रमण, सफलता, नीचसंगति।
,, धनु ,,–शत्रुपराजय, अधिकखर्च, कार्य की आधिक्यता, खिन्नता।
,, मकर ,,–कष्ट बहुत, लाभ कम, त्रास, विश्वासघात, संकट, दुःख।
,, कुंभ ,,–सन्मान, धनलाभ, विद्या में उन्नति, मित्रों की सहायता।
,, मीन ,,–परोपकारी बुद्धि, राजसुख, धनलाभ, शत्रुनाश, हर्ष।

## बुध-दशा-फल

बुध लग्न में–आरोग्य, स्थावर सम्पत्ति से लाभ, यशवृद्धि, कुटुम्ब सुख।
,, धन ,,–विद्या कार्य में यश, लाभ, कुटुम्बीय उत्कर्ष, वक्तृत्व कार्य।
,, भ्रातृ ,,–शरीर कष्ट, बन्धु सुख, स्थलान्तर, कर्णरोग, यात्रा, हर्ष।
,, सुख ,,–स्थावर हानि, सवारी कष्ट, असफलता, अपयश, क्षोभ।
,, पुत्र ,,–अल्पलाभ, पराधीनता, कुटुम्बसुख, विद्या में यश, चिंता।
,, रिपु ,,–रोग वृद्धि, कटुस्वभाव, मानसिक दुर्बलता शत्रु नाश।
,, जाया ,,–स्त्री पुत्र सुख, व्यापार में लाभ, यश, विद्या उन्नति हर्ष।
,, आयु ,,–संकट, राजकोप, द्रव्यनाश, वात पीड़ा। अन्त में विजय।
,, धर्म ,,–तीर्थ यात्रा, धार्मिक वृत्ति, उत्कर्ष, यश, प्रसन्नता, लाभ।
,, कर्म ,,–बड़े कार्य में यश, राजा से लाभ, मन्त्रि कार्य, प्रसन्नता।
,, लाभ ,,–लाभ, सवारीसुख, सन्तान सुख, यश, मित्रों से सहायता।
,, व्यय ,,–खर्च संकट, बड़ों से सहायता, शत्रु त्रास। अन्त में यश।

बुधमेष में–कुकर्म में संल्लग्नता, दुष्टसंगति, अनुचित प्रवृत्ति, क्षोभ।
,, वृष ,,–व्यर्थ खर्च, कुटुम्बीय चिन्ता, सन्ताप, उद्योग असफल।
,, मिथुन ,,–प्रापंचिक सुख, मातृ कष्ट. विरोध, यश, वक्तृता से सत्ता।
,, कर्क ,,–प्रवास या हीनस्थान में त्रास, लिखापढ़ी कार्य, यश।
,, सिंह ,,–लाभ खूब, कुटुम्बीय कष्ट, बुद्धि भ्रंश, अपयश, चिन्ता।
,, कन्या ,,–उत्कर्ष, धार्मिक वृत्ति, उपासना में रुचि, यश, प्रसन्नता।
,, तुला ,,–शरीरकष्ट, व्यापार में द्रव्यव्यय अधिक, क्षीणता, दुःख।
,, वृश्चिक,,–मित्रकष्ट, प्रवास, शरीर कष्ट, पराधीनता, क्षोभ, भय।
,, धनु ,,–द्रव्य की कमी, किसी काम में लोक विरोध पीछे सहायता
,, मकर ,,–दुष्ट संगति, असत्याचरण, गुप्त कार्य में व्यय, अपयश।
,, कुंभ ,,–द्रव्यनाश, संकट, अस्थिरता, विश्वासघात, मित्र से कष्ट।
,, मीन ,,–शरीर कष्ट, चिन्ता, लाभ सामान्य, संचय में कमी, दुःख।

## केतु-दशा-फल

केतु लग्न में–शरीर कष्ट, हृद्रोग हैजा, अतीसार, ज्वरादि, रोग दुःख।
,, धन ,,–धननाश, ऋण चिन्ता, संकट, पराधीनता, अपयश, दुःख।
,, भ्रातृ,–बन्धु विरोध, साहस से उत्कर्ष, उद्योग में सफलता, यश।
,, सुख ,,–अग्निभय, स्थावर हानि सवारी भय, बड़ों को कष्ट दुःख।
,, पुत्र ,,–संतान कष्ट बुद्धि भ्रंश, राजकोप, कष्ट लाभ, विद्या हानि।
,, रिपु,,–शरीर कष्ट, मामा को कष्ट, मित्र सुख, विजय, द्रव्य लाभ।
,,जाया ,–कुटुम्बीय चिन्ता, धन की कमी, प्रवास, मूत्र कृच्छ्र का रोग।
,, आयु,,–बड़ों को कष्ट, शरीर कष्ट, अपयश, उद्योग असफल।
,, धर्म,,–धार्मिक कार्य में यश, स्वजनों से त्रास, प्रापंचिक कष्ट, दुख।
,, कर्म,,–हानि, अनेक अड़चने, संकट, अन्त में लाभ, सुव्यवस्था।
,, लाभ ,,–उत्कर्ष, विद्या में यश, सन्तान कष्ट, सत्तात्मक वृत्ति, हर्ष।
,, व्यय ,,–स्थलान्तर, राजकार्य में अपयश, नेत्र पीड़ा, हानि विपत्ति।

# शुक्र-दशा-फल

शुक्र लग्न में—शरीर सुख, बड़ों से प्रेम, लाभ यश, हर्ष, सवारी सुख ।
,, धन ,,—सत्कर्म व्यय, स्त्री चिन्ता, उद्योग सफल अन्न लाभ, हर्ष ।
,, भ्रातृ ,,—बन्धु उत्कर्ष, स्थलान्तर, उत्साह, यश, सुख, नौकर सुख ।
,, सुख ,,—राजमान, विजय, उत्कर्ष, प्रसन्नता, पदवृद्धि, भूमि लाभ ।
,, पुत्र ,,—सन्तान सुख, उत्कर्ष, विद्या उन्नति, उद्योग में सफलता ।
,, रिपु ,,—रोग वृद्धि, द्रव्य हानि, कुटुम्बीय चिन्तना मानसिक क्लेश ।
,, जाया ,,—पदह्रास, व्यापार में हानि, धन की कमी, भ्रमण, संकट ।
,, आयु ,,—शारीरिक साम्पत्तिक अड़चन, शत्रुभय, क्लेश, अयश ।
,, धर्म ,—उत्कर्ष, सवारी सुख, धार्मिक उन्नति, कुटुम्बीय सुख हर्ष ।
,, कर्म ,—व्यापार वृद्धि, विद्या यश लाभ अच्छा बड़ों से मित्रता हर्ष ।
,, लाभ ,,—लाभ खूब, सन्तान सुख, पद वृद्धि, सफलता, मित्र सुख ।
,, व्यय ,,—मातृकष्ट, नेत्रकष्ट, धन कष्ट, व्याधि, ऋण चिन्ता, संकट ।

शुक्र मेष में—अनेक सुख, स्थलान्तर, स्त्री सुख, व्यापार में लाभ, सुयश ।
,, वृष ,,—गृह सुख, पशु वृद्धि, बहिन व कन्या सुख, धार्मिक, वृत्ति ।
,, मिथुन ,,—बुद्धि से सत्ता, कला कौशल की ओर झुकाव, ग्रन्थ रचना ।
,, कर्क ,,—व्यापार उन्नति स्वतन्त्र, चंचल चित्त सुख लाभ हर्ष, यश ।
,, सिंह ,,—स्त्री से लाभ सन्तानचिन्ता साहसी कार्य में यश सवारी कष्ट ।
,, कन्या ,,—अनेक चिन्ता महत्वाकांक्षा स्त्री चिन्ता गुप्त रोग क्लेश क्षोभ ।
,, तुला ,,—द्रव्य लाभ शत्रुनाश स्त्री सुख किसी संस्था का मुखियापना ।
,, वृश्चिक ,,—प्रवास, झगड़ा, ऋणचिन्ता, परोपकारी वृत्ति, चातुर्य, हर्ष ।
,, धनु ,,—शत्रुत्रास, पदवृत्ति में अड़चन, धन लाभ, सुख यश ।
,, मकर ,,—कुटुम्बीय चिन्ता, प्रवास, सवारी कष्ट, विजय, यशवृद्धि ।
,, कुंभ ,,—विद्या कला कौशल में चातुर्य, लाभ सन्तान सुख सफलता ।
,, मीन ,,—बड़ों तथा सवारी से सुख, उत्कर्ष, प्रधान पद प्राप्ति, यश ।

# गोचर-विवेक

गोचर-फल जानने के लिये प्रथम यह देखना चाहिये; कि मेषादि लग्न (जन्म-लग्न) में जन्म होने से सूर्यादि ग्रह क्या फल (शुभाशुभ) करते हैं। आगे बृहत्पाराशरी' के श्लोक उद्धृत किये जाते हैं।

मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः॥
परतंत्रेण जीवस्य पापकर्मापि निश्चितम्।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥
मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।

भाषा—मेष लग्न में जन्म होने से शनि, बुध, और शुक्र अशुभफल करते हैं। गुरु व सूर्य शुभफल कारक है। शनि, गुरु का संयोग जहां राजयोग करता है; वहां गुरु व्ययेश होने से, शनि एकादशेश होने से प्रकारान्तर से पापफल-कारक अवश्य होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं; कि शनि का जिस समय शुक्र से सम्बन्ध होता है; मारक फल करता है। क्योंकि शुक्र मारकेश है।

जीवशुक्रेन्दवः पापाः शुभौ शनिदिवाकरौ।
राजयागकरः साक्षादेक एव रवेः सुतः॥
जीवादयो ग्रहाः पापाः सन्ति मारकलक्षणाः।
बुधस्तत्र फलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः॥

भाषा—वृषभ लग्न में जन्म होने से शनि, सूर्य शुभफल करते हैं। गुरु, शुक्र, चन्द्र पापफल करते हैं। एक शनि ही राजयोग कारक है; पर गुरु, शुक्र, चन्द्र, बुध अपनी २ दशाओं में अशुभफल करते हैं।

भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः।
शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा॥

नायं शशी निहन्ता स्याल्लक्षणं पापनिष्फलम् ।
ज्ञातव्यानि द्वंद्वजस्य फलान्येतानि सूरिभिः ॥

भाषा—मिथुन लग्न में जन्म होने से मंगल, गुरु और सूर्य अशुभफल करते हैं। शुक्र शुभफल करता है। शनि, गुरु का संयोग मेष लग्न के समान ही अशुभ ही देता है। यदि चन्द्र सपाप न हुआ हो तो मारक नहीं होता। बुध, शुक्र का संयोग राजयोगकारक है। शुक्र भी व्ययेश होने से कुछ दूषित होजाता है।

भार्गवेन्दुसुतौ पापौ भूसुतांगिरसौ शुभौ ।
एक एव ग्रहः साक्षाद् भूसुतो योगकारकः ॥
निहन्ता रविजोऽन्ये तु मानिनो मारकाह्वयाः ।
कुलीरसंभवस्येवं फलान्युक्तानि सूरिभिः ॥

भाषा—कर्क लग्न में जन्म होने से शुक्र, बुध अशुभफल करते हैं। मंगल व गुरु शुभफल करते हैं। केवल मंगल ही राजयोग कारक है। शनि मारकफल देता है। अन्य ग्रह तो केवल कष्टकारक ही हो सकते हैं।

रौहिणेयसितौ पापौ कुज एव शुभग्रहः ।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं गुरुशुक्रयाः ॥
घ्नन्ति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः ।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहे यस्य जनुर्भवेत् ॥

भाषा—सिंह लग्न में जन्म होने से बुध, शुक्र अशुभ फल करते हैं। मंगल शुभफल करता है। शुक्र, गुरु का संयोग शुभ नहीं। बुधादि ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में मारकफल करते हैं।

कुजजीवेन्दवः पापा एक एव भृगुः शुभः ।
भार्गवेन्दुसुतावेव भवेतां योगकारकौ ।
निहन्ता कविरन्ये तु मारकास्तु कुजादयः ।
प्रतीक्षेत फलान्युक्तान्येवं कन्याभवं बुधैः ॥

भाषा—कन्या लग्न में जन्म होने से मंगल, गुरु और चन्द्र पापफल करते हैं। शुक्र, बुध का संयोग राजयोग कारक होता है शुक्र ही विशेष मारक फल देता है मंगल आदि स्वदशान्तर्दशा में मारकफल देते हैं।

जीवार्कमहिजाः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ चन्द्रतत्सुतौ।
कुजो निहन्ति जीवाद्याः परे मारकलक्षणाः।
निहन्तारः फलान्येवं काव्यो न तु तुलाभुवः॥

भाषा—तुला लग्न में जन्म होने से गुरु, सूर्य, मंगल अशुभफल करते हैं। शनि और बुध शुभफल करते हैं। चन्द्र, बुध का संयोग राजयोग कारक होता है। गुरु, मंगल की दशान्तर्दशा में मारक फल होता है।

सौम्यभौमासिताः पापाः शुभौ गुरुनिशाकरौ।
सूर्यचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ॥
जीवो निहन्ता सौम्याद्याः हन्तारो मारकाह्वयाः।
इत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः॥

भाषा—बुध, मंगल, शुक्र अशुभफल करता है। गुरु, चन्द्र शुभफल करता है। सूर्य, चन्द्र का योग राजयोग कारक होता है। गुरु, बुधादि मारकफल कारक हैं।

एक एव भृगुः पापः शुभौ सौम्यदिवाकरौ।
योगो भास्करसौम्याभ्यां निहन्ता भास्वतः सुतः।
घ्नन्ति शुक्रादयः पापाः मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः॥

भाषा—धनु लग्न में जन्म होने से बुध और सूर्य शुभफल करते हैं। शुक्र अशुभ फल करता है। सूर्य, बुध का संयोग राजयोग कारक होता है। शुक्र मारकेश होता है।

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ ।
स्वयं चैव निहन्ता स्यान्मंदो भौमादयः परे॥
तल्लक्षणानि हन्तारः कविरेकः सुयोगकृत् ।
ज्ञातव्यानि फलान्येव विबुधैर्मृगजन्मनः ॥

भाषा—मकर लग्न में जन्म होने से मंगल, गुरु और चन्द्रमा पापफल करते हैं। बुध और शुक्र शुभफल करते हैं। भौमादि पापग्रह अपनी दशान्तर्दशा में मारकफल करते हैं। एक शुक्र ही राजयोग कारक है।

जीवचन्द्रकुजाः पापाः एको दैत्यगुरुः शुभः ।
राजयोगकरा भौमः कविश्चैव बृहस्पती ॥
निहन्ता घ्नन्ति भौमाद्याः मारकत्वेन लक्षिताः ।
एवमेव फलमूह्यान्येतानि घटजन्मनः ॥

भाषा—कुंभ लग्न में जन्म होने से गुरु, चन्द्र, मंगल पापफल करते हैं। शुक्र शुभफल करता है। मंगल, शुक्र का संयोग राजयोग कारक होता है। गुरु, मङ्गल, चन्द्र अपनी दशान्तर्दशा से अशुभफल करते हैं।

मन्दशुक्रांशवः सौम्याः पापा भौमविधू शुभौ ।
महीसुतगुरोर्योगे कारणैनैव भूसुतः ॥
मारकान्कारकान् वीक्ष्य मन्दज्ञौ घ्नन्ति पापिनः ।
इत्यूह्यानि फलान्येवं बुधैस्तु झषजन्मनः ॥

भाषा—मीन लग्न में जन्म होने से शनि, शुक्र, सूर्य पापफल करते हैं। मंगल, चन्द्रमा शुभफल करते हैं। मंगल, गुरु का संयोग राजयोग कारक होता है। केवल मंगल ही मारक नहीं हो सकता। शनि बुध आदि पापग्रह भी अपनी दशान्तर्दशा में मारकफल देते हैं।

## गोचर-फल

जन्म-राशि-द्वारा निम्न लिखित स्थानों में सूर्यादि ग्रह शुभफल दायक होते हैं।

तृतीये दशमे षष्ठे सदा सूर्यः शुभावहः।
प्रथमे दशमे षष्ठे तृतीये सप्तमे शशी॥
शुक्लपक्षे द्वितीयश्च पञ्चमो नवमः शुभः।
त्रिषष्ठे दशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभाः॥

भाषा—सूर्य ३।६।१० वें स्थान में, चन्द्रमा १।३।६।७।१० वें स्थानों में, शुक्लपक्ष में चन्द्र २।५।९वें स्थानों में, मंगल, राहु, केतु और शनि ३।६।१०वें स्थानों में शुभ होता है।

षष्ठेऽष्टमे द्वितीये च चतुर्थे दशमे बुधः।
द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः॥
विहाय शुक्रो दशमं षष्ठञ्च सप्तमं शुभः।
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः॥

भाषा—बुध २।४।६।८।१०वें स्थानों में, गुरु २।५।७।९वें स्थानों में; शुक्र ६।७।१० को छोड़कर शेष अन्य स्थानों में, ११ वें स्थान में सूर्यादि ग्रह सभी कार्यों में शुभफल करते हैं।

## क्रमवेध–विचार

सूर्यो रसान्त्ये खयुगेऽग्निनन्दे शिवाद्ययोर्भौमशनी तमश्च।
रसांकयोर्लाभशरे गुणान्त्ये चन्द्रोऽम्बराब्धौ गुणनन्दयोश्च॥
लाभाष्टमे चाद्यशरे रसान्त्ये नगद्वये ज्ञो द्विशरेऽब्धिरामे।
रसांकयोर्नागविधौ स्वभागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ॥
द्व्यन्ते नवांशऽद्रिगुणे शिवाहौ शुक्रः कुनागे द्विनगेऽग्निरूपे।
वेदाम्बरे पञ्चनिधौ गजेषौ नन्देशयो र्भानुरसे शिवाग्नौ॥
क्रमाच्छुभोविद्ध इति ग्रहः स्यात्पितुः सुतस्यात्र न वेधमाहुः।
(मु. चिन्तामणि)

भाषा—इन श्लोकों का अर्थ आगे स्पष्टतया इस प्रकार है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| सूर्य — | शुभस्थान— | ३– ६–१०–११ | |
| | वेधस्थान— | ९–१२– ४– ५ | |
| चन्द्र — | शुभस्थान— | १–३– ६–७–१०–११ | कृष्णपक्ष |
| | वेधस्थान— | ५–९–१२–२– ४– ८ | |
| चन्द्र — | शुभस्थान— | २–५– ९ | शुक्लपक्ष |
| | वेधस्थान — | १–६–१० | |
| मं. श. | शुभस्थान— | ३–६–११ | |
| रा. के. | वेधस्थान — | १२–९– ५ | |
| बुध — | शुभस्थान— | २–५–८–१०–११ | |
| | वेधस्थान— | ३–१–१– ८–१२ | |
| गुरु — | शुभस्थान— | २–५–७ –९–११ | |
| | वेधस्थान — | १२–४–३–१०– ३ | |
| शुक्र — | शुभस्थान— | १–२–३– ४–५–८– ९–११–१२ | |
| | वेधस्थान — | ८–७–१–१०–९–५–११ –३– ६ | |

नोट—पिता-पुत्र (सूर्य-शनि; चन्द्र-बुध) का परस्पर वेध नहीं होता।

उदाहरण—

सूर्य—जन्म-राशि से तीसरे स्थान में सूर्य हो, तथा जन्म-राशि से नवम स्थान में शनि के सिवाय अन्यग्रह हो तो सूर्य से वेध होता है। जन्म-राशि से ६वें सूर्य हो; तथा जन्म-राशि से १२वें शनि के सिवाय अन्यग्रह हो तो सूर्य से वेध होता है। इसी प्रकार चन्द्रादि ग्रहों का भी वेध जानना चाहिये। वेध होने से शुभफल कारक ग्रह अशुभफल करता है।

## विपरीतवेध-विचार

'दुष्टोऽपि खेटो विपरीतवेधाच्छुभो द्विकोणे शुभदः सितेऽब्जः।'

भाषा—इस श्लोक में 'विपरीतवेधात्' शब्द का व्यापक अर्थ है। जिसका स्पष्टार्थ करने के पहिले सूर्यादि ग्रहों का अशुभस्थान से वेध-विचार लिखा जाता है।

| ग्रह | | स्थान |
|---|---|---|
| सूर्य — | अशुभस्थान— | ४–५– ९–१२ |
| | वेधस्थान— | ३–६–१०–११ |
| चन्द्र — | अशुभस्थान— | १–४–५–८– ९–१२ |
| | वेधस्थान— | २–३–६–७–१०–११ —कृष्णपक्ष |
| चन्द्र — | अशुभस्थान— | ४–६–८ |
| | बेधस्थान— | २–५–९ —शुक्लपक्ष |
| मं. श. | अशुभस्थान— | ५–९–१२ |
| रा. के. | बेधस्थान— | ३–६–११ |
| बुध — | अशुभस्थान— | ३–६–७– ९–१२ |
| | वेधस्थान— | २–५–८–१०–११ |
| गुरु — | अशुभस्थान— | ३–४–१०–१२ |
| | वेधस्थान— | २–५– ९–११ |
| शुक्र — | अशुभस्थान — | ६–७–१० |
| | वेधस्थान — | २–५– ९ |

एक उदाहरण द्वारा इस वेध का विचार ( श्लोकार्थ ) स्पष्ट लिखा जाता है।

यथा-किसी की कर्क राशि है; तथा तुला का सूर्य गोचर में है; तथा धनुराशि का गुरु गोचर में है; तो राशि-द्वारा ४ र्थ सूर्य अशुभ है ही; पर उस तुला ( सूर्यस्थ राशि ) से ३ रे स्थान में ग्रह ( गुरु ) से वेध होने के कारण चौथा सूर्य अशुभ होता हुआ भी शुभ फल करेगा। यही इस 'विपरीत-वेध-विचार' में विशेषता है। इसके विचार करने से अशुभस्थान का ग्रह भी शुभ फल दायक हो जाता है। इस वेध-विचार में भी पिता-पुत्र का वेध नहीं होता।

स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः ।
हिमाद्रिविंध्यांतर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः ॥

नारदादि ऋषियों ने अपनी जन्मराशि से ही क्रम वेध मानते हैं। कश्यपादि ग्रह जिस राशि में स्थित हो; उस राशि से विपरीत वेध मानते हैं पर ये वेध हिमालय और विंध्याचल के बीच

के देशों के लोगों के लिये हैं। समस्त देश भर को इसके विचार की आवश्यकता नहीं। विशेषतः क्रमवेध-विचार बहुमत स्वीकृत है।

## गोचरग्रह-फल

सूर्यादि ग्रहों का प्रत्येक स्थानों में निम्न लिखित फल होता है।

### सूर्य-फल

गतिर्भयं श्रीर्व्यसनं च दैन्यं शत्रुक्षयो यानमतीवपीड़ा।
कान्तिक्षयोऽभीष्टवरिष्ठसिद्धिलाभो व्ययोऽर्कस्य फलं क्रमेण॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गमन | भय | श्री | व्यसन | दीनता | शत्रुनाश | गमन | पीड़ा | कांति हानि | सिद्धि | लाभ | व्यय |

### चन्द्र-फल

सदन्नमर्थक्षयमर्थलाभं कुक्षिव्यथां कार्यविघातलाभौ।
वित्तं रुजं राजभयं सुखं च लाभं च शोकं कुरुते मृगाङ्कः॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सुभोजन | हानि | लाभ | कुक्षि व्यथा | विघ्न | लाभ | धन | रोग | राज भय | सुख | लाभ | शोक |

नोट—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २।५।९ वां शुभफल करता हैं। तत्त्व यह कि क्षीण चन्द्र का अशुभ; पूर्ण चन्द्र का शुभ ही फल होता है।

### भौम-फल

भीतिं क्षतिः वित्तमरिप्रवृद्धिमर्थप्रणाशं धनमर्थनाशम्।
शस्त्रोपघातं च रुजं च रोगं लाभं व्ययं भूतनयः करोति॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भय | चोट | धन | शत्रु पीड़ा | धन हानि | लाभ | धन नाश | शास्त्र घात | रोग | पीड़ा | लाभ | व्यय |

## बुध-फल

वन्धं धनं वैरिभयं धनाप्तिं पीड़ां स्थितिं पीड़नमर्थलाभम् ।
खेदं सुखं लाभमथार्थनाशं क्रमात्फलं यच्छति सोमसूनुः ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बंधन | लाभ | शत्रु भय | लाभ | पीड़ा | स्थिति | पीड़ा | लाभ | खेद | सुख | लाभ | हानि |

## गुरु-फल

भीतिं वित्तं पीड़नं वैरिवृद्धिं सौख्यं शोकं राजमानं च रोगम् ।
सौख्यं दैन्यं मानवृद्धिं च पीड़ां दत्ते जीवो जन्मराशेः सकाशात् ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भय | धन | पीड़ा | शत्रु बृद्धि | सुख | शोक | सन्मान | रोग | सुख | दैन्य | मान | पीड़ा |

## शुक्र-फल

रिपुक्षयं वित्तमतीवसौख्यं वित्तं सुतप्रीतिमरातिवृद्धिम् ।
शोकं धनाप्तिं वरवस्त्रलाभं पीड़ा स्वमर्थं च ददाति शुक्रः ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शत्रु नाश | लाभ | सुख | लाभ | पुत्र प्राप्ति | शत्रु बृद्धि | शोक | लाभ | वस्त्र लाभ | पीड़ा | लाभ | लाभ |

## शनि-फल

भ्रंशं क्लेशं शं च शत्रुप्रवृद्धिं पुत्रासौख्यं सौख्यवृद्धिं च दोषम् ।
पीड़ां सौख्यं निर्धनत्वं धनाप्तिं नानानर्थं भानुसूनुस्तनोति ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्थान हानि | क्लेश | सुख | शत्रु बृद्धि | पुत्र क्लेश | सुख | दोष | पीड़ा | सुख | धन-हानि | धन-लाभ | अनर्थ |

## राहु–फल

हानिं नैःस्वं स्वं च वैरं च शोकं वित्तं वादं पीडनं चापि पापम् ।
वैरं सौख्यं द्रव्यहानिं प्रकुर्याद्राहुः पुंसां गोचरे केतुरेवम् ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| हानि | निर्धन | लाभ | वैर | शोक | धन | विवाद | पीड़ा | पाप | वैर | सुख | हानि |

नोट—राहु, केतु का फल एक ही सा होता है ।

## चन्द्र का विशेषफल

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसंपत्तिं चतुर्थे कलहागमम् ॥
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिं च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमाम् ।
सप्तमे राजसन्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥
नवमे धर्मलाभञ्च दशमे मानसेप्सितं ।
एकादशे सर्वलाभं द्वादशे हानिमेव च ॥

## जन्मराशि या नामराशि

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लक्ष्मी | संतोष | धन | कलह | ज्ञान | संपत्ति | राजमान | मरण | धर्म लाभ | इच्छा पूर्ति | लाभ | हानि |

## पापग्रहों का विशेषफल

द्विजन्मनिपञ्चमसप्तमगाश्चतुरष्टमद्वादशधर्मयुताः ।
धनधान्यप्राणहिरण्यहरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः ॥

भाषा—जन्मराशि से १।२।४।५।७।८।९।१२वें स्थानों में सूर्य, राहु, शनि और मंगल धन, धान्य, प्राण और सुवर्ण का नाश करते हैं। फलादेश में जहां कहीं भी मृत्यु शब्द आवे; वहां उसका इतना व्यापक अर्थ करना चाहिये।

व्यथा दुःखं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।
मरणं चापमानञ्च मृत्युरष्टविधस्मृतः ॥
(ज्यो. त. प्र.)

## स्थान–द्वारा–विचार

द्वादशस्थानों-द्वारा निम्न-लिखित बातों का विचार करना चाहिये।

प्रथमस्थान—शरीरसुख, उत्साह, प्रवास, महत्वाकांक्षा आदि

द्वितीयस्थान—द्रव्यसंचय, साम्पत्तिक स्थिति, कुटुम्ब, जेवर, आदि

तृतीयस्थान—बंधु, उद्योग, पराक्रम, महत्त्वाकांक्षा, प्रवास, विशेषकर ज्येष्ठबंधु का विचार, गुप्तशत्रु

चतुर्थस्थान—घर, जमीन, सवारी, कीर्ति, सुख, राजकीय, कैदी होने का योग, तलघरा, मृतमनुष्यों का माल

पंचमस्थान—संतति, बुद्धि, आप्तमिलन, उद्योग की दिशा, व्यापार में यश-अपयश, मातृधन

षष्ठस्थान—रोग, मामा, मौसी, गुप्तशत्रु, सेवक, मित्र, मृत्यु, लोकविरोध

सप्तमस्थान—विवाहित स्त्रीसुख या पतिसुख, मुकदमा, प्रीति, स्त्री का रूप, प्रत्यक्षशत्रु, वैद्यक, स्थलांतर

अष्टमस्थान—गंडांतरकष्ट, गैरइज्जती, फौजदारी, श्वसुरार की स्थिति पर, स्त्री संबंध, विवाह से धन, अकस्मात् लाभ, मृत्यु पत्र से धनप्राप्ति

नवमस्थान—भाग्योदय, यश, उत्कर्ष, धर्म, समाजसेवा, सार्वजनिक काम, राजकीय संस्था से संबंध लंबी यात्रा, मुद्रणकला

दशमस्थान—रोजगार,नौकरी, अधिकार, राजदरबार, सामाजिक, सन्मान पिता का विचार, प्रतिष्ठा, चोरी का धन, ज्येष्ठ बंधु की मृत्यु।

एकादशस्थान—लाभ, बंधुसुख मित्र नवीनकार्य की योजना, पिता का धन, माता की मृत्यु पुत्र के शत्रु

द्वादशस्थान—शत्रुपीड़ा, संकट, द्रव्यनाश, मनुष्यहानि, उद्योग, ऋणयोग, खून, आत्महत्या, पूर्वार्जित संपत्ति, गुप्तशत्रु जेलखाना

## स्थान–द्वारा विस्तृतफल

गोचर–द्वारा प्रथमादि स्थानों में शुभग्रह, या पापग्रह निम्न-लिखित फल करते हैं।

प्रथम–शुभग्रह–शरीरसुख, भाग्यवृद्धि सुखोपभोग
पापग्रह–शरीरपीड़ा, आलसी, दुर्बुद्धि, अहंकारवृद्धि

द्वितीय–शुभग्रह–सांपत्तिक भरभराहट, उत्कर्ष, कुटुंबीयसुख, मौके पर द्रव्यप्राप्ति
पापग्रह–आप्तविरोध, द्रव्यहानि, असत्यभाषण नेत्रविकार

तृतीय–शुभग्रह–बंधुसुख, यश, विद्या में अभिरुचि, प्रवास से लाभ,
पापग्रह–वंधुसंकट, यात्रा, क्लेश, मित्र से त्रास, साधारण यात्रा

चतुर्थ–शुभग्रह—जायदात का सुख, सवारीसुख, कीर्ति, स्थाई कुलाभिमान का प्रतिपालन
पापग्रह–सुखहानि, कपटी स्वभाव, जायदात से मामूली लाभ, सवारी से त्रास, मातृसुख में कमी

पंचम–शुभग्रह–बुद्धिमान, राजदरबार में यश, संतानसुख, कल्पना, कुलदीपक, संतानसुख, द्रव्यलाभ।
पापग्रह–परीक्षा में फेल, संतानचिंता, उद्योग में कमी, झूठा अभिमान।

षष्ठ–शुभग्रह–विरोधी बढ़े, स्वजनों से त्रास, परोपकार, उत्तम कार्यों में प्रवृत्ति।
पापग्रह–हिम्मती, रोगनाश, शत्रुपराभव, मामा से स्वार्थी

सप्तम–शुभग्रह–विवाहसुख, साझेदारी में लाभ, मुकदमा मामले में सफलता, यात्रासुख

पापग्रह–स्त्री से त्रास, सुखहीन, यात्रा में क्लेश, मुकदमा मामले में नुकसानी।

अष्टम–शुभग्रह–स्त्री द्वारा या मृत्युलेख से लाभ, किसी के ट्रष्टी होकर लाभ उठावे, स्त्री से धनप्राप्ति

पापग्रह–अविचारी काम में प्रवृति और उससे लाभ, विषैले जीवों से भय, विशेषपीड़ा, गृहकलह

नवम–शुभग्रह–भाग्य अनुकूल, अनेक प्रकार के सुख, धर्माचरण की इच्छा, विशेष बड़ों की कृपा।

पापग्रह–भाग्योदय में अड़चन, महत्वाकांक्षा में मुशकिल, परदेश में भाग्योदय।

दशम–शुभग्रह–सत्कर्मी, सत्याग्रही, उद्योग व्यापार में मान, कुलकीर्ति का विस्तार, समाज में कीर्तिशाली।

पापग्रह–पितृक्लेश, अहितकारी कार्य में प्रवेश, उच्चस्थिति से नीच स्थिति, समाजविरोधी कार्य।

एकादश–शुभग्रह–सांपत्तिकयोग प्रवल, उद्योग व्यापार या नौकरी में सफलता, मित्रों से सफलता, हिम्मती।

पापग्रह–अकर्त्तव्यों से भी लाभ, उठानेवाले अधिकारियों की कृपा, बड़े भाई को अनिष्ट फल या बंधुकलह।

द्वादश–शुभग्रह–सत्कर्म में व्यय, परमार्थ की ओर ध्यान बंटा रहे, शत्रु वढ़ते रहे, अधिकार में विघ्न।

पापग्रह–द्रव्यसम्बन्धी नुकसानी, अपमान, दुष्कीर्ति, ऋणग्रस्त स्थिति, अधिकारी प्रतिकूल, राजदंड।

अब जिस समय यह जानने की इच्छा हो; कि अमुक समय अमुक राशि को अच्छा है; किंवा खराब। उस समय सबसे पहिले यह देखो कि इसको जन्म-लग्न-द्वारा सूर्यादि ग्रह अच्छे हैं या खराब। जैसे मेष को 'मंदसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ' लिखा है; यदि कष्ट का

विचार करना है; तो शनि ११ वें का मालिक होने से; बुध तृतीय और षष्ठ का स्वामी होने से; शुक्र द्वितीय, सप्तम अर्थात् मारकेश होने से अशुभफल कारक लिखा है। गुरु भाग्येश होने से और सूर्य पञ्चमेश होने से शुभ लिखा है।

यदि लाभालाभ की ही दृष्टि से विचार करना है; तो सुखेश होने से चंद्रमा, लग्नेश होने से मंगल और पञ्चमेश होने से सूर्य लाभकारक जांयगे। व्ययेश होने से गुरु मध्यम और शनि मार्केश होने से; शुक्र तृतीयेश, पष्टेश होने से, बुध तृतीयेश, षष्ठेश होने से हानिकारक समझना चाहिये।

इसी प्रकार हरएक को जो ग्रह अशुभ लिखे हैं। वे गोचर में जिस स्थान में जांयगे। उस स्थान संबंधी त्रास खड़ी करेंगे; और जो ग्रह जिस लग्न को शुभ कहे गये हैं वे गोचर में जिस स्थान में जांयगे उस स्थान-संबंधी सुख उत्पन्न करेंगे।

गोचरग्रह जन्मस्थ ग्रहों से जिस समय अंशात्मक या आसन्नयोग करते हैं। उनका फल ठीक उसी प्रकार दिखने लगता है। जैसा कि हम रेकार्ड की चूड़ी पर सुई के पहुंचते ही उसी चूड़ी से नाना प्रकार के अलाप होते सुनते हैं। तत्त्व यह कि जन्मस्थग्रह गोचरग्रह के समागम होते ही अपना फल दिखाने लगते हैं।

## लंकेशरावण-जन्म-चक्र
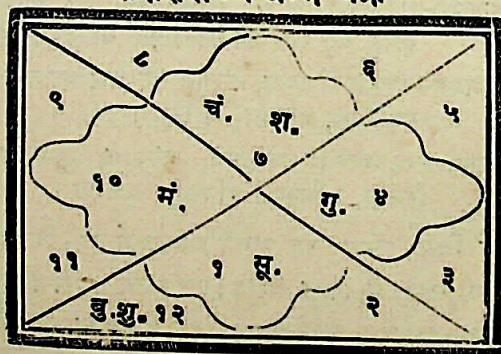
'जीवार्कमहिजाः पापाः" पहिले लिख चुके हैं। कि तुला लग्न वाले को गुरु सूर्य और मङ्गल अशुभफल करते हैं। सूर्य एक तो अशुभफल करने वाला है; फिर वह शनि, मङ्गल से पूर्णदृष्ट है। जिस समय शनि गोचर में कुम्भ में आकर सूर्य को देखने लगा कि वह सूर्य मारक होगया। इसी कारण पूज्यविद्वानों ने लिखा है कि—'रविणा सप्तमस्थेन रावणो विनिपातितः।'

## भगवान् रामचन्द्र-जन्म-चक्र
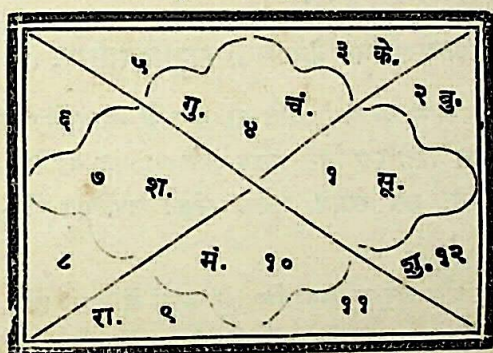
राहु, केतु और बुध में मतभेद है। बाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि—

> ततो यज्ञे समाप्तेसु ऋतूनां षट् समत्ययुः।
> ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ॥
> नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
> गृहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पातविन्दुना सह॥

अध्यात्मरामायण में लिखा है कि "मेषं पूषणि संप्राप्ते" अर्थात् ५ ग्रह उच्च में थे। सूर्य मेष में आगया था। गुरु-चन्द्र का योग था। ऐसे समय में जन्म हुआ था।

कालनिर्णायक आर्यपद्धतियों में दो ही मुख्य हैं; एक गोचर पद्धति और दूसरी दशापद्धति।

भगवान् श्रीराम २७ वर्ष की अवस्था में वन कोगये थे। उस समय गोचर में मकर राशि पर मंगल जन्म-राशि से सप्तम था।

जो कि राजयोग विघातक है। गोचर में अष्टमेश शनि कन्या का था। जो कि शनि मंगल का नवम, पंचम योग भाग्य हानि-कारक था।

दशा पद्धति द्वारा व्ययेश बुध की महादशा थी। गोचर में शनि जन्म-लग्न से तृतीय अर्थात् व्यय भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता था ऐसे समय में राज्यदायक भोम जन्म-राशि से सप्तमस्थ आते ही निम्न-वाक्य को चरितार्थ कर दिया।

'अंगारकविरोधेन रामो राष्ट्राद्विवासितः।'

जन्मपत्री में चन्द्रमा यदि ६।८।१२ वें स्थान में पड़ा होगा और गोचर में भ्रमण करते हुए जिस समय शनि या राहु या केतु या चन्द्रमा के पास पहुँचेंगे; उस समय अनेक संकट उपस्थित होंगे; रोगों के आक्रमण होंगे।

चन्द्र और मङ्गल सिंहराशि के चतुर्थ में इकट्ठे होंगे तो बाल्या-वस्था ही में जिस समय गोचर में किसी पापग्रह का संयोग या दृष्टि होगी; उस समय मातृसुख में विघ्न आयगा।

नवमस्थान में या दशमस्थान में शनि पड़ा होगा और जिस समय उसका किसी गोचर के पापग्रह से संबंध होगा; पितृसुख में विघ्न होगा। सूर्य पिता का कारक हैं; सूर्य के समीप जिस समय शनि पहुँचेगा; पिता की चिंता खड़ी करेगा।

तुलाराशि सूर्य की नीचराशि है। उस पर सूर्य होगा और तुला पर या मेष पर शनि पहुँचा कि पिता का नाश होगा।

जबलपुर म्युनिसिपल कमिश्नर पं० गौरीशंकर जी मिश्र की इसी सं० ९५ के कार्तिक में मृत्यु हुई है। इनके पुत्र की कुण्डली में सूर्य नवम में बैठा है। ता० १५ अक्टूबर सन् ३८ में शनि का भ्रमण मीन में हो रहा है। वहां से वह नवमभाव और सूर्य को पूर्ण दृष्टि से देखता है अतः पिता की मृत्यु का कारण बना।
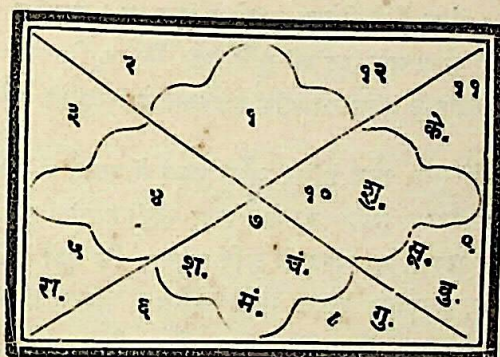
## पुत्र की कुण्डली

"सूर्यात्तातस्य नवमः" तत्त्व यह कि सूर्य से और नवमभाव से पिता का विचार होता है। अब प्रश्न यह हो सकता है; कि २॥ वर्ष मीन में शनि रहता है। फिर १५ अकटूबर ही को शनि ने यह फल क्यों किया। इसका उत्तर यह है, कि शनि के बाद क्रूरफल मंगल का प्रसिद्ध है। वह ज्योंही ताः १४ को कन्या पर आया कि उसकी भी पूर्णदृष्टि हानि के कार्य में सहायक बनी।

## पिता की कुण्डली
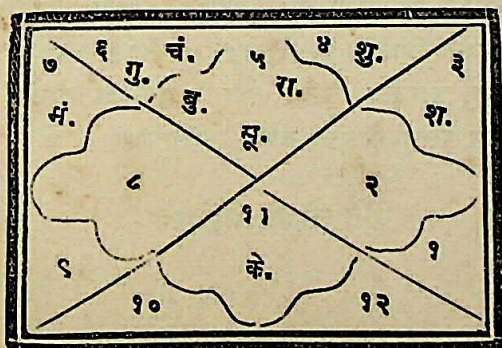
पिता की कुण्डली में मध्यायुयोग और महामारकेश शनि की महादशा थी। अंतर में तृतीयेश, दशमेश शुक्र था। चतुर्थेश (हृदयेश) ंगल से ज्योंही अंशात्मक राहु की युति हुई; कि म्यूनिस्पल कमेटी में काम करते २ एकाएक हृदय की गति रुक जाने से मृत्यु हो गई।

लग्न में सूर्य बैठा होगा और लग्न में सप्तम में शनि आया; कि शरीर पीड़ा उत्पन्न होगी या स्त्रीचिन्ता खड़ी होगी। सूर्य धन ! बैठा होगा और धन में या अष्टम में शनि पहुंचा; कि नेत्रों में शिकायत, आर्थिक अड़चन, कुटुम्बीय चिंता खड़ी करेगा। तृतीय में सूर्य पड़ा होगा और तृतीय या नवम में शनि पहुँचा कि कानों में पीड़ा, बन्धुकलह उत्पन्न करेगा। चतुर्थ में सूर्य होगा और चतुर्थ या दशम में शनि पहुँचा कि मातृपितृ सम्बन्धी चिन्ता, उदरविकार, हृदय की शिकायत व्यापार चिन्ता होगी। पंचम में सूर्य पड़ा होगा और शनि पंचम में या एकादश में आया, कि संतान चिंता खड़ी करेगा। षष्ठ में सूर्य होगा और षष्ठ या द्वादश भाव में शनि पहुँचा कि शत्रुशिकायत या ऋणचिन्ता बढ़ेगी। तत्त्व यह कि जिस स्थान में सूर्य होगा, उस स्थान पर या उसके सप्तम में शनि आया; कि ,उस स्थान-संबंधी त्रास खड़ी करेगा। इसी प्रकार नवम में गुरु बलवान होगा तो ९।२१।३३।४५।६९ वर्ष की अवस्था में लाभ होगा तथा भाग्योदय होगा। धनस्थान में मंगल होगा तो २।१४।२६।३८।५०।६२ वर्ष की अवस्था में धन की त्रास, कुटुम्बीय चिन्ता तथा ऋणचिन्ता होगी। जिसकी वृहत् चर्चा इस पुस्तक के दूसरे भाग में देखिये।

इति गोचर-विवेकः

———

# प्रश्न—विवेक

## कार्य सिद्ध होगा ?

'यदि वपुः कृतिपौ गृहसंगतौ त्रिलवमेकमितौ कृतसिद्धिदौ ।'

भाषा—यदि लग्नेश और कार्येश लग्न में हो, अथवा कार्यगृह में हो, अथवा लग्नेश, कार्येश एक द्रेष्काण में हो तो कार्य सिद्धि होती है ।

तनुपस्तनुकार्यकार्यनाथान् कृतिपः कार्यवपुर्वपुः पतींश्च !
सुविधुस्तनुकार्यपौ च पश्येद्यदि नूनं सकलार्थकार्यसिद्धिः ॥

भाषा—यदि लग्नेश लग्न को, कार्येश कार्य भाव को देखता हो तो कार्य सिद्ध होता है। अथवा पापग्रह युक्त व दृष्टि रहित पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि लग्नेश, कार्येश पर हो तो भी कार्य सिद्धि होता है ।

स चतुः शुभदृक् ससमसिद्धिर्यदि तद्वित्रिशुभ स्वनाथदृष्टम् ।
स्वपादोनफलप्रदं यदेष्टं सशुभस्वेदृशार्धं सत्फलं स्यात् ॥

भापा—यदि लग्न व कार्यभाव पर चार शुभग्रहों की दृष्टि हो तो पूर्ण कार्य सिद्ध होता है अथवा तीन व दो शुभग्रहों को दृष्टि हो अथवा लग्नेश लग्न को, कार्येश कार्यभाव को देखता हो तो पादोन ( ३/४ ) कार्य सिद्ध होता है। अथवा कार्येश कार्यभाव को तथा एक शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो कार्य अर्द्ध ( १/२ ) ही सिद्ध होता है ।

यदि सौम्ययुगिष्टमंगनाथे त्वणवत्पादफलं प्रदिष्टम् ।
प्रबलावुदितौ च लग्नकार्याधिपती तत्फलदौ न चास्तनष्टौ ॥

भापा—यदि लग्न व कार्यभाव में शुभग्रह हो और उस शुभग्रह को लग्नेश देखे तो चतुर्थांश (१/४) ही कार्य सिद्ध होता है। यदि लग्नेश, कार्येश अस्त एवं क्रूरग्रह से युक्त न हों और बलवान् हों तो पूर्ण कार्य सिद्ध होता है ।

## चोरी का प्रश्न ?

प्रथम चौर-प्रश्न में इष्टकाल, लग्नादि द्वादशभावस्पष्ट, ग्रह-स्पष्ट, द्रेष्काण, नवांश, त्रिंशांश, दृष्टिज्ञानादि करके चौर-प्रश्नफल कहना चाहिए। प्रथम यही देखना चाहिये कि द्रव्य या चोर मिलेगा या दोनों मिलेंगे अथवा नहीं।

## चोर मिलेगा ?

(१) लग्नेश की दृष्टि सप्तमभाव पर न हो तो चोर धन सहित मिलेगा।

(२) सप्तमेश सूर्य सानिध्य से अस्तंगत हो तो चोर मिलेगा।

(३) लग्नेश सप्तमेश का इत्थशाल (पृ. २२२) हो तो चोर स्वयं धन दे देगा।

(४) लग्नेश विकल हो और सप्तमेश तथा लग्नेश की लग्न पर दृष्टि न हो तो चोर राजभय से धन स्वयं ही दे देगा।

(५) लग्नेश राज्येश एक साथ हों तो राजाद्वारा चोर मिलेगा और धन दे देगा।

(६) सप्तमेश पापग्रह के साथ केन्द्र में हो तो चोर मिलेगा।

(७) धनेश अष्टमेश का इत्थशाल योग हो तो राजा के कारण चोर नहीं मिल सकेगा।

(८) धनेश सूर्य सानिध्य से अस्तंगत हो तो चोर मिलेगा तथा धन नहीं मिलेगा।

## धन मिलेगा ?

(१) धनेश सप्तम व अष्टमभाव में हो तो धन नहीं मिलेगा।

(२) मकर लग्न का प्रश्न हो और शनि अपनी राशि (मकर, कुंभ) को न देखता हो तो चोरी की वस्तु सुनने को मिलै; पर वस्तु की प्राप्ति न हो।

(३) धनेश अष्टमेश का इत्थशाल योग हो तो धन मिलेगा।
(४) चन्द्रलग्नेश चन्द्र को देखता हो तो धन मिलेगा।
(५) सप्तम भाव में शुभग्रह हो तो धन न मिलेगा।
(६) यदि वली या पूर्ण चन्द्र सप्तमभाव में हों तो धन मिलेगा।
(७) लग्नेश सप्तमभाव में हो तो धन नहीं मिलेगा।
(८) लग्नेश, सप्तमेश पापदृष्ट हो तो धन मिलेगा।
(९) लग्नस्थ चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो तो धन मिलेगा।
(१०) लग्न और भाग्यभाव में शुभग्रह हों और सप्तम में पापग्रह हों तो धन आधा हो मिलेगा।
(११) तृतीय और षष्ठभाव में शुभग्रह हों तो धन मिलेगा।
(१२) धनेश निर्बल हो तो थोड़ा ही धन मिलेगा।
(१३) लग्नेश, सप्तमेश लग्न में हों तो धन मिलेगा।
(१४) सप्तमेश लग्न में हो तो धन मिलेगा।
(१५) सूर्य, चन्द्र सप्तमभाव में हों तो धन मिलेगा।
(१६) पापदृष्ट व युक्त चन्द्र हो तो चोर के पास धन नहीं रहेगा।
(१७) लग्नेश, धनेश दोनों की दृष्टि लग्न में हो तो बड़ी कठिनता से धन मिलेगा।
(१८) सुखेश लग्न में हो या लग्न पर दृष्टि हो तो धन मिलेगा।
(१९) लग्न में चन्द्र हो तो धन मिलेगा।
(२०) धनेश धनभाव में या सुखभाव में हो तो धन मिलेगा।
(२१) चतुर्थभाव में पापग्रह हो तो धन नहीं मिलेगा।
(२२) सप्तम व अष्टम में भौम हो तो धन नहीं मिलेगा।
(२३) राहु लग्न में, सूर्य अष्टमभाव में हो तो धन नहीं मिलेगा।
(२४) रन्ध्रेश, सप्तम व अष्टमभाव में हो तो धन नहीं मिलेगा।
(२५) धनेश, रन्ध्रेश पर दशमेश, सुखेश की दृष्टि हो तो राजा द्वारा धन मिलेगा।
(२६) लग्नेश सप्तम में, वक्री सप्तमेश लग्न में हो तो धन नहीं मिलेगा।

## चोर कौन ?

(१) लग्न में सूर्य, चन्द्र की दृष्टि हो तो चोर अपने ही घर में है।

(२) लग्न पर सूर्य या चन्द्र (एक ही) की दृष्टि हो तो पार्श्ववर्ती (पड़ोसी) चोर है।

(३) सप्तमेश धन या भ्रातृ या व्ययभाव में हो तो सेवक ही चोर है।

सप्तमेश के आधार पर चोर की कल्पना निम्न लिखित है अथवा चोर के सहायक होते हैं।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (१) | सप्तमेश | सूर्य | हो | तो | गृहस्वामी या पिता चोर |
| (२) | ,, | चन्द्र | ,, | ,, | माता ,, |
| (३) | ,, | भौम | ,, | ,, | पुत्र या भ्राता ,, |
| (४) | ,, | बुध | ,, | ,, | स्वजन या मित्र ,, |
| (५) | ,, | गुरु | ,, | ,, | गृह का प्रधान पुरुष या पुत्र ,, |
| (६) | ,, | शुक्र | ,, | ,, | स्त्री ,, |
| (७) | ,, | शनि | ,, | ,, | पुत्र या दास ,, |

## चोर कैसा है ?

(१) सप्तम में शुक्र हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो नवीन चोर है।

(२) सप्तम में बुध हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो प्रपंची चोर है।

(३) सप्तमेश पापदृष्ट हो तो चोर ने पहिले भी चोरी किया था।

( ४ ) सप्तमेश शनि हो और चन्द्रदृष्ट हो तो पाखण्डी चोर है ।
( ५ ) शनि पर गुरु की दृष्टि हो तो प्रसिद्ध चोर है ।
( ६ ) मंगल सप्तम में चन्द्र से दृष्ट हो तो चोर ताला तोड़ कर या खोदकर चोरी की है ।
( ७ ) सप्तमेश स्वगृही या उच्च का हो तो प्रसिद्ध चोर है ।

## धन कहाँ है ?

( १ ) चतुर्थ भाव की राशितत्व (पृ. १५८ राशि-संज्ञा) के अनुसार उन्हीं २ तत्त्वों के समीप चोर-द्रव्य जानना चाहिए ।

( २ ) सुखेश सुखभाव में या चतुर्थ में जो ग्रह हो (कई ग्रहों में बली ग्रह) उसी के अनुसार चौर्यधन-स्थान निम्न प्रकार से जानना चाहिए ।

सूर्य—गृहस्वामी के शयनस्थान या बैठक में ।
चन्द्र— जल के समीप ।
भौम—अग्नि, गौ, कारीगरी के स्थान में ।
बुध—पुस्तक, चित्रशाला, अन्न, सवारी के पास ।
गुरु—बगीचा, देवालय ।
शुक्र—स्त्री के शयनस्थान में ।
शनि—अन्धकार या मलिनस्थान में ।

( ३ ) सप्तम भाव की राश्यानुसार चौर्य धन का स्थान निम्न प्रकार से जानना ।

मेष—बकरा के स्थान में ।
वृषभ—गौ के स्थान में ।
मिथुन—श्मशान, रौद्र, मलिन, गौ के स्थान में ।
कर्क—जल के समीप में ।
सिंह—शून्यस्थान या वन में ।
कन्या—नौका में ।

तुला—बाजार में।

वृश्चिक—संकुचित स्थान में।

धनु—घुड़शाल में।

मकर—जल या धीमर के घर में।

कुँभ—कुम्हार का घर या घड़ा या जल के समीप में।

मीन—जल या जलाशय में।

## चोर का घर किस दिशा में ?

(१) लग्न से चन्द्र जिस दिशा में हो; उसी दिशा में चोर का घर जानना।

यथा—

लग्न पूर्व, चतुर्थभाव उत्तर, सप्तमभाव पश्चिम, दशमभाव दक्षिण दिशा होती है।

नोट—यदि अन्य भावों में चन्द्र हो तो विदिशा जानना।

(२) स्थिर राशि का चन्द्र हो तो चोर के घर का एक ही द्वार है।

(३) द्विस्वभाव राशि का चन्द्र हो तो चोर के घर के दो द्वार हैं।

## कितने चोर हैं ?

(१) सप्तमेश सिंह राशि में हो तो एक चोर है।

(२) सप्तमेश मीन व मिथुन में हो तो कई चोर हैं।

(३) सप्तमेश के साथ जितने ग्रहों से सम्बन्ध हो उतने ही चोर जानना।

## चोर कहां हैं ?

(१) सप्तमेश चर राशि में हो तो चोर ग्रामान्तर में है।

(२) ,, स्थिर ,, ,, देश में है।

(३) ,, द्विस्वभाव ,, ,, मार्ग में है।

## चोर स्त्री है या पुरुष !

(१) सप्तमेश स्त्री राशि में व स्त्रीग्रह व स्त्रीग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री चोर है।

(२) सप्तमेश पुरुषराशि में व पुरुषग्रह व पुरुषग्रह की दृष्टि हो तो पुरुष चोर है।

## चोर की जाति, अवस्था ?

लग्न के अनुसार जाति, अवस्थादि जानने का उल्लेख है। पर आधुनिक मत सप्तमभाव हो से जानने का है। अतएव सप्तमेश के आधार पर भी जाति अवस्थादि जानना चाहिये।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (१) | लग्नेश या द्यूनेश | सूर्य | हो तो | क्षत्रिय | तथा मध्यावस्था का अन्त |
| (२) | ,, ,, | चन्द्र | ,, | वैश्य | ,, युवावस्था का प्रारम्भ |
| (३) | ,, ,, | भौम | ,, | क्षत्रिय | , अर्ध युवावस्था |
| (४) | ,, , | बुध | ,, | शूद्र | ,, १२ से १५ वर्ष तक |
| (५) | ,, ,, | गुरु | ,, | विप्र | ,, युवा |
| (६) | ,, ,, | शुक्र | ,, | विप्र | ,, मध्य युवावस्था |
| (७) | ,, ,, | शनि | ,, | अन्त्यज | ,, वृद्ध |

### विशेषयोग

(१) लग्नेश लग्न में अथवा लग्नेश सप्तमेश का योग हो और सूर्य, चन्द्र स्वनवांश में हों तो चोर अपने ही घर में है।

(२) सप्तमेश उच्चका हो तो स्वामी या माता चोर है।

(३) सप्तमेश स्वनवांश या स्वत्रिंशांश या स्वद्रेष्काण में हो तो स्वयं पृच्छक ही चोर है।

(४) सप्तमेश सप्तम में हो तो वधू चोर है।

(५) सप्तम में सूर्य व शुक्र हो तो पिता चोर है।

नोटः—अन्य प्रश्नों का विवेक दूसरे भाग में देखिये।

इति प्रश्न-विवेकः

---

# सामुद्रिक—विवेक

परमात्मा ने प्रत्येक की मुखाकृति एवं हस्तरेखा-द्वारा भविष्य जानने के साधन प्रत्यक्ष प्रस्तुत कर दिये हैं। किसी के मुख को देखकर उसके प्रभावशालीपने से हम सहज ही में आकर्षित होते हैं तथा किसी मुखको देखकर हम उसकी तेजोहीनता का अनुभव करते हैं। किसी घातक पुरुष का डरावना चेहरा देखकर भय होता है। किसी दयालु पुरुष का चेहरा कैसा सुहावना होता है। इसीलिये किसी कवि ने कहा है कि "वाजे वाजे मानुषन को देखे अनुखात जीव, वाजे वाजे मानुपन को देखे जियातु हैं"।

किसी को देखते ही हमारा हृदय आदर देने को वाध्य होता है; और किसी को देखकर तिरस्कार करने को इच्छा प्रबल हो उठती है; इत्यादि।

तत्त्व यह कि मुखाकृति एवं हस्तरेखा-द्वारा भी जीवन भर का शुभाशुभ फल जन्मपत्री की तरह स्पष्ट मालूम हो जाता है।

## मुखाकृति-द्वारा-रेखा-फल
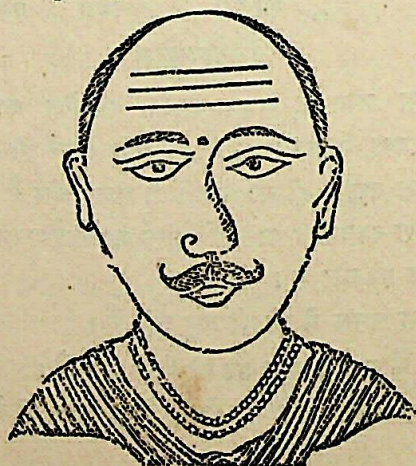
ललाटे यस्य दृश्यन्ते तिस्रो रेखा समाहितः।
सुखी पुत्रसमायुक्तः सषष्ठिं लभते नरः॥

भाषा—जिसके ललाट में तीन रेखा पूर्ण हों; वह पुत्रों सहित साठ वर्ष की आयु भोगता है।

चत्वारिंशच्च वर्षाणि द्विरेखा दर्शनान्नरः।
विंशत्यब्दमेकरेखा आकर्णा च शतायुषः॥

भाषा—दो ही रेखा मस्तक में हों; तो ४० वर्ष की आयु होती है। एक रेखा से २० ही वर्ष की आयु समझना चाहिये। यदि ये रेखाएं कान तक हों; तो मनुष्य १०० वर्ष जीता है।

'भिन्नाभिश्चैव रेखाभिरपमृत्युर्नरस्य हि।'

भाषा—रेखाएं छिन्न, भिन्न हों; तो उसकी अपमृत्यु (अकालमृत्यु) होती है।

ललाटोपसृता तिस्रो रेखायुः शतवर्षिणाम्।
नृपत्वे स्याच्चतसृभिरायुः पञ्चनवत्यथ॥

भाषा—तीन रेखा मस्तक में आकर्णान्त होने से १०० वर्ष की आयु होती है। ४ रेखा हों तो राजा या राजसमान सुख, ऐश्वर्य प्राप्त होता है; तथा ९५ वर्ष की आयु होती है।

'चत्वारिंशच्च वर्षाणि हीनरेखस्तु जीवति।'

भाषा—जिसके मस्तक में रेखाएं न हो; वह ४० वर्ष से कम नहीं जीता।

## ललाट-द्वारा-फल

उन्नतैर्विपुलैः शङ्खैर्ललाटे विषमैस्तथा।
निर्धनाः धनवन्तश्च अर्धेन्दुसदृशैर्नराः॥

भाषा—जिनका ललाट स्थूल, ऊंचा, विशाल, शङ्खाकार, विषम तथा अर्द्ध चन्द्राकार हो; वे निर्धनी होने पर भी धनवान् हो जाते हैं।

'शिरालः पापकारिणः।'

भाषा—नसों से व्याप्त मस्तक वाले पापकर्मा होते हैं।

यस्योन्नतं ललाटञ्च ताम्रवर्णञ्च दृश्यते।
रेखाहीनञ्च रूक्षञ्च सचोन्मत्तो महीं भ्रमेत्॥

भाषा—ऊँचा और ताम्रवर्ण, रेखाहीन मस्तक तथा रूखा मस्तक वाला पुरुष पागल होकर यहां वहां घूमता रहता है।

शुभमर्धेन्दुसंस्थानमतुङ्गं स्यादलोमशम् ।
नृपतीनां भवे चिन्हे ललाटे शुभदर्शनम् ॥
उन्नतेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ।
विषमेन ललाटेन दुःखितो दुर्जनो नरः ॥

भाषा—उच्चता रहित, लोम रहित, शुभ, अर्धचन्द्राकार, चमकता हुआ मस्तकवाला राजा होता है। ऊंचे ललाट वाले प्रायः धनवान् होते हैं। ऊंचे नीचे ललाट वाले दुर्जन तथा दुःखी होते हैं।

विपुलेन ललाटेन धनाढ्यो जायते नरः ।
अल्पेन च ललाटेन चाल्पायुर्जायते नरः ॥

भाषा—विशाल ललाट वाले धनवान् होते हैं। छोटे ललाट वाले अल्पायु होते हैं।

## वाहू ( भुजा )

करिकरसदृशौ वाहूवृत्ता वा जान्ववलम्बिनौ समौ पीनौ ।
वाहू पृथिवीशानामधमानां रोमशौ ह्रस्वौ ॥

भाषा—घुंटने तक लम्बे, सुडौल, हाथी की सूंड़ के समान मोटे हाथ राजाओं के होते हैं। रोम वाले छोटे हाथ निर्धनी के होते हैं।

## हस्तांगुली

जन्म शुक्लपक्ष का है कि कृष्णपक्ष का; इसका निश्चय अँगूठे के दोनों पोरों परसे ही किया जाता है। पर यह निश्चय करने की शक्ति सहस्त्रों हाथों को बरसों देखने के बाद प्राप्त होती है। हाथ का अंगूठा जो अदालती कार्यवाई में लगवाया जाता है। इसका मुख्य कारण यही है; कि प्रत्येक का अंगूठा एकसा नहीं होता।

उसके दोनों पोरों में पहिला पोरा नख की ओर से आरंभ होता है। यदि पहिला पोरा पुष्ट, रक्तवर्ण होगा; तो वह बड़ा विचारशील, बड़ा दयालु, परोपकारी तथा नम्र होगा। महत्वाकांक्षा उसका प्रधान गुण है। यदि रूखा, विशेष लंबा होगा; तो अविचारी तथा उच्छृंखल स्वभाव का होता है।

दूसरा पोरा यदि मांसल, पुष्ट तथा रक्तवर्ण होगा; तो कर्त्तव्य पर मर मिटने वाला (कर्त्तव्यशील) होगा। यदि विशेष लंबा या फीका या रूखा होगा; तो जवाबदारी न समझ कर ऊटपटांग काम करने वाला तथा अव्यवस्थित चित्त वाला होता है। यदि अंगूठा में अशुभ चिन्ह न हो और रेखाएं स्पष्ट उठी हुई होगीं; तो ऐसा मनुष्य भाग्यवान्, धर्मात्मा होता है।

हस्ताङ्गुलयो दीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्च सुभगानाम्।
मेधाविनां च सूक्ष्माश्चिपटाः परकर्मनिरतानाम्॥

भाषा—हाथ की लंबी अंगुली वाले दीर्घायु होते हैं, पतली अंगुली वाले बुद्धिमान्, चपटी अंगुली वाले सेवक होते हैं।

अंगुष्ठयवैराढ्याः सुतवन्तोऽङ्गुष्ठमूलगैश्च यवैः।
दीर्घाङ्गुलिपर्वाणः सुभगा दीर्घायुषश्चैव॥

भाषा—अंगूठे के बीच में यव ( ⬭ ) चिन्ह वाले धनी, अंगुष्ठ की जड़ में यव चिन्ह वाले पुत्रवान्, अंगुलियों की पोरें लम्बी होने से भाग्यशील तथा दीर्घायु वाले होते हैं।

## हाथ दाहिना देखा जाय या बांया

रेखाएं तो दोनों हाथों में होती है और दोनों हाथों पर से ही पूरा २ निश्चय हो सकता है। पर—

वामभागे तु नारीणां दक्षिणे पुरुषस्य च।
निर्दिष्टं लक्षणं तेषां समुद्रेण यथोदितम्॥

भाषा—सासुद्रिक वालों ने स्त्री का वामाङ्ग और पुरुष का दक्षिण अङ्ग ही प्रधान माना है। अतः पुरुष का दाहिना हाथ; स्त्री का बाँया हाथ देखना चाहिये। पर इसका यह अर्थ कदापि नहीं; कि दूसरा हाथ देखना ही न चाहिये। कभी २ तो प्रधान हाथ में रेखाएं स्पष्ट न होने से दूसरे हाथ की सहायता से ही निष्कर्ष निकालना पड़ता है।

# हस्त-रेखा

पहिले
खंडित
दूसरा
खंडित
तीसरा
खंडित
आत्मबल
तर्क
सूर्य
शनि
गुरु
बुध
शुक्र मुद्रिका
अंतःकरण पर्वत
मंगलप.
ब्याह
बुध
मस्तक रे
चंद्र पर्वत
आनन्द रे.
मद्यपान
भाग्यरेखा
प्रा. कर्म नवीन आयु
मंगल रे.
ब्याह रे.
शुक्र पर्वत
मणिबंध

अनुभवी सामुद्रिक-वेत्ताओं का मत है कि—

पन्द्रह या सोलह वर्ष में हस्तरेखा पूर्णता को प्राप्त होती हैं। इसके पूर्व रेखाएँ अपूर्ण रहती है। कभी नई २ रेखाएं भी आविर्भूत होती रहती है।

विंशतिवर्षा नारी पुरुषःखलु पञ्चविंशतिभिरब्दैः।
अर्हति मानोन्मानम्....................... ॥

भाषा—२० वर्षमें नारी और २५ वर्षमें पुरुष कीपूर्णता (वृद्धि) होतीहै।

चित्र (८९४) में राजरेखा, धनरेखा, भाग्यरेखा, आयुरेखा, सुखरेखा आदिकों को पहिले खूब समझो फिर यह देखो; कि, इनकी बाधक रेखा तो नहीं है। यदि है; तो बलवती योगकारक रेखा है कि बाधकरेखा। जो रेखा अबाधित, गहरी, सुस्पष्ट, सुस्निग्ध उसका फल पूरा २ होगा। जो रेखा रूखी, भंग, उथली होगी, उसका फल बुरा हगा या अधूरा ही रह जायगा।

रेखाभिर्बहुभिर्दुःखं स्वल्पाभिर्धनहीनताम्।
रक्ताभिः श्रियमाप्नोति कृष्णाभिः प्रेष्यतां व्रजेत्॥

भाषा—बहुत रेखा दुःखदायी होती हैं। स्वल्प रेखाओं से निर्धन होता है। रक्तवर्ण रेखाएं धन देती हैं। कृष्णवर्ण रेखाएँ दासता की सूचक होती है।

जिसके हाथ में अधिक रेखा न हो और जो रेखाएं हो; वे स्पष्ट उठी हुई और सुस्निग्ध हों तो मनुष्य सात्त्विकी, धर्मात्मा, न्यायपरायण तथा भाग्यवान् होता है, उसके पास धन आता है और वह धनवान् भी हो जाता है।

जिसके हाथ में रेखाएं एक दूसरे को काटतीं हैं या रूखी होती हैं उसे एक न एक चिंता घेरे ही रहती है। महत्वाकांक्षा पूर्ण होना तो असंभव है उलटी चिंताएं उसे कमजोर बना देती हैं। शरीर प्रमाणानुसार यदि पंजा न हुआ तो वह संदबुद्धि तथा अल्पसंतोषी होता है।

यदि प्रमाणानुसार ही पंजा होगा तो वह मनुष्य सुखी, बुद्धिमान् प्रभावशाली होता है। यदि पंजा कठोर वेडौल और रूखा हो तो मंदबुद्धि क्रूर और दुःशील होता है। हाथ के ऊपरी भाग में यदि अधिक बाल (केश) हों तो हाथ शुभ नहीं कहा जा सकता; उसे वकवाद करने का स्वभाव, अभिमानी तथा ईर्षा करने वालाहोता है। विरले बाल (केश) पुरुष को होशयार बनाते हैं, स्त्री के हाथ के पृष्ठभाग पर यदि बाल हों तो वह क्रूरता और असत्याचरण में प्रवीण तथा क्रोधाविष्ट होती है।

हाथ का मध्यभाग यदि उठावदार नहीं हो तो भाग्योन्नति में बाधा होगी। यदि आयुष्यरेखा और धनरेखा विगड़ी हुई न हो तथा उठावदार एवं सरल हो तो जीवन सुखमय रहेगा और यदि ये दोनों रेखाएं कटी, दवी और रूखी हों तो सांपत्तिक अड़चन रहेगी, चिंतामय जीवन तथा आर्थिकसंकट वार २ आयगा।

आगे रेखा ज्ञान चित्रमें १-२-३-४-५अंकअंगुष्ठादि कनिष्ठिका पर्यन्त ५ अंगुलियों के सूचक हैं। ६-७-८ अंक मणिवन्ध रेखा के सूचक हैं। ९ अंक भाग्यरेखा या ऊर्ध्वरेखा। १० अंक कर्मरेखा या आयुष्यरेखा। ११ अंक मातृरेखा या मस्तकरेखा। १२ अंक आयु या अन्तःकरण रेखा। १३ अंक पुण्य या सूर्यरेखा। १४ अंक विवाह या स्त्रीरेखा। १५ अंक भाई या वहिनरेखा। १६ अंक संतानरेखा। १७ से २८ अंक मेषादि राशियों के सूचक हैं। सूर्यादि ग्रह, वुद्धि यश, विद्या आदिरेखा सूचक तत्तत्स्थान में नाम लिख दिये गये हैं।

रेखा–ज्ञान

१४ विवाह
स्त्री. १२
११
१५
१६
६
७
८
मणिबंध रेखा
मातृ या मस्तक रेखा
भौम या आयु या अंतःकरण रेखा
चंद्र
शुक्र
रवि
शनि
गुरु

F.—32
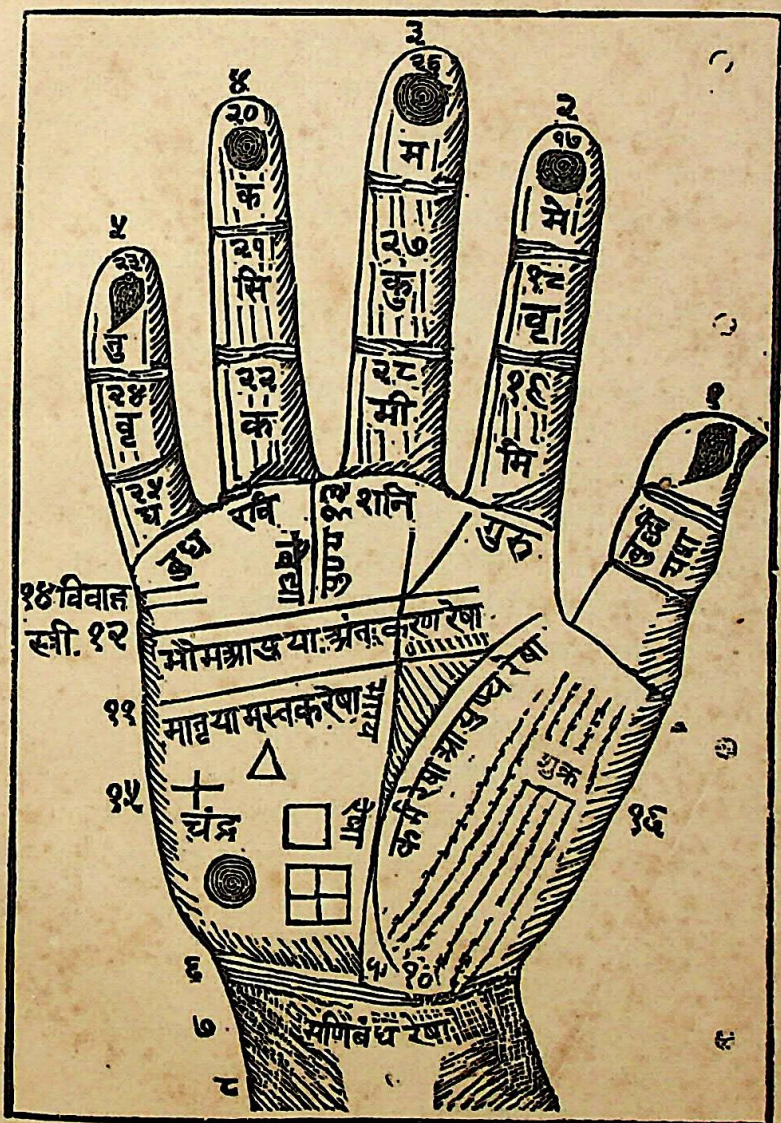
## (९) भाग्य-रेखा

रेखा चलन्ती मणिबंधदेशान्मध्याङ्गुलिं याति गम्भीररूपा ।
तामूर्ध्वरेखां प्रवदन्ति सन्तो वित्तस्य रेखां कथयन्ति तेऽपि ॥

भाषा—मणिबंध से चलकर भाग्यरेखा यदि मध्याङ्गुलि तक जावे; इस ऊर्ध्वरेखा को भाग्य या धनरेखा कहते हैं । "सोऽथं धनाढ्यो" यदि यह गहरी हो तो बड़ा धनवान् होता है ।

"पैत्री समुत्था" यदि भाग्यरेखा पैत्री (कर्म या आयु) रेखा से उठी हो तो कुटुम्ब से सुखी और सरलस्वभाव तथा संपत्तिशाली होता है । यदि भाग्यरेखा "देवेन्द्रवन्द्यालयगा विभाति" तर्जनी के पास गुरुस्थान तक गई हो; तो नीति का ज्ञाता तथा भाग्यवान् होता है । जिस हाथ में भाग्यरेखा साफ, सुथरी तथा गहरी न हो; वह आजीवन क्लेशित रहता है ।

भाग्यस्य रेखा यदि स्वल्पगा स्यात्पितुः सुरेखा खलु वेत्ररूपा ।
तदन्तरं यत्प्रतिभाति सम्यक् तदा भवेन्मूढतमो व्ययी ना ॥

भाषा—यदि भाग्यरेखा छोटी हो और पितृरेखा खूब बड़ी हो तथा दोनों का अन्तर अर्थात् मध्यभाग साफ २ दिखता हो तो वह महामूर्ख, विशेष खर्च करने वाला पुरुष होता है ।

मध्यमामूलपर्यन्तमूर्ध्वरेखा च दृश्यते ।
पुत्रपौत्रादिसम्पन्नो धनवान्ससुखी नरः ॥

भाषा—जिस हाथ में ऊर्ध्वरेखा ( भाग्यरेखा ) मध्यमा अंगुली के मूल तक हो तो वह पुत्र, पौत्रादि से सम्पन्न, धनवान् तथा सब प्रकार से सुखी होता है ।

एका हस्तगता रेखा भवेदूर्ध्वान्तिगा यदा ।
पुत्रपौत्रविहीनश्च पशुवृत्तिरतस्तथा ॥

भाषा—ऊर्ध्वरेखा को खंडित करने वाली अन्य यदि प्रबलरेखा होगी; तो वह पुत्र, पौत्रादि से रहित पशुवृत्ति से निर्वाह करेगा ।

'त्रिभुजो भाग्यरेखायामनायासो धनागमः ।'

भाषा—यदि भाग्य रेखा में त्रिभुज (△) हो तो अनायास धन मिलता है। प्रकारान्तर से दूसरे की सम्पत्ति पर अधिकार भी मिलता है।

अङ्गुष्ठस्याप्यूर्ध्वरेखा वर्तते नृपतिः शुभा।
सेनापतिर्धनेशश्च मध्यमायुर्नरो भवेत्॥

भाषा—जिसके करतल में ऊर्ध्वरेखा अंगूठे के ऊपर हो तो वह धनवान् तथा सेनापति होता है और उसकी ६० वर्ष के लगभग आयु होती है।
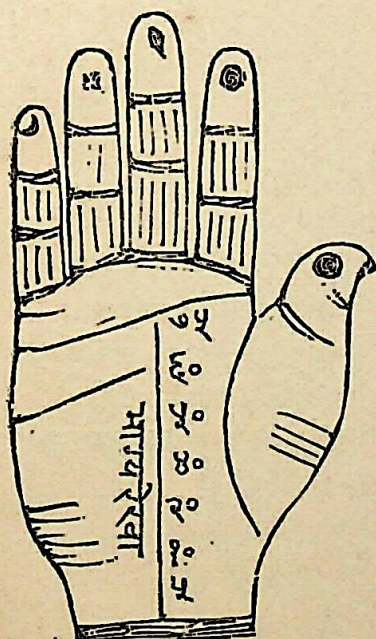
## भाग्य-रेखा-वर्ष-ज्ञान

इस चित्र में वर्ष के अंक दिये गये हैं। भाग्यरेखा जहां तक अबाधित गहरी और सुस्निग्ध होगी बराबर भाग्योदय होता जायगा और जिस अंक के पास कटी या रूखी होगी उसी वर्ष में हानि और कष्ट समझो।

## (१०) कर्म-रेखा

यदाऽपरा पितृवरा विभाति स्थानं रवेर्वोच्चतरं हि पुण्या।
विधेश्च रेखातिविशुद्धरूपा परार्थभागी भवतीह मर्त्यः॥

भाषा—पितृरेखा सुशोभित हो और रविस्थान उच्च हो। पुण्य और भाग्यरेखा खूब शुद्ध हो तो उसे दूसरे की सम्पत्ति मिलती है।

## (११) मातृ-रेखा

"रेखाविहीना यदि मातृरेखा,
मिथ्याप्रलापी मनुजस्तदा स्यात् ।"

भाषा—मातृरेखा यदि मुखहीन हो तो मिथ्या बोलने वाला, लोभी एवं कठोर होता है ।

## (१२) आयु-रेखा
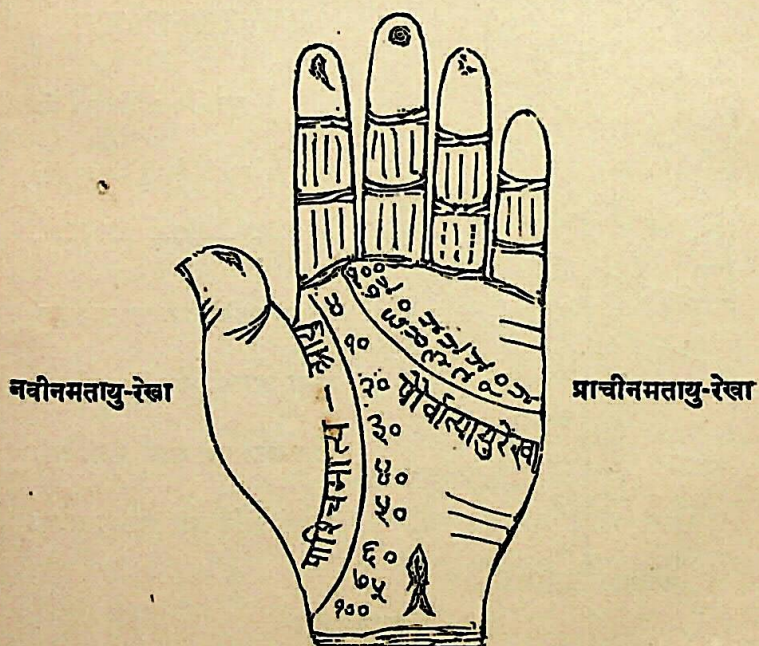
ठीक २ आयु का विचार आयुष्यरेखा और अंतःकरणरेखा पर से होता हैं; तथा सूर्य, चन्द्र के स्थानों की रेखाओं पर से भी होता हैं ।

अंतःकरण और आयुरेखा को अन्य रेखाएं काटती हों, तो उन वर्षों में बीमारी उत्पन्न होगी । काटने वाली रेखा यदि स्पष्ट उठावदार तथा

गंभीर होगी तो बीमारी कठिन होगी। किसी रेखा के नीचे की तरफ यदि सूक्ष्म रेखा होगी तो उसे क्लेशकारक तथा अनिष्टफल करने वाली समझो।

१०० वर्ष पूर्णरेखा के समझे जाते हैं। पर यह देखना चाहिये कि काटने वाली रेखा तक कितने वर्ष होंगे।

यदि एक ही हाथ में छेदकरेखा होगी; तो बीमारी ही होकर रह जायगी। यदि दोनों हाथों में छेदकरेखाएं खूब स्पष्ट होंगी; तो उस समय अनिष्ट समझना चाहिये।

'आयुष्यरेखायां यावन्तश्छेदाः तावन्तो अपमृत्यवः।'

भाषा—कनिष्ठा से आयुष्य रेखा में (१२) जितनी छेदक रेखा होंगी उतनी ही बार कष्ट होगा।

"उपरिच्छेदे रोग अधच्छेदे शस्त्राद्भीतिः।"

भाषा—यदि ऊपर से कटी है; तो बीमारी होगी। यदि नीचे से कटी है; तो शस्त्राघात का भय समझो।

'आयुरेखायाः दश वा विंशतिभागाः कल्पनीयः।'

भाषा—इस आयुरेखा को १० या २० भागों से बांटो; फिर देखो कि वह छेदक रेखा किस वर्ष में पड़ती है।

अनामिकापूर्वमूले कनिष्ठादिक्रमेण चेत्।
आयुषं दशवर्षाणि समुद्रवचनं यथा॥

भाषा—कनिष्टिका से आरंभ होकर आयुरेखा (१२) अनामिका के पूर्व हो तो १० वर्ष की आयु होती है। क्योंकि कनिष्ठा अंगुली से अनामिका के प्रारंभ तक १० वर्ष की आयु मानी जाती है।

आयुर्वलं भवेद्रेखानामिकामूलसंस्थिता।
त्रिदशं वा त्रिषष्टिं वा आयुर्वलविनाशनम्॥

भाषा—आयुरेखा अनामिका अंगुली के मूल तक हो और दूसरी रेखा में विशेष शुभत्व हो तो ३० वर्ष की आयु होती है और दूसरी आयुप्रदरेखाओं में विशेष गुण हो तो ६३ की आयु होती है।

मध्यमा मूलपर्यन्तमायुरेखा च दृश्यते ।
चतुर्दशचतुर्विंशत्यायुर्वलर्विनाशनम् ॥

भाषा—मध्यमापर्यन्त आयुरेखा हो तो १४ या २४ वर्ष की आयु होती है ।

रेखा या भिद्यते रेखा स्वल्पायुश्च भवेन्नरः ।
यत्संख्याभिद्यते रेखा अपमृत्युश्च तद्भवेत् ॥

भाषा—यदि आयुरेखा किसी दूसरी रेखा से कटी हो तो अल्पायु होगी । जितनी ही अधिक रेखाओं से वह कटी होगी उतनी ही अल्प समझो ।

आयुष्मती भवेद्रेखा तर्जनीमूलसंस्थिता ।
शतवर्षभवेदायुः सुखमृत्युर्न संशयः ॥
ते नरा परदेशेषु शतमायुर्लभन्ति वै ।

भाषा—जिसकी आयुरेखा तर्जनी अंगुली के मूल तक हो; वे १०० वर्ष जीते हैं तथा उनकी मृत्यु सुखमय होती है ।

सहस्त्रों हाथों को देखते २ वर्ष निकालना सहज हो जाना संभव है ।

## (१३) सूर्य-रेखा

भाग्यात्समुत्था दिनपस्य रेखा, गम्भीररूपा विशदा विभाति ।
सोऽयं मनुष्यो हि महायशस्वी, विद्वान्धनाढ्यो गणितागमज्ञः ॥

भाषा—सूर्यरेखा को पुण्यरेखा भी कहते हैं । यदि यह सूर्यरेखा भाग्यरेखा से उठी हो तो बड़ा, यशस्वी, गणितज्ञ एवं धनी होता है । यदि मंगल के पाल से उठती हो ; तो बलवान् तथा मनमौजी होता है । यदि मातृ (मस्तक) रेखा से उठी हो; तो खेती का व्यापारी होता है ।

## (१४) स्त्री-रेखा

कनिष्ठाधः स्थिता रेखा संख्या यावतिकाः स्मृताः ।
तावती पुरुषाणान्तु नारी भवति निश्चितम् ॥

भाषा—कनिष्ठा अंगुली के नीचे जितनी रेखा होंगी; इतनी ही स्त्रियाँ उस पुरुष को होती है।

## पति-रेखा

'स्त्रियः दक्षिणपाणिस्था पतिरेखा प्रकीर्त्तिता।'

भाषा—स्त्री के दाहिने हाथ में कनिष्ठा के नीचे पति रेखा रहती है। यदि वह गहरी, सुन्दर, सुस्निग्ध पूरी हो तो सुन्दर पति मिलता है और आजीवन पतिसुख रहता है। यदि प्रबल छेदकरेखा ने उसे नष्ट किया होगा तो उस वर्ष में पतिकष्ट होगा।

## (१५) भाई या बहिन-रेखा

अधस्तात्स्वान्तरेखायाः करभस्था हि यावती।
बृहती रुचिराऽच्छिन्ना भ्रातृरेखा हि तावती॥
स्वल्परेखा भगिन्यास्तु संख्यातुल्यं वदेद्बुधः।

भाषा—अंतःकरणरेखा के नीचे करभ (गदेरी) प्रदेश में (कनिष्ठा से नीचे मणिबन्ध की ओर) अच्छिन्न, मनोहर और बड़ी जितनी रेखा हों; उतने ही भाई और छोटी जितनी रेखा हों उतनी ही बहिनें होती हैं।

## (१६) सन्तान-रेखा

अङ्गुष्ठमूले प्रसवस्य रेखाः,
पुत्राः बृहत्यः प्रमदाश्च तन्व्यः।
अच्छिन्नदीर्घाश्च चिरायुषान्ताः,
स्वल्पायुषश्छिन्नलघुप्रमाणाः॥

भाषा—अङ्गुष्ठ मूल में संतानरेखा होती हैं उनमें पुष्ट, अच्छिन्न और दीर्घ रेखा चिरायु संतान देती है। छोटी, कटी रेखा अल्पायु सन्तति प्रदान करती है।

'अंगुष्ठमूलरेखाःपुत्राःस्युर्दारिका सूक्ष्माः।"

भाषा—अंगुष्ठ मूल में गहरी रेखा से पुत्र और सूक्ष्म रेखाओं से कन्या जानना चाहिये।

कनिष्ठामूलरेखायाः परतश्च तथा हि वै ।
भवन्ति रेखास्तावत्यः पुत्राः कन्याश्च निश्चिताः ॥

भाषा—कनिष्ठिका के नीचे भाग में जितनी रेखा हों; उतनी ही सन्तति होती हैं। यह भी किसी २ का मत है।

## चरण

अस्वेदनौ मृदुतलौ कमलोदराभौ,
श्लिष्टाङ्गुलीरुचिरताम्रनखौ सुपार्ष्णी ।
उष्णौ शिराविरहितौ सुनिगूढगुल्फौ,
कूर्मोन्नतौ च चरणौ मनुजेश्वरस्य ॥

भाषा—कमलोदर के समान अरुण, पसीना रहित, कोमल चरण तथा सटी हुईं अंगुलियां, मनोहर लाली लिये, नख गर्म, नाड़ियां रहित, एड़ियां कछुए की भांति ऊंची; ऐसे चरण राजाओं के होते हैं।

शूर्पाकारविरूक्षपाण्डुरनखौ वक्रौ शिरासन्ततौ,
संशुष्कौ विरलाङ्गुली च चरणौ दारिद्र्यदुःखप्रदौ ।
मार्गायोत्कटुकौ कषायसदृशौ वंशस्य विच्छित्तिदौ,
ब्रह्मघ्नौ परिपक्वमृद्द्युतितलौ पीतावगम्या रतौ ॥

भाषा—सूप के समान आगे विशेष चौड़े, पीछे सकरे तथा विशेष रूखे और पीले नख वाले टेढ़े और नाड़ियों से व्याप्त, सूखे, दूर दूर अंगुली वाले चरण दरिद्री और दुःखियों के होते हैं। बड़े पैर वाले यात्राक्लेशी, कषाय सदृश्य पैर वंशविच्छेदक होते हैं। पकी मिट्टी के समान पैर वाले ब्रह्मघ्न होते हैं। पीले तलुवे वाले पैर अगम्या स्त्री से गमन कराते हैं।

भृङ्गारासनवाजिकुञ्जररथश्रीवृक्षयूपेषुभि-,
र्मालाकुण्डलचामरांकुशयवैः शैलैर्ध्वजैस्तोरणैः ।
मत्स्यस्वस्तिकवेदिका व्यजनकैःशङ्खातपत्राम्बुजैः,
पादे पाणितलेऽपि वा युवतयोःगच्छन्ति राज्ञी पदम् ।

भाषा—जिन स्त्रियों के हाथ अथवा पादतल में झारी, आसन, घोड़ा, हाथी, रथ, वेलवृक्ष, यूप, बाण, माला, कुंडल, चामर, अंकुश, यव, पर्वत, ध्वजा, तोरण, मछली, स्वस्तिक, त्रिकोण, वेदिका, पंखा, शंख, छत्ता, कमल के चिन्ह हों वे रानी होती है।

## विशेष-योग

स्थूलाभिर्धनरहिता वहिर्नताभिश्च शस्त्रनिर्याणाः।
कपिसदृशकरा धनिनो व्याघ्रोपमपाणयश्च पापाः॥

भाषा—मोटी अंगुली वाले निर्धन और वाहिर की तरफ लची अंगुली वाले शस्त्राघात से मरते हैं। बानर के हाथ के समान हाथ वाले धनवान् होते हैं। बाघ के समान हाथ वाले पापी होते हैं।

गूढ़सन्धिशिरास्नायुः संहताङ्गः स्थिरेन्द्रियः।
उत्तरोत्तरसुक्षेत्रो यः स दीर्घायुरुच्यते॥

भाषा—जिसके शरीर के संधिस्थल और नाड़ी तथा स्नायु ये मांस से छिपे हों, शरीरपुष्ट, इन्द्रियां स्थिर-प्राय, शरीर उत्तरोत्तर देखने के योग्य हो तो उसे दीर्घायु जानो।

गर्भात्प्रभृत्यरोगो यः शनैः समुपचीयते।
शरीरज्ञानविज्ञानैःसदीर्घायुःसमासतः॥

भाषा—जो गर्भ से अर्थात् जन्म से ही आरोग्य हो और धीरे धीरे बढ़े और जो ज्ञान, विज्ञान से परिपूर्ण हो उसे दीर्घायु जानो।

अधस्तादक्ष्णयो यस्य रेखाःस्युर्व्यक्तमायताः।
द्वे वा त्रयोऽधिका वापि............॥

भाषा—जिसकी आंखों के नीचे दो या तीन या इससे भी अधिक स्पष्ट रेखाएं हों उसे मध्यमायु जानो।

पादौ कर्णौ च मांसलौ नासाग्रमूर्ध्वं च भवेत्।
ऊर्ध्वरेखा च पृष्ठतः............॥

भाषा—पैर तथा कान मांसल हो, नासिका का अग्रभाग ऊंचा हो, पीठ में ऊर्ध्वरेखा हो तो उसे ७० वर्ष की आयु वाला जानो।

ह्रस्वानि यस्य पर्वाणि सुमहच्चापि मेहनम् ।
तथोरस्य वलीढानि न च स्यात्पृष्ठमायतम् ॥

भाषा—जिसकी अंगुलियों की पोरें छोटी हों, जननेन्द्रिय बड़ी हो, वक्षस्थल लोम या मांस विहीन हो, पीठ चौड़ी न हो उसे अल्पायु जानो।

नो संगते नातिपृथू न लम्बे,
शस्ते भ्रुवौ बालशशाङ्कवक्रे ।
अर्धेन्दुसंस्थानमरोमशं च,
शस्तं ललाटं न नतं न तुङ्गम् ॥

भाषा—दोनों भौंहें यदि मिली न हो, पतली हों, छोटी और द्वितीया के चन्द्रमा के समान टेढ़ी हों, तो ऐसी स्त्री भाग्ययुक्त होती है। अर्ध चन्द्रमा के समान रोमरहित और समान आकार वाला ललाट शुभ होता है।

ऊर्ध्वञ्च श्रवणौ स्थानान्नासा चोच्चा शरीरिणः ।
हसतो जल्पतो वापि दन्तमांसो प्रदृश्यते ॥

भाषा—कान ठीक स्थिति में तो हो पर कुछ ऊपर को चढ़े, अ र रुखे हों। नाक भी ऊंचीसी या चढ़ीसी, जिसके हंसने से या बात करने में दांत का मांस तक दिखे, तो अशुभ होता है।

नरस्य नासा सरला च यस्य,
वक्षस्थलं चापि शिलातलाभम् ।
नाभिर्गभीरातिमृदू भवेता,
मारक्तवर्णौ चरणौ स भूपः ॥

भाषा—जिसकी नाक सरल, सीधी और वक्षस्थल, शिलातल के समान सुदृढ़, नाभि गंभीर, चरण रक्तवर्ण और मृदु राजाओं के होते हैं।

शंखातपत्रशिविकागजाश्वपद्मोपमा नृपतेः ।
कलशमृणालपताकांकुशोपमाभिर्भवन्ति निधिपालाः ॥

भापा—हाथ में शंख, छत्ता, पालकी, हाथी, घोड़ा, कमल के चिन्ह वाले राजा होते हैं। कलश, कमल की नाल, पताका, अङ्कुश के चिन्ह होने से धनवान् होते हैं।

चक्र, तलवार, कुठार, शक्ति, धनुष भाला के चिन्ह वाले सेनापति होते हैं। उखली के चिन्ह वाले यज्ञ करते हैं। अंगुष्ठ के मूल में वेदी का चिन्ह हो तो अग्निहोत्री होता है वावली, देवमन्दिर और त्रिकोण चिन्ह वाले धर्मात्मा होते हैं।

तुलाग्रासं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते।
तस्य वाणिज्यसिद्धिःस्यात् पुरुषस्य न संशयः ॥

भाषा—जिसके हाथ में तराजू, ग्रास, वज्र का चिन्ह हो तो वह व्यापारी होता है।

"मत्स्येन सुभगा नारी"

भाषा—मीन रेखा यदि स्त्री के हो तो भाग्यशीला होती है।

स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां तद्व्यत्ययेन निःस्वानाम्।
विरलाङ्गुलयो निःस्वा धनसंचयिनो घनाङ्गुलयः ॥

भाषा—जिनकी हथेली की रेखाएँ चिक्कण तथा गहरीं हों; वे धनाढ्य होते हैं। रूखी तथा उथली रेखा होने से निर्धन होते हैं। विरली अंगुली गरीबों की और घनी अंगुली धनवानों की होतीं हैं।

तिस्रो रेखा मणिबन्धोत्थिताः करतलोपगा नृपतेः।
मीनयुगाङ्कितपाणिर्नित्यमन्नप्रदो भवति ॥

भाषा—मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर जिसके तीनों रेखाएँ अंगुलियों तक जाये, वह राजा होता है। जिसके हाथ में दो मछलियों के चिन्ह हों वह नित्य ही अन्नदान करता है अर्थात् सदावर्त्त देता है।

शुक्रस्थानादेत्य रेखातिलघ्वी,
छित्वा भाग्यां पैतृकाङ्कञ्च गच्छेत्।
भौमस्थानं स्वीयहस्तेन मर्त्यः,
सद्यः सत्यं नाशयेद् द्रव्यराशिम् ॥

भाषा—शुक्रस्थान से छोटी रेखा उठकर भाग्यरेखा और पितृरेखा को काटती हुई भौमस्थान तक जाय तो मनुष्य स्वतः अपने हाथ से द्रव्यनाश करता है।

स्निग्धोन्नताग्रतनुताम्रनखौ कुमार्याः,
पादौ समोपचितचारु निगूढ़गुल्फौ।
श्लिष्टाङ्गुली कमलकांतितलौ च यस्या,
स्तामुद्वहेद्यदि भुवोऽधिपतित्वमिच्छेत्॥

भाषा—जिस कुमारिका के सचिक्कण, उन्नत, सूक्ष्म अग्रभाग है जिनका; ऐसे ताम्रवर्ण नख हों और दोनों पैर समान, सुन्दर, सुडौल, भरे, जिनकी गांठे छिपी हों, अंगुली परस्पर सटी हों, कमलकांति के समान तलुए हों, ऐसी कन्या से विवाह करके पुरुष राजा होता है।

सब से महत्व की बात सामुद्रिक में समय की है। कि इस रेखा का फल कब होगा। यह बात नहीं कि इसका जानना ही असम्भव है।

मदरास में कुम्भकोनम के पास गोविंद चेट्टी नामक एक ज्यौतिपी था। जबलपुर के सेठ मदनमोहनलालजी को ज्यौतिष पर बड़ा विश्वास था। उन्होंने रामेश्वर-यात्रा में सुना कि गोविन्द चेट्टी अद्‌भुत फल कहने वाला सामुद्रिक एवं प्रश्न बताने में बड़ा प्रवीण है।

उन्होंने उसके पास पहुंचकर उसकी योग्यता जानना चाही। ज्यौतिपी ने कहा कि कहां से आये और कहां जा रहे हो। इन्होंने रामेश्वर दर्शन के बाद द्वारिका जी तथा जगन्नाथ जी होकर घर लौटने की बात कही। उसने उसी समय लग्न को देख प्रश्नफल कहना आरंभ किया और कहा कि तुम बहुत शीघ्र ही घर लौट जाओगे।

फिर हाथ दिखाने को कहा। ज्यौतिपी ने हाथ देखकर कहा कि तुम्हारी यात्रा रेखा-समाप्ति पर है। तुम लोग किसी भय से अपने घर की ओर शीघ्र लौटोगे। ज्यौतिपी ने पूछा तुम्हारे पिता भी साथ हैं। सेठ जी ने कहा हां; ज्योतिषी बोला कि उनकी बीमारी के

कारण ही आप लोग घर लौट जांयगे और यह भी संभव है कि बड़ी गड़बड़ मचजाय।

वहां से चलकर तीसरे दिन एक तालाब में स्नान करते ही अधिकांश यात्री वेगशाली ज्वर से पीड़ित होगये। सेठ मदनमोहनलाल जी के पिता धर्मात्मा सेठ मन्नूलाल जी सख्त बीमार होकर समस्त यात्रियों समेत घर लौट आये।

तत्त्व यह कि यह विद्या खूब हृदयङ्गम करने की है। जन्मपत्री से विशेषफल करपत्री द्वारा कहा जा सकता है, पर बात यह है कि करपत्री बनाना सहज नहीं। उसके लिये बहुत अभ्यास की आवश्यकता है। इस प्रसङ्ग की विशेष चर्चा दूसरे भाग में पढ़िये।

इति सामुद्रिक-विवेकः

---

# परिशिष्टभाग

## हर्षल, नेपच्यून

विदेशीय ज्यौतिर्वेत्ताओं ने हर्षल और नेपच्यून का अन्वेषण कर ग्रहमण्डल में ९ ग्रहों की जगह ११ ग्रह कर दिये हैं। भारतीय विद्वानों ने शनि को ही मंदगामी बतलाया था; पर जहाँ शनि ७½ वर्ष में तीन राशि-भ्रमण करता है वहाँ हर्षल ७½ वर्ष में एक ही राशि का भ्रमण करता है। नेपच्यून १३¾ वर्ष में एक राशि का भ्रमण करता है।

## हर्षल

सम्वत् १९९६ शके १८६१ चैत्र शुक्ल १ के दिन स्पष्ट हर्षल ०।२६।११।३२ गति २।३५ है। हर्षल (यूरेनस) 'आकस्मिक फलकारक' प्रसिद्ध है। जन्म लग्न, पंचम, नवम भाव में शुभफल करता है। यदि हर्षल का सूर्य, चन्द्र से अशुभ सम्बन्ध हो तो अशुभफल करता है।

पुरुष की कुण्डली में शुक्र; स्त्री की कुण्डली में सूर्य यदि हर्षल से दूषित हो तो अशुभफल करता है। धनेश, पंचमेश, नवमेश, राज्येश, लाभेश का यदि हर्षल से शुभ सम्बन्ध हो तो उत्कर्ष होगा। ३,५,९,१०,११ वें भाव में शुभफल; तथा त्रिक में संकट उत्पन्न करता है। हर्षल कुछ २ शनि के समान ही फल करता है।

## नेपच्यून

सम्वत् १९९६ शके १८६१ चैत्र-शुक्ल १ के दिन स्पष्ट नेपच्यून ५।२।४४।६ गति १।४० है। २,४ ६,८,१२ वें भाव में तथा पापग्रह के साथ अशुभफल फल करता है। ३,७,१०,११ वें भाव में लौकिक सुख की इच्छा बढ़ाता है। १-५-९ वें भाव में उन्नति और हर्ष बढ़ाता है। शुभराशि, शुभस्थान, शुभग्रह से सम्बन्धित होने पर शुभफल कारक; अन्यथा अशुभफल कारक होता है। नेपच्यून कुछ २ गुरु, चन्द्र के समान ही फल करता है।

इति परिशिष्टभागः

---

## ग्रन्थकारानुभूतिः

वन्देऽहं दीनबन्धुं प्रणिहितकमलानन्दसंदोहमीनं,
लीलानन्तांकशोभाकरमहिततमश्चक्रनाशप्ररूढम् ।
स्वाग्रोद्यद्वैनतेयं निखिलसुमनसां पूजितं सिंहभावं,
रम्याद्रौ जातशोभं भवतरणिमलं तुष्टवैकुण्ठलोकम् ॥

गाढान्धकारे पिहितं यदाभू-,
द्देशान्तरं ज्यौतिषवाक् प्रकाशः ।
तत्पूर्वमासीत् खलु पूर्णरूपो,
देशेऽस्मदीये भरतस्य खण्डे ॥

देशाच्च नो ज्यौतिषतत्त्वविद्या,
यूनानयूरोपविशालदेशम् ।
ग्रीकं गता हन्त तया तदीया,
याता जना स्वोन्नतिशैलशृङ्गम् ॥

तद्गोत्रकूटात्पतितास्तथैवं,
वयं तथा केवलमद्य जाताः ।
सूर्योपरागीयविशेषतत्त्व,
ज्ञानाय वैदेशिकवाक् शरण्याः ॥

नः पूर्वजाः कृत्रिमहेतुशून्याः,
सूर्यर्त्तचक्रैर्दिवसे च रात्रौ ।
जज्ञुः परां कालगतिं विचित्रां,
वेधप्रवीणाश्च बभूवुरद्धा ॥

शुद्धा भवेत्कृत्रिमसाधनेन,
स्यादात्मयोग्या यदि कालसंवित् ।
तर्ह्यन्यथा किं भवति क्षतिर्नो,
नाशुद्धसंख्यानवशेन वह्नौ ॥

आरम्भधामादिविवादिनो ये,
प्राग् वासरेभ्यो विहितां चतुर्भ्यः ।
संपाद्य संक्रान्तिमलं समाजं,
हास्यास्पदत्वं किल ते नयन्ते ॥

आगत्य नो गुर्जरदेशतो मा-,
लवञ्च बुन्देलदलं च तस्मात् ।
ततः परं कालगतेः कलाभिः,
सी. पी. निवासं विदधुः स्वकुल्याः॥

जगन्नाथनामा स्वतातेन साकं,
प्रसादो विहाय स्वदेशं सुरम्ये ।
प्रदेशे च मध्येऽधिवासं प्रचक्रे,
पितुर्मे पिता पाठकोपाह्व आदौ ॥

तत्सूनुर्बलदेवपाठक इति ख्यातः सुशीलः कृती,
तातो मे जननी रमा च परमा श्रीराधिकाह्वोऽनुजः ।
लोकोपकृतितत्परो जनमतः श्री विश्वनाथोऽपरः,
पुत्रः श्री कमलाकरः कविवरः श्री केशवो राजते ॥

श्यामाकान्तेन पुत्रेण बालकृष्णेन चात्र मे ।
ज्यौतिषाचार्यवर्येण साहाय्यं परमं कृतम् ॥

वालो मुकुन्दः प्रियशिष्य एव,
तत्त्वानुसंधानपरश्चिपाठी ।
साहाय्यमस्मिन् विषये विधाय,
प्रीतिं परां मे कुरुते विनीतः ॥

गुरो रामप्रसादाख्यात् काव्यव्याकरणे मया ।
पठिते ज्यौतिषं शास्त्रं गोविन्दगुरुतो वरात् ॥

अयं मदीयः प्रथमः प्रयासः ततो भवेच्चेत् त्रुटिरत्र काचित् ।
तां तर्हि विज्ञाः कृपया क्षमन्तां सङ्कोचमुत्सृज्य च।सूचयन्तु ॥

लक्ष्मीप्रसादपाठकनाम्ना ज्योतिर्विदा कृतो ग्रन्थः ।
ज्यौतिषरत्नाकर इति लोकोपकारको हि भूयात् ॥

इति

* शुभम् *

# भविष्य वाणी की सत्यता

१. महायुद्ध बंद होने के पूर्व श्री विक्रम विजय पञ्चाङ्ग तथा भविष्य विचार रचयिता पाठक जी ने यह घोषणा की थी कि गुरु का त्रिस्पृशदोष छूट गया है अतः बहुत संभव है कि अब लड़ाई बंद हो जाय तदनुसार लड़ाई बंद हो गई देखो उस समय की स्वनाम धन्य स्वर्गीय पं० रघुवरप्रसाद जी द्विवेदी संपादित हितकारिणी पत्रिका।

२. सं० १९८३ के पञ्चाङ्ग में आपने लिखा था कि भाद्रपद शुक्ला एकादशी से भयंकर पानी बरसेगा कि जिससे अकल्पित हानि होगी तदनुसार ठीक एकादशी से भयङ्कर वृष्टि आरंभ हुई और त्रयोदशी चतुर्दशी को ऐसी विकट बाढ़ आई कि सैकड़ों गांवों के साथ मंडला शहर ही बह गया और लाखों की संपत्ति नष्ट हो गई।

३. सन १९३० के कानपुर के भयङ्कर दंगे की चर्चा एक वर्ष पहिले प्रकाशित पंचांग में थी कि यमुना किनारे या कानपुर में उपद्रव होगा।

४. सं० १९९० के भविष्य विचार में आपने "तदापृथिवी भयाकुला" तथा "पूर्व देशे महा पीड़ा" लिखा था इस भूकंप की चर्चा में आपने ४ श्लोक उद्धृत किये थे जिनमें माघ के ६ ग्रह इकट्ठे होने का परिणाम यह लिखा था कि प्रलय होगा, वसुधा चलायमान होगी, नदी सूख जांयगी, संसार कंगाल हो जायगा, माताएं अपने बच्चों तक को छोड़ देंगी, यह उत्पात पूर्व देश में होगा।

५. सुवर्ण की तेजी की चर्चा भी आपने बहुत पहिले सं० ८८ और ८९ में लिखी थी ६ महीने पीछे सुवर्ण २२ से ३४ तक पहुंच गया।

६. संवत् १९९० के विचार में ज्येष्ठ मास में किसी प्रबल मनुष्य पर त्रास का योग लिखा था तदनुसार महात्मा गांधी ने लोमहर्षणकारी उपवास आरम्भ किया था कि जिससे महाशक्तिशाली गवर्मेन्ट की आसन डगमगा गई थी। हाल की बमरौली रेल घटना जो सं० ९४ में हुई थी पंचांग में स्पष्ट लिखा था कि रेलवे से इस माह में रोमांचकारी घटना होगी। यह भविष्य विचार ज्यौतिष सीखने वालों और व्यापारियों के बहुत बड़े काम की वस्तु है। मू. ॥) श्रीविक्रम विजय पंचांग का मूल्य ।)

———

## कर्मवीर प्रेस, जबलपुर द्वारा प्रकाशित

[ ज्योतिष-रत्न पं० श्रीलक्ष्मीप्रसाद जी पाठक विद्या-भूषण द्वारा प्रणीत ]

भारत-प्रसिद्ध

# कर्मवीर [विक्रम-विजय] पंचांग

पर प्राप्त कुछ

## सम्मतियां

---

### विश्व-विख्यात साबरमती आश्रम के भू० पू० मंत्री श्री० परशुरामजी मेहरोत्रा एम० ए०, भू० पू० स० सम्पादक "नवजीवन" लिखते हैं—

परमपूज्य पण्डित जी,

सादर प्रणाम ।

गत वर्ष मैंने आप से एक जन्म-पत्र बनवाया था और सन् १९३० से मैं आपके करकमलों से तैयार किये हुए पञ्चाङ्ग का अध्ययन करता आया हूँ । सन् १९३० के कानपुर के दङ्गे का तथा अन्य घटनाओं का उल्लेख ३ मास पूर्व प्रकाशित पत्रे में देखकर मुझे आश्चर्य हुआ था । १९३१ के पंचाङ्ग में भयङ्कर गर्मी और पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध के अधिक अनुकूल होने की जो भविष्य-वाणी थी वह यथार्थ सिद्ध हुई थी । इस वर्ष तो कई बातें आश्चर्यान्वित कर रही हैं । उदाहरणार्थ " वृष्टि विशेष होगी " " कारखानों में संकट पड़ेंगे " " बेरोज़गारी का प्रश्न विकट रूप धारण करेगा " इत्यादि । इस वर्ष

के पत्रे में आपने सम्वत् १९९० के भविष्य शीर्षक लेख में आगे चल कर लिखा है —

" धार्मिक संकट हर एक के सामने खड़ा होगा," "लेखकों प्रकाशकों और कवियों की हालत सुधरेगी" "स्वराज्य प्राप्ति के मार्ग में अड़चनें आंयगी" "समय प्रतिकूल होगा" सो निश्चित-सा दीख रहा है। हां, योरुपीय युद्ध की संभावना भी उत्कट है। समाज में वैमनस्य बढ़ रहा है। इसका भी उल्लेख उसी स्थल पर आप कर चुके हैं।

सबसे अशुभ बात उच्च श्रेणी के लोगों की मृत्यु का उल्लेख है। सेन गुप्त, बिसेंट प्रभृति का परलोक वास तथा २—३ के प्राणों का संकट में होना आपके कथन की यथार्थता प्रमाणित कर रहे हैं। देव ! आप की लेखिनी में चमत्कार है— और है अद्भुत सत्य। पार्लियामेंट में विवाद मचा ही हुआ है। जनकपुरी के धनुष-यज्ञ के अवसर पर प्रगल्भ राजाओं का-सा प्रलाप भी दीख पड़ रहा है और साधु नरेशों का भक्ति प्रदर्शन भी दृष्टि-गोचर हो रहा है। अब यह देखना शेष है कि माघ में छः ग्रहों का एकत्रित होना क्या गुल खिलाता है इन सबसे महत्वपूर्ण और शुद्ध सत्य पूरित वाक्य "ज्येष्ठ मास में किसी प्रबल मनुष्य पर त्रास" था। महात्मा जी ने लोमहर्षणकारी उपवास प्रारंभ किया था समस्त संसार हिल गया था, कृपा करके लिखियेगा कि गुरु ने कन्या राशि पर कब पदार्पण किया था।

गुरुदेव ! आपने मुझे एकलव्य की भाँति अपना अनियमित शिष्य बना लिया है। मैं यूनीवर्सिटी में एम० ए० व वकालत पढ़ने के फल-स्वरूप अपने प्राचीन शास्त्र के प्रति अवहेलना और उपेक्षा का भाव रखने लगा था; परन्तु आपने मुझे सचेत किया है और मेरी तंद्रा भगाई है।

आपने जिस सत्य का प्रतिपादन किया है उसी सत्य की खोज में मैं १४ वर्षों से महात्मा गांधी का गुलाम बना हुआ हूँ। उन्हीं के आज्ञानुसार खादी का प्रचार, नवजीवन-उपसंपादन, अमेरिकन और अंग्रेजी महिलाओं को हिन्दी का शिक्षण तथा पत्र व्यवहार आश्रम में किया करता था। गुजराती बालाओं को भी राष्ट्र-भाषा सिखाता था और विदेशी आगन्तुकों को आश्रम दिखाया करता था। ३ अगस्त को वहां से यहां चला आया। आपका राशिफल पढ़ा अत्यन्त आश्चर्य हुआ। बहुत सी बातें मिल गईं।

निजी वर्ष फल को खोला और उस तिथि की प्रतीक्षा की जिस तिथि को मेरे शुक्र प्रारम्भ होते थे। आजकल अर्थात् १ सितम्बर से शुरु में शुक्र की दशा चल रही है। फलतः उल्लास प्रतीत होता और निराशा का ह्रास हो रहा है। आश्चर्य तो इस बात का है कि तारीख तक मिल गई! इस सबने मुझे आस्तिकपन की ओर खींचा है और इन ग्रहों के स्वामी जगन्नियन्ता की ओर आकृष्ट किया है।

पूज्य पाठकजी, मैं अन्तरात्मा से आपको एक सच्चा शास्त्रज्ञ एवं पूज्य मानता हूं। मुझे पता नहीं कि मैं किन शब्दों में अपने भाव को व्यक्त करूं। क्या आप मुझे भी इस योग्य बनाने के लिये तैयार हैं कि छोटे मोटे विचार स्वतः कर लिया करूं? अगले सम्वत् का पत्रा कब तक प्रकाशित होगा? १९९१ का "भविष्य विचार" अगर तैयार हो गया हो तो शीघ्र वी० पी० से भेजिये।

९।९।३३<br>
लखनऊ

आपका चरणसेवक—

परशुराम मेहरोत्रा।

---

**श्रीमान् महाराजाधिराज श्री विश्वनाथ सिंहजी, के० सी० आई० ई० छत्रपुर राज्य बुन्देलखंडः—**

"आपके विक्रम-विजय-पंचांग का फलादेश खूब मिला धन्यवाद ! नवीन वर्ष के १०० पंचांग भेजिए।"

---

ज्योतिष-शास्त्र के निष्णात विद्वान्

**महामहोपाध्याय पं० अयोध्यानाथजी, काशी—**

"आपके पंचांग का गणित शुद्ध है। आशा है, इसका यथेष्ट प्रचार होगा।"

अयोध्यानाथ शर्मा, काशी।

---

भारतवर्ष के दिग्गज विद्वान्

**महामहोपाध्याय पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, जयपुर—**

"सूर्यसिद्धान्तीय गणना ही वास्तव में शुद्ध गणना है। इसके ऊपर से बना हुआ पंचांग शुद्ध ही होना चाहिए।"

दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, जयपुर।

---

## दिल्ली का प्रसिद्ध पत्र "माहेश्वरी"—

"इस एक ही पंचांग को पास रखने से हिन्दी पढ़ा लिखा एक अच्छे ज्योतिषी का काम कर सकता है।"

---

## प्रयाग का प्रतिष्ठित पत्र "अभ्युदय"—

"भारतवर्ष के सर्वोत्तम पंचांगों में से यह एक पंचांग है।"

व्याख्यान-पंचानन

**पं० रामचन्द्र शर्मा, महोपदेशक, इंदौर—**

"आपका पंचांग अपनी शानी इस देश में नहीं रखता। आपके पंचांग में यमुना के किनारे अथवा कानपुर में उपद्रव होने का लिखा था। ठीक कानपुर ही में दंगा हुआ। पानी की विशेष बाढ़ एक आपके ही पंचांग की सूचना थी। सच साबित हुई। सोने और चांदी की घटा-बढ़ी भी खूब मिली। ग्रहण भी आपका अचूक मिलता है।"

**प्रसिद्ध महोपदेशक पं० नन्दकिशोरजी शुक्ल वाणी-भूषण**

मु० पो० टेढ़ा जिला-उन्नाव यू० पी० से लिखते हैं कि—

प्रिय मित्रवर ! पौ. शु. १५।९३

सादर प्रणाम।

९३ के विक्रम विजय पञ्चांग में अन्न मंहगी का जो भविष्य अनेक पृष्ठों पर लिखा है, वह सत्य निकला आपकी इस भविष्य वाणी पर हम लोग मुग्ध हैं। सर्वथा धन्य है आपका ज्योतिष और आपका परिश्रम। यह पत्रा दिनों दिन प्रसिद्धि, कीर्ति प्राप्त कर जनता को अति प्रिय हो रहा है।

कृपया ९४ के विक्रम विजय पञ्चांग की २ प्रतियां अति शीघ्र मुझे भेज कर अनुग्रहीत कीजिये। हमारे मित्र बाबा मनसाराम भट्टर बहुत ही लालायित हैं अतः शीघ्र भेजिये। अत्र कुशलं तत्रास्तु।

ACHARWAD.

*Bronch Sunday 21st June, 1936.*

MY DEAR PATHAKJI,

Your calculation was quite correct at the Eclipse took place at the appointed time. The Gujrat astrology was incorrect. I think they did not calculate but relied on the time of the 'Panchang'.

*Thakurlal L. Munshi.*

## पं० शंकरलाल शर्मा, इन्जीनियर, पो० केकरी राजपूताना—

"आपका यह विक्रम-विजय-पंचांग फलित में सर्वोच्च है। इसका फल हमें बिलकुल ठीक ठीक मिला है। मैंने इसकी तारीफ जैसी सुनी थी, वैसा ही पाया।

## पं० रामशंकर त्रिवेदी सनातनी सत्य-धर्म प्रचारक स्थान टिकरा पोष्ट आफिस देवमयी जिला फतेहपुर—

अत्र कुशलं तत्रास्तु अपरंच समाचार यह कि मैंने सन् १९३१ में जब बन्दीगृह से मुक्त होकर कानपुर में आपका पंचांग अवलोकन किया था। उसमें जो कुछ लिखा था अक्षरशः सब सत्य हुवा। तब से आज तक बराबर आपका पंचांग तथा भविष्य-विचार का ग्राहक होता आया हूं। जिनकी सब बातें पूर्णतया सत्य हो रहीं हैं। भविष्य-विचार तो बहुत ही उत्तम है, जिसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है आपके यहां अब "ज्योतिष रत्नाकर" नामक और पुस्तक छप रही है। उसका मूल्य तथा विवरण के और कब तक छपकर प्रकाशित होगी कृपाकर सूचित करने का कष्ट करियेगा। मैं बहुत उत्सुक हूं और आशा करता हूं पत्रोत्तर से शीघ्र सन्तोष देने को कृपा करेंगे। इत्यलम्

## बाबू काशीप्रसादसिंह भूतपूर्व सम्पादक "लोकमत"

"ऐसा सर्वांगीन विषय-व्यापक पंचांग मध्यप्रान्त में निकालकर आपने मध्यप्रान्त का गौरव बढ़ा दिया है। आजकल मिथ्या डिगरियों के जाल बिछाकर लोगों को फंसाने के लिये ज्यौतिषी और वैद्य खूब टिड्डी दल के समान उतरा पड़े हैं। ऐसे जमाने में ऐसा ठोस और व्यापक आपका ज्ञान देखकर मुझे ज्यौतिष शास्त्र का महत्व स्वीकार करना पड़ता है। अविश्वासी से अविश्वासी को भी आपकी प्रतिभा का कायल होना पड़ेगा और ज्यौतिष शास्त्र के महत्व को स्वीकार करना पड़ेगा। आपका फलित निस्सन्देह बहुत ही ठीक और विश्वसनीय मुझे सिद्ध हुआ है।"

## पं० रामप्रसाद तिवारी बी. एस-सी. एल-एल. बी.

### एडवोकेट पबलिक प्रासीक्यूटर—

आज कल ज्योतिष विद्या के प्रति अध–पढ़े और ज्योतिषशास्त्र के मर्म को न समझने वाले पंडितों के कारण लोगों का विश्वास ज्योतिष से उठा जा रहा है, परन्तु हमें यह कहते हुए अत्यंत हर्ष है कि हमारे नगर के प्रतिष्ठित विद्वान पं० लक्ष्मीप्रसाद जी पाठक ने अपने विक्रम-विजय-पंचांग तथा भविष्य-विचार नाम की पुस्तक द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि ज्योतिष का कितना अधिक महत्व है। मैंने स्वयं अनेक बातें आपके पंचांग तथा 'भविष्य-विचार' पर से वर्ष भर की मिलाईं और यथार्थ में आपके लिखे अनुसार ही पायी। आपका पंचांग और भविष्य–विचार दोनों ही उपादेय हैं उदाहरणार्थ पृ० २२५ भविष्य विचार संवत् ९४. को ही देखें–पाठक जी ने रेल द्वारा अपघात जिस समय लिखा है ठीक उसी समय बमरौली को रेल की दुर्घटना हुई। ज्योतिष जैसे गहन विषय को पाठक जी ने बहुत ही सरल और बोध–गम्य बना दिया है।

॥ श्री ॥

फैजाबाद ५–६–३६

श्री० मैनेजर कर्मवीर प्रेस, ज्योतिष-विभाग।

व्याख्यान पंचानन पं० रामचन्द्र जी शास्त्री के द्वारा आप के यहां का विक्रम विजय पंचाङ्ग और भविष्य विचार नामक पुस्तक देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, आपने पंचाङ्ग में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में जो फलादेश लिखा है, वह अक्षरशः ठीक घटा, यहां ज्येष्ठ शुक्ल १२ से ३ दिन प्रचण्ड वायु वर्षा और भूकम्प हुवा। कृपया १ प्रति भविष्य विचार नामक पुस्तक की और १ पंञ्चाङ्ग निम्न लिखित पते पर शीघ्र भेजियेगा।

सरजू सरन रामभरोसीलाल
बजाज
चौक बजाजा मु० फैजाबाद (अवध)

## स्वनाम-धन्य साहित्याचार्य पं० रघुवरप्रसाद जी द्विवेदी साहित्यरत्न, बी० ए०, सम्पादक, "हितकारिणी"

"हितकारिणी"-पत्रिका में द्विवेदी जी ने लिखा था, "एक यही पंचांग है कि जिसके कर्त्ता ने लड़ाई के दिनों में सबसे पहले लिखा था कि अब गुरु का त्रिस्पृश दोष छूट गया है। अतएव बहुत संभव है कि लड़ाई बन्द हो जाय। तदनुसार थोड़े ही दिनों में महायुद्ध बन्द हो गया।" वि० सं० १९८३ के पंचाग में लिखा था कि भाद्र शुक्ला एकादशी से भयंकर पानी बरसेगा और अकल्पित हानि होगी। वैसा ही ठीक एकादशी से पानी बरसना आरंभ हुआ और श्री नर्मदाजी की ऐसी विकट बाढ़ आई कि सैकड़ों गांव उस समय बहगये।

## व्याकरणाचार्य प्रोफेसर पं० सरस्वतीप्रसाद चतुर्वेदी एम. ए. नागपुर—

श्रीयुत विद्वद्वर विद्यावयोवृद्ध पाठक जी !

सविनय प्रणामाञ्जलि स्वीकृत हो।

आपके 'पंचांग' तथा 'भविष्य विचार' को पाकर कृतकृत्य हुआ। वास्तव में फलित विचार शास्त्र को आपने अपनी गवेषणापूर्ण समीचीन बुद्धि के बल पर भविष्य कथन से उसके पूर्वकालीन गौरव पद पर बैठा दिया है। ज्योतिः शास्त्र में ऐसी अनन्य साधारण प्रतिभा सराहनीय है। आशा है भविष्य में इसी प्रकार शास्त्रानुशीलन साध्य ग्रन्थों का प्रकाशन कर भारतीय ज्योतिः शास्त्र का मुख समुन्नत करेंगे।

नागपुर — आपका विनीत

२३-४-३६ — स० प्र० चतुर्वेदी

## पं० कल्याणदत्त जी शास्त्री, खुरई—

आपका ग्रहण और पानी पंचांग का लिखा हुआ ज्यों का त्यों मिलता है।

**दमोह के प्रसिद्ध वकील श्री दामोदर राव जी श्रीखण्डे—**

"आपके पंचांग का पानी तो एक विशेषता है। अक्षरशः सत्य मिलता है। धन्यवाद। कृपाकर ६ पंचांग वी. पी. से भेजिए"

**पं० वृज-विलास शुक्ल एम० ए०, एल-एल० बी०—**

श्रद्धेय पाठक जी, आपका 'विक्रम—विजय—पञ्चांग' एक सच्चे ज्यौतिषाचार्य का काम देता है। शुद्ध और सूक्ष्म गणना की ऐसी विवेचना भारत के अन्य किसी भी पञ्चांग में नहीं है। आचार्यत्व का दम तो भरते हैं कई-एक पण्डित, पर महत्व-पूर्ण बातों को ख़ाक नहीं समझते और वे ऐसी भद्दी भूलें करते हैं कि गणित—शास्त्र का साधारण ज्ञान रखने वाला भी कदापि न करेगा। आपने अपने पञ्चांग में उन सब बातों की विवेचना बड़ी ही सुगमता के साथ कर दी है। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता है कि देश में सर्वत्र प्रतिष्ठित पण्डित-मण्डली प्रायः आपके ही पञ्चांग को विशेष विश्वसनीय समझती है।

**श्री. रामलाल साव गुप्ता मालगुजार आनरेरी मजिस्ट्रेट मुंगेली, जिला बिलासपुर सी. पी.—**

आपका सेवक एक वैश्य के कुल का आदमी है नीचे लिखे तिथियों पर जन्म हुआ है इसका गोचर भेजता हूँ। कृपया इसे अच्छी तरह देखकर विचारकर मेरे प्रश्न का उत्तर दीजियेगा वर्ष फल तैयार करके शीघ्र भेजियेगा। वी० पी० मेरे नाम से भेज दीजियेगा।

पण्डितजी मैं आपके भविष्य विचार पुस्तक को दो साल से मंगाता हूं मैं उस पुस्तक की तारीफ कर नहीं सकता हूं आपने पुस्तक क्या बनाई हैं जिनका जन्म राशि ठीक जन्म कुण्डली है उनके लिये तो आपने (ऐना) बना दिये मुझे इस वर्ष में आपके भविष्य विचार में जैसा लिखा है सब अच्छा २ मेरे को उसी मुआफिक हो रहा है मैं पुस्तक की तारीफ लिख नहीं सकता हूँ कि ज्योतिष को आपने क्या सरल कर दिये हैं आपकी पुस्तक भविष्य विचार का मूल्य अमूल्य है सं० १९९४ का भविष्य विचार छपते ही तुरन्त २ कापी पुस्तक वी. पी. डाक द्वारा शीघ्र ही भेजेंगे ऐसी आशा है।

## कर्मवीर प्रेस, जबलपुर द्वारा प्रकाशित

[ज्योतिष-रत्न पं० श्रीलक्ष्मीप्रसाद जी पाठक विद्या-भूषण द्वारा प्रणीत]

भारत-प्रसिद्ध

# भविष्य-विचार

पर प्राप्त कुछ

## सम्मतियां

मिश्र-बन्धु कार्यालय के यशस्वी संचालक

**साहित्य-शास्त्री पं० नर्मदाप्रसादजी मिश्र बी.ए. एम.एल.ए.—**

मान्यवर पण्डितजी,

सादर प्रणाम।

मैं कई वर्षों से आपके "भविष्य–विचार" को देखता आ रहा हूं। अनेकों बार मैंने आपके भविष्य–कथन को पूर्णतः सत्य पाया है। मैं आज ही वर्तमान परिस्थिति के सम्बन्ध में आपके विचार देख रहा था। आपने एक स्थान पर लिखा है—"यद्यपि कौंसिलों का कार्य सन्तोषप्रद होगा, पर आपसी कलह से वैमनस्य बढ़ेगा और काम करने के समय अड़चन खड़ी होगी।" कितना सत्य कथन है! दूसरे स्थान पर आपने लिखा है—"महात्मा (गांधी) जी को, देश में ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जायगी कि, अलग रहते हुए भी कार्यक्षेत्र में प्रवेश करना पड़ेगा।" यह कथन भी कितना सत्य है! आपके विद्या बुद्धि–वैभव को देखकर मुझे आश्चर्य होता है। अथवा "भविष्य–विचार" केवल विचार ही नहीं विद्या का पूरा चमत्कार है।

मिश्र-बन्धु कार्यालय<br>जबलपुर<br>८.५-१९३७

भवदीय—<br>नर्मदाप्रसाद मिश्र।

महाकौशल प्रांतीय कांग्रेस-कमेटी के मंत्री
तथा चेयरमैन लोकल बोर्ड

## ठाकुर लक्ष्मणसिंह चौहान बी. ए. एल-एल. बी. वकील—

कर्मवीर प्रेस जबलपुर द्वारा प्रकाशित विक्रम–विजय–पंचांग के रचयिता पंडित लक्ष्मीप्रसाद जी पाठक का ज्योतिष-ज्ञान आश्चर्य-जनक है। तारीख १५-१-३४ को भारतवर्ष में और विशेषकर विहार प्रान्त में जो भयंकर भूकंप हुआ उसका उल्लेख पंडित जी ने प्रायः एक वर्ष पहले अपनी संवत् १९९० की 'भविष्य-विचार' पुस्तक में लिख दिया था और वह सत्य निकला। आपने माघ में ६ ग्रह इकट्ठे होने का परिणाम यह लिखा था कि प्रलय होगा, वसुधा चलायमान होगी और नदी सूख जावेगी, संसार कंगाल हो जावेगा और माताएं अपने अपने बच्चों तक को छोड़ देंगी। पंडित जी ने यह भी लिखा था कि यह उत्पात पूर्व देश में होगा इससे बड़ा ज्योतिष का और क्या प्रमाण हो सकता है? —लक्ष्मणसिंह चौहान

प्रसिद्ध विद्वान्

## पं० उमेशदत्तजी पाठक एम. ए. एल-एल. एम. मंडला—

विक्रम–विजय–पंचांग के कर्ता पूज्य विद्याभूषण जी के "भविष्य विचार" ने हिन्दीपाठी संसार के लिये राफेल के वार्षिक एफिमरिस का स्थान ग्रहण कर लिया है श्रेष्ठ पुरुषों के वर्षफल के साथ ही साथ उसमें तेजी मंदी और मास २ के फलों का भी विवरण रहता है इस देश की भाषाओं में सम्भवतः "कुण्डली विज्ञान" सम्पादक नवाथे के बाद में ही वार्षिक "भविष्य फल" सूक्ष्मगणना के बल पर प्रकाशित किया जा रहा है मिलान करने वालों को स्पष्ट होगया है कि दुर्घटना बाजार भाव श्रेष्ठ पुरुषों के स्वास्थ्य में पूज्य विद्या-भूषणजी के द्वारा प्रकाशित किया गया भविष्य पूरा का पूरा उतर रहा है आशा है कि इसका आदर शीघ्रही सार्वदेशिक हो जायगा —उमेशदत्त पाठक

## भूतपूर्व प्रिंसपाल हितकारिणी हाई स्कूल

## श्री बाबू रामचन्द्र जी संघी एम. ए. एल-एल. बी.—

मुझे पंडित लक्ष्मीप्रसाद जी पाठक के भविष्य विचार को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज कई वर्षों से विद्वद्वर पंडित जी विक्रम-विजय-पंचांग व भविष्य-विचार अपने प्रसिद्ध ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित कर रहे हैं। आपने इस ग्रन्थ में देश की जो सेवा की है वह किसी से छिपी नहीं है। आपके इस ओर ध्यान देने से इस देश में शिक्षित लोगों का फलित ज्योतिष में जो एक प्रकार से विश्वास उठा जाता था वह अविश्वास दूर होकर पुनः अपनी इस प्राचीन विद्या की ओर लोगों की श्रद्धा होने लगी है। इसका कारण यह है कि पंडित जी ऐसी सूक्ष्मगणना से काम लेते हैं कि आपकी बतलाई हुई भविष्य की कई घटनाएं तो इतनी अक्षरशः ठीक निकलती हैं कि जिन्हें देखकर आश्चर्यान्वित हो जाना पड़ता है। मैं यहां केवल एक ही घटना का उल्लेख करना चाहता हूं जो सं० १९९४ के भविष्य-विचार में २२५ पृष्ठ पर दी गई है। पौष शुक्ल और माघ कृष्ण में पंडित जी ने यह बतलाया है कि इस समय में सवारी ढोने वाली लारी व रेल से अपघातों की संख्या बढ़ेगी। ता: १६ जनवरी को रेल की जो भयंकर दुर्घटना प्रयाग के पास बमरौली में हुई उस दिन पौष शुक्ल पूर्णिमा थी। पाठक स्वयं विचार कर लें कि पंडित जी ने इस दुर्घटना का संकेत कितने स्पष्ट शब्दों में किया है। इसी प्रकार अन्य कई घटनाएं हैं जो विस्तार भय से नहीं लिखी जा सकती हैं। मुझे आशा और विश्वास है कि श्रद्धेय पंडित जी बराबर इसी प्रकार भविष्य-विचार और पंचांग को प्रकाशित कर देश और समाज की सेवा करते रहेंगे।

रामचन्द्र संघी

प्रोफेसर ला कालेज

## पं० कुंजीलालजी दुबे बी. ए. एल-एल. बी. एडवोकेट–

श्रीमान पाठकजी, नमस्कार।

आपकी १९९४ की "भविष्य विचार" नामक पुस्तक देखी जिन विशेष घटनाओं का आपने उसमें उल्लेख किया वे बराबर ठीक निकलीं जिससे मालूम पड़ता है कि आपने उक्त पुस्तक लिखने में बहुत सूक्ष्म गणित से काम लिया है, पूरे वर्ष का इस प्रकार फल लिखने में आपने कितना घोर परिश्रम किया होगा उसका अनुभव केवल वही कर सकता है जिसको ज्योतिष का थोड़ा बहुत ज्ञान है। मुझको यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप आगामी वर्ष का भी फल लिख रहे हैं, प्रकाशित होने पर कृपा कर एक पुस्तक मुझे भेजने का कष्ट कीजियेगा।

२६-१-३८ ] कुंजीलाल दुबे

## पं० लल्लूलाल मिश्र बी. ए. एल-एल. बी. वकील—

मुझे यह घोषित करते प्रसन्नता होती है कि ज्योतिष ऐसे अदृश्य शास्त्र का परिज्ञान पं० लक्ष्मीप्रसाद जी विद्याभूषण जबलपुर ने बहुत ही सरल रीति से अपने भविष्य-विचार में समय २ पर प्रगट कर लोगों का बड़ा हित किया है। विक्रम-विजय-पंचांग और भविष्य विचार दोनों ही कृतियां प्रशंसनीय हैं और प्रत्येक शिक्षित भारत संस्कृति प्रेमी को इन से लाभ उठाना चाहिये।

मुझे विश्वास है कि यदि पाठकजी की उपरोक्त पुस्तकों का ध्यान पूर्वक मनन किया जाय तो फलित-ज्योतिष-शास्त्र पर जो अश्रद्धा आज दिन पठित समाज में देखी जाती है वह शीघ्र ही दूर हो सकती है। प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी को एकबार इनका अवलोकन करना चाहिये।

मिश्र–सेवासदन<br>सिहोरा–रोड<br>माघ शुक्ल १ सं० ९१ } लल्लूलाल मिश्र

## सेक्रेटरी हिन्दु महासभा
## श्रीविष्णुकुमार संघी बी. एस-सी. एल-एल. बी. एडवोकेट—

श्रद्धास्पद पं० लक्ष्मीप्रसाद जी पाठक विद्याभूषण जबलपुर। प्रतिवर्ष शुद्ध सूर्यसिद्धांतीय पंचाङ्ग तथा एक भविष्य-विचार नामक पुस्तक प्रकाशित करते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पंडित जी का पंचाङ्ग कितना मान्य है और भारत वर्ष के अनेकों विद्वानों ने इसकी भूरि २ प्रशंसा की है। इसका फलादेश इतना सच्चा उतरता है कि देखते ही बनता है। अनेक व्यापारी तथा किसान पंडित जी के पंचांग में लिखित फलित को पढ़कर बहुत लाभ उठाते हैं। गत १६ तारीख को जो बमरौली में ट्रेन–दुर्घटना हुई उसकी भविष्य-वाणी भी पंडित जी के पंचांग तथा भविष्य विचार में स्पष्ट रूप से लिखी देख कर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। पौष शुक्ल के फल में आपने लिखा है कि शनि मंगल संयोग भयानक वृष्टि, या भयानक युद्ध या भयानक दुर्घटना करता है। अब देखिये कि ता: ३–१–३८ को ही जबलपुर में हवाई जहाज गिरा व पक्ष समाप्त होते होते ठीक पूर्णिमा के दिन बमरौली ट्रेन दुर्घटना हुई। भविष्य विचार पुस्तक २२५ पृष्ठ पर पौष शुक्ल—माघ कृष्ण का फल लिखते हुए आपने लिखा है 'सवारी ढोने वाली लारी या रेल से अपघातों की संख्या बढ़ेगी।" ज्योतिष के नाम से नाक मुंह सुकोड़ने वाले ज़रा आंख खोलकर देखें। क्या अब भी यह कहने की गुँजायश है कि ज्योतिष एक मन गढ़ंत विद्या है। पंडित जी ने अपने इस पंचांग में तथा भविष्य विचार में नर्मदा की बाढ़, कानपुर का दंगा, बिहार का भूकंप, मोटर ट्रेन दुर्घटना इत्यादि अनेक घटनाओं को बहुत पहले ही लिख दिया था। यदि हमारे देश में पंडित जी के सदृश सच्चे ज्योतिष का ज्ञान फैल जावे। तो कितना अच्छा हो।

विष्णुकुमार संघी